वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द · 162

सृष्टि सम्वत् · 1972949087

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम
सकल जगत को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष 3 बुधवार 15 अप्रैल 1987
अंक 4 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

वैशाख कृ० 1 संवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

आर्यसमाज के वर्तमान व भावी कार्यक्रम पर विचार होगा

20 से 23 अप्रैल तक दिल्ली में प्रमुख आर्य विचारको की संगोष्ठी

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे एव आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय जी आर्य के सयोजकत्व में आर्य समाज की वर्तमान स्थिति तथा भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध में विचार-विनिमय हेतु प्रमुख आर्य-विद्वानो की एक सगोष्ठी का आयोजन मदिर मार्ग, आर्य समाज, नई दिल्ली मे गया है । गोष्ठी मे सम्मिलित विद्वानो के व्यापक विचार-विमर्श के उपरान्त प्राप्त सर्व-सम्मत सुझावो व निष्कर्षों के आधार पर एक प्रस्ताव पारित कर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को प्रस्तुत किया जाएगा । गोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी व विद्वान डा स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती करेंगे ।

उल्लेखनीय है कि श्री दत्तात्रेय जी आर्य ने आर्य समाज की वर्तमान स्थिति से खिन्न होकर आर्य समाज के पुनर्गठन की माग सन् 1982 मे सार्वदेशिक सभा की अतरग सभा मे उठाई थी इससे पूर्व श्री स्वामी विद्यानन्द जी ने भी आर्यसमाज के पुनर्गठन के प्रश्न को उठाने का प्रयास किया था, लेकिन सभा के अधिकारियो द्वारा पर्याप्त रुचि न लेने के कारण स्वामी जी का यह महान् कार्य पूर्ण नही हो सका था । परन्तु श्री दत्तात्रेय जी आर्य की जोरदार मागो के फलस्वरूप 1983 मे सभा ने श्री आर्य जी के सयोजकत्व मे ही एक उपसमिति का गठत उपर्युक्त विषय मे सुझाव प्रस्तुत करने के लिए कर दिया था । इस उपसमिति मे इनके अतिरिक्त श्री स्वामी विद्यानन्द जी, दिल्ली, श्री वीरेंद्र जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब श्री प्रो शेरसिहजी दिल्ली एव डॉ भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ सदस्य थे । इस उपसमिति ने अपनी अतरिम रिपोर्ट सभा मे पेश की थी । सभा द्वारा इस रिपोर्ट पर देश की प्रतिनिधि सभाओ आर्य समाजो एव प्रमुख व्यक्तियो से दो बार सम्मतिया आमन्त्रित की गई और अब उनके आधार पर पुन यह आदेश दिया गया है कि इन सुझावो एव उन पर प्राप्त सम्मतियो पर और अधिक आर्य-विद्वानो की सगोष्ठी का आयोजन कर व्यापक विचार विमर्श किया जाय ।

सगोष्ठी के सयोजक श्री दत्तात्रेय जी आर्य ने प्राय सभी प्रमुख आर्य विद्वानो को निमन्त्रित किया है एव उनसे आर्य समाज के जीवन-मरण के इस प्रश्न के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए अपनी व्यक्तिगत असुविधाओ के उपरान्त भी सगोष्ठी मे सम्मिलित होने का आग्रह किया है ।

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

रविवार 19 अप्रैल 1987 प्रात 9 से 1 बजे तक

स्थान—तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा तथा डी ए वी सस्थाओ एव आर्य समाजो के सयुक्त तत्वावधान मे महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा । इस समारोह मे देश भर से भर मे प्रसिद्ध आर्य विद्वान्, आर्यसमाज के नेतागण तथा भारत सरकार के अनेक मत्री महानुभाव महात्मा हसराज जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करेंगे । कुलाची हसराज माडल स्कूल, अशोक विहार के छात्र-छात्राय मनोहर मनोरजक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन रविवार, 31 मइ 1987 को सभा के मुख्यालय आर्य समाज 'अनारकली', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे प्रात 10-30 से 1 30 बजे तक तथा 2-30 बजे से साय 5-00 बजे तक निश्चित किया गया है ।

—रामनाथ सहगल

भूल-सुधार

'आर्यपुनर्गठन' के 29 मार्च के अक मे पृष्ठ-3 पर कालम 1 की 12 वीं पक्ति में 'अग्रण्य' की जगह अग्रगण्य और इसी पृष्ठ पर प्रकाशित स्वामी जी के पत्र मे 1778 की जगह 1878 होना चाहिए था । कृपया पाठक सुधार लें ।

—सपादक

आर्य समाज अजमेर की मांग—

ऐतिहासिक धर्म स्थल हिन्दुओं को लौटाये जावें

आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय आर्य तथा मत्री श्री रासासिंह ने भारत सरकार से पुरजोर शब्दों मे अपील की है कि हिन्दुओं के ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तथा राष्ट्रीय सस्कृति के धरोहर धर्म स्थलो (राम और कृष्ण के जन्म स्थलो) को हिन्दुओ को सौंप दिया जावे । उन्होने मुसलमानों से भी अपेक्षा की है कि वे धार्मिक कट्टरता एव धर्मान्धता को त्याग कर साम्प्रदायिक सौहार्द्रता, प्रेम भावना तथा करोडो हिन्दुओ की भावनाओं का आदर कर राष्ट्र की अस्मिता के प्रति अपनी सद्भावना का परिचय देते हुए सहर्ष उन स्थानों को हिन्दू भाइयों को सौंप दें । इससे देश मे साम्प्रदायिक कटुता समाप्त होकर राष्ट्रीय एव भावात्मक एकता को बढावा मिलेगा ।

उन्होने यह भी कहा कि यद्यपि आर्य समाज मूर्तिपूजक नहीं है तथा मूर्ति पूजा का विरोध करता है, परन्तु मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगीराज श्री कृष्ण भारतीय धर्म और सस्कृति के आधार स्तम्भ ऐतिहासिक महापुरुष रहे हैं । अत उनसे सम्बन्धित स्थान हिन्दुओं को प्राप्त होने हा चाहिए । इस ऐतिहासिक तथ्य को झुठलाया नही जा सकता कि विदेशी आक्रमणकारियो तथा तत्कालीन मुस्लिमशासकों ने इन स्थानो का रूप विकृत कर उन्हे मस्जिदो के रूप मे बदल दिया था ।

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक : रासासिंह संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य ☎ कार्या 21010

वर्तमान परिस्थितियो में आर्यसमाज

राष्ट्र की भयावह स्थिति

देश की वर्तमान परिस्थितिया बडी भयावह है देश की राष्ट्रीय एकता अखण्डता पर खतरे के बादल मडरा रहे हैं भाषावाद प्रान्तीयतावाद क्षेत्रीयतावाद जातीवाद साम्प्रदायिकतावाद आतकवाद एव उग्रवाद राष्ट्र की जडो को खोखलाकर रहे है। अंधविश्वास अज्ञान मूर्तिपूजा आदि सामाजिक कुरीतिया पुन जोर शोर से पनपने लग गई है। सबसे बढकर मानवीय मूल्यो और नैतिकता का तेजी से ह्रास हो रहा है। सब स्वार्थवाद के पुजारी हो रहे है। भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी भाई भतीजावाद बेईमानी चरित्रहीनता की दुष्प्रवृत्तिया तेजी से बढ रही है। देशभक्ति एव राष्ट्रीयता की भावना पीछे सरक रही है। पर्दे के पीछे सी आई ए तथा के जी बी एव विदेशी मिशनरियो के षड्यन्त्र अपना जाल तेजी से फैला रहे है

दायित्व बोध —

इन भयावह परिस्थितियो मे **आर्य समाज** का उत्तरदायित्व अत्यधिक बढ जाता है। जो लोग यह कहते है कि आर्य समाज की अब आवश्यकता नही है इसके सब कार्यक्रम सरकार ने अपना लिए है वह आर्य समाज के घोर शत्रु है। आर्य समाज मे भी कुछ अन्य विचारधारा के छद्मवेषी लोग घुस गये है जो शल्य की तरह कहते रहते हैं कि अब आर्य समाज तो मर रहा है पिछड रहा है खण्डन नही करना चाहिये आदि आदि। ऐसे तत्व आर्य समाज के हितचिन्तक नही कहे जा सकते। अत आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज को अपने दायित्व का बोध भली भाति हो। ... प्रखर और प्रचण्ड तेजोमय रूप सबके सामने आवे।

आर्य समाज ही सक्षम —

आर्य समाज ही निस्वार्थ भाव से निर्भीकता पूर्वक बुराइयो पर प्रहार कर सकता है भ्रष्टाचरण का पर्दाफाश कर सकता है। उसे सत्ता का अथवा वोटो का लालच नही है। विश्व मे ... ऐसा सगठन है जो डके की चोट कहता है सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिये तथा सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिये। विद्या की वृद्धि और अविद्या के नाश का यत्न करता है।

गौरव पूर्ण अतीत —

आर्य समाज का गौरवपूर्ण इतिहास तथा मजबूत सगठन रहा है। आर्यों मे अमोघ उत्साह और कर गुजरने की तमन्ना है। वे सिद्धान्तनिष्ठ और दृढनिश्चयी होते है। नैतिक मूल्यो की पुनर्स्थापना और चरित्र की प्रतिष्ठा आर्यसमाज ही कर सकता है। राष्ट्रीयता और देशभक्ति का पाठ आर्य समाज ही पढा सकता है। सच्चा ईश्वरोपासना और स्वसठता कर्मण्यता आर्य समाज ही उत्पन्न कर सकता है। आर्य समाज गैर साम्प्रदायिक राष्ट्रवादी सगठन है। उसके हाथ मे आइम् का ध्वज है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् उसका उद्घोष है

हम प्रमाणित बनें —

अत आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर अपने आपको महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज का अनुयायी कहने वाले आर्यजन सच्चे अर्थो मे आर्य बने (सच्चे धर्मात्मा ईश्वरभक्त और परोपकारी बनें)। खन देने वाले मजनू बनें। बलिदान पथ के पथिक बने। अपनी सत्य निष्ठा एव चारित्रिक दृढता का प्रमाणिकता की छाप दूसरो पर डाले। उपदेश तो बहुत हो चुके अब तो हम आचरण से शिक्षा देना है। कृण्वन्तो स्वय आर्य।

रासासिंह

हमारे देश की विचित्र धर्म निरपेक्षता (गताक का शेष)

—लेखक श्री दत्तात्रय जी आर्य

यदि स्वामी दयानन्द सब धर्म समभाव या धर्म निरपक्षता के नाम पर इन वेद विरुद्ध धार्मिक ग्रन्थो की समालोचना नही करते तो आज इन मे से एक भी सामाजिक कुरीति दूर नही होती। इन सब सामाजिक अन्धविश्वासो कुरीतियो के सम्बन्ध मे महात्मा गांधी ही नही अपितु आज देश के प्राय सब राष्ट्रीय और धार्मिक नेताओ की भी वही मान्यता है जो ऋषि दयानन्द की थी। यहा तक कि हमारे स्वाधीन भारत के सविधान तक मे प्राय इन सब कुरीतिया का निषेध किया गया है अत प्रश्न यह है कि यदि स्वामी दयानन्द धर्म के नाम पर प्रचलित इन अभिशापो का साहस पूर्व खण्डन करने का प्रिय कार्य न करते तो आज हिन्दू समाज ही नही भारत भी दासता की जजीरो मे जकडा रहता।

यह निर्विवाद है कि हमारी अनेक सामाजिक कुरीतियो का आधार हमारे धार्मिक विश्वास और पवित्र ग्रन्थ तथा उनसे सम्बन्धित पैगम्बर अवतार और गुरु समझे जाते है। इसलिये भी केवल धार्मिक ग्रन्थ या किसी धर्म के सस्थापक की दुहाई देकर इस प्रकार की मान्यताओ की समीक्षा और निराकरण का विरोध नही किया जा सकता।

आर्य समाज का घटता प्रभाव—

आर्यसमाज के आन्दोलन और सगठन के प्रभाव तथा शक्ति मे ह्रास का एक कारण सर्वधर्म समभाव की यह अव्यवहारिक विचार धारा भी है। स्वाधीनता आन्दोलन मे गांधी जी की इस व्यक्तिगत मान्यता को स्वाधीनता के बाद राज्य व्यवस्था का एक आदर्श स्वीकार कर लिया गया जिसके दुष्परिणाम आज हम देख रहे हैं। राजनैतिक सत्ता के प्रलोभन मे अनेक आर्य समाजी भी इस लहर मे बह गए। कट्टरपंथी हिन्दुओ और विशेषकर गैर हिन्दुओ से वोटो की भिक्षा मागने वाले अभ्यर्थियो के लिए इन मतदाताओ का धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियो की समीक्षा करना कैसे सम्भव हो सकता है? यही कारण है कि अजमेर के ख्वाजा साहब की कब्र पर चादर चढाने वालो मे कई आर्य समाजी नेता भी होते है। जब आर्य समाज के मच से इन अन्धविश्वासो का साहसपूर्वक खण्डन किया जाता थी उस समय वह सब प्रिय न होने पर भी एक शक्तिशाली सस्था थी। वस्तुत इसका यह सैद्धांतिक विवादास्पद स्वरूप ही उसके प्रभाव का एक बडा कारण था किन्तु त्याग व कष्ट पर आधारित सकी यह गतिविधि शिथिल होते ही धार्मिक अन्धविश्वासो के जगत मे पराक्रम और विरोध की यह आवाज बन्द हो गई अपनी इस विशेषता को खोने के बाद आर्य समाज को न तो विवादास्पद प्रतिष्ठा ही रही और न ही उसे अपेक्षित लोक प्रियता ही प्राप्त हुई देश के सार्वजनिक जीवन मे अब वह उपेक्षित होता जा रहा है। आज उसके मच से वही ठकुर सुहाती बात कही जा रही हैं जो वोटो की राजनीति के मच से कही जा रही है। आर्य सगठन और सस्थाए वह रही है अपना शक्तिशाली पृथक अस्तित्व न रहने के कारण न किसी को उसके समर्थन का आवश्यकता है और न ही विरोध की चिन्ता है। विरोध भी उसी का माना जाता है जिसका कुछ प्रभाव व शक्ति हो

वस्तुत आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य केवल समाज सुधार तक सीमित नही था अपितु धार्मिक क्रांति था। आर्यसमाज के इन दो उद्देश्यो मे से केवल समाज सुधार का उसका गौण उद्देश्य अधिक लोकप्रिय होने के कारण सब साधारण और स्वय आर्य समाज के कुछ व्यक्ति उसे आधुनिक भारत का केवल एक प्रभावशाली समाज सुधार आन्दोलन मानने लगे है। जो सही नही है। स्वाधीनता के बाद जातपात छुआछूत और यहा तक कि सती जैसी कुरीतिया पुन बढ रही है। यही इस बात का प्रमाण है कि जब से हमने धर्म निरपेक्षता या समभाव के नाम पर इनके समर्थको की समालोचना न करने की नीति अपनायी है तब से उन्हे पुन एक नवजीवन प्राप्त होने लगा है। यहाँ तक कि कुछ अल्पमत के लोग धर्म के नाम पर राष्ट्रगीत राष्ट्रीय झण्डा सविधान तक का विरोध करने लगे है। बहु विवाह व तलाक तथा स्त्रियो के प्रति होने वाले अन्यायो तथा अत्याचारो तक का धर्म निरपेक्षता के नाम पर समर्थन किया जा रहा है।

निष्कर्ष—उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विचार स्वतत्रता तक और विज्ञान के इस युग मे केवल धर्म के नाम पर प्रचलित कुरीतियो और अन्धविश्वासो का निराकरण करने के लिये उनका परीक्षण और आवश्यक हो तो समीक्षा और खण्डन करना न केवल आवश्यक है अपितु अनिवार्य भी है अन्यथा जिन राजनैतिक सामाजिक और धार्मिक निर्बलताओ के कारण हमारे देश का पतन हुआ और सैकडो वर्षो तक उसे पराधीनता का शिकार होना पडा उसकी पुनरावृत्ति हो सकती है। ⊙⊙

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से पुरस्कृत

आचार्य दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित साहित्य के विचार बिन्दु

सकलनकर्ता—वीरेन्द्र कुमार आर्य

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा इस वर्ष दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अजमेर के सस्थापक/प्राचार्य श्री दत्तात्रेय वाब्ले आर्य को आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उनके द्वारा हिन्दी, अग्रेजी मे लिखी गई लगभग एक दर्जन छोटी-बडी पुस्तकें हैं। जिनमे हिन्दू विदाउट हिन्दूजिम और उसका हिन्दी रूपान्तर आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही तथा राष्ट्रीय चरित्र और एकता, सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला, देश धर्म और समाज को आर्य समाज की देन और विद्यार्थियों के लिए 'आचार सहिता' प्रसिद्ध हैं। इसमे जो मौलिक विचार व्यक्त किए गए है उनका सक्षिप्त परिचय देना इस अवसर पर आवश्यक और प्रासगिक प्रतीत होता है।

आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं

उनकी विकास पब्लिकेशन द्वारा द्वारा प्रकाशित सबसे प्रसिद्ध अग्रेजी पुस्तक दी आर्य समाज-हिन्दू विदाउट हिन्दूजिम' है जिसका उन्ही के द्वारा किया गया हिन्दी रूपान्तर 'आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही'' है। इसमे उन्होने ऋषि दयानन्द की मान्यताओ, ग्रन्थो और आर्य समाज के ऐतिहासिक सन्दर्भ मे यह स्पष्ट किया है कि आर्य समाज कोई नवीन धर्म या पन्थ नही है। वह उस प्राचीन सार्वभौम वैदिक धर्म का समर्थक है जिसे ऋषि दयानन्द द्वारा पुन प्रतिपादित किया गया है किन्तु वर्तमान हिन्दू धर्म से वह सर्वथा पृथक् और भिन्न है।

आर्य या हिन्दू

यद्यपि हमारा वास्तविक और गौरवपूर्ण नाम आर्य ही है फिर भी ऐतिहासिक, सामाजिक और सास्कृतिक दृष्टि से आर्य समाज के अनुयायी हिन्दू समाज के एक घटक के रूप मे गैर धार्मिक अर्थ मे हिन्दू हैं। वस्तुत हिन्दू धर्म नामक कोई सगठित धर्म नही है। प्रचलित अर्थ मे जिसे हम हिन्दू धर्म कहते है उसका तात्पर्य सनातनी या पौराणिक धर्म से है। आर्य समाज उसका सम्प्रदाय न होकर अपना एक पृथक धार्मिक अस्तित्व रखता है।

हिन्दू एकता और संगठन के लिए आर्य समाज अनिवार्य

पौराणिक काल के गत सैकडो वर्षो के इतिहास से स्पष्ट है कि हिन्दू समाज की ही नही अपितु सारे देश की राजनैनिक दासता, राष्ट्रीय पतन तथा सामाजिक धार्मिक आदि क्षेत्रो मे निरन्तर गिरावट का एक मात्र कारण हिन्दुओ की मूर्ति पूजा और उससे सम्बन्धित अन्य धार्मिक अन्ध-विश्वासो और जात-पात, छूआछूत आदि सामाजिक कुरीतिया रही हैं इसलिए इनका निराकरण किए बिना हिन्दू राष्ट्र तो क्या हिन्दुओ की एकता और किसी सगठन तक का निर्माण असम्भव है। यह कार्य एक स्वय गतिशील और प्रभावशाली आर्य समाज जैसे क्रान्तिकारी आन्दोलन के द्वारा ही किया जा सकता है। हिन्दुओ की एकता और सगठन के अन्य सब प्रयत्न इसके बिना असफल होगे। हिन्दू विश्व परिषद, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ और आर्य समाज मे यह महत्वपूर्ण और दूरगामी अन्तर है।

आर्यसमाज केवल समाजसुधार आन्दोलन नहीं

वाब्ले जी की यह भी मान्यता है कि आर्यसमाज केवल समाज सुधारिका सस्था नही है अपितु एक धार्मिक सगठन भी है। यह सामाजिक सुधार कार्य केवल उसकी धार्मिक मान्यताओ के परिणाम मात्र है और उसका मुख्य उपदेश ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करना है इसलिए केवल एक सुधार आन्दोलन के रूप मे उसे हिन्दू धर्म की नमक की खान मे विलीन होने से बचाना उसके तथा स्वय हिन्दुओ के हित मे है।

धर्म निरपेक्ष या सर्वधर्म सापेक्ष

धर्म निरपेक्ष राज्य की आधुनिक कल्पना सर्वथा उपयुक्त व तर्कसगत है विशेषकर भारत की विशेष परिस्थिति में यह और भी अधिक आवश्यक है कि आज किसी एक सगठित धर्म के प्रति पक्षपात न करें किन्तु दुर्भाग्य से हमारे नेताओ ने राजनैतिक कारण से इस सर्वमान्य सिद्धान्त को एक विकृत रूप देकर धर्म निरपेक्ष राज्य के स्थान मे एक सर्वधर्म सापेक्ष राज्य की नीति अपना ली है। जिसके परिणाम स्वरूप बहुसख्यक किन्तु असगठित हिन्दू धर्म के प्रतिकूल सगठित अल्प सख्यक धर्मो के अनुयायियो को देश विरोधी अनुचित मागो को प्रोत्साहन मिल रहा है। दूसरी और स्वय हिन्दुओ की अनेक धार्मिक और सामाजिक कुरीतियो को भी धर्म निरपेक्षता के नाम पर प्रोत्साहन मिल रहा है।

सर्वधर्म समभाव केवल कल्पित आदर्श

सर्वधर्म समभाव व्यक्तिगत जीवन का आदर्श तो हो सकता है किन्तु वह किसी राज्य या राष्ट्र की नीति का आधार नही हो सकता। ऐसा करना और विशेषकर भारत की विशेष परिस्थिति मे अवाछनीय तथा अव्यवहारिक दोनो ही है।

साम्प्रदायिकता का अर्थ

साम्प्रदायिकता क्या है? यह अभी तक किसी सविधान या कानून मे परिभाषित नही है किन्तु भारतीय परिप्रेक्ष्य मे उसका अर्थ कार्य और विचार है जो हमारे देश की एकता और अखण्डता को चुनौती देते है। बहुसख्यक हिन्दुओ की अपरिभाषित साम्प्रदायिकता अन्य सम्प्रदायो के के विरुद्ध हो सकती है किन्तु वह साधारणत ही राष्ट्र विरोधी नही हो सकती दूसरी और अल्प सख्यको और विशेषकर इस्लाम की धार्मिक कट्टरता और साम्प्रदायिकता न केवल अन्य सम्प्रदायो के लिए अनिष्ट कर है अपितु वह प्राय राष्ट्र विरोधी भी है। इस्लाम धर्म निरपेक्ष राज्य का विरोधी है और भौगोलिक राष्ट्रीयता को भी वह स्वीकार नही करता, पाकिस्तान का निर्माण इसका उदाहरण है।

राष्ट्रीयता का आधार सस्कृति

हमारी धर्म निरपेक्ष राष्ट्रीयता का आधार केवल भौगोलिक एकता पर नही रखा जा सकता, राष्ट्रीयता एक भावनात्मक एकता का नाम है, इसीलिए उसका आधार एक आधुनिक और प्रगतिशील सास्कृतिक धरातल पर ही रखा जा सकता है जिसे हमे मिली जुली या हिन्दू मुस्लिम सस्कृति न कहकर एक भारतीय सस्कृति कहना और बनाना चाहिये।

राष्ट्रीय चरित्र बनाम व्यक्तिगत चरित्र

सास्कृतिक एकता के इसी धरातल पर हमे अपने नवयुवको मे एक विशेष प्रकार के राष्ट्रीय चरित्र का विकास करना आवश्यक है। अभी तक इस चरित्र का अर्थ केवल व्यक्तिगत व्यवहारो तक सीमित करते रहे हैं किन्तु इन दोनो मे अन्तर है और होना चाहिये। प्राय सब धर्म अपनी-अपनी कल्पना के अनुसार व्यक्तिगत चरित्र पर ही जोर देते है। हमे एक ऐसे धर्म निरपेक्ष राष्ट्रीय चरित्र पर बल देना चाहिये जो प्रत्येक भारतीय, चाहे वह किसी धर्म जाति सम्प्रदाय का हो उसके व्यक्तिगत और सार्वजनिक व्यवहारो से प्रकट होता है।

वाब्ले जी ने इसी दृष्टि से एक आचार सहिता सग्रहित की है जिसका सर्वत्र स्वागत हुआ है।

निश्रेयस से पहले अभ्युदय

यतोऽभ्युदय निश्रेयस समिद्धि स धर्म'।

देश को सैंकडो वर्षो की धार्मिक और सामाजिक और विशेषकर राजनैतिक दासता के कारण हिन्दुओ ने जहा अपनी निर्बलता को तथाकथित उदारता और सहनशीलता का नाम देना प्रारम्भ किया वहीं अपनी आर्थिक और भौतिक दुर्दशा को आध्यात्मिक और परलौकिक काल्पनिक श्रेष्ठता के नाम पर स्वीकार करना प्रारम्भ कर दिया है। ऋषि दयानन्द इस युग के पहले महापुरुष थे जिन्होने इस जीवन मे अभ्युदय को परलौकिक निश्रेयस या कल्याण के समान नही अपितु उससे भी अधिक महत्व देकर हमारे दृष्टिकोण मे क्रान्तिकारी परिवर्तन करने का प्रयत्न किया है। कर्म के स्थान मे पुरुषार्थ असमानता के स्थान मे समानता, पराजय के स्थान मे जय, तपस्या के स्थान मे बल और शक्ति, और दासता के स्थान मे स्वराज्य के नवीन आदर्श इन्होने हमे दिये।

भिन्नता में एकता

दुर्भाग्य से भिन्नता हमारे देश की एक वास्तविकता रही है किन्तु उसे हम अपना आदर्श समझने का

(शेष पृष्ठ 5 पर देखें)

धर्म (?) के नाम पर राजनीति में हस्तक्षेप सिख धर्म के विरुद्ध है।

आय समाज धम के विषय मे अपने स्वतन्त्र व शास्त्रोक्त विचार रखता है। परन्तु आज इसके विपरीत ममाज मे मजहब व सम्प्रदाय को भी धम के अथ मे ही लिया जाता है धम का ही वाचक समझा जाता है। इसीलिए आज जब धम विहीन राजनाति की माग या बात की जाती है तो वस्तुत उसका आशय साम्प्रदायिकता विहीन राजनीति से होता है।

हम पाठको के लाभाथ 18 माच के 'टाइम्स आफ इन्डिया मे प्रकाशित श्री पी जे सिंह के लेख का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर रहे है। कृपया इस लेख को उपयुक्त सदभ मे ही ल। सपादक

अन्य धर्मों की तरह सिख धम मे पुरोहितो के लिए कोई स्थान नही है। इसके दो सम्भावित कारण हो सकते हैं। पुरोहितो का नैतिक पतन एव उनम व्याप्त भ्रष्टचार व दुराचार इसका पहला मूल कारण हो सकता है। सिख धम मे आस्था रखने वाले अपने धार्मिक कर्त्तव्यो का पालन करें व ईश्वर प्राप्ति हेतु स्वय साव प्रयत्न करें। वे इसके लिये पुरोहितो पर आश्रित न रहे एसी इच्छा सिख गुरुओ की थी। यही इच्छा दूसरा सम्भावित कारण हो सकता है। यद्यपि कुछ सिख परिवारो ने ग्र थियो व रागियो का व्यवसाय कई पीढियो से अपना रखा है परन्तु इन्हे पुरोहितो के रूप म मान्यता कभी नही मिली। सक्षप मे सिख धम म पुरोहितो की व्यवस्था के लिए कोई स्थान नही है। नि सदेह बाबा बुढा जी भाई मानी सिंह बाबा दीपसिंह इत्यादि जत्थेदारों का सिख समाज मे असीम आदर व व सम्मान प्राप्त रहा है। इस सम्मान का मूल कारण इन जत्थेदारो की विद्वता पवित्रता नैतिकता व ईमानदारी जस गुण थे न कि उनका पद।

उपरोक्त वर्णित तथ्यो की पृष्ठ भूमि म उच्च कोटि के जत्थेदारो द्वारा असाधारण शक्ति ग्रहण करना व मनमाने फरमान व हुक्मनामे जारी करना सिख धम के नियमो का खुला उल्लघन है। य जत्थेदार अपने राजनतिक प्रभाव व गठबधन के कारण अपने पदो पर आसीन है और सिख समाज मे उनको छवि के मूल म भी उनका राजनैतिक प्रभाव ही है। अत इन के द्वारा जारी किये गये फरमान व हुक्मनामे तर्क सगत कदापि नही हो सकते।

नि सन्देह भूतकाल मे सिख उपदेशको व सामयिक चन्दा सकलन कर्त्ताओ की व्यवस्था थी। परन्तु ये सिख कायकर्ता भ्रष्टाचार व दुराचार मे लिप्त हो गय थे। धन इकट्ठा करने के लिये अपने पद का दुरुपयोग करने लगे थे व धम विरुद्ध व्यवहार करने लगे थे। अत गुरु गोविंदसिंह जी को इस व्यवस्था को समाप्त करना पडा। सिख धम के इतिहास की यह एक मुख्य घटना है। आज भी गुरुद्वारो मे इस घटना पर आधारित बहुत से भजन गाये जाते हैं। सिख इतिहास के जानकार लोग इस घटना से भलीभाति परिचित है। राजा रणजीत सिंह क सत्ता मे आने से पूव सिख इतिहास के मिसल काल Misal Period) मे जत्थेदारो की भूमिका नगण्य है। सिख इतिहास के इस काल मे इस बात का तो उल्लेख है कि ये लोग बैसाखी व दीपावली के अवसरो पर हरमि दर साहब मे सभायें आयोजित करत थे। ज थेदार इन सभाओ मे सिख धम के विषय पर विचार विमश क ते थे। भविष्य मे सम्पन्न किये जाने वाले कार्य का प्रारूप तैयार करते थे। परन्तु सतलज सरदारों मे कुछ ऐसे सरदार भी थ जो स्वय के निहित स्वार्थों के कारण इन सभाओ मे न तो भाग लेत थे न ही इन सभाओ म लिये गये निणयो को स्वीकार करते थे। ऐसा होने पर भी इन क विरुद्ध कोई फरमान जारी किये जाने का किसी घटना का उल्लेख नही मिलता। बल्कि इन सरदारो के वशज आज की अकाली राजनीति मे मुख्य भूमिका अदा कर रहे है।

यद्यपि राजा रणजीतसिंह जी ने दरबार साहब व उसके मुख्य जत्थेदार का सदैव सम्मान किया परन्तु जत्थेदार न कभी राजा रणजीतसिंह जी के राजकीय प्रशासन मे हस्तक्षप नही किया। हरमिन्दर साहब के जत्थेदार ने राजा रणजीतसिंह को केवल उनके द्वारा सिख पथ के धार्मिक नियमो के उल्लघन करने पर ही दण्डित किया। राज्य के प्रशासन को चलाने के लिए सवैधानिक कदमो को लेकर किसी मन्त्री के विरुद्ध फरमान जारी करना कदापि उचित नही माना जा सकता। जत्थेदारो को ऐसा करने की Personal Law भी आज्ञा नहीं देता। सिख धम के इतिहास मे कही भी ऐसा उदाहरण नही मिलता जिसमें कभी जत्थेदारो ने किसी उच्च अधिकारी को उसकी प्रशासकीय त्रुटियो के लिए दण्डित किया हो। अत हरमिन्दर साहब के मुख्य ग्र थी को व अकाल तक्त के जत्थेदारो को राज्य की राजनीति मे हस्तक्षप करने का कोई अधिकार नही है। न ही उन्हे देश के राजनैतिक क्षत्र मे निर्देश देने का अधिकार है।

बरनाला के विरुद्ध हुक्मनामा जारी किया गया। बरनाला ने हुक्मनामे का सम्मान करते हुए आनन्द साहब गुरु द्वारे मे जूते साफ किये। इसमे सदेह नही कि इस का पजाब राज्य के प्रशासन तत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पडा व सिख सेवको जत्थेदारा और नेताओ को अनुचित प्रोत्साहन मिला है जिसका भरपूर लाभ उठाने से वे कभी नही चूकेंगे। बरनाला ने उन पर लगाये गये दोषो का यद्यपि स्पष्टीकरण दे दिया है। परन्तु बरनाला साहब को जत्थेदारो से क्षमा मागने की जिम्मेदारी से अभी मुक्ति प्राप्त नही हुई है। जत्थेदार अभी भी यह मानते हैं कि बरनाला ने उन क धार्मिक अधिकारो का हनन किया है। उचित यह ही होगा कि अब जत्थेदारो की इस मनोवत्ति को बढावा न दिया जाये व उन के प्रति उदासीनता का व्यवहार किया जाये। यदि ऐसा नही किया गया तो इन जत्थेदारो के नाम व उन के द्वारा अनुचित फरमान सिख इतिहास मे एक नवीन अध्याय के रूप मे जुड जायेंगे और यह स्पष्ट है कि ऐसा होना देश के हित मे नही होगा। विशाल सिख समुदाय ने खुलकर जत्थेदारो के राजनैतिक क्षत्र मे हस्तक्षप के विरुद्ध अपनी आवाज उठायी है। यह हम सब के लिए उत्साहवधक है। जत्थेदारो की यह मान्यता कि राजनीति से धम को अलग मान कर नही चला जा सकता कदापि उचित नही। बरनाला साहब को अभी जत्थदारो की इस चुनौती का डटकर पूवक सामना करना है।

श्री गुरुद्वारा प्रबधक स की काय कारिणी के चुनाव के उपरात जत्थेदार कृपालसिंह को हटाकर रागी दशन सिंह को अकाल तक्त के जत्थेदार के पद पर नियुक्त करने से यह सिद्ध हो जाता है कि पजाब मे स्थित सभी तख्तो के जत्थेदार NGPS के वेतन भोगी कमचारी हैं व उसकी मुह बोली तस्वीरें हैं। यह इस बात से भी सिद्ध हो जाता है कि बरनाला के विरुद्ध फरमान का समथन पजाब के बाहर स्थित तख्तो के जत्थेदारों ने बिल्कुल नहीं किया। यदि पजाब के जत्थेदारो को राजनीति मे हस्तक्षप को खुली छूट दे दी गयी व उन के काय कलापो को महत्व दे दिया जाये तो पजाब सरकार NGPS के हाथो मे केवल कठपुतली बन कर रह जायेगी। सिख धार्मिक सस्थाओ का राजनैतिक क्षत्र पर नियन्त्रण करने का उद्देश्य कभी नही रहा। SGPC का गठन राज्य प्रशासन के कानून के अन्तगत किया जाता है इसलिये इसका कायक्षेत्र व अधिकार सीमित है। अत SGPC केवल धार्मिक क्षत्र मे ही सर्वोपरि है राजनतिक क्षत्र मे वह प्रशासन व विधान सभा के अ तगत है। गुरु परपरा के अनुसार गुरुद्वारो का प्रब ध करना ही SGPC के कायकर्ताओ व जत्थेदारो का मूल कतव्य है।

मूखतापूण हत्यायें

जत्थेदारो के लिये राजनीति म भाग लेना अवाछनीय है [illegible] आतकवादियो व पृथकता वादियो म गठबधन करना अत्यधिक आपत्ति जनक है। निर्दोष नागरिको स्त्रियो व बच्चो की आतकवादियो द्वारा का जा रही हत्याओ से समस्त सिख समुदाय को आघात पहुच रहा है। इन से सिखो क सिर लज्जा से झुक गया है। ऐसा होने पर भी जत्थेदार पृथकतावादियो के विरुद्ध एक भी शब्द बोलने को तैयार नही है।

समय समय पर जत्थेदार पथ की एकता के उद्देश्य का राग अलापते रहते हैं। यहाँ पथ की एकता का क्या अथ है? जत्थेदारो के अनुसार पथ की एकता व अकाली एकता दोनो एक दूसरे के पर्यायवाची हैं परन्तु सिख अरदास के अनुसार पथ की एकता व अकाली एकता दोनो बिल्कुल भिन्न है। पथ की एकता का अथ समस्त सिख समुदाय की एकता से है। अकाली नेताओ से मेरा निवेदन है कि वे पथ शब्द का अर्थ अकालीदल से न लगायें उदार दृष्टिकोण का परिचय देकर सिख समुदाय मे पथ व अकाली दल को लेकर फैली भ्रान्ति को दूर करने की कृपा करें। OO

चलते रहो

चलते रहो चलते रहो।

यात्रा कहाँ विश्राम है
पथ म कहाँ आराम है ?
बढना चरण का लक्ष्य है-
चलना पथिक का काम है।
युग की अमा मे प्राण के

लघु दीप से जलते रहो।
चलते रहो चलते रहो।

आशा अटल विश्वास है।
पथी तुम्हारे पास है।
नतन सृजन की शक्तिमय
गतिमय चरण हर श्वास है।
शिव-सत्य के सकल्प तरु

तुम फूलते फलते रहो।
चलते रहो चलते रहो।

बहते हुए रसधार से
जग मैल धोत प्यार से
रुकते हुओ को शक्ति द
जागो उठो तुम ज्वार से।
जग तारणी गगा बहे

हिम शल म गलते रहो।
चलते रहो चलते रहो।

—लाखन सिंह भदौरिया सौमित्र
पना भोजपुरा (मनपुरी उ प्र)

आर्य समाज स्थापना-दिवस मनाया

अजमेर 31 मार्च (कास) आर्य समाज का स्थापना दिवस सेवानिवत्त आयुक्त श्री प्रमसिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

इस मौके पर प्रो बुद्धिप्रकाश आर्य डा देव शर्मा दयानद शोधपीठ के प्रवक्ता डा कृष्णपाल सिंह ने आर्यसमाज के सिद्धान्तो वर्तमान परिस्थितियो मे समाज की भूमिका एव महत्ता पर प्रकाश डाला स्वामी धर्मानन्द जी दयानन्द बाल सदन तथा सुगन तामरा आर्य कन्या विद्यालय के बालक बालिकाओ के मधुर भजन कार्यक्रम भी हुए।

अन्त मे आर्य समाज के मत्री रासासिंह ने आभार व्यक्त किया।

जियालाल शि प्र सस्थान मे यज्ञशाला निर्मित

जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण सस्थान अजमेर के छात्रावास प्रागण मे एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण पूरा हो चुका है। इसके निर्माण के लए बी एड के नियमित तथा अनुसूचित जाति के छात्रो ने करीब 5 500/- रु दान मे दिया। इस यज्ञशाला का उदघाटन सस्थान के सचालक मान्यवर श्री दत्तात्रय आर्य ने दिनाक 28 3 87 को किया।

उदघाटन समाराह पर आर्यसमाज शिक्षा सभा के मत्री श्री कृष्णराव जी वालन मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे और उक्त अवसर पर श्री बुद्धि प्रकाश जी आर्य के द्वारा भव्य यज्ञ समारोह आयोजित किया गया।

सत्र 1986 87 के सभी बी एड छात्रो ने अपनी अवधान राशि इस यज्ञशाला के विकासार्थ दान मे देने की घोषणा की वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

डा रामपाल सिंह
प्राचार्य

आचार्य दत्तात्रय आर्य द्वारा लिखित

(पृष्ठ 3 का शेष)

भूल कर रहे है। वर्तमान भिन्नताओ को कम करने के स्थान मे उनको प्रोत्साहित करने तथा उसमे और अधिक वृद्धि करना आत्मघाती सिद्ध होगा। भिन्नता की वास्तविकता का आदर्श समझने या बनाने के स्थान मे हमे एकता के आदर्श को वास्तविकता बनाने का प्रयत्न करना चाहिये

हिन्दुओं का उत्तरदायित्व

इस देश की लगभग 8 प्रतिशत जनसख्या हिन्दुओ की हैं। इस लिए इस देश की स्वाधीनता राष्ट्रीयता और प्रगति की सुरक्षा करना उनका विशेष कर्तव्य है दुर्भाग्य से उनम प्रचलित मूर्तिपूजा जातपात छुआछूत आदि धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतिया ही इस देश की एकता के लिए सबसे बडा खतरा हैं। इसलिए जहाँ बहुमत के कारण उनके अनेक अधिकार हैं वहा इन राष्ट्र विरोधी कुरीतियो का निराकरण करना भी उनका ही बडा उत्तरदायित्व है। यह इसी लिए नहीं कि व हिन्दू हैं अपितु इसी लिये कि देश का बहुमत उनका है और उसके हित अहित म सबका सबसे बडा हित या अहित है।

अन्तर्जातीय विवाह

जात पात का ऐतिहासिक अभिशाप और उससे उत्पन्न छुआछूत के कलक के निराकरण का अब एक मात्र उपाय कानून द्वारा अन्तर्जातीय विवाहो को अनिवार्य करना है इसके सिवाय इस असाध्य प्राय रोग का और कोई उपाय नहीं है। अभी तक केवल स्वजातीय विवाह ही वैध और कानूनी समझे जाते थे और अन्तर्जातीय विवाहो को अवैध माना जाता था। अब इसका निराकरण करने के लिए अन्तर्जातीय विवाहो को ही वैध और कानूनी बनाकर अनिवार्य किया जाना चाहिये।

ऋषि दयानन्द की विचार क्रान्ति

ससार की क्रान्तियो का मूल आधार विचारो की क्रान्ति रहा है प्राय सब इतिहासवेत्ता आर्य समाज के सस्थापक ऋषि दयानन्द को उन्नीसवी सदी का महान क्रान्तिकारी विचारक मानते है। उनकी प्रेरणा से आर्यसमाज ने गत सौ वर्षों मे धार्मिक सामाजिक शैक्षणिक और राजनैतिक आदि प्राय सब क्षेत्रो म नयी आकाक्षाए नया विचार नयी आशाए और नयी सम्भावनायें उत्पन्न की हैं।

धार्मिक क्रान्ति

आज के वैज्ञानिक युग मे ईश्वर और धर्म के प्रति अविश्वास का कारण उनके नाम पर प्रतिपादित अन्धविश्वास और प्रचलित निरर्थक रीति रिवाज हैं। आर्यसमाज के रूप में ऋषि दयानन्द ने हमे एक ऐसा जीवन दर्शन दिया है जो हमारी आध्यात्मिक जिज्ञासा मनोवैज्ञानिक आकाक्षा तथा जीवन की व्यावहारिक आवश्यकता को सतुष्ट करता है और साथ ही शाश्वत सत्यो के आधार पर प्रगति का मार्ग भी खुला रखता है। उनके द्वारा प्रतिपादित यह जीवन दर्शन या धर्म मगल और सीधा सादा सबके लिए समान रूप से सार्थक और तर्क विहीन विश्वासो और कर्मकाडो से मुक्त है।

यदि दिवस में ही नहीं कुछ देख पाया

—डॉ (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी

यदि दिवस मे ही नहीं कुछ देख पाया
दीप पाकर के निशा मे क्या करेगा ?

कर्म पथ का पाथ भूला कर्म पथ को
व्यस्त होकर भी स्वय को छल रहा है
विश्व इच्छा का अपरिमित है जहा पर
प्राप्त कारा को स्वय कर मल रहा है
राग पाकर भी नहीं यदि गा सका तू
कठ वचित ताप कब किसके हरेगा ?

नित्य कल की ही प्रतीक्षा कर लेती
हर प्रभात है सृजन क्यो मन करता ?
शक्ति शोषक बन गया उन्मादमय ही
पूर्णता के दम्भ मे प्रिय का न जपता।
ज्ञान होते भी न पहुचा साध्य तक यदि
ज्ञान वचित जड बना कस चलेगा ?

शाप की गाथा बना डाला स्वय को
बस नियति का नाम लकर रह रहा है।
छाह पाकर भी बना निरुपाय कितना
काल्पनिक सताप म उर दह रहा है
पास का अमृत नहीं यदि जान पाया
कौन से पीयूष से घट को भरेगा ?

पता—प्रा सस कालोनी श्यामगज बरली—245005

बुरी लगे, चाहे लगे भली

राम जन्म भूमि का विवाद—

राम जन्म भूमि का विवाद कम होने के स्थान पर समय के साथ-2 क्रमश बढता ही जा रहा है एव निकट भविष्य मे इसके समाप्त होने होने की कोई सम्भावना दिखाई नहीं देती। इस तथ्य की सत्यता मे कोई सदेह नही है कि तथाकथित् स्थान ही ऐतिहासिक राम जन्म स्थान है। गत दिनो दिल्ली मे हुई वरिष्ठ इतिहासकारों की एक सगोष्ठी मे वक्ताओ ने भी अपने अकाट्य-प्रमाणो द्वारा यह सिद्ध किया था। लेकिन मुस्लिम नेता सत्य को अनदेखा कर अपना पुराना 'बाबरी मस्जिद का ही राग अलाप रहे हैं। यहा तक कि वे इस मुद्दे को लेकर मुसलमानो को उत्तेजित कर एक नये साम्प्रदायिक दगे की रूप रेखा बना रहे है। जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुला बुखारी तथा उनके पुत्र नायब इमाम अपनी सभाओ म हिन्दुओ के प्रति जहर उगल रहे है, कुख्यात तस्कर हाजी मस्तान अपने नापाक इरादो सहित उत्तर प्रदेश पर मडरा रहा है। घटनाक्रम जिस तरह से घट रहा है, उसे देखकर लगता है कि निकट भविष्य मे साम्प्रदायिक-दगो का तूफान आ सकता है।

सी विषम परिस्थितियो मे हम हिन्दुओ का सम्भावित खतरे के प्रति सावधान करना अपना कर्त्तव्य समझते हुए, उन्हे स्वर्गीय पडित मदन मोहन मालवीय के निम्न शब्दो का स्मरण करने का अनुरोध करते हैं--

'हिन्दुओ की दुर्बलता ही फसादो का कारण बनती है। अब तक जहाँ कही भी फसाद हुए है, हिन्दुओ की दुर्बलता क कारण हुए हैं। मुसलमानो मे जो फसादी हैं उनमे यह भावना घर कर गई है कि हिन्दू बुजदिल और कायर हैं। इसलिए व चट उन पर धावा बोल देत है। हिन्दू भी अपने घरा से निकलकर उनका सामना नही करते। वे कायरा की तरह भाग खड होत है। जब कभी गुडो को यह पता लगता है कि फसाद करने पर उनकी अच्छी खबर ली जायगी वहा व फसाद नही करते। उन्हे ठीक रास्त पर लान का एक ही उपाय है कि हिन्दू सगठित और बलवान बनें। यदि हिन्दू सगठित रह ता गुडो को हमला करने का कभी भी साहस न होगा।

फेयरफैक्स ऊट किस करवट बैठेगा

भले ही श्री राजीव गाधी ने फेयरफैक्स विवाद की सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री ए पी ठक्कर की अध्यक्षता वाली दो सदस्यीय समिति द्वारा जाच करवाने की घोषणा से सम्भावित खतरे से तत्कालीन रूप मे राहत पा ली हो, परन्तु यह निर्विवाद रूप से तय है कि इस काड ने उनकी साफ छवि(?) को गहरा धक्का पहुचाया है। (वैसे असफल अस्पष्ट समझौतो व तथाकथित मुस्लिम विधेयक ने उनकी साफ छवि को छोडा ही कहाँ था।)

अभी तक इस विवाद के विषय मे समाचार-पत्र नित नई-नई एव परस्पर विरुद्ध खबरें दे रहे है। अतएव इस विषय म कोई भविष्यवाणी नही की जा सकती है कि दोषी कौन पाया जायेगा? किन्तु लोकदल महासचिव एस स्वामी जैसे लागो को अपनी इस मान्यता म ता सुधार कर लेना ही चाहिए कि अनाडी से अनाडी व्यक्ति भी गद्दी मिलने पर शासन चला सकता है।

मातृ-शक्ति के सौदागर

गत दिनो एक राष्ट्रीय दैनिक न राज के धौलपुर जिले के विषय मे समाचार प्रकाशित किया है कि वहाँ शारीरिक व्यापार ज़ोरो पर है एव महिलाओ की खरीद-फरोख्त भैस-बकरियो की तरह हाती है। नि सदेह यह समाचार प्रत्यक स्वाभिमानी भारतीय के लिए कलक की बात है [illegible]! अनु हनुमान भीष्म व दयानन्द के देश मे नारी की यह दशा, धिक्कार है हमे!

सरकार को चाहिए कि इस कुकृत्य का रोकने मे की दिशा मे विशेष उद्योग करे। इस अमानवीय-कुकृत्य मे लिप्त लोगो के विरुद्ध कडी कारवाई करे तथा इसके साथ ही इन लोगो की यदि कोई मजबूरी इस कुकृत्य म प्रेरक का काम कर रही है तो उसे भी दूर किया जाए। समाज सेवी सस्थाओ को भी यथा शक्ति सरकार को इस नेक काम में सहयोग देना चाहिए।

विश्वनाथ प्रताप सिंह का त्याग-पत्र

आखिर राजीव गाधी ने श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह का त्याग-पत्र स्वीकार कर यह सिद्ध कर ही दिया कि उनके मन्त्रिमण्डल मे ईमानदार आदमी के लिए कोई स्थान नही है। वैसे यदि 'राजा साहब' की कार्यकुशलता व ईमानदारी के कारण उनकी छवि के सामने मि क्लीन की छवि धु धली दिखाई देने लगी थी तो इसमें 'राजाजी का क्या दोष था?

हम मान्य 'राजाजी' के शुभचिंतक हैं, अतएव हमारा राजाजी को परामर्श है कि अब जबकि उन्हे [illegible] आधुनिक नीति सम्बन्धी ग्रंथो का मनन शील होकर स्व ध्याय करें एव तत्पश्चात इन अनुसार ही आचरण करें।

1 झूठ का बोलबाला।
सत्य का मुह काला॥

2 झूठ बराबर तप नहीं
सत्य बराबर पाप॥

उपसंहार:

कर्नाटक के मुख्यमन्त्री श्री रामकृष्ण हेगडे के 'राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री पत्र विवाद' सम्बन्धी इस कथन पर कि यदि ऐसा किसी अन्य लोकतान्त्रिक देश मे होता तो वहा का प्रधान मन्त्री अपने पद से त्याग पत्र दे देता, किन्तु हमारा देश इतना लाकतान्त्रिक नहीं है। हमारे एक मित्र की प्रतिक्रिया कुछ इस प्रकार थी।

मि हेगडे! यदि अपने देश के प्रधानमन्त्री इतनी छोटी-छोटी बातो पर त्याग-पत्र दे दिया करते तो अब तक भूतपूर्व प्रधानमन्त्रियो के नामों की सूची मे [illegible] नाम न होकर हजारो नाम होते! और फिर— महोदय! आपने भी तो अरक-काड मे मात्र त्याग पत्र देन का ड्रामा ही किया था न?

— वीरेन्द्र आर्य

स्वत्वाधिकार आर्य समाज अजमेर के लिए व प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल [illegible] द्वारा [illegible] मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 162
सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम
सकल जगत को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 3 बृहस्पतिवार 30 अप्रैल 1987
अंक 5 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न: सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

वैशाख शु० 2 सवत 2044
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

आर्य समाज नयी पीढी के चरित्र निर्माण का बीडा उठाये

—विश्वनाथ प्रतापसिंह

समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री सिंह

पूर्व रक्षामन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह आचार्य वाल्ले को गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार प्रदान करते हुए

नई दिल्ली, 19 अप्रैल भूतपूर्व रक्षामंत्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने आज कहा कि हमे भारतीयता से अनुप्राणित मूल्य निष्ठ शिक्षा प्रणाली अपनानी चाहिए। जो किताबी ज्ञान तक सीमित न होकर मानवीय आचरण के सभी पहलुओं का स्पर्श करे।

श्री सिंह आज यहा डी ए वी शिक्षण आन्दोलन के प्रणेता महात्मा हंसराज जी की जयन्ती पर आयोजित समारोह में भाषण कर रहे थे। उन्होने कहा कि अच्छे इंसान बनकर ही हम स्वामी दयानन्द और महात्मा हंसराज जैसे महापुरुषो को उपयुक्त श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

श्री सिंह ने आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओ से अपील की कि वे समाज के सभी वर्गों को एक सूत्र मे पिरोकर राष्ट्रीय एकता की नींव मजबूत करने मे सहयोग दें। भूतपूर्व रक्षामंत्री ने इस अवसर पर आर्य समाज की उन विभूतियो का गुरुकुल कांगडी द्वारा प्रदत्त आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मान किया। जिन्होने अपना सारा जीवन शिक्षा के प्रसार और सामाजिक उत्थान के लिए अर्पित किया है। उल्लेखनीय है कि आर्य समाज अजमेर के प्रधान आचार्य वाल्ले को भी उपर्युक्त पुरस्कार से श्री सिंह ने सम्मानित किया।

श्री सिंह ने आर्यसमाज को नयी पीढीके चरित्र निर्माण का बीडा उठाने की सलाह दी और कहा कि चरित्र पुस्तक से ज्यादा कीमती है। उन्होने कहा कि शिक्षा की परीक्षा मानवीय व्यवहार मे होनी है अत समग्र मानव का निर्माण करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा राज. की राज्य सरकार से मांग—

अजमेर के विश्वविद्यालय का नाम दयानन्द विश्वविद्यालय हो

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने अजमेर में खुलने वाले विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय' रखने की माग राजस्थान सरकार से की है सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने राज्य के मुख्यमन्त्री के नाम लिखे अपने पत्र में अनेक तर्क देकर विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द के नाम पर रखने का औचित्य सिद्ध किया है।

श्री छोटूसिंह ने लिखा है-' स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन का अधिकाश समय राजस्थान मे लगाया, आर्य समाज के प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ की रचना भी उन्होने उदयपुर के 'नौलखा' महल म बैठकर की। राजस्थान उनका सबसे बडा परम क्षेत्र रहा है। उन्होने राजस्थान के उद्धार के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। उनकी अन्त्येष्टि भी राजस्थान के प्रमुख नगर अजमेर मे ही हुई।''

श्री छोटूसिंह ने अपने पत्र में दयानन्द स्नातकोत्तर कालेज, अजमेर के अतिरिक्त अजमेर मे चल रही अन्य आर्य शिक्षण संस्थाओ का विवरण भी दिया है।

आर्यसमाज अजमेर ने भी इस आशय का एक प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित कर राज्य के मुख्यमन्त्री व शिक्षा मंत्री को भेजा है।

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य प्रधान संपादक : रासासिंह संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य ☎ कार्या : 21010

सम्पादकीय

प्रतिनिधि सभा का अलवर अधिवेशन

गत 11 एव 12 अप्रल 1987 ई को अलवर मे आय विद्यामंदिर के विशाल सभागार मे आय प्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक अधिवेशन हुआ जिसमे राजस्थान प्रान्त की अधिकाश आय समाजो के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा की कायवाही को देखकर तो मुझ गुप्त जी की निम्न पंक्तियाँ सहज ही याद हो आई कि—

हम क्या थे ? क्या हो गये ?
क्या होगे अभी।'
आओ मिल कर विचारें देश
(सभा) की समस्यायें सभी ॥

कई बार तो मछली बाजार का सा दृश्य उत्पन्न हो जाता था। अध्यक्ष जी के लिये सभा का सचलन भी कठिन हा जाता था। हमारी वाक शूरता के दशन वहाँ स्पष्ट हो रहे थे साथ ही हमारी कमवीरता के धीरे धीरे लुप्त होने के सकेत भी आ रहे थे। यद्यपि लोगो मे जोश था आक्रोश भी था कुछ कर गुजरने की तमन्ना भी थी परतु दिशा हीनता स्पष्ट दृष्टिगत हो रही थी। कौन किसको दोष दे। आखिर हम सभी उसी नाव मे सवार है।

आज आयसमाज मे ऊपर से नाचे तक सक्षम सबल एव याग्य नेतृत्व का अभाव हो रहा है वोट बटोरु चुनावो के नाम पर यत्र तत्र गुटबन्दी घेरेबन्दी और जोड तोड हो जाती है परिणाम स्वरूप अपक्षित बदलाव नहा आ पाता। एक और बात है कि पहले के आयजनो मे मनसा वाचा कमणा प्रमाणिकता हाती थी परतु अब तो यहा पर भी प्रत्यक्ष प्रिय वादिन परोक्ष काय स्तार की प्रवत्ति प्रबल हो चली है फलस्वरूप चुनावी हथकण्डो मे माहिर लोगा के सामन शराफत घटने टेक देता है।

आज हम प्रात के आय एव उपलब्धियो के नाम पर अगर मगर की बात कह कर अपना हित साधन है पर हम जिस दयानन्द वैदिक धम और आय समाज के रहबर हैं हमारे कन्धो पर जो दायित्व है उसका हम भली भाँति पालन नहा कर पा रहे हैं। कवि ने क्या ही सुदर बात कही है—

तू अगर मगर की बात न कर
यह बता कि कारवा क्यू लूटा।
मुझ राहजनी से गरज नही
तेरी रहबरी का सवाल है ॥'

आज 11 वष बीतने को आ रहे हैं पर प्रतिनिधि सभा के पास अपना भवन नही अपना अब तक का रिकार्ड नही। अपनी समस्त सम्पत्ति की सूची नही है। कई स्थानो पर समाज मदिर बन्द पडे हैं अथवा अनधिकृत व्यक्तियो ने कब्जे कर लिये है कई समाजा मे दो धडे हैं। प्रतिनिधि सभा की अपनी कही जाने वाली सम्पत्ति पर भी किरायेदार अथवा अन्य लोग काबिज हैं। प्रतिनिधि सभा के पास नाम मात्र के उपदेशक भजनोपदेशक एव प्रचारक है। जो हैं उनकी भी समुचित व्यवस्था नही। यह सब बताने का उद्देश्य आलोचना अथवा बुराई करना नही अपितु वस्तु स्थिति का दिग्दशन कराना है। जो हम सब के लिए विचारणीय है।

नही चाहते हुए भी अलवर अधिवेशन मे चुनाव को लेकर अप्रिय कटुता उत्पन्न करने को कोशिश की गई। कुछ लोगो ने जान बूझकर दो मित्रो को अध्यक्ष के चुनाव मे आमने सामने ला दिया। यह साफ दृष्टिगत हो रहा था कि पूव मे कायरत अध्यक्ष ही पुन दावेदार हैं इच्छुक है उनकी सब प्रकार से पूरी तयारी है पर फिर भी परिवतन के हामी कई बुद्धिजीवियो तथा अन्य उत्साही आयजनो ने चुनाव के लिये सवथा अनिच्छुक एव बार बार मना करने और असमथता प्रकट करने वाले महानुभाव को सामने खडा किया पर ऐनवक्त पर उन तथाकथित परिवतन वादियो ने अपना पैतरा बदल लिया और सौदेबाजी के आधार पर यथापूवम् कम्पयत को स्वीकार कर लिया।

खैर जो हुआ सो हुआ। कल जो मित्र थे वे आज भी मित्र ही रहेग। दानो ही महानुभावो ने अपनी सौजन्यता सहृदयता तथा भलमनसाहत का परिचय दकर जो कुछ हुआ उसे भुला कर मिलकर सभा के काय को आगे बढाने का निश्चय व्यक्त किया। श्री छोटूसिह जी प्रधान निर्वाचित हुए और उन्होने वहीं साधारण सभा के सम्मुख श्रीदत्तात्रय आय (वाब्ले) को सभा का वरिष्ठ उपप्रधान घोषित किया।

हम आशा और अपेक्षा करते हैं कि अलवर अधिवेशन के पश्चात् सभा का काय गति पकडेगा प्रभावी बनेगा और हम प्रान्त के कोने कोने में ऋषि के सदेश को पहुचाने मे कामयाब होवे। अन्यथा—

वह वक्त भी देखा है
तवारीख की घडियो ने
लम्हो ने खता की है
सदियो ने सजा पाई।

—रासासिह

आचार्य श्री गोवर्धन शास्त्री : एक परिचय

श्री आचाय गोवधन जी शास्त्री (1881 1927) आयसमाज के एक निष्ठावान कायकर्ता थे। स्व गोवधन जी ने भारतीय सस्कृति और जीवन दशन के प्रचार प्रसार मे अनुकरणीय योगदान दिया। आचाय गोवधन जी विचारक चिन्तक और लेखक एव उच्चकोटि के सम्पादक भी थे। उन्होंने फ्रेंच दाशनिक रूसो के विख्यात ग्रथ एमिल का माँ और बच्चे नाम से हिन्दी मे अनुवाद किया था गुरुकुल कागडी के मुख्याध्यापक के रूप मे उन्होने हिन्दी मे भौतिकी तथा रसायन की पुस्तको की इस शताब्दी के प्रथम दशक मे रचना की यह पुस्तक कई वर्षों तक इन विषयो पर मुख्य पुस्तकें मानी जाती रही। उन्होने 1915 मे दिल्ली मे हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका प्रहलाद के सम्पादक का उपक्रम भी किया जो अर्थाभाव के कारण दीघ जीवन हो पाया। उन्होने सस्कृत भाषा प्रचार के लिए और महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए जीवन पयन्त काय किया। उनकी स्मृति मे हा उनके द्वारा स्थापित सनड विद्या सभा के अन्तगत वदिक साहित्य और आय मूल्यो के प्रचार का काय गोवधन ज्योति माला के रूप मे किया जा रहा है।

आपकी स्मृति मे सनड विद्या सभा ट्रस्ट ने कई महान विभूतियो को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के माध्यम से गोवधन पुरस्कार भी प्रदान किये हैं। पुरस्कार प्राप्त करने वालो मे आचाय राम प्रसाद वेदालकार (1981) डा० भवानी लाल भारतीय 1982) पडित विश्वनाथ (1983) विद्या मातण्ड पडित सत्यकाम (1984) वेद मातण्ड पडित भगवत् दत्त (1985) वेद मातण्ड आचाय प्रियव्रत और शतायु लाला सतराम बी ए (1986) के नाम उल्लेखनीय हैं। 1987 मे सनड विद्या सभा ने डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार आचाय दत्तात्रय वाब्ले तथा लाला चेतनदास (मरणोपरान्त) को सम्मानित किया है।

आचाय गोवधन जी के दोनी पुत्र श्री—बलभद्र कुमार हूजा व श्री भूपेन्द्र हूजा भारत सरकार के उच्चतम प्रशासनिक अधिकारी रहे हैं। वास्तव मे वे योग्य पिता की योग्य सतानें हैं।

पाठको से निवेदन :—

सदस्यता शुल्क शीघ्र भेज —

आपकी सेवा मे विगत कइ माह से आय पुनगठन नियमित रूप से प्रषित किया जा रहा है। इस सदभ मे आपसे विनम्र निवेदन है कि पत्र का वार्षिक शुल्क मात्र 15/- MO द्वारा भेजने का कष्ट कर जिससे हम आर्थिक समस्या से मुक्त हो पत्र का नियमित प्रकाशन करते रह सक।

सहयोग की कामना मे।

—व्यवस्थापक

आचार्य श्री गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार

शीर्षस्थ शिक्षाशास्त्री

आचार्य श्री दत्तात्रेय वाल्ले

के कर-कमलों में सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्रम्

श्रद्धेय आचार्य जी !

दयानन्द कालेज अजमेर के प्रधानाचार्य के रूप मे आपकी ख्याति राजस्थान की सीमाओ को पार कर सम्पूर्ण देश मे पहुँची है। 5 सकायो, 12 स्नातकोत्तर विभागो, वाणिज्य, विज्ञान तथा कृषि मे स्नातक विभागो की स्थापना कर अपने प्राचार्य-काल मे इस महाविद्यालय की जो सर्वांगीण उन्नति आपने की, वह हर शिक्षा-शास्त्री के लिए स्पृहा की वस्तु है। आप कुशल प्रशासक, निष्ठावान प्राध्यापक तथा बहुआयामी शिक्षा के पारगत मर्मज्ञ रहे हैं। इसके अतिरिक्त अनाथ, निर्धन और निराश्रित बालक-बालिकाओ के पालन पोषण तथा शिक्षा-दीक्षा के लिए भी दयानन्द बाल सदन जैसी आदर्श शिक्षण-सस्था का आप पिछले 32 वर्षों से सफलतापूर्वक सचालन कर रहे हैं। आपके अथक परिश्रम और सूझ बूझ के कारण ही यह सस्था आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनी और बड़े उत्साह के साथ भी समानता के आधार पर बच्चो को शिक्षा प्रदान करने का कार्य कर रही है। आपका ही प्रताप है कि इस सदन से एक सौ पच्चीस अनाथ बालक-बालिकाओ के नि शुल्क रहन-सहन और शिक्षा पर यह सस्था प्रतिवर्ष एक लाख रुपये के लगभग व्यय करती है।

मान्यवर !

आपकी शिक्षा बनारस, इलाहाबाद तथा लखनऊ विश्वविद्यालय मे हुई। इतिहास तथा राजनीतिशास्त्र मे स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की। मेयो तथा डी0 ए0 वी0 कालेज मे शिक्षण का कार्य किया तथा 'राष्ट्रीय चरित्र और एकता' 'सेवा और सघर्ष', 'आर्यसमाज हिन्दूधर्म का सम्प्रदाय नहीं', 'माडर्न इण्डिया एण्ड हिन्दूइज्म' तथा 'देश, धर्म और समाज को आर्यसमाज की देन', जैसी चर्चित पुस्तक लिखी। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थमाला, धर्मशिक्षा तथा आर्यसस्था परिचय निदेशिका जैसी पुस्तको का सम्पादन किया। 1935 से 1986 तक आपने 'अजय', 'विजय', 'अनाथरक्षक' तथा 'आय पुनर्गठन' जैसी पत्रिकाओ का सम्पादन भी किया। आर्यसमाज और उसके सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र मे की गई आपकी सेवाएं अविस्मरणीय रहेगी। वैदिक साहित्य और आर्यसमाज के अवदान पर गम्भीर शोधकार्य के लिए डी ए वी कालेज मे 'दयानन्द शोधपीठ' की स्थापना आपके शिवसकल्प का ही सुफल कहा जा सकता है।

कुशल शिक्षाशास्त्री !

1956 मे शिक्षा, समाजसेवा तथा नागरिक प्रशासन आदि मे आपकी विशेष योग्यता तथा अनुभव से प्रभावित होकर अमेरिका तथा इगलैड मे आपको विशेषरूप मे आमन्त्रित किया गया। वहाँ आपके भाषणो से भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वान विशेष प्रभावित हुए। महर्षि दयानन्द का सदेश विश्व के विचारको ने सुना और लोगो ने जाना कि आधुनिक भारत और हिन्दुत्व क्या है? 'इन्ट्रोडक्शन टू माडर्न इण्डिया एण्ड हिन्दूइज्म' नाम से प्रकाशित आपके भाषण उस विचारधारा का पूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं जो वैदिक ऋषियो ने तपस्या और समाधि के क्षणों मे अनुभव की थी और जिसे ऋषि दयानन्द ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ससार के सम्मुख सर्वप्रथम रखा था। यही कारण है कि दयानन्द कालेज की रजत जयन्ती के अवसर पर आपको उपराष्ट्रपति श्री गोपालस्वरूप जी पाठक द्वारा अभिनन्दन-ग्रन्थ भेटकर देश के शिक्षा-शास्त्रियो ने आपकी सामाजिक सेवाओ के प्रति सार्वजनिक रूप से आदर व्यक्त किया।

आपकी आर्यसमाज के प्रति की गई असाधारण सेवाओ के लिए हम आपके आभारी हैं। अत गुरुकुल कांगड़ी के प्रारम्भिक आचार्यों मे अग्रणी, विज्ञान पर उत्कृष्ट हिन्दीग्रन्थप्रणेता तथा सस्कृतसस्कृतिनिष्ठ विद्वान स्व० श्री गोवर्धन शास्त्री की स्मृति मे **सघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर** द्वारा स्थापित **गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार** से आपको सम्मानित करते हुए हम हर्ष का अनुभव कर रहे हैं।

आप शतायु हो, इस शुभकामना के साथ हमारी श्रद्धा का प्रतीक यह अभिनन्दन-पत्र आपके कर-कमलो मे सादर समर्पित है।

रामचन्द्र शर्मा
कुलपति

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय द्वारा [illegible] शास्त्री पुरस्कार से पुरस्कृत

आचार्य दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित साहित्य के विचार बिन्दु

विदेश यात्रा के संस्मरण

संकलनकर्ता – वीरेन्द्र कुमार आर्य

बा ले जी ने सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम के अमेरिकन सरकार के निमन्त्रण पर अपनी अमेरिका यात्रा तथा ब्रिटिश काउंसिल के निमन्त्रण पर इंगलैण्ड और यूरोप की सन 1956 मे यात्रा की तथा दूसरी बार जापान आदि से होकर विश्व यात्रा करके वे सन 1983 मे लौटे।

उनकी अमेरिका की यात्रा अत्यन्त व्यस्त रही और उस विशाल देश के प्राय सब राज्यो मे उन्हे जाने का अवसर मिला। वहा विश्वविद्यालयों रोटरी क्लबो नगर परिषदो और अनेक धार्मिक व सामाजिक संगठनो और प्रमुख व्यक्तियो से उनकी भेंट की व्यवस्था की गई। सैन फ्रांसिसको के तत्कालीन मेयर सुप्रसिद्ध बाज क्रिस्टफर ने उन्हे परम्परागत नगर की बड़ी कुंजी भेंट करके उनका नागरिक अभिनन्दन किया। इसी प्रकार से इंगलैण्ड मे पार्लियामेण्ट के दोनो सदनों प्रमुख विश्वविद्यालयो पब्लिक स्कूलो के अतिरिक्त उन्हे वहा तथा यूरोप के प्रमुख देशो के दर्शनीय स्थान देखने का अवसर मिला। इन सबका रोचक वर्णन उन्होने अपनी अंग्रेजी की पुस्तक दी टू वे ट्रैफिक (The Two Way Traffic) मे किया है। इसी प्रकार इन देशो मे आधुनिक भारत का परिचय देते हुए उन्होने स्वतन्त्र भारत की राजनैतिक सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियो पर जो विचार व्यक्त किये उनको भी अपनी एक अन्य अंग्रेजी पुस्तक An Introduct on to Mcdern India and Hindu sm मे संकलित किया है। इसमे उनकी मुख्य स्थापना यह रही है कि भारतीय पुनर्जागरण का वास्तविक प्रारम्भ धार्मिक, सामाजिक सुधार आन्दोलनो से हुआ जिसमे ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की प्रमुख भूमिका थी। इसी नींव पर गांधीजी ने राजनैतिक स्वाधीनता के भवन के निर्माण का काम प्रारम्भ किया जिसे पूरा करने का श्रेय सरदार पटेल और जवाहर नेहरू को है।

इस पुस्तक मे वर्तमान विकृत हिन्दू धर्म के सम्बन्ध मे विदेशो मे प्रचलित भ्रान्तियो का निराकरण करने के लिए उन्होने उसके तर्क सम्मत और सीधे मार्ग उस वैदिक स्वरूप को उजागर करने का प्रयत्न किया जिसका आर्य समाज आधुनिक संस्करण है। इन दोनो पुस्तको की अनेक प्रतियां विदेश जाने वाले छात्रों का भेंट करने के लिये क्रय की जाती रही है। अत अब दोनों पुस्तकें अप्राप्त हैं।

इन पुस्तको में उनके संस्मरणो और अनुभवों पर आधारित कुछ अन्य बिन्दु निम्न प्रकार हैं।

भारत के समान अमेरिका भी अनेक धर्मों जातियो तथा राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों का देश है किन्तु वहा का धार्मिक और सामाजिक खुशहाली तथा लम्बी स्वाधीनता की परम्परा के कारण अमेरिका निवासियो के राष्ट्रीय चरित्र की कुछ विशेषताए है। अनेक रंग व नस्लो के व्यक्तियो के साथ रहन के कारण उनमे नीग्रो जिन्हे अब काले कहा जाता है उन्हे छोड़कर) रंग या नस्ल के विरुद्ध विशेष पक्षपात नही है। अंग्रेजो के विपरीत अमेरिकन अधिक उदार और साथ ही भावात्मक भी हैं। भारत के सम्बन्ध मे उच्च शिक्षित वर्गो मे कौतूहल उत्सुकता के साथ एक विशेष सद्भावना दृष्टि गोचर होता है किन्तु रशिया और विशेषकर साम्यवाद के विरुद्ध डर और शंका के कारण भारत और विशेषकर स्वर्गीय नेहरू जी की गुट निरपेक्ष नीति को वे हितकर और अनुकूल नही समझते। जैसा बाल्लेजी ने अमेरिका यात्रा संबधी अपनी अंग्रेजी की पुस्तक he Two Way Trafic मे लिखा है उन्होने अमेरिका मे इस भ्रम को यह कहकर दूर करने का प्रयत्न किया कि अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को अनुचित समर्थन भारतीय विदेश नीति को प्रभावित करता है। भारत को अपने हित मे भी एसा करना जरूरी है। व्यक्तिगत जीवन की स्वतन्त्रता के कारण वहा स्त्री पुरुषो के सम्बन्धो आदि मे विकृति और नई पीढी के युवक युवको मे स्वच्छन्दता बढती दिखाई देती है।

यूरोप के कुछ देशों और खास कर इंग्लैण्ड मे साम्राज्यवाद की परम्पराओ का प्रभाव समाप्त नही हुआ है यह इनके व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन से स्पष्ट दिखाई देता है। यद्यपि अंग्रेजी भाषा से अनेक यूरोपीय देशो में काम चल जाता है किन्तु फ्रांस जर्मनी, इटली ग्रीस और हालैण्ड मे वे अपनी अपनी भाषाओ को ही महत्व देते हैं और सरकारी काम काज में इन्ही का उपयोग होता है। प्रथम दो युद्धो के कारण इन देशो के रहन-सहन तथा दृष्टिकोणों मे भी पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है। उनके धार्मिक और राजनैतिक जीवन मे भी इसका प्रभाव है।

पूर्व मे जापान के निवासियो की अनुशासन प्रियता देशभक्ति और अमेरिका और यूरोप से अधिक और औद्योगिक क्षेत्र तक मे सफल प्रतिस्पर्धा भारत जैसे देश के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। जापान मे उद्योग धन्धो तक के क्षेत्र मे हड़ताल नही होती। यदि उन्हे विरोध करना भी हो तो वे अपने कार्यकाल के पूर्व या बाद मे करते है यह उनकी अनुशासन प्रियता व देशभक्ति का प्रमाण है। हांगकांग जैसा छोटा देश भी कई दृष्टियो से सम्पन्न अनुशासित और साफ सुथरा प्रतीत होता है

प्रवासी भारतीय

अमेरिका तथा यूरोप मे प्राय सर्वत्र भारतीय मूल के लोग रहते हैं किन्तु इंगलैण्ड मे उन्हें अब भी अंग्रेजी राज्य की अधीनता का स्मरण कराया जाता है और उनके प्रति आदर तो दूर समानता का भी अभाव है भारतीय पर्यटको तक को इसका कटु अनुभव होता है। दूसरी ओर अमेरिका में बसे भारतीय प्राय सब उच्च शिक्षित और सम्पन्न हैं। उनके प्रति वहां समानता और यहां तक कि आदर पूर्ण व्यवहार का यह भी एक कारण है। दुर्भाग्य से सब भारतीय अपने देश की धार्मिक और विशेषकर प्रान्तीय तथा भाषायी विभिन्नताओं [illegible] करते हैं परिणाम स्वरूप वे [illegible] राष्ट्रीय एकता तथा विशिष्टता की छवि प्रस्तुत नहीं कर पाते।

बाल्लेजी वहां अपनी [illegible] और व्याख्यानो में अमेरिका निवासी भारतीयों को अपने देश की विभिन्नताओ के स्थान पर एकता को प्रदर्शित करने की सलाह देते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के साथ केवल हिन्दी अपनाकर तथा आपस में अन्तर्प्रान्तीय विवाहों द्वारा एक यह कार्य किया जा सकता है। इन देशों मे अनेक देवी-देवता आदि हिन्दू [illegible] नकली योगियों स्वामियो तथा गुरुओं के माध्यम से धार्मिक मतभेदों के अतिरिक्त अनेक दकियानूसी अन्ध विश्वासो रीति रिवाजो का प्रदर्शन हमारे देश के गौरव और प्रतिष्ठा को कम करता है। इन देशो में कुछ मुख्य नगरों में आर्यसमाज भी है किन्तु उनमें मुख्यतः भारतीय मूल के ही लोग भाग लेते हैं वहाँ के निवासियो का आर्य समाज जसे क्रान्तिकारी आन्दोलन की बहुत कम जानकारी है।

बाल्लेजी ने व्यक्तिगत चरित्र के स्थान मे एक विशिष्ट भारतीय राष्ट्रीय चरित्र के संबध में जो विचार व्यक्त किये हैं और उनका व्यावहारिक विवरण अपने द्वारा रचित आचार-संहिता मे दिया है वह उनकी विदेश यात्राओं तथा वहा के इन सब अनुभवो पर ही आधारित है।

मेरठ के दंगों से नकाब उठ रही है—

दगे पूर्व नियोजित थे : मुस्लिम युवको ने आती जाती महिलाओं पर जलती आतिश बाजीयाँ फेंको मोहल्ले के विद्युत कनेक्शन काटे : प्रमुख दगाई मोहम्मद यामीन शिकायतों के बावजूद खुला घूम रहा है दैनिक विश्व मानव के मेरठ प्रतिनिधि की विशेष रिपोर्ट—

मेरठ 21 अप्रैल। जैसे जैसे दगे की आग ठंडी पड़ती जा रही है, वैसे ही इसकी पीठ थपथपाने वालो और इसे हवा देने वालो के चेहरों से नकाब उठती जा रही है इनमे ऐसे चेहरे भी शामिल हैं, जिन्होंने कांग्रेस का और राष्ट्रीयता का जामा पहन रखा है मगर उन्होने साम्प्रदायिकता फैलाने और अधिकारियो को गुमराह करने के अपने प्रयासो मे कोई कमी नही छोडी है।

रविवार की रात को ऐसे ही तत्वो ने सर्किट हाउस मे जिस प्रकार मुख्यमन्त्री वीर बहादुर सिंह को घेर कर उन्हें गलत तरीकों से गुमराह करने का प्रयास किया, उसमें उनके असली रूप सामने आ गये हैं। युवा कांग्रेस का लबादा पहने साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के इन युवको का कहना था कि मेरठ का दगा पुलिस के किसी शराबी इन्सपैक्टर की देन है जब कि दूसरे सम्प्रदाय के लोगो ने इस कहानी को मन घड़न्त बताते हुए स्पष्ट किया था कि शबे बरात की आतिश बाजी के बहाने एक नियोजित तरीको से यह दगा शुरु कराया गया था। एक ही समय मे विभिन्न स्थानो पर हुई हिंसक घटनायें इसके प्रमाण हैं।

जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन भी शबे-बारात को होने वाली आतिशबाजी की आपसी प्रतियोगिता को ही दगे का जन्मदाता करार दे चुका है।

इसके अलावा विभिन्न समाचार पत्रो ने अपनी अलग अलग राय दी है। जब कि दगे के आवाज की कहानी कुछ और ही है। सच्चाई व वास्तविकता से आँखे चार करने की साहस शायद जिला प्रशासन खो चुका है। यद्यपि प्रशासन की अपनी ढीली पकड़ का ही दुष्परिणाम है ये शर्मनाक हादसा क्योंकि सरकारी तंत्र राजनीति से पूरी तरह प्रभावित है इसलिए वह निष्पक्ष व स्वतन्त्र निर्णय लेने की स्थिति मे सक्षम नही है। वैसे एक भी कदम उठाने के लिए लखनऊ का मुंह ताकना पड़ता है।

दरअसल दगे की शुरुआत का सही घटनास्थल है गुलमर्ग सिनेमा के सामने स्थित मौ० पूर्वा मुफ्तीयान शिव मंदिर वाली गली, शाहपीर गेट जहाँ हिन्दू लोगों की एक 33 परिवारों की बस्ती बसी है। इस बस्ती के चौराहा है बस्ती को घेरे हुए हजारो मुस्लिम परिवार शबे बारात का रात को वहाँ एक ओर नगर के मुख्य मार्ग की दो तरफा से नाके बंदी कर पुलिस शबे-बारात की आतिशबाजी कराने मे मशगूल थी वही दूसरी ओर एक रेवती शरण नामक लोधा के यहाँ उसके पुत्र नरेश कुमार की पांचवी वर्षगाठ मनाई जा रही थी जिस कारण आपके घर पर अतिथियों का आना-जाना लगा था।

प्रमुख मार्ग पर आतिशबाजी जारी थी। आबकारी चौपले से लेकर लिसाडी गेट चौपले तक नाके बन्दी कर दी गई थी ट्रैफिक बंद कर दिया गया था परन्तु इक्के दुक्के लोगो को पुलिस आने जाने दे रही थी। आतिशबाजी चला रहे मुस्लिम युवको और बच्चो द्वारा आने-जाने वालो पर भी पटाखे व फूलझड़ियाँ फेंकी जा रही थी।

ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियो पर मात्र डंडो के अलावा आग्नेयास्त्र नही था। वे मूक दर्शक बने देख रहे थे।

प्रत्यक्षदर्शियो का कहना है कि आतिशबाजी करने वालो के एक झुण्ड ने एकाएक मोहल्ला मुफ्तायान की शिवमन्दिर वाली गली पर मोर्चा जमा लिया और वर्षगाठ मना रहे परिवार की आती जाती महिला मेहमानो पर जलती हुई आतिशबाजी फेंकी जाने लगी। अनेक महिलाओ पर फेंकी गई आतिशबाजी से कपड़े जले। इस झुण्ड ने उनका पीछा घरो में घुस जाने तक नही छोडा। उन परिवारो के पुरुषों द्वारा ऐतराज करने पर इन मुस्लिम युवको ने उनके मोहल्ले के घरो के विद्युत कनेक्शन काट दिये और अल्लाह ओ अकबर नारा ए-तकबीर और बाबरी मस्जिद ले के रहेंगे आदि नारो के साथ उनके घरो पर पथराव और जलती आतिश डालनी शुरु कर दी। लाईट गुल हो जाने से एकाएक हमला हो जाने से लोगो को अपनी जान बचानी भारी पड़ गई। किसी तरह महिलाओं को छतो पर से कूदाकर सुरक्षित स्थानो पर पहुंचाया गया हमले से घिरे लोगो ने सोचा कि शायद पुलिस हमारी मदद करेगी परन्तु पुलिस कर्मी अपनी जान बचा पहले ही भाग खड़े हुए थे।

बस्ती वालों ने बताया कि उपद्रवियों का नेतृत्व मोहम्मद यामीन पुत्र अब्दुल कर रहा था। उसी ने बिजली काटी व गैस का हण्डा हाथ मे लिए हिंदुओ की दुकानें जलाने व जलवाने मे मुख्य भूमिका अदा कर रहा था।

लाखनसिंह की लकड़ी की टाल को उसकी आँखो के सामने जलाकर राख कर दिया गया।

जब यह सम्वाददाता मो मुफ्तीयान मे पहुंचा तो देवीशरण की आँख पर बंधी दवायुक्त पट्टी ने स्वय बता दिया कि वह भी दगे का शिकार हुआ है। सवाददाता के पहुंचने पर मोहल्ले वासी इकट्ठा हो गये जिनमे से कई एक के पट्टिया बंधी थी और उन्होने एक साथ ही सरकार व पुलिस की अकमण्यता का बखान शुरू कर दिया। उनका आरोप था कि प्रमुख दगाई मोहम्मद यामीन शिकायतो के बावजूद भी खुला घूम रहा है। जबकि दगे की चिंगारी डालने वाला मोहम्मद यामीन ही है। और अभी तक भी किसी सरकारी व गैर सरकारी लोगो ने आकर उनके हाल चाल नही पूछे हैं। वह सभी तरह की खाद्य सामग्री के लिए परेशान हैं। दहशत भरे चेहरे लिए दगे के शिकार लोगो ने नगर मे बसे अन्य लाखो हिन्दुओं के प्रति भी दुख व रोष प्रकट किया।

पुष्ट सूत्रो से यह भी पता चला चला है कि यह दगा पूर्व नियोजित इसलिए भी लगता है कि महानगर पालिका मे कार्यरत लगभग 60 मुस्लिम भिश्तियो ने दस-दस दिन का अग्रिम अवकाश लिया था। इसी तरह सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयो व कारखानो म लगे लोगों ने भी दस-दस दिन की छुट्टियाँ ले ली थी। प्रशासन यदि सच्चाई व वास्तविकताओ तक पहुचना चाहता है तो वह इस सम्पूर्ण प्रकरण की विजलैंस से जाँच कराकर सही निष्कर्ष पर पहुंच सकता है।

इसके अलावा कल साय छावनी क्षेत्र के इका विधायक अजीत सिंह सेठी ने अपन निवास पर कुछ जन प्रतिनिधिया और प्रमुख कांग्रेस जना की एक बैठक बुलाई थी।

उसमे भी श्री कैलाश चन्द्र गौतम एडवोकेट प्रकाश चन्द्र गौतम एडवोकेट, महेन्द्र कुमार शर्मा और पत्रकार सतीश शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए यही निष्कर्ष निकाला कि दगा पूर्व नियोजित था।

बैठक मे इस बात पर भी चर्चा हुई है कि स्थानीय अधिकारियो को मेरठ की भौगोलिक स्थिति का पूर्ण ज्ञान न होने के कारण उन्होने सही तरीकों से कर्फ्यू नही लगाया। जिन क्षत्रो मे जली कोठी, अहमद रोड बली बाजार और खैर नगर मे हिंसक घटनाए हुई उन्हे कर्फ्यू रहित रखा गया और जहा आज तक कभी किसी दगे मे कोई वारदात नही हुई वहाँ लगातार पाँच दिनो तक कर्फ्यू लगाकर लोगो का जीना दूभर कर दिया गया।

इस बात की जरूरत महसूस की गई कि साफ दिलो दिमाग के प्रमुख हिन्दू मुसलमानो को इकट्ठा करके उनसे एकता और शांति स्थापित करने और भाईचारा मजबूत बनाने का सहयोग लिया जाये ताकि मेरठ मे स्थिति पूरी तरह सामान्य हो सके।

***

(विश्व मानव से साभार)

राजद्वार [illegible]
[illegible]
[illegible]

30 अप्रैल, 87 ... पुनर्गठन, पाक्षिक [illegible] डाक पं. सं. RJ/AJ-169

अजमेर में दयानन्द विश्वविद्यालय क्यों ?

—प्रो बुद्धिप्रकाश आर्य

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजस्थान राज्य सरकार ने अजमेर नगर में विश्वविद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया है। इस निर्णय को मूर्त रूप देने के लिये प्रारम्भिक तैयारियां भी शुरु कर दी गई हैं। प्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय श्री हरिदेव जोशी के प्रशस्य प्रयत्न से आगामी सत्र से ही विश्वविद्यालय अपना कार्य आरम्भ कर देगा, माननीय मुख्यमन्त्री का शिक्षा क्षेत्र में यह योगदान उनके कार्यकाल के स्वर्णिम अध्याय के रूप में चिरस्मरणीय रहेगा।

उल्लेखनीय है कि 1962 से ही देश के प्रमुख नेताओ, मन्त्रियो तथा सार्वभौम आर्य समाज शिक्षा संस्था परिषद द्वारा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अजमेर मे दयानन्द विश्वविद्यालय स्थापित किया जावे। उस दिशा मे पूर्व प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने दिल्ली में उद्घोषणा भी की थी कि अजमेर मे दयानन्द विश्व विद्यालय की स्थापना मे सरकार पूरा सहयोग करेगी। यह घोषणा 16 मार्च 1965 को जयपुर रेडियो द्वारा प्रसारित की गई थी। महापुरुषों के नामो पर विश्वविद्यालयो के नामकरण की प्रशस्य परम्परा के अनुसार अजमेर विश्वविद्यालय का नाम दयानन्द विश्वविद्यालय रखना कई दृष्टियों से तर्कसंगत है। यही कारण है कि सन 1962 से ही अजमेर में दयानन्द विश्वविद्यालय हेतु तत्कालीन शिक्षा मन्त्री श्री हरी भाऊ उपाध्याय राजस्थान विधानसभाध्यक्ष राम निवास मिर्धा, सांसद श्री प्रकाशवीर शास्त्री तथा भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री मेहरचन्द महाजन ने अभियान चलाकर पूर्ण समर्थन प्रदान किया था। देश के प्रमुख समाचार पत्रो में भी एतदर्थ अग्रलेख प्रकाशित किये गये थे।

अजमेर के विश्वविद्यालय का स्वरूप कार्यक्षेत्र तथा कार्य विधिया सुनिश्चित हो चुकी हैं अत अब केवल विश्वविद्यालय का नाम युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द के नाम पर रखने की आवश्यकता शेष रह जाती है इसके आधार पर्याप्त सुस्पष्ट और तर्क संगत है। महर्षि दयानन्द ने राजस्थान को ही अपना प्रमुख कार्य क्षेत्र बनाया था यही वैदिक धर्म का प्रचार करते हुये तथा राष्ट्रीय चेतना का मन्त्र फूकते हुये उन्होने अपने अमूल्य साहित्य का सृजन किया था। उदयपुर, जोधपुर, मसूदा, पुष्कर तथा जयपुर आदि क्षेत्रों में स्वामीजी ने अपना अमूल्य समय, कुरीतियो को दूर करने अछूतोद्धार करने, विदेशी शासन के विरुद्ध रजवाडो में राष्ट्रीय भावना जगाने, शिक्षा का प्रचार प्रसार करने तथा वैदिक धर्म का उद्धार करने मे व्यतीत किया था। अन्त में अजमेर आकर उन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त कर निर्वाण प्राप्त किया जिससे इस नगर का जहा एतिहासिक महत्व बढा है वहा यह आर्यों (हिन्दुओं) का एक तीर्थ स्थल भी बन गया है। आज अजमेर शिक्षा के क्षेत्र में [illegible] के मन्तव्यो के [illegible] देने वाली डी ए वी संस्थाओं का यहां बाहुल्य है तथा देश का सबसे पुराना डी ए वी कॉलेज भी देशव्यापी लोकप्रियता अर्जित कर चुका है। महर्षि द्वारा संस्थापित डी ए वी संस्थाओ, गुरुकुलो शिक्षण केन्द्रो आदि की संख्या लगभग तीन हजार है जो देश विदेश में अत्यन्त सफलतापूर्वक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। स्व डा राजेन्द्र प्रसाद (पू राष्ट्रपति) श्री प जवाहर लाल नेहरू (पू प्रधान मन्त्री) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आदि राष्ट्र के कर्णधारों ने आर्यसमाज को राष्ट्रीय व सैनिक आन्दोलन को स्वातन्त्र्य आदोलन का मूल प्रेरणास्रोत स्वीकार किया है। स्वामी दयानन्द ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने विदेशी शासन की कडे शब्दो में भर्त्सना की थी। लाला लाजपतराय श्री श्यामकृष्ण वर्मा स्वामी श्रद्धानन्द आदि ऐसे ही बलिदानी राष्ट्र पुत्र थे जिन्होंने महर्षि को अपना धर्मपिता तथा आर्य समाज को धर्म माता स्वीकार किया था।

इन सब सगत बिन्दुओ के आधार पर अजमेर विश्वविद्यालय का नाम "दयानन्द विश्वविद्यालय" रखने की वास्तविकता से कोई इन्कार नहीं कर सकता है। चू कि अब बस नाम करण करना है अत नेहरू विश्वविद्यालय नानक विश्वविद्यालय सुखाडिया विश्वविद्यालय की भाति ही अजमेर के विश्वविद्यालय का नाम दयानन्द विश्वविद्यालय' रखने की जन भावनाओ का आदर करते हुये उसे स्वीकार करने की महती अपेक्षा है। ऐसा करने से हम देश व धर्मोद्धारक महर्षि दयानन्द के प्रति सच्चा सम्मान प्रदर्शित कर सकेंगे।

वेद वेदांग पुरस्कार 1987 के लिए

पण्डित विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड का नाम घोषित

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा निर्धारित वेद वेदांग पुरस्कार चयन समिति ने वर्ष 987 के लिए आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान पण्डित विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड का चयन किया है। 98 वर्षीय प विश्वनाथ जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक वांग्मय के प्रचार प्रसार में समर्पित किया है और आज भी अथर्ववेद का भाष्य पूर्ण करने में संलग्न हैं।

इस पुरस्कार के लिए चुने गये विद्वान को 21000/- की थैली, रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र एव शाल भेंट कर सम्मानित किया जाएगा।

इस वर्ष आर्य समाज सान्ताक्रुज ने एक और नवीन पुरस्कार की घोषणा की है। जिसके अन्तर्गत वेद वेदांगों के विद्वान एव अनुसंधान कर्ताओं के अतिरिक्त जिन विद्वानो ने उपदेशक, भजनोपदेशक एव कार्यकर्ता के रूप में जीवन पर्यन्त आर्य समाज की सेवा की है, ऐसे एक विद्वान को प्रतिवर्ष 11000/- की थैली रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र एव शाल से सम्मानित किया जाएगा।

इस द्वितीय पुरस्कार के लिए सर्वप्रथम आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी, शास्त्रार्थ महारथी पूजनीय अमर स्वामी जी महाराज का चयन किया गया है।

इस वर्ष के आर्य समाज सान्ताक्रुज ने [illegible] विद्वानों के सम्मान का [illegible] किया है। यह समारोह मई मास के अंतिम सप्ताह में आयोजित किया जाएगा।

— कैप्टन देवरत्न आर्य
महामन्त्री

आचार्य जी का भव्य स्वागत

अजमेर, 24 अप्रैल योगक्षेम पुरस्कार प्राप्त कर दिल्ली से अजमेर लौटने पर, आर्य समाज, अजमेर के मन्त्री श्री रासासिंह के नेतृत्व में आर्य समाजों के अधिकारियों व कार्यकर्ताओं तथा शिक्षण संस्थाओं के अध्यापकों व कर्मचारियों द्वारा अजमेर के रेलवे स्टेशन पर फूल मालाओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

स्वत्वाधिकार आर्य समाज अजमेर के लिए व प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला, कैसरगंज अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 162

सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥"

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य
समाज की वर्तमान एव भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 3 शुक्रवार 15 मई 1987
अंक 6 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥

ज्येष्ठ कृ० 2 सवत 2044
वार्षिक मू 15/ एक प्रति 60 पैसे

आचार्य वाल्ले का नागरिक अभिनन्दन

अजमेर, 3 मई। आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान मे दयानद कॉलेज के पूर्व आचार्य दत्तात्रेय वाल्ले का अभिनदन समारोह राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष किशन मोटवानी की अध्यक्षता तथा कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी (स नवज्योति) के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

श्री मोटवानी ने श्री वाल्ले की शिक्षा साहित्य और आर्य समाज के प्रति की गई सेवाओ तथा गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित होने के कारण उन्हे अजमेर का गौरव बताया।

श्री मोटवानी जी ने कहा कि श्री वाल्ले के चरित्र से हमे प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए। आपने श्री वाल्ले के दीर्घायु होने की कामना की तथा उन्हें

समारोह को सम्बोधित करते हुए विधान सभा उपाध्यक्ष किशन मोटवानी तथा मच पर बैठे हुए हैं आचार्य वाल्ले एव कप्तान दुर्गा प्रसाद चौधरी।

प्राचार्य दिनेशसिंह दयानद कालेज अजमेर ठा प्रमसिंह पू आयुक्त, देवस्थान कृष्णराव वाल्ले मत्री आर्य समाज शिक्षा सभा, जे एस मेहता पूर्व प्रधान आर्य समाज उदयपुर चितरजन शर्मा अतरग सभासद, परोपकारिणी सभा आदि

प्रमुख नागरिको विभिन्न सगठनों एव शिक्षण सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने माल्यार्पण कर श्री वाल्ले का स्वागत किया।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुये कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी ने कहा कि

समारोह में उपस्थित जन समूह

आश्वासन दिया कि अजमेर मे खुलने वाले विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानद सरस्वती विश्वविद्यालय होने की उनकी इच्छा को पूर्ण करवाने का वे पूर्ण प्रयास करेंगे।

शिक्षा प्रमुख श्री हनुमन्तसिंह जी रावत ने कहा कि श्री वाल्ले के चरित्र के तीन विशेष गुण हैं—त्याग निष्ठा और सेवा जिनके बल से वे महापुरुषों की श्रेणी में आ पहुंचे। श्री पन्नालाल जी माहेश्वरी ने आपके व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हुए प्रभु से प्रार्थना की वह आपको लम्बी उम्र प्रदान करे ताकि आपका मार्गदर्शन तथा आशीर्वाद समाज को दीर्घकाल तक मिलता रहे। आपने श्री वाल्ले को अजमेर मे खुलने वाले विश्वविद्यालय के लिए बधाई देते हुए कहा कि इस विश्वविद्यालय का खुलना आपके प्रयासों के फलस्वरूप ही सम्भव हो सका है।

श्री माणकचन्द सोगानी अध्यक्ष शहर जिला कांग्रेस (इ) अजमेर ने श्री वाल्ले के जीवन को प्रेरणास्रोत एव अनुकरणीय बताया एव प्रभु से उनके दीर्घायु की होने कामना की।

इस अवसर पर सव श्री ओंकार सिंह लखावत एडवोकेट (अध्यक्ष भाजपा अजमेर देहात) भू पू अध्यक्ष नगर परिषद अजमेर, श्री बालाबक्स सावरा (उद्योगपति) ब्रह्मानद त्रिपाठी प्रो एम के माथुर भू पू प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय अजमेर श्री पी माथुर भू पू निदेशक कालेज शिक्षा (राज) रतनलाल यादव अध्यक्ष भाजपा, अजमेर भवरलाल शर्मा

दत्तात्रेय वाल्ले ने स्वाधीनता सग्राम की लडाई मे भाग लिया। साथ ही आर्य समाज के द्वारा भी उन्होंने इस नगर की काफी सेवा की। कप्तान साहब ने श्री वाल्ले द्वारा विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानद विश्वविद्यालय रखने का समर्थन करते हुए कहाकि यह उन महापुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी।

अत मे प्राचार्य वाल्ले ने सभी महानुभावो के प्रति आभार व्यक्त

(शेष पृष्ठ दो पर)

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक : रासासिंह सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य फोन कार्या 21010

अजमेर के विश्वविद्यालय का नाम दयानंद विश्वविद्यालय हो

—श्री रासासिंह एम ए, बी एड, एल एल बी

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजस्थान सरकार ने निकट भविष्य मे अजमेर मे विश्वविद्यालय स्थापित करने का निश्चय किया है। 'देर आयद, दुरस्त आयद' यह निर्णय सर्वथा उचित एव सामायिक है।

अजमेर मे स्थापित होने वाले इस विश्वविद्यालय का नाम दयानद विश्वविद्यालय होना चाहिए क्योकि देश मे कई विश्वविद्यालय राजनेताओं अथवा समाज सुधारको या सत महात्माओं एव ऐतिहासिक पुरुषो के नाम पर हैं। यद्यपि हरियाणा सरकार द्वारा वर्षो पूर्व रोहतक में स्थापित विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानद विश्वविद्यालय रखा गया है परन्तु वह तो एक क्रिया की केवल प्रतिक्रिया मात्र ही थी क्योकि पजाब मे गुरुनानकदेव विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी। अब हरियाणा में भी एक विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानद विश्वविद्यालय कर दिया। देश मे कई विश्वविद्यालयो के नाम, एक ही महापुरुष के नाम पर हैं। ठीक इसी प्रकार इस विश्वविद्यालय का नाम भी दयानद विश्वविद्यालय रखा जाना चाहिए।

इस नामकरण के कारण —

स्वाधीनता के सूत्रधार

यह एक सुविदित-ऐतिहासिक तथ्य है कि महर्षि दयानद सरस्वती स्वराज्य, स्वधर्म, स्वसस्कृति, स्वभाषा के प्रथम सूत्रधार एव उन्नायक थे। अपने प्रसिद्ध ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में उन्होने स्पष्ट शब्दो मे यह प्रतिपादित किया है कि विदेशी राज्य कितना ही हितकारी क्यो न हो स्वराज्य से ज्यादा हितकारी नही होता। सुराज्य से स्वराज्य ही कही अधिक बढकर है।

कई ऐसे ऐतिहासिक तथ्य गत वर्षों में प्रकट हुए हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि महर्षि दयानद सरस्वती का 1857 के स्वाधीनता सग्राम तथा उसके पश्चात प्रज्वलित होने वाली स्वाधीनता की लौ के पीछे हाथ था और तत्कालीन अग्रेजी सरकार द्वारा उन्हे विद्रोही सन्यासी कहा गया था। उन्होने अपने जीवन मे स्थान-स्थान पर वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए साम्प्रदायिक, धार्मिक और राष्ट्रीय एकता का प्रयास किया था तथा आपसी फूट को ही उन्होंने देश के पतन का मूल कारण स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया। उनके उपदेशो ने राष्ट्र के पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

आर्य समाज ने महर्षि दयानद के विचारों से प्रेरित होकर आजादी की लडाई मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पट्टाभि सीतारमय्या द्वारा लिखित कांग्रेस के इतिहास मे यह उल्लेख आया है कि एक बार यह सर्वेक्षण किया गया कि आजादी की लडाई मे गिरफ्तार होने वाले व्यक्तियो मे सर्वाधिक किस विचार धारा से प्रेरित हैं? उस सर्वेक्षण मे यह ज्ञात हुआ है कि लगभग 80 प्रतिशत व्यक्ति आर्य समाज और महर्षि दयानद की विचारधारा से प्रेरित होकर स्वाधीनता आन्दोलन मे भाग ले रहे हैं। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, राम-प्रसाद बिस्मिल आदि सुप्रसिद्ध नेता एव क्रान्तिकारी आर्य समाज की ही देन थे।

प्रसिद्ध समाज सुधारक —

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि महर्षि दयानद सरस्वती सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। उन्नीसवीं सदी के पुनर्जागरण एव सुधारात्मक आन्दोलनों मे सर्वाधिक प्रभाव महर्षि के विचारो का ही पडा था। महर्षि दयानद एव उनके द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' ने बाल विवाह निषेध सतीप्रथा उन्मूलन, विधवा विवाह का समर्थन, जाति बन्धनो का विरोध, स्त्री शिक्षा, अन्धविश्वासो एव सामाजिक कुरीतियो का प्रबल विरोध तथा सबसे बढकर दलितो के उत्थान का कार्य किया।

महान शिक्षाविद —

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वय शिक्षाविद भी थे। उन्होने अपने प्रसिद्ध ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास मे शिक्षा के बारे मे विस्तार से विवेचन किया है तथा शिक्षा के माध्यम, शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्य, चरित्र निर्माण, शिक्षा प्रदान करने वालो के गुण, भेदभाव रहित अनिवार्य एव सार्वभौमिक शिक्षा राज्य के कर्तव्य आदि के बारे में उन्होने अपना मतव्य स्पष्ट किया है। इसी आधार पर आर्य समाज ने देश-विदेश मे गुरुकुलो, सस्कृत पाठशालाओं, कन्या पाठशालाओं एव डी ए वी स्कूल एव कालेजो का जाल बिछा दिया है जो शिक्षा के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

स्वाभिमान के जन्मदाता.—

महर्षि दयानद सरस्वती ने ही राष्ट्रवासियों मे स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने के लिए स्पष्ट रूप से यह उद्घोषणा की थी कि भारतीय सस्कृति विश्व की सर्वश्रेष्ठ प्राचीनतम सस्कृति है एव वैदिक धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है तथा उनका मूल उद्गम भी भारतीय ही है, यहाँ के ऋषि मुनियो से ही समस्त विश्व ने सत्य अहिंसा मानवता एव चरित्र की शिक्षा ग्रहण की है। महर्षि दयानद ने देश का नाम आर्यावर्त, निवासियों का नाम आर्य तथा भाषा आर्य भाषा के नाम की बात कहकर, एकत्व का मत्र प्रदान किया था।

राष्ट्रभाषा के प्रबल पक्षधर

महर्षि दयानद की मातृभाषा गुजराती होने पर एव स्वय सस्कृत के प्रकाण्ड पडित होते हुए भी ब्रह्म समाज के नेता केशवचन्द्र के सुझाव पर उन्होंने सस्कृत के स्थान पर जन साधारण के हितार्थ आर्य भाषा हिन्दी का प्रयोग शुरू किया तथा अपने समस्त ग्रथ आर्य भाषा हिन्दी मे लिखे। अपने उपदेशो मे भी सर्वत्र आर्य भाषा 'हिन्दी का ही प्रयोग किया तथा उस जमाने में हिन्दी के प्रयोग को बढाने के लिए हजारों व्यक्तियों के हस्ताक्षर कराकर अग्रेजी सरकार को ज्ञापन भी दिया था आर्य समाज के उपनियमों मे प्रत्येक आर्य समाज के सदस्य के लिए हिन्दी और सस्कृत जानना अनिवार्य कर दिया।

ऋषि दयानद और राजस्थान

महर्षि दयानद जब कार्य क्षेत्र में उतरे तो पूरे देश में भ्रमण करते हुए एव अपने उपदेशो का प्रचार-प्रसार करते हुए राजस्थान मे भी कई बार आये तथा उन्होंने अपना अधिकांश समय राजस्थान की रियासतों मे बिताया। उदयपुर के नौलखा महल में सत्यार्थ प्रकाश को पूर्णता प्रदान की, वहीं परोपकारिणी सभा तथा अपनी वसीयत का पजीकरण भी करवाया। वहाँ के महाराणा सज्जनसिंहजी को वेद सस्कृति आदि धर्म शास्त्रों का अध्ययन करवाया। जोधपुर के राजा को भी अध्ययन करवाया। वहीं स्वामीजी को विषपान भी कराया गया जो उनकी मृत्यु का कारण बना। जयपुर, शाहपुरा, पाली, मसूदा अजमेर, नया शहर (ब्यावर), सोजत, आबूरोड, आबू पर्वत, पुष्कर आदि स्थानो पर भी वह ठहरे तथा अपने उपदेश दिये। पुष्कर के सुप्रसिद्ध ब्रह्मा मदिर में उन्होंने वेद भाष्य का कार्य भी किया। अजमेर से तो उन का बहुत ही ज्यादा सम्बन्ध रहा। राजस्थान की देशी रियासतो मे जागृति और चेतना का सचार करने मे ऋषि दयानद का अद्भुत योगदान रहा। केसरीसिंह बारठ, विजय सिंह पथिक जैसे क्रान्तिकारियो पर इन्ही का प्रभाव पडा।

निर्वाण स्थली अजमेर.—

जहाँ ऋषि दयानद वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करते हुए 3-4 बार अजमेर आये और वहाँ कई दिन ठहरकर अपने व्याख्यानों से अजमेर की जनता को लाभान्वित किया वहीं उनका प्राणान्त भी इसी अजमेर नगर मे हुआ। इसलिए अजमेर को ऋषि दयानद की निर्वाण स्थली कहा जाता है। लगभग 3 वर्ष पूर्व 1983 ई में अजमेर नगर मे ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महर्षि दयानद निर्वाण शताब्दी का आयोजन किया गया था जिसमें देश विदेश के लाखो नर-नारियों ने यहाँ आकर ऋषि दयानद को अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की तथा उस समारोह का उद्घाटन भारत की तत्कालीन प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने किया था। ऋषि दयानद की अर्द्ध निर्वाण शताब्दी भी 1933में अजमेर में ही मनाई गई थी। ऋषि दयानद का निर्वाण स्थल (भिनाय कोठी), अत्येष्टि स्थल (पहाडगज स्थित श्मशान) उनकी स्मृति में निर्मित 'सरस्वती-भवन' ऋषि उद्यान एव दयानद आश्रम तथा उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय ..

अजमेर की विशिष्ट प्रतिभा का सम्मान

अजमेर के मालवीय कहे जाने वाले तथा दयानन्द कॉलेज, अजमेर के संस्थापक प्राचार्य श्री दत्तात्रेय वाब्ले को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा "गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार' से गत माह की 19 अप्रेल को सम्मानित किया गया। 'गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार' आर्य जगत् में अत्यन्त गौरव एव सम्मान का प्रतीक माना जाता है इस पुरस्कार से प्रतिवर्ष लब्ध प्रतिष्ठित 2-3 आर्य जगत के विद्वानो को सम्मानित किया जाता है तथा प्रत्येक को अलग-अलग अभिनन्दन-पत्र भी प्रदान किया जाता है। इस बार यह गौरवपूर्ण पुरस्कार एव सम्मान एक समर्पित व्यक्तित्व के धनी तथा आर्य समाज एव महर्षि दयानन्द के प्रति अनन्यनिष्ठा रखने वाले तथा "मनसा वाचा, कमणा" आर्यत्व को जीवन मे धारण करने वाले हिन्दी एव अग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान, श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले को भी दिया गया है। यह अजमेर के आर्य जगत् के लिये गौरव की बात है।

श्री दत्तात्रेय वाब्ले को इससे पूर्व भी दयानन्द कॉलेज अजमेर की रजत जयन्ती के अवसर पर तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री गोपालस्वरूप पाठक द्वारा उनकी शैक्षणिक सेवाओ के लिए सम्मानित और अभिनदित किया जा चुका है। परन्तु इस बार एक विश्व विद्यालय द्वारा उनकी विद्वता एव पाण्डित्य को स्वीकार कर सम्मानित करना विशेष महत्व रखता है। यह ज्ञातव्य है कि उन्हे यह पुरस्कार गत 19 अप्रेल 1987 ई को नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम मे भूतपूर्व रक्षा मत्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह की अध्यक्षता मे आयोजित विशेष समारोह में प्रदान किया गया था।

श्री दत्तात्रेय वाब्ले वर्तमान में आर्य समाज अजमेर के प्रधान, आर्य समाज शिक्षा सभा (जिसके अन्तर्गत डी ए वी. कॉलेज, जियालाल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज तथा डी ए वी स्कूल आदि जैसी 14 शिक्षण सस्थायें सचालित है) के वरिष्ठ उपप्रधान, निराश्रित बालक बालिकाओ का पालन पोषण एव शिक्षण करने वाली सस्था दयानन्द बाल सदन की प्रबन्ध समिति के प्रधान, इण्डियन रेड क्रास सोसायटी जिला शाखा अजमेर के चेयरमैन, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के वरिष्ठ उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अतरग सभासद, डी ए वी प्रबन्ध समिति नई दिल्ली के अतरग सभासद, सार्वभौम आर्य समाज शिक्षण सस्था परिषद् के मत्री, अजमेर जिला सहायता प्राप्त शिक्षण सस्था प्रबन्धक सघ के अध्यक्ष, सार्वजनिक शिक्षण सस्था परिषद् राजस्थान के उपप्रधान आदि कई विभिन्न रूपो में सेवा कार्य कर रहे हैं। इतनी सार्वजनिक सस्थाओ के कार्य मे व्यस्त रहते हुये भी श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले निरन्तर स्वाध्यायशील रहते हैं तथा आर्य सिद्धान्तो का पोषण करने वाली पुस्तकों के अध्ययन करने के साथ-साथ देश-विदेश के प्रसिद्ध लेखको की चर्चित पुस्तकें एव पत्र-पत्रिकायें भी नियमित रूप से पढते रहते हैं। आप एक अच्छे वक्ता और कुशल विचारक होने के साथ-साथ सिद्धहस्त लेखक भी हैं। आप द्वारा लिखित एव सम्पादित निम्न पुस्तकें विशेष उल्लेखनीय हैं।

हिन्दी —

राष्ट्रीय चरित्र और एकता, आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही, आर्य समाज, मूर्ति पूजा अवैदिक, आर्य समाज का भविष्य एक चेतावनी, सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला (15 भाग), आचार सहिता, सेवा और सघर्ष आदि।

अग्रेजी —

माडर्न इण्डिया एण्ड हिन्दूइज्म, टु वे ट्रैफिक, आर्य समाज, हिन्दू विदाउट हिन्दूइज्म।

श्री वाब्ले की कीर्ति का अमर स्तम्भ दयानन्द कॉलेज अजमेर है। इस कॉलेज के आप सस्थापक—प्राचार्य थे तथा इसकी स्थापना एव निर्माण मे पडित जियालाल जी को अनन्य सहयोग दिया था। जब आपने कार्यभार ग्रहण किया था तब यह मात्र इण्टर कालेज था, इन्होने अपनी लगन तथा कुशल प्रशासन से इसे 13 विभागो मे स्नातकोत्तर उन्नति की चरम सीमा पर पहुचाया। तथा कई विशाल भवनो का निर्माण करवाया। आपके उस समय इसका अनुशासन एव उत्तम परीक्षा परिणाम सर्वत्र प्रशसनीय था। आपने कर्मवीर प जियालाल जी की स्मृति मे जियालाल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, जियालाल कन्या सैक स्कूल आदि भी स्थापित करवाये।

गोवर्धन पुरस्कार प्राप्त करने पर हम 'आर्य पुनर्गठन' परिवार की ओर से श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए बधाई देते है तथा सर्वशक्तिमान ईश्वर से उनके शतायु होने की कामना करते हैं।

—रासासिंह

अजमेर के विश्वविद्यालय का नाम.... .

(पृष्ठ 2 का शेष)

का कार्यालय सब अजमेर में ही हैं। अजमेर में ही सुप्रसिद्ध लघु विश्वविद्यालय का रूप लिए दयानद कॉलेज तथा भारत की सबसे पुरानी डी. ए वी स्कूल तथा अन्य 15 शिक्षण सस्थायें भी अजमेर मे ही हैं। ऋषि दयानन्द के जीवन काल मे स्थापित आर्य समाज, अजमेर प्रान्त का सबसे पुराना आर्य समाज भी यही है। बाल विवाह निषेध कानून (शारदा एक्ट) के प्रणेता प्रसिद्ध इतिहासकार हरविलासजी शारदा दयानद कॉलेज अजमेर के सस्थापक एव 1939 के हैदराबाद के सत्याग्रह मे स्पेशल ट्रेन भेजने वाले महान् आर्य नेता पडित कर्मवीर जियालाल, देशभक्त कु चादकरण शारदा, रामविलासजी शारदा, रायबहादुर मिट्ठनलालजी भार्गव, प्रसिद्ध समाज सेवी डॉ अम्बालालजी शर्मा जैसे आर्य पुरुषो की कर्मस्थली अजमेर ही रहा है। अजमेर के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता पडित ज्वालाप्रसाद शर्मा, अर्जुनलाल सेठी, विजयसिंह पाथिक आदि का भी आर्य समाज तथा डी ए वी स्कूल आदि से बहुत सम्बध रहा है।

भू पू प्रधानमंत्री द्वारा समर्थन -

अजमेर मे दयानद विश्वविद्यालय के विचार का समर्थन भारत के तत्कालीन प्रधानमत्री स्व श्री लालबहादुर शास्त्री ने भी किया था तथा 16 मार्च 1965 को देहली मे एक सार्वजनिक सभा मे स्व शास्त्रीजी ने अजमेर मे दयानद विश्वविद्यालय की स्थापना करने के विषय पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने की घोषणा की थी। शास्त्रीजी का यह भाषण आकाशवाणी से भी प्रसारित किया गया था एव समाचार पत्रो में भी प्रकाशित हुआ था।

देशव्यापी समर्थन —

अजमेर मे दयानद विश्वविद्यालय की स्थापना के समर्थन मे तत्कालीन प्रयासों को देशव्यापी समर्थन प्राप्त हुआ था जिसके समर्थको मे भू पू रक्षामत्री वाई बी चौहान जैसे केन्द्रीय मत्री, अनेक राज्यो के मत्री, राज्यपाल, उपकुलपति, हाईकोर्ट के के जज तथा ससद मे सत्ता तथा विपक्ष के प्रमुख सासद सम्मिलित हैं जिनमे भारत के भू पू न्यायाधीश श्री मेहरचन्द महाजन, आध्र प्रदेश के भू पू. राज्यपाल श्री भीमसेन सच्चर, उडीसा के तत्कालीन राज्यपाल श्री ए एन खोसला, बिहार के भू पू राज्यपाल माधव श्री, पजाब के भू पू शिक्षा मत्री श्री अमरनाथ विद्यालकार, पजाब के विश्वविद्यालय के भू पू उपकुलपति श्री सूरजभान, पजाब हाईकोर्ट के जज श्री टेकचन्द, पजाब के पूर्व शिक्षा मत्री श्रीयशपाल केन्द्रीय मत्री श्री रामनिवास मिर्धा, भू पू राज्यपाल श्रीनरहरि गाडगिल उ प्र के भू पू मत्री श्री जगतप्रसाद रावत, आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

अजमेर की जनता का समर्थन

जब अजमेर मे दयानन्द विश्वविद्यालय के प्रयास चल रहे थे तो उन प्रयासो का समर्थन अजमेर की जनता के विभिन्न वर्गों से भी मिला था, दयानद विश्वविद्यालय की माग को लेकर एक शिष्टमडल जिसमे अजमेर ब्यावर किशनगढ आदि अजमेर खड के सासद, विधान सभा सदस्य, नगर पालिका, राजनैतिक दल के प्रतिनिधि सम्मिलित थे, 28 मार्च 1965 को राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ सम्पूर्णानन्दजी के अजमेर आने पर, दयानद विश्वविद्यालय की स्थापना के सम्बध मे ज्ञापन दिया था। उस ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वालो में अजमेर के तत्कालीन सासद मुकुटबिहारी लाल भार्गव, मसूदा के राव नारायणसिंह मसूदा (तत्कालीन उपाध्यक्ष राज. विधानसभा), तत्कालीन उपमत्री प्रभा मिश्रा, नगरपरिषद अजमेर के तत्कालीन अध्यक्ष देवदत्तजी शर्मा, नगर सुधार न्यास के तत्कालीन अध्यक्ष कृष्णगोपाल गर्ग, जिला प्रमुख विश्वेश्वरनाथ भार्गव, मा शि बोर्ड के तत्कालीन अध्यक्ष लक्ष्मी लाल जी जोशी, राज प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य पुरुषोतमदास कुदाल आदि सम्मिलित थे। जिनसे स्पष्ट है कि अजमेर के जन प्रतिनिधियो का भी समर्थन इस विचार का पोषक है।

अत राजस्थान सरकार से विनम्र अनुरोध है कि उपरोक्त सभी तथ्यो एव परिस्थितियो को दृष्टिगत रखते हुए इस विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानद सरस्वती के नाम पर दयानद विश्वविद्यालय रखा जाये।

——

आर्य समाज की कार्यविधि, संगठन, पुनर्गठन: एक समाज शास्त्रीय अध्ययन

—डॉ॰ कृष्णपाल सिंह दयानन्द वैदिक शोध पीठ, अजमेर

अध्ययन की समस्या एवं उद्देश्य-

आधुनिक समय मे आर्यसमाज के सगठन, चुनाव, कार्यप्रणाली, पुनर्गठन तथा सैद्धान्तिक प्रचार व प्रसार आदि के सबध मे अध्ययन करने से यह अनुभव हुआ है कि इसके कार्यविधि सगठन एव पुनर्गठन की अत्यन्त आवश्यकता है, क्योकि आर्य समाज प्रारम्भ मे एक क्रांतिकारी, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक, राष्ट्रीय जन जागरण के रूप मे जन समुदाय के सम्मुख उभरकर आया है। इस का प्रारम्भिक स्वरूप विशिष्ट प्रभाव से युक्त होने के कारण जनमानस का एक रूप मे प्रतिनिधि सा हो गया था। किन्तु वर्तमान समय मे वह उत्कृष्ट स्वरूप शिथिल सा हो गया है।

इसके साथ ही वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार प्रसार तथा व्यवहारिक जीवन मे अपनाने की जो परम्परा सदस्यो मे विद्यमान थी वह भी अब ओझल सी होती जा रही है। आज देश जहा प्रान्तवाद, जातिवाद, धार्मिक मतवाद तथा विघटनात्मक प्रवृत्तियो से गुम्फित होता जा रहा है वहा मानव समाज भी जातिगत, वर्गगत आदि अनेक प्रकार के भेदभाव, आडबर, कुरीतियों से ग्रसित होता जा रहा है जिनका विस्तारभय मे वर्णन करना कठिन है। इसी तरह विभिन्न दलगत राजनीतिक दॉवपेंच से देश विघटन के करार पर खड़ा है। साम्प्रदायिकता देश की अखण्डता को डसने के लिये, विकराल व्याल के समान मुह फैलाये दिन-दूनी रात चौगुनी होती जा रही है।

इस प्रकार देश की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षणिक तथा आर्थिक आदि अनेक राष्ट्रीय समस्याओ के सन्दर्भ मे आर्य समाज की आज उतनी ही आवश्यकता नही है जितनी स्वतन्त्रता से पूर्व भारतीय क्षितिज मे थी अपितु उससे भी कही अधिक राष्ट्रीय समस्याओ को सुलझाने मे अथवा समुचित समाधान खोजने मे आर्य समाज की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। अत आर्य समाज अपने पूर्ववत् उज्जवल स्वरूप, राष्ट्रीय एकता के सूत्र को स्थापित करने के लिये इसके सगठन, प्रचार शैली कार्यावधि, नेतृत्व, सदस्यता, सामाजिक उत्थान तथा पुनर्गठन इत्यादि अनेक सन्दर्भो मे सिहावलोकन करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

अध्ययन की प्रविधि

उपर्युक्त वर्णित विषय-वस्तु को दृष्टि में रखते हुए यह विचार किया गया कि आर्य जगत् के विद्वानो, सन्यासियो, पदाधिकारियो, सभासदो, समाजहितैषियो, अनुरागियो तथा अन्य सभी सबधित व्यक्तियों से विस्तृत वैज्ञानिक अनुसन्धान द्वारा तथ्यात्मक जानकारी सकलित की जावे। इसी दृष्टि से शोधपीठ के द्वारा एतद्विषयक अन्वेषण प्रारम्भ किया गया। इस अध्ययन के द्वारा आर्य समाज के सबधित अनेक प्रकार की समस्याओ तथा पक्षो के विषय में तथ्यों का एकत्रीकरण किया गया है। यह अध्ययन इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि आर्यसमाज के उप नियमो मे सशोधन तथा चुनाव प्रक्रिया सबधी दृष्टिकोण आदि को किस प्रकार से पुनर्गठित किया जावे जिससे आर्य समाज की छवि और अधिक निखर कर सामने आ सके तथा इस दिशा मे प्रभावोत्पादक कार्य प्रणाली को अपनाया जा सके।

इस प्रकार अनेकश आधार बिन्दुओ के परिपेक्ष्य मे यह कार्य प्रारम्भ किया गया है। जिसकी प्रेरणा विशेष रूप से श्री दत्तात्रेय जी आर्य ने दी है। इसके साथ ही साथ समय-2 पर अमूल्य सुझावो के द्वारा मार्गदर्शन भी किया है। इस महत्वपूर्ण अध्ययन को प्रारम्भ करने के लिये एक प्रश्नावली की सरचना की गई। इस प्रश्नावली के निर्माण सबधी कठिन कार्य मे डॉ. बजरग लालजी टॉक, प्रवक्ता, समाज शास्त्र प्रो बुद्धिप्रकाश जी आर्य, प्रवक्ता, समाजशास्त्र तथा डॉ देवशर्मा जी वेदालकार सस्कृत विभाग अध्यक्ष दयानन्द कालेज, अजमेर ने समय-समय पर अमूल्य सुझावों के द्वारा सराहनीय सहयोग प्रदान किया है।

यह प्रश्नावली सम्पूर्ण देश-विदेशस्थ तथा अन्य विभिन्न क्षेत्रो मे स्थित आर्य पुरुषो के पास प्रेषित की गई। जिनमे से हमें 103 प्रश्नावलियाँ उत्तरसहित प्राप्त हुई हैं। अध्ययन के द्वारा कतिपय प्रश्नावलिया अपूर्ण पाई गई जिन्हे इस गवेषणात्मक अध्ययन में सम्मिलित नही किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन 100- प्रश्नावलियों के उत्तरदाताओ के आधार पर किया गया है। इसमें अधिकांश उत्तरदाता अधिक अवस्था वाले प्रौढ़ व्यक्ति हैं जिससे यह अनुमान स्वत ही लगाया जा सकता है कि जो भी तथ्य प्राप्त होगे वे महत्वपूर्ण एव अनुभवी व्यक्तियो के होगे। इस अन्वेषण मे जहा प्रौढ़ व्यक्तियो का सहयोग रहा है वहा युवकों तथा महिलाओ का प्रतिनिधित्व भी उल्लेखनीय है। इस अध्ययन मे उत्तरदाताओ का भौगोलिक आयु सरचना आदि अनेक वर्गों मे विभक्त किया गया है। जिनका प्रतिनिधित्व निम्न प्रकार रहा है—

आयु सरचना के आधार पर 25 वर्ष तक का 4% 25 वर्ष से 50 वर्ष तक की आयु का 40 % तथा 50 वर्ष से अधिक अवस्था का 54 %। शैक्षणिक स्तर के आधार पर माध्यमिक शिक्षा स्तर तक के व्यक्ति 3%, स्नातक स्तर तक के 43% तथा विशिष्ट उच्च शिक्षा अर्थात् एम ए, पी एच डी, इन्जीनियर एम बी बी एस इत्यादि का 43 % प्रतिनिधित्व रहा है। व्यावसायिक संरचना के आधार पर कृषि एव व्यापारी वर्ग का 28 %, शिक्षण एव अध्ययनाध्यापन वर्ग का 25 %, सेवारत (सर्विस) वर्ग का 18 % अन्य 4 % व्यक्तियो का प्रतिनिधित्व रहा है। धार्मिक पृष्ठभूमि के आधार पर वैदिक धर्मानुयायी 83% सनातन वैदिक धर्मानुयायी 15% तथा 1% अन्य मत सम्प्रदाय के व्यक्तियो ने इस अध्ययन मे अपना सराहनीय सहयोग प्रदान किया है।

आर्य समाज का स्वरूप, कार्यप्रणाली एवं प्रभाव

आर्य समाज के स्वरूप के सम्बन्ध में दृष्टिकोण—

वर्तमान समय में अनेक मत-सम्प्रदाय विश्व में विद्यमान हैं साथ ही अनेक दार्शनिक विचारधारायें प्रचलित हैं। भारत में भी अनेक, मत सम्प्रदाय प्रचलित हैं जिनकी कार्य पद्धति के द्वारा ही उनके स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। इसी प्रकार आर्य समाज को लोग किस रूप में स्वीकार करते हैं, यह जानने के लिये अथवा आर्य समाज के स्वरूप के विषय मे लोगों के दृष्टिकोण ज्ञापनार्थ प्रस्तुत प्रश्न रखा गया जिसके फलस्वरूप उत्तरदाताओ से निम्न तथ्य उभरकर सामने आये हैं —

83 प्रतिशत से भी अधिक उत्तर दाताओं ने आर्य समाज के स्वरूप के सबध में यह विचार व्यक्त किया है कि यह सत्य प्राचीन वैदिक धर्म और सस्कृति, सभ्यता का पोषक, प्रचारक तथा महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित है। 39 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे समाज सुधारक के रूप मे माना है जबकि एक तिहाई 33 प्रतिशत ने इसे क्रान्तिकारी राष्ट्रव्यापी आन्दोलन के रूप मे स्वीकार किया है, विशेषकर स्वाधीनता आन्दोलन, जनजागरण, शिक्षा प्रसार, जातीय समस्या उन्मूलन, तथा महिलाओ की स्थिति सुधारक आन्दोलन बताया है। 10 प्रतिशत उत्तरदाता इस मत के भी हैं जो यह मानते हैं कि आर्य समाज हिन्दू समाज का एक सुधारवादी आन्दोलन है, जो कि हिन्दू समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता, बालविवाह, सतीप्रथा, आदि कुरीतियों का निराकरण, वेदो के यथार्थ स्वरूप तथा यथार्थ वेदार्थ का प्रचार करना, इसका लक्ष्य रहा है। इसका अभिप्राय यह है कि हिन्दू समाज मे जो बुराईयां, कुरीतियां व्याप्त हैं उन्हें आर्य समाज स्वीकार नहीं करता है, अपितु उनका विनाश करके स्वस्थ सुसगठित मानव समाज की स्थापना करना चाहता है। इसी दृष्टि से शोधपीठ के निदेशक श्री दत्तात्रेय आर्य ने 'The Arya Samaj Hindu without Hinduism' नामक ग्रन्थ की सृजना की है।

इसी अध्ययन मे एक नवीन तथ्य उभरकर सामने यह भी आया है कि कोई भी उत्तरदाता ऐसा नहीं है जिसने इसे नवीन सम्प्रदाय या मत स्वीकार किया हो, अतः आर्यसमाज-मुस्लिम ईसाई आदि के समान कोई नया पन्थ नहीं है यह तथ्यो से सुस्पष्ट हो जाता है।

(क्रमश)

धर्म निरपेक्षता और संविधान

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य—

भारतीय संविधान में सेक्युलर (धर्म-निरपेक्ष) शब्द प्रारम्भ से नहीं था। किन्तु उसकी भावना का द्योतक ये प्रावधान अवश्य था कि भारत के किसी नागरिक के साथ धर्म जाति सम्प्रदाय या लिंग के अनुसार कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा। और प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्राप्त होंगे।

बाद में संविधान में संशोधन करके सेक्युलर शब्द भी उसके आधारभूत उद्देश्यों में जोड़ दिया गया।

जैसा मैं अपने पूर्व लेखों में स्पष्ट कर चुका हूँ कि राजनीतिक कारणों से धर्म निरपेक्षता का यह आदर्श विकृत होकर सर्व धर्म सापेक्ष बन गया है। जिसके दुष्परिणामों की की विवेचना इन लेखों में की जा चुकी है। सेक्युलर का अर्थ पंथ-निरपेक्ष किया जाए या धर्म निरपेक्ष, ये केवल एक शाब्दिक विवाद रह गया है। धर्म का वास्तविक अर्थ (रलीजन, धर्म या पंथ न होने पर भी देश के संविधान एवं कानूनी परिपेक्ष्य में धर्म अब इन्हीं अर्थों में रूढ़ हो गया है। जैसे सिख का शाब्दिक अर्थ भले ही शिष्य हो और मुसलमान का अर्थ 'ईमान में पक्का' व्यक्ति हो। किन्तु व्यवहार में ये दोनों शब्द अब एक धर्म या सम्प्रदाय के अनुयायियों के लिए ही प्रयोग होते हैं। इसलिए यहां हम धर्म निरपेक्ष इसी प्रचलित अर्थ में प्रयोग कर रहे हैं।

संविधान के मौलिक अधिकारों में चार ऐसे प्रावधान हैं जिनका आधार धार्मिक कहा जा सकता है। अर्थात् धारा 25, 26, 28 और 30 इनमें भी मौलिक प्रावधान धारा 25 में है जिसमें कहा गया है, "भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म पर विश्वास रखने, धर्म का पालन करने और उसका प्रचार करने की पूरी स्वतन्त्रता होगी"। धारा 26 में धार्मिक समुदायों को अपना धार्मिक संस्थाओं का प्रबन्ध व व्यवस्था करने की स्वतन्त्रता दी गई है। धारा 28 के अनुसार सरकारी अथवा सरकार द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त शिक्षण-संस्थाओं में किसी विद्यार्थी को उसके अभिभावकों की इच्छा के विपरीत किसी धर्म की शिक्षा देने का निषेध किया गया है।

धारा-30 का दुरुपयोग

धारा 30 का उपयोग आज केवल अल्पसंख्यकों की अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता तक ही सीमित नहीं रहा है। इस धारा में अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों की तुलना में विशेष अधिकार दिए गए हैं। अल्पसंख्यकों की शिक्षण संस्थाएं सरकारी अनुदान प्राप्त करने के बावजूद अपने धर्म की शिक्षा इनमें दे सकती हैं। उल्लेखनीय है कि, धारा 30 की उप-धारा-3 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि धार्मिक अल्पसंख्यकों की शिक्षण-संस्थाओं को बहुसंख्यकों की संस्थाओं की तरह ही सरकारी अनुदान प्राप्त होगा। और उन्हें 90 से 100 प्रतिशत तक सरकारी अनुदान प्राप्त हो रहा है।

ये संस्थाएं अपने अनुयायियों के बच्चों को तो अपनी धार्मिक शिक्षा देने में स्वतन्त्र हैं ही, इसके साथ ही ये अन्य धर्मानुयायियों के बच्चों को भी अपने धर्म की शिक्षा देने में स्वतन्त्र हैं। केरल के शिक्षा अधिनियम और सेंट जेवियर कालेज, अहमदाबाद के संबंध में दिए गए न्यायालयों के निर्णयों में यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है।

हिन्दुओं के प्रति अन्याय

जन साधारण में यह मान्यता है कि धारा 25 एवं संविधान के कुछ अन्य प्रावधानों द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतन्त्रता दी गई है। लेकिन इस संदर्भ में एक विचारणीय प्रश्न यह है कि आखिर बहुसंख्यक, अल्पसंख्यकों की तरह अपनी शिक्षण संस्थाओं में अपने धर्म की शिक्षा क्यों नहीं दे सकते? क्या इसका अर्थ समझा जाए कि अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों की अपेक्षा अधिक धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त है। यदि है तो क्या यह बहुसंख्यक हिन्दुओं के प्रति अत्याचार नहीं है।

इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि जिस आशंका से बहुसंख्यक हिन्दुओं को अपनी शिक्षण-संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा देने से वंचित रखा गया है, वह निराधार है। क्योंकि बहुसंख्यक हिन्दू अपनी भिन्न-भिन्न मान्यताओं वाले अनेक समुदाय होने के कारण दुरुपयोग नहीं कर सकते हैं।

इसके साथ ही यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि इन में भी केवल आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाएं ही ऐसी हैं जिन्हें वह अधिकार प्राप्त नहीं है जो गैर हिन्दू शिक्षण संस्थाओं को प्राप्त है। अतएव धारा 30 का व्यावहारिक परिणाम यह हुआ है कि मात्र हिन्दू समझे जाने के कारण आर्यसमाज जैसे संगठन को भी धार्मिक स्वतन्त्रता के इस अधिकार से वंचित रखा गया है। जो उन्हें संविधान द्वारा प्राप्त है। अतएव आर्य समाज की शिक्षण-संस्थाओं द्वारा धारा 30 के अन्तर्गत समान अधिकार की मांग एक प्रकार से हमारे संविधान की धर्म-निरपेक्षता की परीक्षा है।

हिन्दू वंचित क्यों ?

उल्लेखनीय है कि देहली उच्च न्यायालय ने अपने आर्यसमाज संबंधी निर्णय में कहा है 'हिन्दू या उनके किसी सम्प्रदाय द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाओं को धारा 30 के अन्तर्गत दिए गए विशेष अधिकार प्राप्त नहीं हो सकते।' इसको हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं, कोई हिन्दू संगठन या संस्था को यह अधिकार नहीं है कि वह अपनी इच्छा की शिक्षण-संस्थाएं स्थापित करके उसके लिए सरकारी अनुदान व मान्यता प्राप्त कर सके। इसके साथ ही वह अल्पसंख्यकों के समान अपनी शिक्षण-संस्थाओं में अपने धर्मानुयायियों तक को भी स्वधर्म की शिक्षा नहीं दे सकता। इस सबके उपरांत भी यदि वह अपनी संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा बच्चों को देना चाहे तो उसकी मान्यता व अनुदान सरकार द्वारा बन्द कर दिए जाएंगे। ऐसी स्थिति में वह चाहकर भी अपनी संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा नहीं दे सकता। इस संदर्भ में यह भी दृष्टव्य है कि देश में जो पब्लिक स्कूल नामक संस्थाएं हैं वे गैर सरकारी होने पर भी केवल उच्च वर्ग के तथा धनी व्यक्तियों के लिए हैं। जिसमें होने वाला व्यय प्रति छात्र हजार रुपये मासिक तक होता है। ये संस्थाएं गरीब तो दूर मध्यम वर्ग की पहुंच से भी परे हैं। किन्तु अन्य ईसाई शिक्षण संस्थाएं इन पब्लिक स्कूलों का मुकाबला आसानी से कर सकती हैं। क्योंकि उनमें भी उच्च वर्ग के हिन्दू बच्चों द्वारा फीस की पर्याप्त आय होती है। उच्च वर्ग के ये अभिभावक अपने बच्चों के अच्छे भविष्य के लिए ये व्यय बर्दास्त करते हैं। व्यय के अतिरिक्त वे उस सांस्कृतिक और धार्मिक वातावरण को सहन या पसन्द करते हैं जो इन संस्थाओं में उनके बच्चों को मिलता है। यद्यपि संविधान द्वारा अल्पसंख्यकों की इन संस्थाओं को सरकारी अनुदान प्राप्त करने का अधिकार है फिर भी उनमें से अनेक उसे स्वेच्छा से लेना अस्वीकार करती हैं। क्योंकि अनुदान से कहीं अधिक आय उन्हें वैसे ही प्राप्त होती है और साथ ही वे अनुदान से सम्बन्धित प्रत्येक बन्धन से मुक्त होकर इन संस्थाओं को अपने धर्म प्रचार का प्रभावकारी माध्यम बना सकती हैं।

बहुसंख्यकों का अधिकार

न्यायमूर्ति श्री खन्ना ने अपने निर्णय के अनुभाग 73 में कहा है कि यद्यपि धारा 29 के शीर्षक में अल्पसंख्यक शब्द का प्रयोग किया गया है फिर भी वे अधिकार अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक दोनों को प्राप्त हैं। अनुभाग 74 में वे इस बात का समर्थन करते हैं कि प्रबंधकों को इन धाराओं में स्थापित संस्थाओं को अपनी मान्यता के अनुसार चलाने का अधिकार है। आगे वे कहते हैं कि धारा 25 से 30 तक की सब धाराओं का उद्देश्य धार्मिक विश्वासों और उनके प्रचार के लिए समान मौलिक अधिकार देना है।

न्यायमूर्ति खन्ना के उपर्युक्त विवेचना के उपरान्त यह प्रश्न पैदा होता है कि बहुसंख्यक हिन्दुओं को इस प्रकार की धार्मिक स्वतन्त्रता का लाभ कैसे मिल सकता है। जैसा तथ्यों से स्पष्ट है कि धारा 0 का क्षेत्र अब केवल अल्पसंख्यकों की धार्मिक स्वतन्त्रता का रक्षा अथवा उसमें हस्तक्षेप न होने देने तक सीमित नहीं है। उन्हें एक विशेष अधिकार यह भी दिया गया है, जिसके द्वारा वे सरकारी व्यय पर बहुसंख्यकों के बच्चों में भी अपने धर्म का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं। गोया उच्च न्यायालय ने सन् 1980 में दिये अपने निर्णय में कहा है कि इस प्रकार की असमानता अल्पसंख्यकों

आचार्य वाक्ले का नागरिक (पृष्ठ 1 का शेष)

करते हुए अपने द्वारा लिखित पुस्तकों के आधार पर वर्णमा [illegible] प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज के मन्त्री रासासिंह ने किया।

दयानन्द कालेज में अभिनन्दन —

अजमेर 6 मई। गौवर्धन पुरस्कार करने के उपलक्ष्य में आचार्य वाक्ले का दय नद कालेज, अजमेर मे श्री के धार वाक्ले की अध्यक्षता में अभिनदन किया गया। उन्हें हिन्दी व संस्कृत में मानपत्र भेंट किए गए। अत में श्री वाक्ले ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य मे कहा कि समाज मे एकता तभी [illegible] है जब उसमे व्याप्त [illegible] [illegible] व कुप्रथायें समाप्त हो जाएं। और मेरा यह निश्चित विश्वास है कि इन बुराइयो का केवल आर्य समाज ही समाप्त कर सकता है। लेकिन आज आर्य समाज स्वयं ही सुधार की आवश्यकता अनुभव कर रहा है। अतएव यदि हम देश, समाज मे एकता लाना चाहते हैं तो हमे आर्य समाज का पुनगठन करना चाहिए। कार्यक्रम सचालन डा ए के गुप्ता ने किया।

किशनगढ़ में अभिनन्दन—

किशनगढ 10 मई। आर्यसमाज किशनगढ के आचार्य दत्तात्रेय वाक्ले का अभिनदन समारोह श्रीयुत मेजर दौलतसिंह (भू पू वरिष्ठ आयुक्त राजस्थान सरकार) की अध्यक्षता एव डा फैयाज अली (सुप्रसिद्ध चित्रकार) के मुख्य आतिथ्य मे सम्पन्न हुआ।

समारोह में आर्य समाज के अध्यक्ष श्री सकोटिया रोटरी क्लब के अध्यक्ष श्री [illegible], लायन्स क्लब के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जैन, मुस्लिम समाज के सदर श्री गुजराती भाई, सिक्ख समुदाय की ओर से सरदार सतोषसिंह प्रेस क्लब की ओर से श्री ताराचंद जैन, डा मैडिकल ऐ के सचिव भगवान स्वरूप, अग्रवाल समाज के उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल, कुमावत समाज के श्री बालूराम, जैन स्कूल के श्री अग्रचद, मडवाल मालाकार सघ के सचिव [illegible], [illegible] एसोसियेशन के सचिव [illegible] चौधरी, [illegible] सहकारी समिति के अध्यक्ष श्री रामस्वरूप चौधरी, युवक कांग्रेस के अध्यक्ष श्री [illegible] [illegible] कांग्रेस के जिला मन्त्री श्री [illegible] बादशाह भाजपा के अध्यक्ष [illegible] सोलंकी, नगर कांग्रेस के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण गोस्वामी, महिला समाज की श्रीमती उमा आर्य एव श्रीमती गोविन्द अग्रवाल, दयानन्द कालेज के भू पू छात्र श्री बसन्तसिंह सूरज बसल, सत्सग समिति के श्री कृष्णभूषण भट्ट एव सभी आर्य सभासदो ने भी श्री वाक्ले का माला अर्पण कर हार्दिक स्वागत किया।

अपने आभार भाषण मे श्री दत्तात्रेय वाक्ले ने अपनी रचित पुस्तको के आधार पर बताया कि आर्यसमाज क्या है, और क्या चाहता है? उन्होने अपने बचपन के क्रांतिकारी किशनगढ के संस्मरण सुनकर सभा को रोमांचित कर दिया। कार्यक्रम का सयोजन आर्य समाज के मन्त्री डा वीर रत्न आर्य ने किया। ***

धर्म निरपेक्षता (पृष्ठ 5 का शेष)

को बहुमत के साथ समानता देने के लिए आवश्यक है। यदि ऐसा नही किया जाता तो अल्पसख्यक और बहुसख्यको के अधिकारो पर कुछ नियत्रण लगाना और उन्हे सीमित करना आवश्यक है ताकि अल्पसख्यको के अधिकार सुरक्षित रहे। परन्तु वस्तुत हिन्दू धार्मिक दृष्टि से बहुसख्यक हैं ही नहीं। अतएव केवल उनके तथाकथित राजनैतिक बहुमत के आधार पर वे धार्मिक क्षेत्र मे इस प्रकार के एकाधिकार का उपयोग कर ही नही सकते। पुन यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या बहुसख्यकों के प्रति यह भेदभाव और उन पर लगाया गया यह नियत्रण उचित और आवश्यक भी है या नही। जैसा स्पष्ट है कि धारा 30 द्वारा अल्पसख्यको को यह तथाकथित समानता देने के स्थान मे बहुमत को ही इस मौलिक अधिकार से वचित कर दिया गया है। अत बहुसख्यको को अल्पसख्यको के बराबर भी अधिकार नही रहा। इस प्रकार समानता के स्थान म स्पष्ट रूप से असमानता स्थापित की गई।

वास्तविक समस्या —

अतएव आज की वास्तविक समस्या अल्पसख्यको को समान धार्मिक अधिकार देने के विपरीत बहुसख्यको को कम से कम अल्पसख्यको के समान अधिकार देने की [illegible] से देखा जाय तो अनेक धर्मों, सम्प्रदायों व मान्यताओं वाले हमारे देश में गैर हिन्दुओं को कोई विशेष अधिकार देने की [illegible] नहीं है। क्योंकि तथाकथित हिन्दू धर्म वास्तविक अर्थ में कोई धर्म है ही नहीं और यदि है तो वह सगठित धर्म नहीं है। अतएव यह पूर्णतया स्पष्ट है कि भले ही उसके अनुयायियों की संख्या कितनी ही क्यों न हो यह अल्पसंख्यकों के अधिकारों की प्राप्ति में बिल्कुल बाधक नहीं है। इसके विपरीत यह भी उल्लेखनीय है कि तथाकथित धार्मिक अल्पसंख्यक, धार्मिक दृष्टि से इतने सगठित है कि अनेक जातियों, सम्प्रदायों मे विभक्त बहुसख्यक हिन्दू उनका मुकाबला नही कर सकते हैं। इसका उदाहरण [illegible] में हुए साम्प्रदायिक दगे हैं। इसके साथ यह भी दृष्टव्य है कि तथाकथित हिन्दू धर्मानुयायी अपनी उदारता या निर्बलता के कारण गैर हिन्दुओं को हिन्दू धर्म में दीक्षित करने में विश्वास नहीं रखते। उनकी इस आत्मघाती मान्यता के कारण कि सभी धर्म समान हैं, आर्यसमाज का शुद्धि आन्दोलन जैसा महत्वपूर्ण आन्दोलन भी असफल हो गया है।

जनगणना के आकड़े इस बात के प्रत्यक्ष गवाह है कि हिन्दू धर्म के अनुयायियों की संख्या तथाकथित अल्पसख्यकों की तुलना में [illegible] कम होती जा रही है। [illegible] [illegible] नहीं देखी है [illegible] [illegible] रहा है। [illegible] विपरीत गैर हिन्दुओं का हिन्दू धर्म में प्रवेश केवल नगण्य एव अपवाद मात्र है।

हिन्दू सब धर्मों के प्रति समानता व आस्था का व्यवहार करते हैं। अजमेर की प्रसिद्ध दरगाह आने वाले तीर्थयात्रियों मे अधिकाश सपन्न [illegible] होते हैं। इसके विपरीत अजमेर के निकट ही हिन्दुओं का प्रसिद्ध और [illegible] बड़ा तीर्थ पुष्कर है उसमे सैलानियो एव व्यापारियो के अतिरिक्त [illegible] ही कोई गैर हिन्दू तीर्थयात्रा की दृष्टि से जाता है। वास्तव मे देखा जाए तो हिन्दुओ का तथाकथित राजनैतिक वर्चस्व भी केवल प्रचार मात्र [illegible] क्योंकि बहुसख्यको के ये धार्मिक सगठन या राजनैतिक दल केन्द्र मे तो [illegible] दूर अधिकाश राज्यो तक मे सत्ता मे नही आ सके हैं।

यह सब विवेचन केवल यह सिद्ध करने के लिए किया जा रहा है कि जिस भय और आशका के कारण धार्मिक अल्पसख्यको को अपनी स्वतन्त्र शिक्षण सस्थाओं का यह विशेष अधिकार दिया गया है वह सर्वथा निराधार है। इतना ही नही उपयु क्त विवरण से यह भी स्पष्ट है कि यदि आज किसी की धार्मिक स्वतन्त्रता को खतरा है अथवा सरक्षण देने की आवश्यकता है तो वह तथाकथित बहुमत का हिन्दू धर्म है। △

स्वत्वाधिकार आर्य समाज अजमेर के लिए व प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स, बाबू मोहल्ला केसरगज अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 162
सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 3 शनिवार 30 मई 1987
अंक 7 प स.-43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

ज्येष्ठ शु॰ 3 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

आर्य-विचारकों द्वारा--

आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी मे सभा द्वारा आर्य समाज की वर्तमान स्थिति के सम्बध मे सुझाव देने के लिये नियुक्त समिति द्वारा प्रस्तुत की गई सिफारिशो पर पुन व्यापक विचार करने का आदेश समिति के सयोजक श्री दत्तात्रेय जी आर्य को दिया था।

समिति के सयोजक श्री दत्तात्रेय जी ने देश के प्रमुख आर्य विचारको-विद्वानो को इन सुझावो पर व्यापक रूप से विचार विमर्श करने हेतु निमन्त्रित किया। निमन्त्रित आर्य विद्वानो का इस सदर्भ मे 20, 21 एव 22 अप्रैल 1987 को आर्य समाज, मदिर मार्ग, नई दिल्ली मे आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध सन्यासी डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे सम्मेलन हुआ। आर्य विचारको द्वारा तीन दिन तक विचार विमर्श करने के पश्चात् सर्व सम्मति से प्रत्येक बिंदुओ पर मान्य सिफारिशो के आधार पर अतिम रिपोर्ट तैयार की गयी। 22 अप्रैल को साय 5 बजे समिति के सयोजक श्री दत्तात्रेय (वाब्ले) आर्य के नेतृत्व मे आर्य विचारको के शिष्टमडल ने अतिम रिपोट सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनदबोध जी को प्रस्तुत की। शिष्टमडल मे—सर्व श्री डा आनन्द प्रकाश, उपमत्री सार्वदेशिक सभा, के देवरत्न आर्य अतरग सदस्य सार्वदेशिक सभा, दौलतराम चड्डा अतरग सदस्य सार्वदेशिक सभा, मगलसेन चोपडा, अतरग सदस्य सार्वदेशिक सभा सम्मिलित थे।

आर्य जगत् की जानकारी हेतु हम शिष्टमडल द्वारा सार्वदेशिक सभा प्रधान को दिया ज्ञापन, स्वामी सत्यप्रकाश का आर्यो को चेतावनी पूर्ण उदबोधन तथा समिति की अतिम रिपोट को अविकल रूप से प्रकाशित कर रहे है।

—सपादक

शिष्टमंडल द्वारा स्वामी आनन्दबोध जी को दिया गया ज्ञापन

विषय --आर्य समाज के सबध मे सभा द्वारा नियुक्त उपसमिति की सिफारिशें।

माननीय स्वामी जी,

सार्वदेशिक सभा द्वारा सन् 1982 मे आर्य समाज की वर्तमान स्थिति तथा भावी कार्यक्रम के सबध मे आचार्य दत्तात्रेय (वाब्ले) आर्य के सयोजकत्व मे सर्व श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, प्रो, शेरसिंह जी प्रधान, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा श्री वीरेन्द्रजी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा डा भवानीलाल जी अध्यक्ष दयानन्द शोधपीठ पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ की जो उप समिति नियुक्ति की गई थी, उसकी अन्तरिम रिपोर्ट सन् 1983 मे सभा को प्रस्तुत की गई। जिस पर आपके आदेशानुसार उप नियमो मे सम्भावित संशोधन की प्रक्रिया के सम्बन्ध मे सन् 1983 और पुन सन् 1986 मे आर्य समाजो, प्रतिनिधि सभाओ और प्रमुख आर्य विद्वान पुरुषो की सम्मितियाँ प्राप्त की गई, जिनसे स्पष्ट है कि उप समिति की अधिकांश सिफारिशो को बहुमत का स्वागत और समर्थन प्राप्त हुआ है।

आपके द्वारा इस रिपोर्ट पर प्राप्त सम्मतियो के बारे मे और अधिक व्यापक रूप से विचार करने की आवश्यकता बताई गई और तदनुसार आपके आदेश पर सयोजक महोदय ने देश भर के लगभग 20-25 आर्य प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन निमन्त्रित किया।

इसका प्रथम अधिवेशन डा स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे 20 अप्रैल 1987 को आर्य समाज मन्दिर मार्ग देहली मे सम्पन्न हुआ। सर्व प्रथम अध्यक्ष पद से स्वामीजी ने आर्य समाज के सैद्धान्तिक पहलुओ तथा गौरवपूर्ण-कार्यों और इतिहास की पृष्ठ भूमि मे उसकी वर्तमान स्थिति तथा समस्याओं पर अपना लिखित एव मूलत तात्विक विवेचन प्रस्तुत किया। जो इस आवेदन के साथ सलग्न है। सयोजक महोदय ने उपसमिति की नियुक्ति और उसकी रिपोर्ट पर 3 वर्षो मे की गई कार्यवाही से उपस्थित सज्जनो को अवगत कराया। तत्पश्चात् उपस्थित आर्य विचारको ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता करते हुए और उसके सामने उपस्थित समस्याओ का वर्णन करते हुए अनेक सुझाव दिये। श्री मोहनलाल जी मोहित (मौरिशस) ने भी उपस्थित होकर अपने विचार व्यक्त किए।

अन्त मे सर्व सम्मति से निश्चित किया गया कि कल अर्थात् 21 अप्रैल को प्रात 10 बजे पुन सम्मेलन की बैठक की जाय जिसमे आज के सुझावो सहित उपसमिति के प्रत्येक बिंदु पर विचार करने के बाद उसे सार्वदेशिक सभा द्वारा शीघ्र कार्य करने के लिए प्रस्तुत किया जाय।

तदनुसार आज दि 21-4-87 को स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे पुन अन्तरिम रिपोर्ट के प्रत्येक बिन्दु पर विचार करने के पश्चात् कुछ सशोधनो के बाद उपसमिति की रिपोर्ट जिस रूप मे स्वीकार की गई व साथ सलग्न है।

सयोजक के अतिरिक्त सम्मेलन मे सार्वदेशिक सभा की अतरग सभा के जो सदस्य उपस्थित थे, उन सबके हस्ताक्षरो से यह सशोधित रिपोर्ट अब आपकी सेवा मे प्रस्तुत है। आशा है कि कई वर्षों से विचाराधीन इस अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न पर सार्वदेशिक सभा अपनी विशेष बैठक यथाशीघ्र बुलाकर इन सुझावो को कार्यान्वित करेगी और उनमे से जिनके लिए आवश्यक हो उन पर आर्यसमाज के उपनियमो तथा सार्वदेशिक सभा के सविधान मे जरूरी सशोधन करने के लिए तुरत कार्यवाही करेगी।

हम है आपके आर्य बन्धु
शि म के सदस्यो के हस्ताक्षर

△ △

सम्पादकीय

एक नजर इधर—

आर्य समाज का पुनर्गठन क्यों ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 7 अप्रैल 1875 ई चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को बम्बई नगरी मे आर्य समाज' की स्थापना की थी। 1975 ई भारत की राजधानी दिल्ली मे आर्य समाज की स्थापना शताब्दी मनाई गई थी। उस अवसर पर आर्य समाज की विराट प्रचण्ड शक्ति का दिग्दर्शन हुआ था। जो जयघोष आकाश मे गजायमान हो रहे थे उनमे से एक था "आर्य समाज ने क्या किया, सौ साल मे कमाल किया।" सचमुच स्वामी श्रद्धानन्द, प लेखराम, गुरुदत्तजी, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, महाशय कृष्ण, आनन्द स्वामी जी के समय आर्यसमाज की क्रान्तिकारी विचारधारा का बहुत तेजी से विस्तार हुआ था और यह सही अर्थों मे एक सार्वभौमिक सगठन बन गया। देश-विदेश मे पाच हजार के लगभग आर्य समाजें स्थापित हो चुकी है, हजारो की सख्या मे स्कूल कालेज,पाठशालाए, गुरुकुल स्थापित हो चुके। भारत के पुनर्जागरण एव राष्ट्रीयता तथा स्वाधीनता सग्राम मे आर्य समाज का अभूतपूर्व योगदान रहा। सचमुच आर्य समाज का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है।

मोर अपने पखो को देखकर आनन्द मे निमग्न होकर झूम उठता है परन्तु जब अपने पैरो को देखता है तो आखो से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है। ठीक यही स्थिति आज स्थापना के 112 वर्ष बाद आर्य समाज की है। हमे आज आत्ममालोचन की आवश्यकता है। यदि यह कहा जाय कि आज आर्यसमाज मे अनार्यो का बहुमत हो गया है चुनावी दल-दल मे आर्यसमाज का सगठन ऊपर से नीचे तक फूटपरस्ती, गुटबाजी, कुर्सीपरस्ती का शिकार होकर अपने मूलमन्तव्य 'ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है" तथा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' से बहुत पीछे हट गया है। वदो के आचार को भुला बैठा है। आर्य समाज मे युवको का नही के बराबर प्रवेश हो रहा है। बूढे लोग सत्सगो मे आ जाते है, सत्सगो मे उपस्थिति भी नही के

(शेष पृष्ठ चार पर)

सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी सत्यप्रकाशजी का आर्यों के नाम चेतावनी पूर्ण उद्बोधन

आर्य समाज की वर्तमान स्थिति व भविष्य
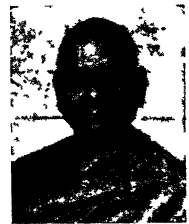
स्वामी सत्यप्रकाश जी

1 1975 मे आर्य समाज की स्थापना हुये एक सौ वर्ष हो गये। अब इसका प्रवेश दूसरी सदी मे चल रहा है।

2 आर्य समाज के साथ अपने देश मे प्रार्थना समाज ब्रह्म समाज, राम-कृष्ण मिशन आदि अनेक सस्थाओ ने जन्म लिया। इसमे कई सस्थायें शिथिल हो गई कुछ आगे बढी और कुछ नई सस्थाए उत्पन्न हुई। आर्य समाज के विरोध मे सनातन धर्म सस्थाए, राम-राज्य परिषद, हिन्दू महासभा, विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ आदि सस्थाए उत्पन्न हुई। कुछ ने आर्य समाज का प्रत्यक्ष विरोध किया और कुछ के साथ हमारा स्नेह सम्बन्ध भी रहा। इस स्नेह का हमारी गतिविधि पर उचित व अनुचित तथा प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव पडा।

3 सभी विश्वव्यापी आदोलन पिछले सौ डेढ सौ वर्षो मे जन्मे, बढे तथा विकृत हुए तथा कुछ समाप्त भी हो गए और कुछ की रूपरेखाए पूर्णतया परिवर्तित हो गई।

4 सभी महान् आन्दोलनो का पिछले इतिहास का विवरण रहा है।

5 आज की इस विचार गोष्ठी का उद्देश्य भी आर्य समाज का मूल रूप व वर्तमान रूप तथा भविष्य इन तीनो पर विचार करना है। प्रसन्नता की बात है कि सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे तथा श्री वाल्ले जी के सयोजन मे और मेरी अध्यक्षता में आप यह गोष्ठी कर रहे हैं।

6 आपको पूर्ण स्वतन्त्रता है कि इस गोष्ठी मे गम्भीरता से समस्त आग्रहो को छोड कर आप चिंतन करें। कभी-कभी मैं भी अपने कुछ विचार दूगा तथा वाल्ले जी भी देंगे। पर आप नि शक और उदारता से इन पर विचार करें।

7 महर्षि दयानन्द ने बडे विस्तार से अपने सिद्धान्तो को हमारे समक्ष रखा। यह हमारी आधार शिला है। कृपया आप सोचें कि कहीं हम इन मौलिक सिद्धातो से समझौता करने को तो तैयार नही हो गये। विशेषतया अपने पडौस मे हिन्दुओ के साथ। मेरा ऐसा ख्याल है कि बहुत सी बातो मे हमने उनके समक्ष अपना सिद्धात पक्ष (मूर्ति पूजा व अवतारवाद) स्पष्ट रखना बद कर दिया है। इसका ही यह प्रभाव हुआ कि स्वतन्त्रता के बाद हिंदुओ में अनेक गुरु, अनेक बाबा व नये देवी देवता उत्पन्न हो गये। तथा अनेक अन्ध विश्वास बढे। क्या यह सब हमारी ढिलाई की वजह से तो नही हुआ जिससे देश आगे नही गया तथा पीछे गया और नैतिकता की दृष्टि से भी राष्ट्र का पतन हुआ।

8 आर्य समाज न केवल भारतीय हिंदुओ के लिए था इसका दृष्टिकोण मानव मात्र के लिये था। क्या इस पर आप विचार करने की इच्छा रखेंगे कि अन्य भारतीय कुछ सप्रदाय भारत भर से बाहर भी विदेशियो मे प्रचलित हुए, लेकिन आर्य समाज हिन्दी भाषी हिन्दुओं के बीच मे क्यो केन्द्रित रह गया।

9 आर्य समाज के दस सिद्धात तथा वेद के मन्तव्य सबको स्वीकार्य हैं, क्या हमने साथ ही साथ यह भी सोचा कि इनको मानना ही केवल वैदिक धर्म नहीं है। अपनी मध्यकालीन परम्पराओ से छुटकारा पाना भी उतना ही आवश्यक है। उदाहरणतया मेरी अपनी आस्था है कि—जो मूर्ति पूजा करता है, उसको यज्ञ करने का कोई अधिकार नही है। यज्ञ के बन्द होने से मूर्तिपूजा प्रारम्भ हुई। और अब भी मूर्ति पूजक परमात्मा और प्राकृतिक शक्तियो के स्थान मे ऐतिहासिक व्यक्तियो, काल्पनिक मिथ्या तथा चमत्कार मे आस्था रखते हैं। जहा चमत्कार है वहाँ आस्तिकता लुप्त हो जाती है। मेरा अभिप्राय है कि प्रत्येक हिन्दू को बताना होगा कि वैदिक सिद्धान्ती बनने के लिए आपको कौनसी आस्थाए छोड़नी होगी।

10 क्या ऐसा तो नही है कि भारतीय राजनीतिक परिस्थितियो के कारण हमने मुसलमानो व ईसाइयो के प्रति कटुता उत्पन्न कर ली है। तथा यह कटुता हमारे रास्ते मे विदेशो मे काम करने के लिए बाधक हो रही है। जो प्यार हमने अपने पडौसी हिन्दू को यहा दिया है, वही प्यार हमें विदेशो मे वहा के बौद्धो, ईसाईयो तथा मुसलमानों को देना होगा। मैं कोई भी बात आपसे आग्रह पूर्वक नही कर रहा हू। आप स्वतन्त्रता पूर्वक विचार करें।

11 हमने कार्य सचालन के लिए आर्य सभाए प्रतिनिधि सभाए, सार्वदेशिक सभा व अन्य प्रकार के सगठन बनाए है। आपको सोचना होगा कि क्या ये सगठन आज विघटन का काम तो नही कर रहे है। महर्षि दयानद ने इस युग की स्थितियो को समझते हुए हमे जनतान्त्रिक सगठन प्रणाली दी थी। क्या हमारे सगठन की वर्तमान स्थिति किसी दूसरी दिशा मे चिन्तन करने के लिए तो बाध्य नही कर रही है। क्या आर्य समाज की जनता आज उतनी ही अनैतिक तो नही हो गई, जितनी देश की समस्त जनता। अब क्या परस्पर की कलह महर्षि दयानन्द की कल्पना का अत्यत विकृत रूप तो नहीं है।

12 मैं यह मानता हूं कि हिन्दू भारतीय समाज का न्यूनतम स्तर (जीरो लेवल) है। जो भी कोई आस्था वाले इस देश से अपनी आस्थाओ से गिरेगा वह हिंदू कहलाने लगेगा। चाहे जैन हो, चाहे नास्तिक या अन्य सम्प्रदाय वाले और आर्य समाज भी अपनी आस्थाओ से गिरकर हिन्दू बन जावेगा। मुझे कुछ-कुछ ऐसा आभास दिखता है। ⊙

आर्य समाज की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य के सम्बंध में सार्वदेशिक सभा की प्रस्तुत रपट

आचार्य श्री दत्तात्रेय जी के संयोजकत्व मे सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्य-समाज के भावी कार्यक्रम तथा पुनर्गठन के सबध मे नियुक्त उप-समिति की ओर से सार्वदेशिक सभा को 1983 मे एक अतरिम रिपोर्ट पेश की गई थी। 7 अप्रैल 1983 को दीवान हाल आर्य समाज दिल्ली मे इस उपसमिति की बैठक हुई। जिसमे अतरिम रिपोर्ट पर पुनर्विचार किया गया। उसमे श्री दत्तात्रेय आर्य के अतिरिक्त स्वामी विद्यानन्द जी तथा प्रो शेरसिह जी भी उपस्थित थे। बाकी दो सदस्यो अर्थात् श्री वीरेन्द्र जी और डॉ भवानी लाल जी भारतीय ने अपनी लिखित सम्मति प्रत्येक बिन्दु पर भेज दी। विचार-विनिमय के बाद अतरिम रिपोर्ट को कुछ सशोधनो के साथ स्वीकार किया गया। जिसे श्री दत्तात्रेय जी आर्य ने सार्वदेशिक सभा की अतरग मे औपचारिक रूप से प्रस्तुत किया। सभा ने विचार-विनिमय के बाद निश्चय किया कि उपनियमो मे सशोधन सबधी प्रक्रिया के अन्तर्गत इन्हे प्रसारित कर दिया जाए।

तत्पश्चात् जनवरी 1987 मे सार्वदेशिक सभा के प्रधानजी ने प्राप्त सम्मतियो पर और अधिक व्यापक विचार करने का आदेश दिया। तदनुसार डॉ स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे 20 व 21 अप्रैल को आर्य समाज मदिर मार्ग में आमत्रित आर्य पुरुषो द्वारा विचार-विमर्श किया गया। इस गोष्ठी मे प्रो शेरसिह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा, श्री मोहन लाल मोहित, प्रधान आर्य सभा मौरिशस, श्री दौलतराम चढ्ढा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, महाराष्ट्र, श्री मगल सेन चोपड़ा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात, श्री चन्द्रकिरण शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, श्री विद्यारत्न जी अधिष्ठाता-रक्षा विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, डॉ आनन्द प्रकाश जी, उपमत्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली, कैप्टन देवरत्न आर्य, महामन्त्री आर्य समाज सान्ताक्रुज, बम्बई, श्री खैराती लाल जी भाटिया, मत्री-आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली, प्रो रत्न सिह जी निर्देशक नैतिक शिक्षा, डी ए वी मैनेजिंग कमेटी, दिल्ली, श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा दिल्ली, डॉ प्रशात वेदालकार, रीडर, हसराज कॉलिज दिल्ली, श्री विशम्भर प्रसाद शर्मा, मध्य प्रदेश, श्री भगाराम जी वानप्रस्थी हैदराबाद ने उपस्थित होकर विचार किया। गोष्ठी का सयोजन व सचालन आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य ने किया।

अपने प्रारम्भिक प्राक्कथन मे स्वामी सत्यप्रकाश जी ने आर्य समाज के मूल-मतव्यो एव इसकी गौरवमयी परम्पराओ की पृष्ठभूमि मे वर्तमान स्थिति तथा समस्याओ पर प्रकाश डाला। और भविष्य मे ऐसे कार्यक्रमो पर अधिक बल देने की आवश्यकता बताई। जिनसे आर्य समाज का मौलिक स्वरूप बना रहे और जनसामान्य के हित मे इसकी शिक्षाओ का अधिक से अधिक प्रचार इस दृष्टि से किया जा सके ताकि अनैतिकता व अधविश्वास की समाप्ति हो। आर्य समाज के सस्थागत रूप के साथ ही इसके आन्दोलनात्मक पक्ष पर भी ध्यान देने की आवश्यकता उन्होने बताई ताकि यह धार्मिक जडता-ग्रसित न हो जाए। और पूरे समाज को उद्वेलित के करने लिए पुन एक प्रेरक शक्ति के रूप मे खडा हो सके।

पूर्व प्रस्तुत अतरिम रिपोर्ट को आधार मानकर विचार विनिमय किया गया और आवश्यक सशोधन एव परिवर्धन के उपरात जो सर्व-सम्मत सस्तुतियाँ तय हुई उन्हे अब प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तुत रपट को दो भागो मे विभक्त किया गया है। प्रथम भाग के अतर्गत उन सस्तुतियो को सम्मिलित किया गया है जिन्हे अधिक महत्त्वपूर्ण समझा गया है और जिन पर सार्वदेशिक सभा द्वारा तुरन्त कार्यवाही की अपेक्षा की जाती है। द्वितीय भाग के अतर्गत जो सस्तुतिया हैं, वे आवश्यक और उपयोगी हैं। जिन पर सार्वदेशिक सभा द्वारा उचित कार्यवाही की जानी चाहिए।

दूसरे भाग मे जो सुझाव रखे गये उनके सबध मे समिति ने सुझाव दिए कि इनको तथा अन्य प्रस्तावो को कार्यान्वित करने के लिए सार्वदेशिक सभा एक या अधिक समितिया बनाकर उनकी सिफारिशो को ध्यान में रख कर यथाशीघ्र निर्णय अथवा आवश्यक व्यवस्था करे। इन सुझावो को और अधिक स्पष्ट और निश्चित रूप देने का कार्य भी इन्ही उपसमितियो द्वारा किया जावे।

प्रथम भाग—

1 आर्य समाज को अपना पृथक् धार्मिक अस्तित्व सुरक्षित रखने का हर सभव प्रयास करना उपयुक्त होगा और इस दृष्टि से आर्य समाज के सदस्यता सबधी वर्तमान उपनियम 3 में रेखाकित सशोधन जोडकर उसे निम्न रूप मे लिखना होगा अर्थात्—

मैं प्रसन्नतापूर्वक आर्य समाज के उद्देश्यो को जैसा कि नियमो मे वर्णित किए गए हैं तथा मन्तव्यो एव सिद्धातो को जो वेदो के आधार पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो मे लिखे गये हैं, मानता और उनके अनुकूल आचरण करना स्वीकार करता हू। मैं घोषणा करता हू कि ईश्वर के प्रतीक के रूप मे किसी मूर्ति या जड वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नही करता और न ही श्राद्ध और तीर्थ जैसे निषिद्ध और जन्म-विवाह और मृत्यु के अवसरो पर कोई अवैदिक कार्य करता हू। मैं जन्मगत जातपात तथा छुआछूत का विचार और व्यवहार दोनो मे विरोध करता हू। मैं अनैतिकता एव अधविश्वास पर आधारित किसी भी प्रचलित मान्यता को स्वीकार नही करता।

निम्नलिखित नये उपनियम वर्तमान नियम 4 के बाद जोडे जाए।

(क) आर्य समाज का कोई सदस्य या अधिकारी अपने नाम के आगे कोई भी जातिसूचक उपनाम नहीं लिखेगा और सामान्यतया आर्य उपनाम का ही उपयोग करेगा।

(ख) आर्य समाज मे सदस्यो की दो श्रेणियाँ होती हैं— साधारण सभासद व आर्य सभासद।

साधारण सभासदो को उपर्युक्त सिद्धात सबधी नियमो के अतर्गत प्रवेश दिया जाए।

आर्य सभासद बन जाने के उपरात वे समाज द्वारा सचालित कार्यक्रमो मे से किसी एक या अधिक म नियमित रूप से कार्यरत रहने पर "सक्रिय सदस्य" समझे जायेंगे। ऐसे कार्यक्रमो के कुछ उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं —

1 वैदिक सिद्धातो का प्रचार प्रसार—जिनमे सन्यासी, उपदेशक, लेखक, प्रकाशक आदि सम्मिलित हैं। 2 गौ आदि पशु रक्षा 3 शुद्धि 4 सामाजिक सेवा 5 जातपात, छुआछूत का निराकरण 6 शिक्षा कार्य 7 महिला सुधार 8 ग्राम प्रचार आदि।

(ग) आर्य समाज के पदाधिकारी सक्रिय सदस्यो मे से ही निर्वाचित हो सकेंगे

(घ) किसी राजनैतिक दल का पदाधिकारी तथा उसका सांसद या विधान-सभा आदि मे निर्वाचित व्यक्ति आर्य समाज, आर्य प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा का पदाधिकारी नही हो सकेगा। ऐसे व्यक्तियो पर कार्यकारिणी आदि की सदस्यता के लिए कोई प्रतिबध नही होगा। उपर्युक्त नियमो का व्यावहारिक रूप से पालन होता है या नही, यह निश्चित करने के लिए कोई अधिकृत माध्यम आवश्यक है, अन्यथा इन उपनियमो का कोई उपयोग नही है। इस दृष्टि से सशोधित नियमो का उल्लघन होने पर सतर्कता समिति (जिसका प्रावधान वाछनीय है। को निश्चित प्रक्रिया द्वारा अनुशासनात्मक कार्यवाही करने का अधिकार होगा, जिसमे पदमुक्ति और सदस्यता से भी पृथक् किया जाना सम्मिलित है।

2 सार्वदेशिक सभा की अतरग का गठन इस आधार पर होना चाहिए ताकि उसमे पदाधिकारियो एव कुछ विशिष्ट व्यक्तियो के अतिरिक्त ऐसे महानुभावो को सम्मिलित किया जा सके जो अपनी क्षमता और योग्यता के कारण सार्वदेशिक सभा के किसी विभाग अथवा विशेष प्रकार के कार्य को सभालने मे सक्षम

——→

हो। इस प्रकार के व्यक्ति सार्वदेशिक सभा के विभिन्न कार्यों मे क्रमबद्धता, स्थायित्व एव प्रवाह ला सकते है।

3. (23) प्रातीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ के सविधानो मे एक रूपता का प्रावधान किया जाए। इसी प्रकार नीचे के जिला स्तर, विकास खण्ड स्तर पर व्यवस्था का प्रावधान प्रातीय सभाओं के सविधान मे रखा जाए।

4 (25) साप्ताहिक सत्सगो म उपस्थिति तथा सभासदो के शताश चन्द सम्बधी नियमो को व्यावहारिक पालन के लिए निश्चित प्रक्रिया एव व्यवस्था का प्रावधान हो तथा पदाधिकारी बनन के लिये साप्ताहिक अधिवशनो मे 50% उपस्थिति अनिवार्य हो। पदाधिकारियो एव अतरग सदस्यो की अतरग बैठको मे 50% उपस्थिति अनिवार्य समझी जाए और यह न होने पर उस व्यक्ति को आगामी निर्वाचन मे पद ग्रहण के अयोग्य समझा जाए।

5 (30) दलगत राजनीति से आर्य समाज को पृथक रखने तथा उसके व्यापक धार्मिक तथा राष्ट्रीय स्वरूप को सुरक्षित रखने के लिए उपनियमो मे आवश्यक प्रतिबधो का समावेश किया जाए। जैसे समाज भवनो मे राजनैतिक सभाओ सम्मेलनो तथा उत्सवो मे दलगत राजनीति सम्बधी व्याख्यानो तथा राजनैतिक निर्वाचनो मे आर्य समाज की ओर से किसी राजनैतिक पार्टी के समर्थन या विरोध का निषेध किया जाए।

6 (37) आर्य समाज के आतरिक विवादो को सावदेशिक सभा एव प्रतिनिधि सभाओ की न्याय सभाए निपटाया करें ताकि अतरग का समय सगठनात्मक एव रचनात्मक काय मे लगे।

7 (38) आर्य समाज मदिरो मे दैनिक सत्सगो की व्यवस्था की जाए जिनमे सध्या हवन, वेद पाठ, भजन आदि का नियमित प्रबध हो।

8 जनगणना म अपने को 'आर्य" लिखाने का प्रावधान उपनियम द्वारा किया जाए। इसी प्रकार आर्यो के सस्कार विशेषकर यज्ञोपवीत व विवाह सस्कार, व्यवस्था एव विधि-विधान की दृष्टि म यथासम्भव आय समाज भवन मे ही किये जाए।

दूसरा भाग—

1 आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओ की प्रबध-समितियो मे बहुमत तथा कम से कम मुख्याध्यापको और आचार्यों की आर्य समाजी होने की व्यवस्था की जाए।

2 पुरोहित प्रणाली-प्रशिक्षण, वेतन तथा नियत्रण की व्यवस्था की जाए। आर्य समाज के माध्यम से शुद्ध हुए व्यक्ति को आय उपनाम देकर आर्य समाज का सहायक सदस्य और बाद मे पूण सदस्य बनाया जाए।

3 (5) जन सामान्य म स्वाध्याय परम्परा को प्रोत्साहित करना और आय समाजो मे पुस्तकालयो की अनिवार्य स्थापना का आदोलन चलाना।

4 (12) केंद्रीय पुस्तकालय, शोध केन्द्र की स्थापना की जाए।

5 (13) प्रचार शैली मे सुधार जैसे व्यक्तिगत सम्पर्क, प्रचारार्थ यात्रा, निशुल्क साहित्य वितरण आदि।

6 (14) प्रशिक्षण केन्द्र जिनमे उपदेशक तथा कार्यकर्ता पूरे समय के लिए तैयार किए जाए, जिनका सचालन एक केंद्रीय समिति द्वारा किया जाए।

7 (15) आर्य शिक्षण सस्थाओ का केंद्रीय सगठन बने तथा विश्वविद्यालयो के पाठयक्रमो [जिससे आय समाज का सबध है] मे सुधार किया जाए और महर्षि दयानन्द के दशन से सबधित पुस्तको को स्थान दिलाया जाए।

8 (19) विभिन्न स्तरो पर आय विद्वानो की गोष्ठिया आयोजित की जाए।

9 (20) वद के आधार पर सत्य विद्याओ का अधिकृत विश्लेषण और विवेचन।

10 (22) रामायण, महाभारत आदि लोकप्रियग्रन्थो के वैदिक सिद्धात सबधी सस्करण प्रकाशित किये जाए।

11 (26) शिक्षण सस्थाओ की वतमान स्थिति पर विचार तथा उनमे धर्मशिक्षा के समान पाठ्यक्रम की व्यवस्था।

12 (27) गुरुकुलो का केंद्रीय सगठन बनाया जाए।

13 (28) आर्य समाज समर्थक समाचार पत्रो का प्रकाशन किया जाए।

14 (29) स्वामीजी की जीवनी तथा आय समाज के इतिहास का प्रचार।

15 (31) राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के विभिन्न क्षेत्रो मे कार्यरत आर्यो का सक्रिय सहयोग प्राप्त करना।

16 (32) ग्रामीण क्षेत्रो के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित प्रचारको की व्यवस्था करना।

17 (33) श्रमिक वर्ग मे आर्य समाज के सघन प्रचार की व्यवस्था करना।

18 (34) ग्रामीण क्षेत्र मे भजन-सगीत तथा प्रचार-यात्राओ द्वारा आर्यसमाज के प्रचार का अभियान चलाना।

19 (35) आर्य समाज के उत्सवो पर वैदिक सिद्धान्तो पर उपदेश और अवैदिक सिद्धातो का खण्डन।

20 (36) युवक-युवतियो का सगठन (आर्य वीर दल, आय कुमार सभा, आर्य वीरागना दल आदि)

21 (37) आर्य समाजो तथा आर्य प्रतिनिधि सभाओं मे दल-बदी पर रोक (नियमित रूप से निर्वाचन, अधिकारियो के पद ग्रहण की अवधि सीमित तथा अनावश्यक हस्तक्षेप समाप्त करना)

22 (38) आय समाज की आन्तरिक कमजोरियो का विश्लेषण व समाधान का उपाय।

23 (40) व्यावहारिक प्रतिज्ञायें और उनका पालन।

24 (41) नियमित रचनात्मक कार्यक्रम यज्ञ, सध्या, स्वाध्याय, आय का 5 प्रतिशत भाग दान, मदिरो की सुव्यवस्था, पुरोहित की नियुक्ति आदि।

25 आय शिक्षण सस्थाओ के अध्यापको तथा विद्यार्थियो को प्रोत्साहित करने तथा उन्हे आर्य समाज के निकट लाने की दृष्टि से सम्मान एव प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन करना।

26 सन्यास तथा वानप्रस्थ की दीक्षा केवल अधिकृत माध्यम द्वारा ही, निश्चत योग्यता प्राप्त व्यक्तियो को ही दी जाए।

7 आय परिवार सघ और उसमे रोटी-बेटी के व्यवहार की व्यवस्था।

28 पदाधिकारियो तथा उनके परिवार जनो से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन देंगे।

29 आकाशवाणी व दूरदर्शन द्वारा वेद प्रचार।

30 आय सभासदो के परिवारो मे नियमित रूप से वैदिक सिद्धातो के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना। विशेष कर नवागन्तुक परिवारो की।

31 किसी आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रान्तीय भौगोलिक क्षेत्र मे स्थापित आर्य समाजें उस प्रान्त की प्रतिनिधि सभा से सबधित हों।

32 शतकुण्डी यज्ञो आदि अवैदिक कार्यों पर प्रतिबन्ध।

33, समाजो व उसकी सस्थाओ की सपत्ति के अधिकार तथा प्रबध के लिये अखिल भारतीय कानून या एक्ट।

आर्य समाज का पुनर्गठन क्यो ?

(दूसरे पृष्ठ का शेष)

बराबर रहती है। शताश, दशाश, 25% उपस्थिति अधिकाश आर्यों के विवाह आदि सम्बन्ध जन्मगत जाति आधार पर होते हैं। इतना ही नही पौराणिको (सनातनियो) के सामाजिक कुरीतियों तथा अंध विश्वासो का भी आर्य परिवारों मे बोलबाला है। जो आर्य समाज एक प्रचण्ड आग की भट्टी था, वह अब सर्वथा निष्क्रिय तथा गतिहीन हो गया है।

अत पुराने मकान के जीर्णोद्धार एव रोगी शरीर के कायाकल्प की तरह ही आर्य समाज के भी पुनगठन की आवश्यकता है। आर्य समाज के नियम उपनियमो, सिद्धान्तो, मतव्यो को अपने मन वचन, कर्म मे धारण करने वाले आर्य समाजियो को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। आर्य समाज की पृथक् पहचान की आवश्यकता है। आय समाजियो के गुणात्मक स्तर को आगे ऊँचा उठाने की आवश्यकता है। भले ही हमारी सख्या कम हो परन्तु यदि हम सुसगठित होकर सशक्त होगे तो हम राष्ट्रीय जीवन धारा म प्रबल वर्चस्व स्थापित कर सकेंगे। उसी स्थिति मे आर्य समाज अपनी सार्वभौमिकता, प्रखरता सैद्धातिकता, सत्य निष्ठा, कर्त्तव्य परायणता का परिचय दे सकेगा। अन्यथा नमक की खान मे जैसे सब कुछ नमक ही हो जाता है उसी प्रकार हम भी पौराणिक समाज की ढुलपन तथा समझौतावादी परम्परा के कारण अपने अस्तित्व को ही गवा बैठेंगे।

बड़े गौर से सुन रहा था जमाना,
हमी सो गये दासता कहते कहते।

अत आज इस बात की प्रबल आवश्यकता है कि आर्य समाज को सक्रिय, प्राणवन प्रखर सगठन बनाने हेतु उसका पुनर्गठन किया जाय। ईश्वर हमे सद्बुद्धि और सद्शक्ति प्रदान करे कि हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के सही अर्थो मे वास्तविक अनुयायी बन सकें।

—रामसिंह

आर्य समाज की कार्यविधि, सगठन, पुनर्गठन एक समाज शास्त्रीय अध्ययन

(गताक से आगे)

सत्संग में उपस्थिति के प्रति दृष्टिकोण

सकलन कर्ता—डा कृष्णपालसिंह दयानद शोधपीठ अजमेर

प्रारम्भ से ही आय समाज मे सत्सग की प्रमु ता रही है और स्व सिद्धान्तो वैदिक मान्यताओ के प्रचार का मुख्य साधन रहा है। वतमान समय मे भी सत्सग सगठन के मुख्य केन्द्र के रूप मे विद्यमान है और इसके माध्यम से ही वैदिक धम की जानकारी जनसमुदाय को दी जाती है। अत उपयक्त चर्चित विषय के सबध मे जो तथ्य सामने आये हैं वह इस प्रकार है —

यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि आध से अधिक उत्तरदाता आय समाज के सत्सग मे नियमित रूप से जाते हैं अथवा उन्ह इस बारे मे सत्सग के कायक्रमो से सन्तोष है। दूसरी और 15 प्रतिशत व्यक्ति वे भी हैं जो सत्सग में रुचि रखते हैं लेकिन समयाभाव के कारण सत्सग मे नियमित रूप से नही जा पाते हैं। एक प्रतिशत इस कारण से सत्सग मे नही जा पाते हैं या तो आयसमाज भवन उनके नगर म नही है अथवा उनके निवास से बहुत दूरी पर है।

कुछ उत्तरदाताओ की यह भी शिकायत है कि आय समाज के सत्सग के कायक्रम कम रुचिकर होते हैं। इसी कारण लगभग 7 प्रतिशत की अभिरुचि होने पर भी सत्सग मे उपस्थित नही होते हैं। 4 प्रतिशत के अनुसार उनकी आय समाज और उसक सत्सग मे आस्था नही है यद्यपि वे भी यह अनुभव करते हैं कि आय समाज एक राष्ट्रहित चिन्तक सुधारक सस्था है तथापि किन्ही कारणो से वे सत्सग मे अथवा उसके कायक्रमो मे सहयोग प्रदान नही करते हैं।

स्पष्ट है कि लगभग एक तिहाई उत्तरदाता सत्सग मे नियमित रूप से नही जाते है जिसके कारण विचारणीय हैं। वास्तव मे आय समाज के सत्सगो एव कायक्रमो को अधिक उपयोगी तथा लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता अनुभव की जाती रही है। यह भी एक तथ्य है कि सत्सग मे अधिकाश रूप से वे ही व्यक्ति जाते हैं जो समाज के सदस्य हैं।

सदस्य बनने के सम्बन्ध में मन्तव्य

आय समाज देश भक्ति की भावना से ओत प्रोत देश हितकारक, समाज सुधारक इत्यादि रूप मे प्रारम्भ से लेकर अद्यावधि पयन्त इसी विचार सारणी मे प्रवाहित हो रहा है। इसी कारण से समाज के कायक्रमो सत्सगो के प्रति जनता की अभिरुचि बनी हुई है दूसरे समाज के दस नियम भी सावभौमिक रूप मे होने से व्यक्ति समाज के सदस्य बनने की अभिलाषा रखते रहे हैं। वतमान समय मे हमने उत्तरदाताओ से समाज क सदस्य बनने के विषय मे जानकारी जाननी चाही तो निम्नलिखित दृष्टिकोण प्राप्त हुआ है।

65 प्रतिशत ने आय समाज के सदस्य बनने की इच्छा अभिव्यक्त की है। जबकि 32 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने अपनी स्पष्ट राय नही प्रदान की है। इसके कारणो पर आय समाज के उत्तराधिकारी नेतृत्व वग को विशेषरूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। 3 प्रतिशत ने सदस्य न बनने के सम्बन्ध मे अपना दृष्टिकोण अभिव्यक्त किया है। अत तथ्यो के आधार पर कहा जा सकता है कि समाज के सिद्धान्तो एव कायविधि के प्रति आस्था होने से दो तिहाई उत्तरदाताओ ने सदस्य बनने के पक्ष मे अपनी राय दी है। दूसरे जिन्होने स्पष्ट राय नही दी है उनके कारणो पर गम्भीर विवेचन तथा अनुसन्धान की आवश्यता है।

सदस्यता त्यागने के कारण

ऊपर वर्णित तथ्यो मे यह तथ्य स्पष्ट विदित हो रहा है कि 32 प्रतिशत उत्तरदाताओ न सदस्य बनने अथवा न बनने मे कोई स्पष्ट राय नही दी है। इस कारण से यह जानना भी आवश्यक हो गया कि क्या इन व्यक्तियो ने अथवा अन्य व्यक्तियो न समाज की सदस्यता त्याग दी है यदि त्याग दी है तो उसके क्या कारण हो सकते हैं? इस विषय म हमे उत्तरदाताओ से जो तथ्य प्राप्त हुए हैं वे निम्न प्रकार हैं —

19 प्रतिशत उत्तरदाताओ न यह सम्मति अभिव्यक्त की है कि उनकी अन्य धम मे आस्था हो गई है इस कारण से सदस्यता त्याग दी है अथवा सदस्य न बनने की सम्मति दी है। 8 प्रतिशत व्यक्तियो ने सदस्यता त्यागने का यह कारण बतलाया है कि उनका अन्य आय समाजियो से मतभेद है। 4 प्रतिशत का यह मानना है कि आयसमाज मे सौहार्दपूर्ण वातावरण का अभाव है। इस कारण सदस्यता त्याग दी है। जबकि 60 प्रतिशत व्यक्तियो ने अपनी कोई स्पष्ट राय नही दी है। इसका कारण यह भी हो सकता है या तो वे व्यक्ति समाज के सदस्य है अथवा बनने के इच्छुक है।

(शेष आगामी अक मे)

भोर फूटेगी

— लाखनसिंह भदौरिया सौमित्र —

भोर फूटेगी अधरी रात रह सकती नही है।
उठ रहा ऐसा धुआ घर मे कि दम ही दम घट रहा है।
यह अधरा है कि उपवन मालियो से लुट रहा है।
आ रही आंधी उमगो की स्तब्धता छाया हुई है
लग रहा है शान्त कण कण से बवण्डर उठ रहा है।
पीर के मुख पर हथली रख चुपाना चाहते हो-
क्रान्ति की आवाज ऐसे शान्त रह सकती नही है।
भोर फूटेगी अधरी रात रह सकती नही है॥

धैर्य की काफी परीक्षा हो चुकी है हो रहा है
मौन का यह अथ मत समझो बगावत सो रही है
बेबसी चुप साध अतिम सास अब लेती नही है—
अश्रु की हर बूद विप्लव बीज पल पल बो रही है।
आंसुओ के देश मे देखो मशालें जल उठी हैं।
आख की मेहमान बन बरसात रह सकती नही है।
भोर फूटेगी अधरी रात रह सकती नही है॥

साझ से आख मिचौनी खेलकर जी भर चुकी है
षोडशी बन युग निशा अठखेलिया सब कर चुकी है।
चाँद के सग कर दिये हैं तम पिता ने हाथ पीले
अब विदाई का सभी श्रृगार रजनी कर चुकी है।
लो उषा ने माग मे सिन्दूर कब का भर लिया है-
तारको की यह अटल बारात रह सकती नही है।
भोर फूटेगी अधरी रात रह सकती नही है॥

सूय का रथ आ रहा है जगमगाता नव-किरण से
शान्ति के नूपुर ध्वनित हैं क्रान्ति के उठते चरण से,
भोर आत्म-विभोर हो मिलने चला है अलि-कण से
लो प्रभाती के सुनो स्वर पछियो के जागरण से
अशुमाली की तुम्हे अभ्यथना करनी पडेगी—
मुट्ठियो मे बन्द स्वर्णिम प्रात रह सकती नही है।
भोर फूटेगी अधरी रात रह सकती नही है।

पता—भोजपुरा मैनपुरी (उ प्र

— अगला अक —

- धम और राजनीति
  —प क्षितीश वेदालकार
- सनातन धम का स्वरूप
  —डा महाश्वेता चतुर्वेदी
- डा कृष्णपाल सिह के लेख की अतिम किश्त
  व
  कविवर लाखनसिह भदौरिया की कविता।

आर्यसमाज मसूदा का निर्वाचन

प्रधान —दुलेसिह
मत्री —जवाहरलाल देवल
कोषाध्यक्ष —उदयसिह चान्दावत
पुस्तकालयाध्यक्ष देवमुनि आय

बाल सदन हेतु अपने जीवन भर की कमाई 30 हजार रुपये का चैक सदन के प्रधान दत्तात्रेय आर्य को देते हुए दानदाता मालचन्द।

अनुकरणीय दान

अजमेर 17 मई। स्थानीय भग वानगंज निवासी श्री मालचन्द देवाणा ने अपने परिवार अर्थों द्वारा की जा रही उपेक्षा से प्रेरित होकर अपने जीवन भर की सारी कमाई 30 000 रुपये दयानंद बाल सदन हेतु सदन के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य को दान कर दी है।

सदन प्रधान श्री दत्तात्रेय जी ने देवाणाजी के दान को अनुकर णीय बताते हुए कहा कि इससे पूर्व भी हमें कई व्यक्तियों ने लाखों रुपये दान के रूप में दिये हैं। परन्तु स्व डा सूयदेवजी शर्मा व देवाणा जी के दान को मैं विशेष महत्व देता हू क्योंकि इन दोनो महानुभावों ने अपने जीवन की सारी पवित्र कमाई दान दे दी। एव अपने भविष्य के गुजारे के लिए एक पैसा भी अपने पास नहीं रखा। आचाय जी ने श्री देवाना को आश्वासन दिया कि सदन आपको जीवनपयत कोई कष्ट नही होने देगा।

वैदिक गणित: सर्वश्रेष्ठ गणित

वैदिक गणित की किताब उन चंद किताबो मे है जो छपती तो भारत म है पर बिकती विदेशो मे है। इग्लड और अमेरिका के तमाम अनेक शिक्षा सस्थानो मे वदिक गणित पढाया जा रहा है। लदन स्कूल आफ इकोनोमिक्स मे यह किताब कोस मे है। अमेरिका आस्ट लिया और हालैंड मे भी कोस मे इसे पढाया जाता है। लदन के ही मेरी वाड सेंटर मे फिल हाल एक कोर्स चलाया जा रहा है जिसमे बताया गया है कि 10+2 प्रणाली के समकक्ष वहा की कक्षाओ का गणित वदिक गणित प्रणाली द्वारा पढाया जा सकता है इस पूर्ण तया भारतीय प्राचीन वैदिक गणित पर इग्लड और अमेरिका मे बाकायदा रिसच हो रही है। अब तक चार किताब भी प्रकाशित हो चुका है। डा नरेंद्र पुरी के अनुसार वदिक गणित की लोकप्रियता का एक कारण बेशक इसकी व्यावहारिक उपयोगिता है। ग्यारह महीने केवल दो घटे रोज वदिक गणित का अभ्यास करने से इटरमीडियेट गणित पाठयक्रम के बराबर योग्यता हासिल की जा सकती है। गणित की ऐसी तमाम प्रतियोगिताओ मे जहा कैल्कुलेटर का प्रयोग वर्जित है। वैदिक गणित प्रणाली का ज्ञान वरदान है। कई तरह की गणनाओं में तो वैदिक गणित कैल्कुलेटर को भी पछाड सकता है ऐसा डा पुरी का दावा है।

—जनसत्ता के सौजन्य से

सस्थागत प्रशासनिक कार्यों मे हिन्दी को प्रमुखता दें

दिल्ली डी ए वी कालेज प्रबधकर्ती समिति ने अपने सभी सस्था प्रमुखो को सस्था के प्रशासनिक कार्यों मे हिन्दी का प्रयोग करने का निदश दिया है।

समिति के सगठन सचिव श्री दरबारीलाल ने दि 13 4 87 व 27 4 87 को सस्था प्रमुखो को भेज गये अपने परिपत्रो मे उक्त निर्देश दिया है।

श्री दरबारीलाल ने सस्था प्रमुखो से यह भी अनुरोध किया है कि वे छात्रो को अभिवादन के लिये नमस्ते शब्द का प्रयोग करने की प्रेरणा दें तथा नेकटाई को उनकी वेशभूषा से पृथक कर दें।

हिन्दू नाम से जोडना दयानन्द का अपमान है

— वीरेन्द्र कुमार आर्य —

महर्षि दयानन्द को मात्र हिन्दुओ के साथ जोडकर रखना या उन तक ही सीमित करना ऋषि के प्रति अन्याय है। आजकल आयजगत के कुछ मान्य विद्वान नेता भी स्वामी जी को मात्र एक हिन्दू सुधारक सिद्ध करने पर तुले हुए हैं। इन व्यक्तियो में दो प्रकार के व्यक्ति हैं। प्रथम जो अपने निहित स्वार्थों के वशीभूत हो ऐसा कहते या लिखते हैं। द्वितीय-जो वतमान परिस्थितियों मे ऐसे किए जाने मे ही देश समाज का हित समझते हैं।

हमारी दृष्टि में प्रथम प्रकार के व्यक्ति तो निश्चित रूप से ऋषि-द्रोही हैं। हां, द्वितीय प्रकार के व्यक्ति भ्रमवश ऐसा कह रहे हैं। और उनका कोई निजी स्वार्थ इसमें नहीं है। परन्तु ऋषिवर के प्रति अपराध तो वह भी कर ही रहे हैं भले ही अन-जाने में कर रहे हों।

इस सदभ में माननीय आचाय देवव्रतजी अवस्थी के शब्द मननीय हैं। उनके शब्द ये हैं —"ऋषि दयानन्द ने हिन्दू नामक किसी वर्ग के लिए कुछ नहीं मानव-मात्र के उत्थान का बीडा उठाया था। आर्य समाज को मात्र हिन्दू नाम से जोडना महर्षि दयानन्द का अपमान है"।

*आर्यमित्र 3 मई, 1981

आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तिकाएं

प्रो० दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1 देश धम और हिन्दू समाज को आय समाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2 हमारी राष्ट्रीयता का आधार मूल्य रु 1 00
3 आचार सहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4 दी आय समाज हिन्दू विदाउट हिन्दूइज्म (अग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु 75 00
5 आय समाज हिन्दू धम का सम्प्रदाय नही मूल्य—50 रु

अन्य प्रकाशन—

1 आय समाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द 20 00 रु अजिल्द 16 00
—ले लाला लाजपतराय
2 धम शिक्षा (भाग 1 से 11 तक)—पूरे सट का मूल्य रु 32 00
3 दयानन्द कथा सग्रह—मूल्य रु 3 00
4 परिचय निर्देशिका (समस्त देश विदेश की आय शिक्षण सस्थाओं का परिचय)—मूल्य रु 12 00

सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला—15 भाग

[प्रत्येक समुल्लास पर स्वतन्त्र ट्रैक्ट]

1 ईश्वर एक नाम अनेक
2 आदश म ता पिता
3 शिक्षा और चरित्र निर्माण
4 गृहस्थाश्रम का महत्व
5 स यासी कौन और कैसे हो ?
6 राज्य व्यवस्था
7 ईश्वर और वेद
8 जगत् की उत्पत्ति
9 स्वर्ग और नरक कहां है ?
10 चौके चूल्हे मे धम नही है
11 हिन्दू धम की निबलता
12 बौद्ध और जैन मत
13 वेद और ईसाई मत
14 इस्लाम और वदिक धर्म
15 सत्य का ग्रथ तथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत् के चोटी के विद्वानो के द्वारा लिखित हैं एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान प्रो दत्तात्रेयजी आय ने किया है। ग्रन्थमाला के पूरे सैट का मूल्य 8/ रुपये है।

दयानन्द शोधपीठ

दयानन्द (स्नातकोत्तर) कॉलेज अजमेर में स्थित दयानन्द शोधपीठ के लिए एक प्रोफेसर की वेतन लगभग 3000/- प्र मा अथवा 1500 2500 मे आवश्यकता है। योग्यताए निम्न प्रकार होनी चाहिये

1 मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से एम ए या एच डी हिन्दी सस्कृत अथवा दशनशास्त्र मे द्वितीय श्रेणी
2 दस वष का स्नातकोत्तर कक्षाओ को पढाने का अनुभव
3 अनुसधान काय का अनुभव अथवा योग्यता
ख्याति एव मान्यता प्राप्त विद्वान को अन्य योग्यताओ मे छूट।

आवेदन-मन्त्री आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर को करें।

कार्यालय अधीक्षक
दयानन्द कॉलेज अजमेर

स्वत्वाधिकार आय समाज अजमेर के लिए व प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गग द्वारा श्री आय प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज अजमेर मे मुद्रित एव आय समाज भवन अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 162
सृष्टि सम्वत् · 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य .
समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष 3 सोमवार15 जून, 1987
अंक 8 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

आषाढ कृ० 4 सवन 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

चौ० साहब का निधन राष्ट्र व समाज को अपूरणीय क्षति

(पढ़िये पृष्ठ 4 पर– "जातिवाद विरोधी चौ० चरणसिंह")
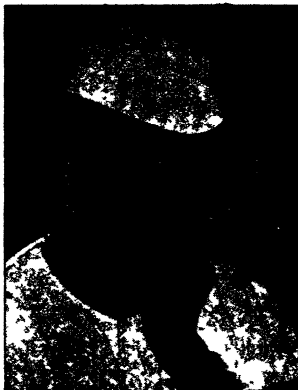
अजमेर के प्रख्यात शिक्षाविद् एव आर्य समाज अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने भू. पू प्रधानमन्त्री चौधरी चरणसिंह के निधन को राष्ट्र व समाज की महान क्षति बताया है ।

चौधरी साहब के परिवार के नाम प्रेषित अपने शोक सदेश में आचार्य जी ने लिखा है, "चौधरी साहब महान देश भक्त, मूर्धन्य स्वतन्त्रता सेनानी, कट्टर आर्य समाजी, जातपात विरोधी, किसानों के मसीहा एव ईमानदार व्यक्ति थे । भारतीय राजनीति मे उन्होने अपने श्रेष्ठ व्यक्तित्व एव चरित्र के बल पर विशेष छाप छोडी है । उनके निधन से जो सामाजिक व राजनैतिक शून्यता पैदा हुई है उसकी पूर्ति होना कभी सभव नही है । शोक की इस घडी मे, मैं आपके साथ सहानुभूति प्रकट करता हूँ और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि वह चौधरी साहब की दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान कर एव आप परिजनो को धैर्य प्रदान करे ।"

इसी आशय का एक शोक प्रस्ताव आय समाज अजमेर ने भी चौधरी साहब के परिवार को प्रेषित कियाहै ।

आर्य समाज अजमेर ने अपने शोक प्रस्ताव में कहा है कि चौधरी साहब महान आर्यनेता, किसानो व दलितो के मसीहा, ईमानदार व्यक्ति थे । ऋषि-भक्ति आप मे कूट-कट-कर भरी हुई थी । आपके निजी कमरे मे केवल ऋषि दयानन्द का चित्र था । जातिवाद व भ्रष्टाचार के आप कटटर विरोधी थे ।

आपके निधन से राष्ट्र व आर्य समाज की महान् क्षति हुई । ऋषिवर के महान् सेनानी को हमारी कोटिश श्रद्धाजलियाँ सादर समर्पित हैं ।

—वीरेन्द्र कुमार आर्य

गत एक माह से दिल्ली और मेरठ साम्प्रदायिक दगो की आग मे झुलस रहे हैं । इन दगो मे अब तक कई सौ व्यक्तियो की जानें जा चुकी हैं और करोडो रुपये की सम्पत्ति स्वाहा हो चुकी हैं । देश मे साम्प्रदायिक दगे पहली बार नही हुए हैं, बल्कि इस सदर्भ मे दुर्भाग्यपूण उल्लेखनीय तथ्य यह है कि पराधीन भारत के मुकाबले स्वतन्त्र भारत मे दगो के प्रतिशत मे वृद्धि हो गई है । गत दो वर्षों (1985-86) में ही लगभग 436 लोगो की जानें साम्प्रदायिक दगों मे गई हैं ।

परतत्र भारत मे हम साम्प्रदायिक दगो के लिए अग्रेजों को दोषी समझते थे । और अपनी इस धारणा के समर्थन मे तर्क देते थे कि वे अपने कूटनीतिक महामन्त्र 'फूट डालो और राज करो' के अन्तगत हिन्दू व मुसलमानो मे दंगे कराते हैं । यद्यपि हमारी यह धारणा गलत नही थी एव सत्यता पर आधारित थी । परन्तु स्वतन्त्रता के बाद हुए साम्प्रदायिक दगो ने यह सिद्ध कर दिया है कि इसके अतिरिक्त भी ऐसे कारण हैं जो कि हिन्दू व मुसलमानो के मध्य दगे भडकाने म प्रेरक का काम करत हैं ।

साम्प्रदायिक दगो का सबसे बडा कारण मैं मुसलमानो की चरम सीमा तक पहुँची असहिष्णुता को मानता हू ।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

खुशवन्तसिह का दुष्प्रचार

श्री खुशवन्तसिह उल फजूल व सारविहीन लिखने मे अपना कोई सानी नही रखते हैं । अभी गत सप्ताह उन्होने अपने स्तभ 'ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर' मे दगो के विषय में जो निराधार बातें लिखी हैं नि सदेह उनसे पत्रकारिता की गरिमा को भारी ठेस पहुची है । आपने लिखा है—"यह अब कोई रहस्य नही रह गया कि दिल्ली और मेरठ दोनो जगह जो मौतें हुई हैं उनमे ज्यादातर मुसलमान थे और शिकार हुए अधिकतर लोग पुलिस व पी ए सी द्वारा चलाई गई गोलियो से मरे ।'

देश के साधारण से साधारण आदमी को भी यह ज्ञात हो चुका है कि पी ए सी ने मलियाना गाँव मे गोली आत्मरक्षार्थ चलाई । परन्तु 'सरदार जी' फिर भी अपनी ही हाँके जा रहे हैं ।

प्रभु से प्रार्थना है कि पत्रकारिता जैसे पवित्र मिशन को श्री खुशवत सिह जी जैसे महानुभावो से बचाए ।

—वीरेन्द्र आर्य

प्रधान संपादक : रासासिह संपादक :वीरेन्द्र कुमार आर्य फोन कार्या : 21010

सम्पादकीय

नई शिक्षा नीति मे—

संस्कृत पर कुठाराघात असह्य

भारत सरकार द्वारा उद्घोषित नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत संस्कृत को सर्वथा उपेक्षित कर दिया गया है। पहले तृतीय भाषा के अन्तर्गत इसका थोडा बहुत अध्ययन होता था परन्तु अब दक्षिण भारतीय भाषा को त्रिभाषा सूत्र मे स्थान देने पर 'संस्कृत' नई पीढी के लिये सर्वथा अनजानी हो जायेगी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर देश की समस्त आर्य समाजो ने 10 मई को संस्कृत दिवस मनाकर तथा नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत संस्कृत की उपेक्षा का विरोधकर भारत सरकार से अनुरोध किया है कि संस्कृत का अध्ययन अध्यापन पूर्ववत् तथा ठोस रूप मे जारी रखा जाय। उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर संस्कृत का ज्ञान कराना अत्यावश्यक है।

संस्कृत देववाणी है। यह हमारे प्राचीन धर्म, आचार, नीति, इतिहास साहित्य और संस्कृति की वाहिका भाषा है। संस्कृत है तो भारत है, संस्कृत है तो भारतीय संस्कृति है, संस्कृत है तो भारतीयता है, संस्कृत है तो धर्म है, संस्कृत है तो आर्यत्व है।

संस्कृत के बल पर ही भारत प्राचीनकाल मे विश्वगुरु कहलाता था। संस्कृत विद्या और ज्ञान का अनुपम भण्डार है। वेद उपनिषद्, गीता, रामायण महाभारत सब संस्कृत मे है। समस्त प्राचीन वाङ्मय संस्कृत मे है। संस्कृत समस्त भारतीय भाषाओ की जननी है। उत्तरी भारत की आर्य परिवार की भाषाए तो संस्कृत की पुत्रिया है ही, दक्षिण की द्रविड भाषाओ मे 70 से 75 % तक संस्कृत के शब्द हैं। राष्ट्रीय एकता की प्रबल पोषक संस्कृत ही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रत्येक आर्य सभासद के लिये संस्कृत का ज्ञान आवश्यक बताया था। आर्य समाज ने अपने स्थापना काल से ही अपनी पाठशाला और विद्यालयो मे संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन की ओर ध्यान दिया। गुरुकुलीय शिक्षा का तो संस्कृत अनिवार्य अंग है।

अत संस्कृत की उपेक्षा भारतीय संस्कृति और धर्म पर कुठाराघात है जो सर्वथा असह्य है।

भारत सरकार द्वारा समय रहते पुनर्विचार कर संस्कृत को उसका उपयुक्त स्थान देना चाहिये। —रासासिंह

पत्र बोलते हैं—

नाम न हों, काम चाहिए

आपने पत्र का नाम अत्यन्त उपयोगी रखा है पर कार्य क्या हो सकेगा? इस विघटित समाज को ठीक करना कठिन है।

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार

आर्य समाज मार्ग गोरखपुर (उ० प्र०)

राजर्षि का पत्र—

आर्य जगत् को जगाने वाला

यह पत्र महत्वपूर्ण है। आर्यजगत् को जगाने वाला है। परमावश्यक है। मै इसकी उत्तरोत्तर उन्नति चाहता हूँ।

—रणञ्जयसिंह,

भूपति-भवन अमेठी (उ प्र)

शुभ—विवाह

डा ए वी अच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर के प्रधानाचार्य व आर्य समाज अजमेर के मंत्री श्री रासासिंह जी की सुपुत्री **सौ पुष्पा का चि धर्मेन्द्र** से एव दयानन्द बाल सदन की **सौ मंगली का चि ब्रह्मानन्द शर्मा से** क्रमश 3 जून व 10 जून का शुभ विवाह सम्पन्न हुआ।

आर्य पुनर्गठन' परिवार की ओर से नवदम्पत्तियो को हार्दिक शुभकामनाए।

उपसमिति की रिपोर्ट सराहनीय है

मैं आर्य समाज अजमेर के मुख पत्र 'आर्य पुनर्गठन' का नियमित अध्ययन करता हूँ, पत्र के 30 मई के अंक मे श्री दत्तात्रेय जी आर्य द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को प्रस्तुत संस्तुतियो के अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ। नि सन्देह श्री आर्य जी की संस्तुतियाँ सामयिक, उपयोगी व स्वागत योग्य हैं, किन्तु, क्या ये कार्य रूप मे परिणित हो सकेंगी? स्वामी सत्य प्रकाश जी का लेख अत्यधिक सारगर्भित एवम् मार्मिक है।

आशा है कि यह पत्र भविष्य मे और अधिक शिक्षा प्रद विचारधारा मानव समाज के समक्ष रखने मे सफल होगा।

—नवीन कुमार शर्मा

रामगंज, अजमेर।

सार्वदेशिक सभा को लिखें

मान्य आचार्य जी,

13, 14 जून को होने जा रही सार्वदेशिक सभा की अंतरंग के एजेण्डे मे उप समिति की रिपोर्ट का कोई उल्लेख नही है। कृपया सार्वदेशिक सभा को लिखें।

—दौलतराम चड्ढा

प्रधान, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

बाजेगाव, नादेड (महाराष्ट्र)

महर्षि की मूर्ति लगाइए!

आपने अभी आर्यसमाज के भविष्य के बारे मे कुछ प्रस्ताव पास किए। इससे पहले भी प्रस्ताव पास हुए हैं। कोई परिणाम नही निकला।

यहाँ मैंने एक महर्षि की मूर्ति लगाई है तथा एक कीर्ति स्तम्भ भी स्थापित किया है। इस पर लिखा है—

1. आर्य्यावर्त एक महान् राष्ट्र है।
2. आर्य जाति एक महान् जाति है।
3. वेद एक महान् पुस्तक है।

मेरा आपको सुझाव है कि अजमेर मे आप भी एक ऐसी ही मूर्ति व कीर्ति स्तम्भ लगवावें। **—के बी. लाल**

93, शिवाजी मार्ग, देहरादून (उ प्र)

आवश्यकता

आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर द्वारा सचालित तथा विद्यालयो मे

(1) दयानन्द कालेज अजमेर हेतु व्याख्याता पद के लिए निर्धारित योग्यताए कम से कम उच्च द्वितीय श्रेणी मे स्नातकोत्तर, स्नातक तथा एम फिल पी एच डी को वरीयता (1) पशु चिकित्सा (2) गणित (3) भूगोल (4) हिन्दी (5) अग्रेजी (6) जन्तु शास्त्र।

(2 विद्यालयो हेतु—(1) व्याख्याता (हिन्दी) एम ए बी एड (2) पी टी आई तृतीय श्रेणी हा सै सी पी एड (3) गणित अध्यापक द्वितीय ग्रेड—एम एस सी बी एड (4) अग्रेजी अध्यापक द्वितीय ग्रेड एम ए बी एड (5) व्याख्याता एम एस सी एम एड (6) व्याख्याता एम काम एम एड (8) व्याख्याता (संस्कृत) एम ए एम एड (8) वरिष्ठ लिपिक—स्नातक हिन्दी एव अग्रेजी टकण का जानकर (9) कनिष्ठ लिपिक—हायर सैकण्डरी अग्रेजी / हिन्दी टकण के साथ (10) तृतीय श्रेणी अध्यापक बी ए बी एड व हायर सैकण्डरी एस टी सी (11) चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी आयु 20 से 30 वर्ष योग्यता कम से कम पाचवी कक्षा तक। आवेदन मत्री आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर को निर्धारित आवेदन पर (पाँच रुपये के पोस्टल आर्डर पर) दस दिवस की अवधि मे करें।

सहयोग दीजिए

दयानन्द वैदिक शोधपीठ, दयानन्द कालेज, अजमेर मे ऋषि के पत्र व्यवहार पर शोध कार्य चल रहा है। यदि किसी सज्जन के पास ऋषि के पत्र व्यवहार मे सम्बन्धित कोई सामग्री हो, तो कृपया सचालक दयानन्द वैदिक शोधपीठ, दयानन्द कालेज अजमेर को भेजने का कष्ट करें।

—सचालक

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, द्वारा प्रदत "गोवर्धन पुरस्कार" के उपलक्ष मे माननीय श्री दत्तात्रेय आर्य को समर्पित

अभिनन्दन—पत्र

अजमेर राजस्थान की गौरवमयी वसुन्धरा का हृदय है। अजमेर के वीर सम्राटों, विद्वानों, सन्तों व समाज सुधारकों की श्रृंखला में कर्मवीर प जियालाल जी एक ऐसी कड़ी थे जिन्होने अत्यन्त मेधावी श्री दत्तात्रेय जी आर्य को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

श्री दत्तात्रेय जी ने अपनी स्वय की मूर्धन्यता तथा प्रतिभा के बल पर इस नगरी को राजस्थान का सर्वोत्कृष्ट शिक्षा केन्द्र के स्तर पर प्रतिष्ठित किया। ऐसे परम यशस्वी एव शिक्षाविद् श्री दत्तात्रेयजी आर्य को उनके अगाध पाडित्य एव मौलिक साहित्य सृजन के परिणाम स्वरूप गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय द्वारा "गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार" से पुरस्कृत किये जाने के उपलक्ष मे सश्रद्धा सार्वजनिक अभिनन्दन है।

वस्तुत श्री दत्तात्रेय आर्य जैसे कर्मठ एव विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न मनीषी को कोई पुरस्कार देना पुरस्कार का ही मान बढाना है।

सरस्वती के वरदपुत्र श्री दत्तात्रेय आर्य ने अपने व्यापक अध्ययन तथा अनुभव के आधार पर ऐसा उत्कृष्ट साहित्य सृजित किया है जिसमे युवा छात्रो से लेकर उदबुद्ध तत्त्व चिन्तको तक ऐसी उपादेय सामग्री सचित है जो देश, समाज के स्वास्थ निर्माण के लिए अलम है। आर्य समाज के स्वस्थ निर्धारण में आपकी पारगामी प्रतिभा का श्री उन्मेष आपके अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ग्रन्थ आर्य समाज हिन्दू विदाऊट हिन्दूइज्म" मे द्रष्टव्य है। राष्ट्रीय चरित्र के जिन स्वस्थ प्रतिमानो का विश्लेषण आपने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "राष्ट्रीय चरित्र और एकता" मे किया है। वह भी युवा पीढी को नई स्फूर्ति एव दिशाबोध प्रदान करता रहेगा।

अजमेर नगर मे अत्यन्त सफलता पूर्वक सचालित लगभग पन्द्रह डी ए वी शिक्षण सस्थायें आपकी कुशल प्रशासन क्षमता तथा दूरदर्शी दृष्टि का परिचायक हैं। इन सस्थाओं के सभी अधिकारी तथा कर्मचारी वर्ग आपकी न्याय प्रियता तथा सहयोगी स्वभाव से नितान्त सतुष्ट हैं तथा वे इन सस्थाओ की प्रगति मे निरन्तर सन्नद्ध रहते हैं। लगभग 85 वर्ष की आयु मे भी आपका ओजस्वी व्यक्तित्व उत्साह तरगा से तरगित है जिसमे समाज तथा उसके युवा घटको को स्वस्थ रूप देने तथा उन्हे सुस्पष्ट माग पर लाने की साध विद्यमान है।

महत्वाकाक्षाओ तथा ज्ञान का यह ज्योतिपुज दीर्घकाल तक हम सबको दिशा बोध कराता रहे। शताधिक वर्षो तक आप ज्ञान निधि सरक्षण और सवर्धन करते रहे।

दयानन्द कालेज परिवार आपका अभिनन्दन करते हुए मगलकामना करता है।

'ओ३म् स्वस्ति' शुभाकाक्षी
प्राचाय
एव दयानन्द कालेज परिवार

दिनाक 5 मई, 1987

हिन्दी अपना हक चाह रही

— लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र' —

हिन्दी, हृततन्त्री की झकृति, हिन्दी जन-जन की वाणी है।
हिन्दी में, भारत बोल रहा, हिन्दी सस्कृति—कल्याणी है।
हिन्दी, की अपनी सरल राह, रखती है वैर-विरोध नही।
हिन्दी, जन जीवन मे जन्मी, कि किसके लिये सुबोध नही।

यह 'देव गिरा' की दुहिता है, यह उदित राष्ट्र की सविता है।
इसमे अतीत की गीत-कथा, इसमे भविष्य की कविता है।
यह ओज प्रसाद मधुरता से रस प्लावित मधु की धारा है।
इसमे शिव, सत्य सुन्दरम् ने जीवन का रूप सवारा है।

इसने हथकडियाँ तडकाई, इसने युग बन्धन खोले हैं।
इसकी हुकारो के आगे, अग्रेजी आसन, डोले हैं।
इसने ही मुक्ति माल, गाकर, है राष्ट्र-पुरुष को पहनाई।
इसके स्वर मे गुजायमान, है शान्ति-क्रान्ति की शहनाई।

नवयुग के स्रष्टा दयानन्द, इसके स्वर मे ही बोले थे।
'सस्कृत' के होकर मार्तण्ड, हिन्दी मे प्राण उडेले थे।
गीता रहस्य रचने वाले, गगाधर ने तिलक किया।
स्वातन्त्र्य-वधू वरने वाले, गाँधी ने इसको गोद लिया।

हिन्दी ही सुख में साथ, हँसी, हिन्दी दुख मे सग रोई है।
हिन्दी ने युग की क्रान्ति लिखी लोहू मे कलम डुबोई है।
हिन्दी की अवहेलना मित्र, हिन्दी का ही, अपमान नही।
यह खुला खुला है राष्ट्र द्रोह, भारत माँ का सम्मान नही।

हिन्दी अपना हक माँग रही माँगती किसी की मौत नही।
बोलियाँ बहिन बन रहे, बनें हिन्दी की कलहिन सौत नही।
यह है सस्कृति का प्रश्न, एकता की भी इसमे रक्षा है।
यह सत्य, न्याय की माँग राष्ट्र भक्तो की सरल परीक्षा है।

तुलसी के राम खडे तट पर, उस पार सिन्धु के आने दो।
रामायण, विनय पत्रिका के गीतों को गले लगाने दो।
मीरा के भजनों को स्वजनों, घर घर बाँसुरी बजाने दो।
सूर के पदो को मित्र, थिरकने अधर-अधर तक जाने दो।

नानक कबीर के राम एक उनको दो आज बनाओ ना।
हैं ओकार गुजार रहा वह अनहद नाद भुलाओ ना।
मोडो सतलज की धार, इधर देखो न कराँची जाने दो।
गगा-यमुना के साथ सिन्धु को भी आकर मिल जाने दो।

मीरा की पीडा व्याकुल हर उर तक पीर पहुँचने दो।
प्यासे अधरो तक हिन्दी की गगा का नीर पहुँचने दो।
ब्रज की मधुता मिसरी घोले, सूरा खोले जग की आँखें।
तुलसी का रस भव रोग हरे मानस का मधु जगति चाखे।

'भूषण' के छन्दो को पढकर फिर नई जवानी आने दो।
युग के भुजदण्ड फडकने दो फिर राष्ट्र रक्त गरमाने दो।
क्यो विष पान करें नाहक, 'रसखान हमारी वाणी मे,
केशव, रहीम मतिराम देव का गान हमारी वाणी मे।

भारत माता है, ग्राममयी, यह गीत सभी को गाने दो,
फिर हृदय हृदय से मिलने दो सब भेद, भ्रान्ति मिट जाने दो।
फिर मानस मन्थन होने दो, जीवन के मोती पाने दो।
सोन चाँदी की चकमक से, जीवन, हीरो तक जाने दो।

वेदो का अमृत दुहलाई ऋषिवर की अमृत वाणी है।
जन-जन पीने को आतुर है युग-युग से प्यासा प्राणी है।
अपने पुरखो का तप त्याग, फिर नई रश्मिया लाया है।
भारती भाल उदयाचल पर फिर नया सूर्य मुस्काया है।

इस उगते हुये बाल रवि की, फिर नई रश्मिया छाने दो।
जन मगल की गगा उमडी फिर सगर सुतो तक जाने दो।
बहती अमृत की धारा मे आओ सग-सग स्नान करें।
अन्तस का विष कल्मष, धोयें अमृतका हम हस पान करें।

मानवता जागे प्राणो मे, करुणा से भीगे प्राण मिलें।
फिर राम-भरत भेंटे भाई भाई बनकर इन्सान मिले।
सब क्लेश मुक्त हो शान्त बनें सब मे जीवन, रस-धार बहे।
सारी धरती रससिक्त बन प्राणी-प्राणी मे प्यार बहे।

अभ्युदय लिये हो नि श्रेयस मानवता को परित्राण मिले।
भारती स्वरो मे जय गाये, जनजन को जीवन-प्राण मिले।

भोजपुरा मैनपुरी, (उ प्र)

जातिवाद विरोधी चौ० चरणसिंह

— आचार्य दत्तात्रेय (बाब्ले) आर्य —

चौधरी चरणसिंह के निधन पर देश के प्रमुख अग्रेजी तथा हिन्दी समाचार पत्रो ने अपने-अपने दृष्टिकोण से कई प्रकार की प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की हैं। अनेक प्रमुख नेताओ ने भी उनको श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए अपने विचार व्यक्त किये हैं। चौधरी साहब जैसे राजनैतिक क्षेत्र के एक वरिष्ठ नेता के सम्बन्ध मे ऐसी प्रतिक्रियाएँ स्वाभाविक हैं। उनकी राजनैतिक विचारधारा तथा दलगत राजनीति के सम्बन्ध में इसलिये मैं यहा कोई विवेचन नही करना चाहता। किन्तु इन सब मूल्याकनो मे जिस बात पर प्राय सब एक मत प्रतीत होते हैं, वह यह है कि चौधरी साहब एक ईमानदार, निष्ठावान तथा स्पष्टवादी राजनेता थे। जैसा 'टाइम्स आफ इडिया" आदि कुछ पत्रो ने लिखा है कि उनकी इन विशेषताओ का श्रेय आर्य समाज को है।

चौधरी साहब उन थोडे से गिने चुने प्रमुख राष्ट्रीय नेताओ मे से एक थे जिन्होने कभी ये स्वीकार करने मे सकोच नही किया कि उनका प्रारभिक जीवन व चरित्र निर्माण आर्य समाज और ऋषि दयानन्द की ही देन है। समाचार पत्रो मे उनके निवास स्थान के उस कमरे का चित्र प्रकाशित हुआ है जिसमे उनका पार्थिव शरीर जनता के दर्शनार्थ रखा गया था। उस कमरे मे दो चित्र साथ-साथ रखे हुए दिखाई देते हैं प्रथम ऋषि दयानन्द का तथा दूसरा महात्मा गाधी का। इन दोनो ही की कुछ विशिष्ट शिक्षाओ के श्री चरणसिंह एक प्रतीक थ। देश के आर्थिक नव निर्माण और विशेषकर ग्रामीण किसानो की उन्नति के सबध मे उनका दृष्टिकोण स्पष्टतया गाधीवादी था। उनका सादा जीवन तथा रहन सहन भी एक गाधीवादी नेता का स्मरण दिलाता था किन्तु ऋषि दयानन्द ही उनके वास्तविक प्रेरणास्रोत व मार्गदर्शक रहे हैं यह तथ्य भी निर्विवाद है। उनकी निर्भीकता, स्पष्टवादिता सैद्धातिक दृढता तथा जन्मगत जातपात जैसी सामाजिक कुरीतियो का विरोध इसका प्रमाण है। अपने इस सक्षिप्त लेख मे, मैं उनके केवल कुछ उदाहरण देकर उनके प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करना चाहता हूँ।

जाट बनाम किसान जातिवाद के विरोधी चौधरी चरणसिंह जी के सबध मे उनके समालोचक अक्सर ये कहते हैं कि उन्होने राजनीति में जातिवाद और विशेषकर जाटवाद को प्रोत्साहन दिया किन्तु उनके जीवन, व्यवहार व विचार इन तीनो से इस आरोप का खडन होता है। उन्होने अपनी कन्याओ का विवाह जन्मगत जातपात तोडकर, गैर जाटो में किया। मुझे स्मरण नही है कि वे कभी किसी जाट सस्था या सगठन से सबधित रहे हो और न ही किसी जाट सम्मेलन या सभा की उन्होने अध्यक्षता या सदस्यता स्वीकार की। ये सही है कि देश मे किसान वर्ग और विशेषकर उत्तर भारत मे किसानो मे एक बडी सख्या जाटो की है, किन्तु साथ मे ये भी सही है कि चरणसिंह उनके समर्थक या नेता इसलिये नही थे कि वे जाट थे बल्कि इसलिये थे कि वे किसान थे। यही कारण हैं कि उनके समर्थको मे जाटो के अतिरिक्त गूजर, अहीर आदि अन्य पिछडी जाति के किसानो की बहुत बडी सख्या थी। अनेक उच्च जाति के लोग भी जिन्हे गाधी जी की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था और बडे उद्योगो के स्थान मे कुटीर उद्योगो के महत्व मे विश्वास था, चौधरी साहब को अपना नेता स्वीकार करते थे। लोकदल आदि जिन दलो का नेतृत्व उन्होने किया उनमे प्राय सब जातियो के, यहा तक कि मुसलमान भी सदस्य व अधिकारी रहे हैं।

जाट राजपूत विवाद राजस्थान मे जाटो के साथ राजपूतो द्वारा दुर्व्यवहार किये जाने के अनेक उदाहरण दिये जाते हैं उन्हे अपेक्षाकृत छोटी जाति का समझकर राजपूत राजा और ठिकानेदार सामाजिक दृष्टि से उनके साथ लगभग अछूतो जैसा व्यवहार करते थे। अपने विवाह मे जाट वर को घोडे पर नहीं बैठा सकते थे और न ही वधु को सोने के जेवर पहना सकते थे यहा तक कि वे अपने भोज मे देशी घी का प्रयोग नही कर सकते थे उन्हे तेल का ही उपयोग करने की छूट थी। जैसा चौधरी साहब ने एक बार कहा था, "जन्माभिमानी क्षत्रियो के इसी प्रकार के दुर्व्यवहार का परिणाम था कि पजाब मे लगभग 51 प्रतिशत जाट या तो मुसलमान हो गये या फिर सिक्ख बन गये। आधुनिक युग मे ऋषि दयानन्द ही एकमात्र ऐसे महापुरुष थे जिन्होने वेद और शास्त्रो के आधार पर जाटो को क्षत्रिय घोषित किया। इतना ही नही आर्य समाज के अनेक प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान, पडित आदि जन्म से जाट हैं। आज भी यदि किसी वर्ग विशेष के अधिकाश व्यक्ति आर्य समाज के अनुयायी हैं तो वे जाट ही हैं। चौ चरणसिंह जी इसलिए अन्त तक अपने आपको आर्य समाजी व ऋषि दयानन्द का अनुयायी घोषित करने मे गौरव अनुभव करते थे।

अन्तर्जातीय विवाह एक मात्र उपाय मेरी सम्मति मे उनकी सबसे बडी देन उनका जातिवाद के विरुद्ध वह क्रातिकारी अभियान था, जिसे स्व प नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेता भी स्वीकार करने मे झिझकते थे। चौधरी साहब ने प नेहरू से सन् 1945 मे ही यह माग की थी कि वे कम से कम सरकारी अधिकारियो तथा कर्मचारियो के लिए अन्तर्जातीय विवाह अनिवार्य कर दें किन्तु नेहरू जी ने उनके सुझाव को यह कह कर अमान्य कर दिया कि विवाह एक व्यक्तिगत मामला है उसमे राज्य या कानून को हस्तक्षेप नही करना चाहिए। नेहरू जी की यह दलील सैद्धान्तिक दृष्टि से सही थी, किन्तु भारत की परिस्थितियो मे उसका एक सामाजिक व राष्ट्रीय पहलू भी है। जन्मगत जातपात न केवल हमारे सामाजिक अपितु राष्ट्रीय जीवन का भी एक बडा अभिशाप रहा है, कुछ अपवादो को छोडकर कोई भारतीय और विशेषकर हिन्दू अपना विवाह केवल व्यक्तिगत गुण दोषो के आधार पर शायद ही करता हो। प्रायः सब जाति व धर्मों के लोग विवाह सबध अपनी जाति व धर्म की सीमा के अन्दर ही करते हैं यहा तक कि आर्य समाज की स्थापना के पूर्व व बाद मे हिन्दू कोड बिल के पारित होने के पहले अपनी जाति मे ही विवाह करना कानून की दृष्टि से आवश्यक था। यदि कोई उच्च वर्ण का हिन्दू किसी अन्य जाति की कन्या से विवाह कर लेता था तो उसे कानून भी स्वीकार नही करता था। ऐसे विवाहो से उत्पन्न सतानें अवैध समझी जाती थी उन्हे अपनी पैतृक सम्पत्ति मे कोई अधिकार या हिस्सा नही मिल सकता। ऐसी स्थिति मे चरणसिंह जी का सुझाव जातिवाद के उन्मूलन के लिये सर्वथा उपयुक्त और आवश्यक कदम समझना चाहिए था। कानून द्वारा अपनी ही जाति मे विवाह करने के लिये बाध्य किया जा सकता है तो अपनी ही जाति मे विवाह न करने का कानून अनुचित क्यो समझा जावे? वस्तुत जन्मगत जातपात के निराकरण का वर्तमान परिस्थिति मे यही एक कारगर उपाय है।

जातिवाद को प्रोत्साहन—यह दुर्भाग्य की बात है कि स्वाधीनता के बाद चुनाव आदि राजनैतिक स्वार्थो के कारण हमारे अनेक प्रमुख नेता तक जातपात के इस राष्ट्र विरोधी भस्मासुर को प्रोत्साहन देने मे सकोच नही करते। अग्रेजी राज्य मे जिन सामाजिक व धार्मिक सुधारो को हम अपनी राजनैतिक मुक्ति के लिए आवश्यक समझते थे, जातिप्रथा का निराकरण उनमे सबसे अधिक महत्व का प्रश्न था। ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम इसलिए गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था को ही वेदोक्त सिद्ध करके जन्मगत जातपात के आधार को ही नष्ट करने का प्रयत्न किया। छुआछूत अथवा हरिजनो की समस्या भी इसी सर्वभक्षी जाति व्यवस्था के वृक्ष के विषैले फल मात्र हैं। जन्म के स्थान पे कर्म के आधार पर तथाकथित अछूतो को ब्राह्मण आदि उच्च वर्णो मे सर्वथा आत्मसात करके इस समस्या का चिरस्थायी और कारगर उपाय किया जाना चाहिये था किन्तु स्वाधीनता के बाद इन वर्गो को उचित तात्कालिक के स्थान मे अब प्राय सदा के लिये स्वय उनके हित विरोधी, राजनैतिक व आर्थिक लाभ के प्रलोभन देकर इन्हे जन्म की दृष्टि से उन्हे हमेशा के लिये अछूत बना दिया है। आज स्थिति यह है कि हरिजनो के लिये ऊची जाति के लोग झूठे प्रमाण पत्र देकर अछूत बन रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

धर्म और राजनीति का संतुलन

— क्षितीश वेदालंकार —

भारत को महान से और महान बनाने का स्वप्न देखने वाले और उसकी जय-यात्रा का महाकाव्य लिखने वाले महाभारतकार महर्षि व्यास ने अब से लगभग 5,000 वर्ष पूर्व सार्वजनिक रूप से घोषणा की थी—

ऊर्ध्वं बाहुर्विरौम्येष न च
कश्चिच्छृणोति मे ।
धर्मादर्थश्च कामश्च सधर्म
कि न सेव्यते ॥

"अरे लोगो ! मैं भुजा उठाकर यह उच्च स्वर से कह रहा हूं, परन्तु कोई मेरी बात सुनता नहीं। मनुष्य जीवन के जो चार पुरुषार्थ हैं-धर्म अर्थ, काम मोक्ष—इनमे सासारिक जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक अर्थ और काम की सिद्धि भी धर्म के माध्यम से ही हो सकती है। लोग धर्म का सेवन क्यों नहीं करते ?"

महर्षि व्यास का यह आक्रोश आज भी उतना ही सत्य है जितना उस समय रहा होगा। उन्हीं महर्षि व्यास ने अपने मन्तव्य को स्पष्ट करने के लिए धर्म की भी एक सर्वमान्य परिभाषा कर दी है। वह इस प्रकार है -

श्रूयता धर्मसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्य-
ताम् ।
आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न
समाचरेत् ॥

"धर्म का सार क्या है, यह भी जान लो और उसको सुनकर अपने मन मे दृढ़ता से धारण कर लो। वह सार यह है--अपनी अन्तरात्मा के विरुद्ध अन्य व्यक्तियों के साथ आचरण नहीं करना चाहिए।" धर्म की यह ऐसी सार्वत्रिक परिभाषा है जिसके सही होने पर किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। इस परिभाषा मे न कहीं साम्प्रदायिक अभिनिवेश है, न किसी कर्मकाण्ड को स्थान है और न ही किसी दार्शनिक मान्यता का पोषण है। इस कसौटी पर कसने पर हरेक मनुष्य अपनी अन्तरात्मा की आवाज के अनुसार स्वयं ही धर्म और अधर्म का निर्णय कर सकता है। इस धर्म का निर्धारण करने मे किसी ग्रन्थ या गुरु या पैगम्बर की भी आवश्यकता नहीं है। इस कसौटी के आधार पर अनपढ़ और गवार व्यक्ति भी उचित और अनुचित का विवेक कर सकता है।

यह धर्म समग्र जीवन का अग है और इसमे जीवन का कोई क्षेत्र अछूता नहीं रह सकता। राजनीति भी क्योंकि जीवन का अग है इसलिए वह भी। किसी देश और किसी काल मे भी इस परिभाषा का अपलाप सभव नहीं जब तक मानव विद्यमान है तब तक उसके साथ यह कसौटी भी रहेगी।

स्वतन्त्रता की सीमा

इससे यह भी स्पष्ट है कि धर्म अनुभूति-जन्य है, बुद्धि-जन्य नहीं। वह मान्यता-प्रधान नहीं प्रस्तुत आचार-प्रधान और नैतिकता-प्रधान है। अगर ससार के किसी मानव को किसी आचार पर आपत्ति है तो वह अपनी अन्तरात्मा की कसौटी पर कस कर देख लेगा कि मैं अमुक व्यक्ति के साथ जैसा व्यवहार कर रहा हूँ यदि वैसी परिस्थिति मे मैं स्वयं होता तो क्या मैं भी अपने साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना पसन्द करता ? अगर मनुष्य के पास उचित और अनुचित के उल्लेख की यह कसौटी न होती तो मनुष्य समाज कभी का विशृंखलित हो चुका होता।

इसी आचरण-प्रधान धर्म की व्याख्या योगदर्शन ने यम और नियम के रूप मे की है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये यम हैं और शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान ये नियम हैं। यम समाज की सुचारु व्यवस्था के लिए है और नियम व्यक्तिगत जीवन की सुचारु व्यवस्था करने के लिए है। जहाँ तक व्यक्तिगत जीवन सबधी नियमों का प्रश्न है, उनका पालन करने मे मनुष्य स्वतन्त्र है। क्योंकि उनका पालन न करने से उसको केवल व्यक्तिगत हानि ही उठानी पड़ेगी। यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर अपना जीवन को उन्नत नहीं करना चाहता तो उसके लिए उसे बाधित नहीं किया जा सकता। परन्तु जहाँ तक सामाजिक नियमों का प्रश्न है--जिन्हें योगदर्शन मे यम कहा गया है उनमे किसी को स्वतन्त्रता नहीं है। इसीलिए समाज मे हिंसा करने वाला या असत्य आचरण करने वाला, या चोरी-ठगी अथवा डाका डाल कर परद्रव्य का अपहरण करने वाला व्यभिचारी तथा औरों का शोषण करके पूंजी का अपरिमित परिग्रह करने वाला व्यक्ति दण्डनीय है। यह दण्ड देना भी राज्य का काम है, व्यक्ति का नहीं। अगर कोई राज्य इस प्रकार के अपराधों के लिए दण्ड की व्यवस्था नहीं करता तो वह राज्य नहीं है। तब केवल अराजकता ही सम्भव है। इसलिए जब व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर बल दिया जाता है तब उसका यही अर्थ होता है कि जहाँ वह व्यक्तिगत हितकारी नियमों मे स्वतन्त्र है वहाँ उसे सामाजिक हितकारी नियमों में परतन्त्र रहना पड़ेगा।

व्यावहारिक राजनीति

यदि कभी ऐसी स्थिति आ जाए जब समाज और व्यक्ति के हितों मे परस्पर टकराव हो, तब क्या किया जाए ? उसके लिए भी नीति निर्माताओं ने बहुत सुन्दर व्यवस्था की है। वह इस प्रकार है --

त्यजेदेक कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुल त्यजेत् ।
ग्राम जनपदस्यार्थे स्वात्मार्थे पृथिवी त्यजेत् ॥

जब व्यक्ति और समाज के हितों मे सघर्ष हो तो राज्य और समाज के व्यवस्थापकों का यह कर्तव्य है कि किसी कुल के हितों की रक्षा के लिए वे एक व्यक्ति के हित को छोड़ दें। जब किसी कुल और ग्राम के हितों मे सघर्ष हो तो ग्राम के हित के लिए कुल के हित को त्याग दें। जब किसी ग्राम और जनपद के हितों मे परस्पर टकराव हो तो जनपद के हित के लिए ग्राम के हित को त्याग दें। परन्तु यदि मनुष्य की अन्तरात्मा के साथ सघर्ष हो तो सारी पृथ्वी को भी त्याग देना उचित है। इसमे प्रथम तीन बातें व्यावहारिक राजनीति का अग है और अंतिम बात उसी धर्म की ओर सकेत करती है जिसको महर्षि व्यास ने तथा अन्य अनेक धर्मशास्त्रों ने तरह-तरह से प्रतिपादित किया है। इसी से यह बात भी निकलती है कि-

यद् भूतहितमत्यन्त तत् सत्यमिति मे मतम् ।

—अर्थात् जिसमे अधिक से अधिक प्राणियों का अधिक से अधिक हित हो वही सत्य है, या वही धर्म है। यह परिभाषा हमको पश्चात्य दार्शनिकों के उस मन्तव्य तक ले जाती है जिसमे उन्होंने आचार शास्त्र (एथिक्स) की समाप्ति 'ग्रेटेस्ट फ्रेजर आफ दि ग्रेटेस्ट नम्बर' पर आकर की है। इसी बात को महात्मा बुद्ध बहुत पहले अपने उपदेश भिक्षुओं को देते हुए कह चुके हैं--'चरथ भिक्खवे चारिक बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय, लोकानुकम्पाय —भिक्षुओ, तुम जब उपदेश करने जाओ तो हमेशा अधिकतम लोगों के सुख और हित का ध्यान रखो जिससे लोक-कल्याण हो सके। महात्मा बुद्ध का यह उपदेश भारतीय संस्कृति का वही शाश्वत उद्घोष है जिसमे 'सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चि दु खभाग भवेत्' का वर्णन है। इसी से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' वाली भारतीय संस्कृति की विशेषता चरितार्थ होती है।

इस प्रकार धर्म राजनीति को सन्तुलित करता है और राजनीति धर्म को सन्तुलित करती है। दोनों एक दूसरे के लिए आवश्यक हैं। यदि धर्म का यह रूप स्वीकार हो तो वह किसी भी अवस्था मे तिरस्करणीय नहीं बल्कि राजनिति के लिए भी वरणीय है, क्योंकि इसके बिना राजनीति केवल निरकुश तानाशाही बन जाएगी।

परन्तु यदि धर्म का यह सही रूप स्वीकार न हो और पश्चिम की विचारधारा के अनुसार धर्म को रिलीजन, मजहब सम्प्रदाय या किसी पंथ का पर्यायवाची माना जाये, तो उस धर्म को राजनीति से सर्वथा दूर रखना होगा। क्योंकि साम्प्रदायिक मान्यताओं पर आग्रह करने वाले कभी दूसरे मत वालों के प्रति उदार नहीं हो सकते। अनुचित आग्रह का अर्थ ही असहिष्णुता है। सप्रदायों की विशेषता यह है कि प्रत्येक सम्प्रदाय अन्य सप्रदायों से अपने सप्रदाय के श्रेष्ठतर होने का आग्रह करता है। किसी समय भैरवी-चक्र भी धर्म का अग माना जाता रहा है। वाममार्गियों ने तो पचमकार की उपासना के नाम से मद्य मास मीन मुद्रा और मैथुन का खुल्लमखुल्ला प्रचार किया था हालांकि तान्त्रिक और दार्शनिक दृष्टि से ये पारिभाषिक शब्द हैं और इनका वही अर्थ नहीं है जो लोगों मे प्रचलित है। परन्तु व्यवहार मे उनके वही अर्थ चलते रहे जो धर्म की आड़ मे केवल अधर्म का ही अंग थे।

साम्प्रदायिक मान्यता को धर्म का रूप देने का यही दुष्परिणाम होगा। अपनी साम्प्रदायिक मान्यताओं के अनुसार राजनीति को चलाने वाले तथा सियासत और मजहब को परस्पर जोड़ने वाले इस्लाम मतानुयायी न केवल अपने से भिन्न मतावलम्बियों को काफिर कहते हैं उनका धर्म उन काफिरों के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था भी करता है। दारुल-हरब और दारुल इस्लाम की फिलासफी के उपासक किसी गैर-इस्लामिय राज्य के प्रति निष्ठा न रखना अपना धर्म समझते हैं। सैमटिक मजहबों के साथ-साथ अन्य पथों और सप्रदायों मे भी यही प्रवृत्ति उभर रही है। यही 'फंडमेंट-लिजम' है। अब अकाली भी खमैनी के रास्ते पर चल रहे हैं।

निष्कर्ष रूप मे हम कह सकते हैं कि धर्म का भारतीय परम्परा वाला अर्थ स्वीकार करने पर धर्म राजनीति के लिए भी वांछनीय है परन्तु पश्चात्य परम्परा वाला धर्म राजनीति से सर्वथा दूर रहना चाहिए। सोवियत सघ, वियतनाम चीन इडोनेशिया, मिस्र और तुर्की ने यही किया है। वे किसी भी साम्प्रदायिक धर्म को अपनी राजनीति पर हावी नहीं होने देते। यदि भारत सरकार सही तौर से देश के 'सेक्युलर' (धर्म-निरपेक्ष नहीं पथ-निरपेक्ष) सविधान की रक्षा करना चाहती है तो उसे बहुजन समाज के हितों की उपेक्षा करके केवल क्षणिक राजनैतिक लाभ प्राप्त करने के लिए अल्प-सख्यकों या विभिन्न सप्रदायों को महत्व देने से बाज आना होगा। तर्क-विरुद्ध बुद्धि-विरुद्ध और विज्ञान-विरुद्ध साम्प्रदायिक मान्यताओं को अधविश्वासों को और धर्म गुरुओं के नाम पर जनता को लूटने वाले साधु सतों को नियत्रण मे रखना होगा। इसी का फलितार्थ यह भी है कि उन साम्प्रदायिक पार्टियों को राजनैतिक मान्यता देना बन्द करना होगा। चुनावों मे सप्रदाय और जाति के आधार पर उम्मीदवार खड़े करने पर रोक लगानी होगी। धार्मिक स्थानों पर राजनीतिक गतिविधियों पर अकुश लगाना होगा। क्योंकि इसके बिना न राज्य टिक सकता है न राष्ट्र। ●

रजिस्ट्रार महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार [उ०प्र०]

(शेष पृष्ठ 1 का)

हाल ही के दगो के घटनाक्रम पर एक विहगम दृष्टि डालने से आपके सामने यह तथ्य पूर्णतया स्पष्ट हो जाएगा। दगो से पूर्व दिए गए जिन्होने दगे कराने मे मुख्य भूमिका अदा की, मुस्लिम नेताओ के वक्तव्यो की एक बानगी तो देखिए —

1 मुस्लिम किसी कोर्ट के पाबन्द नही है, वे किसी कोर्ट मे सफाई देने नही आवेंगे लेकिन कुरान या परसनल लॉ के खिलाफ कोर्ट मे आने वालों का सफाया कर दिया जायेगा।

—इमाम ओबेदुल्लाह खां आजम गढ़

2 बाबरी मस्जिद तहरीक सीने पर गोली खाने का आन्दोलन है। हमारी यह मांग बाजिब जमात के विरुद्ध है। अगर मुसलमानों के साथ न्याय न हुआ तो पजाब अपनी सीमाए तोड़ देगा।

—आजमा खा, विधायक उ प्र

3 अगर मुसलमान दिल्ली जा सकता है तो अयोध्या भी जा सकता है। —सैय्यद शहाबुद्दीन

4 मैं वतन को मा नहीं मानता। बाबरी मस्जिद मुसलमानो को न दी गई तो जल्दी ही मुसलमान बाबरी मस्जिद मे नमाज पढ़ गे।

—अध्यक्ष मुस्लिम मजलिस उ प्र

5 हम इस देश की न्याय व्यवस्था नहीं मानत। (राजीव गाधी से) अपनी पुलिस हटा लो। फिर देख ले, इसानों का यह समुद्र तुम्हारी किस्मत का फैसला कर देगा। —शाही इमाम

इस सदर्भ मे यह भी उल्लेखनीय है कि कुरान की कुछ आयतो के सम्बन्ध मे प्रस्तुत एक याचिका पर जुलाई 1986 मे दिये गए निर्णय मे दिल्ली के मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री जे एस लोहाट ने कहा है कि पवित्र पुस्तक कुरान मजीद के प्रति आदर रखते हुए उन आयतो का सूक्ष्म अध्ययन यह प्रकट करता है वे हानिकारक हैं और नफरत की शिक्षा देती हैं तथा मुसलमानो तथा शेष अन्य समुदायो के बीच भेदभाव पैदा करती हैं।

उपर्युक्त निर्णय को दृष्टिगत रखते हुए यह सोचने पर बाध्य होना पड़ता है कि गांधी जी * द्वारा मुस्लिमो के अन्य धर्मावलम्बियो के प्रति आक्रामक रुख के बारे मे जो कहा गया है कही उसकी प्रेरणा स्रोत यही आयतें तो नही हैं?

कहां तो 'वसुधैव कटुम्बकम्' की भावना से ओत-प्रोत वेद की ऋचायें और कहाँ कुरान की ये तथाकथित आयतें?

दगों का दूसरा प्रमुख कारण सरकार की तथाकथित 'धर्म निरपेक्षता' है। इस सदर्भ में दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि कोई भी कांग्रेसी प्रधानमत्री धर्मनिरपेक्षता के सही अर्थ को नही समझ पाया या फिर अपने निहित स्वार्थों के वशीभूत ही समझने के उपरांत भी उसे सही तरह से क्रियान्वित करने का प्रयास नहीं किया। और अल्पसख्यक वर्ग को अनुचित प्रश्रय देते रहे। आज जबकि राजीव गाधी दगो की जड़ खोजकर उसे नष्ट करने को कहते हैं तो उनके इस कथन पर हसी आती है। हुजूरे आला! सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को अनदेखा कर अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए 'मुस्लिम विधेयक' लाने वाला क्या ऐसा करने का साहस कर सकता है?

राष्ट्र धर्म से ऊपर है। इस सत्य को जिस दिन भारतवर्ष का मुसलमान स्वीकार कर लेगा एवं [illegible] को दारुल इस्लाम [illegible]दलने जैसी अपनी भावनाओ को तिलाजलि दे देगा, उसी दिन से साम्प्रदायिक दगे होने [illegible] जायेंगे! परन्तु प्रश्न यह [illegible]कि क्या ऐसा कभी हो [illegible] मुसलमान स्वभावत आक्रामक होता है और हिन्दू डरपोक।

—साम्प्रदायिक दगे—

दो वर्ष में ४३६ हलाल

पिछले दो वर्षों (1985-86) में देश के सात राज्यों में हुए 23 साम्प्रदायिक दगो मे 436 से अधिक लोग मारे गए। 21 815 लोगो की गिरफ्तारी हुई और 1231,52 लाख रुपये की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचा।

इन राज्यो में गुजरात, आध्र प्रदेश महाराष्ट्र कर्नाटक, उत्तर प्रदेश मध्यप्रदेश, व बिहार हैं। सर्वाधिक सुर्खियों मे गुजरात रहा। जहाँ 1986 के दौरान 34 दिन हिंसा हुई। जनवरी, मार्च जुलाई, अगस्त व सितम्बर के महीनो मे चलने वाली इस हिंसा का केन्द्र अहमदाबाद, वेरावल, नादियाड व [illegible] रहा। इस दौरान 184 लोग मरे, 6335 गिरफ्तार हुए, /64 घायल तथा 236 12 लाख रुपये की हानि हुई। कर्नाटक के रामनगरम बगलौर व मैसूर, मध्यप्रदेश के सिहोर, उत्तरप्रदेश के मेरठ, नूरिया (जिला पीलीभीत) व इलाहाबाद, महाराष्ट्र के नासिक पवलव, अमरावती और बिहार के नवादा में दगे हुए।

1985 में दगो का प्रमुख केन्द्र रहा आध्र प्रदेश। राज्य के रगारेड्डी जिले का सदूर सुल्तानशाही और हैदराबाद के आस-पास के क्षेत्र [illegible] की गिरफ्त में आए। —पाञ्चजन्य से

जातिवाद विरोधी चौ चरणसिंह (शेष पृष्ठ 3 का)

जातिसूचक नामों का निषेध— चौधरी साहब का अन्तर्जातीय विवाह का उपर्युक्त सुझाव स्वीकार करना यदि कठिन था तो कम से कम इस प्रकार का कानूनी या सवैधानिक प्रावधान तो किया ही जा सकता था कि कोई सरकारी अधिकारी अपने नाम के आगे अपनी जाति का उल्लेख न करें। जब हम रामसिंह रैगर मजिस्ट्रेट या दयाराम जाट कलेक्टर अथवा जयदेव गुप्ता पुलिस अधीक्षक जैसे नाम पढ़ते व सुनते हैं तो जातिवाद को प्रोत्साहन मिलता है चाहे जाति सूचक नाम के अधिकारी स्वय कितने ही निष्पक्ष हो उनकी जाति से सबधित व्यक्तियो के मन मे यह आशा और अपेक्षा उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि यह अधिकारी उनका पक्ष लगे। दूसरी तरफ अन्य जाति के लोगो मे उनके प्रति सही या गलत यह आशका भी उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि भिन्न जाति के होने के कारण उनसे न्याय की अपेक्षा नही कर सकते। मैंने स्वय चरणसिंह जी को जब वे प्रधान मत्री बने, तब नेहरू जी को दिये गये उनके सुझाव का स्मरण दिलाते हुये आग्रह किया था कि यदि अपने कार्यकाल मे वे हिन्दुओ की जाति प्रथा को सर्वथा गैर कानूनी घोषित नही कर सकते तो कम से कम सरकारी क्षेत्रों में जाति सूचक नामो के उपयोग का कानून द्वारा निषेध अवश्य कर दें यह उनके प्रधानमत्री काल की बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। मेरी भावना से सहमति सूचक उनके कार्यालय का पत्रोत्तर भी मुझे प्राप्त हुआ किन्तु दुर्भाग्य से उनके प्रधानमत्रित्व काल की अल्पावधि तथा विवादग्रस्तता के कारण वे यह काय नही कर सके।

वस्तुत मैंने स्व श्रीमती इंदिरा गाधी को भी इस प्रकार का सुझाव देकर निवेदन किया था कि वे केन्द्रीय राज्य के मत्रियो तथा समस्त सरकारी कर्मचारियो को यह आदेश दें कि वे अपने सरकारी पदो के साथ अपने जाति सूचक नामो का प्रयोग न करें। यह बात निर्विवाद है कि जब तक हिन्दू समाज जन्मगत जाति प्रथा के अभिशाप से सर्वथा मुक्त नही हो जाता तब तक हमारा देश एक राष्ट्र तो दूर स्वय हिन्दू समाज का भी उसका एक शक्तिशाली राष्ट्रीय आधार नहीं बन सकता। हमारे प्राय सभी धार्मिक व सामाजिक सुधार भी जातपात के इस नमक की खान में विलीन होकर नष्ट होते जा रहे हैं। अतएव स्व चौ चरणसिंह के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धाजलि मेरी सम्मति मे यही हो सकती है कि हम उनकी स्मृति मे एक ऐसा देशव्यापी जातपात उन्मूलक आन्दोलन प्रारभ करें कि जिसके परिणाम स्वरूप हमारे देश व समाज का यह एतिहासिक कलक सदा के लिए समाप्त हो जाये। ●

बी. एड. मे सीधा प्रवेश

राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण सस्थान अजमेर में विवरणिका मे घोषित नियमों और निर्धारित योग्यता के आधार पर बिना प्री बी एड टेस्ट के प्रवेश के लिए आवेदन पत्र 11 जून 87 से उपलब्ध, किये जायेंगे।

—आचार्य
जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण सस्थान,
अजमेर

हमे खेद है

स्थानाभाव के कारण हम पूर्व घोषित कुछ लेखों को इस अक मे स्थान नहीं दे पाए हैं। आशा है कि उक्त लेख आगामी अक मे आ सकेंगे।

—सपादक

स्वत्वाधिकार आर्य समाज अजमेर के लिए व प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स, बाबू मोहल्ला केसरगज अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन अजमेर से प्रकाशित।

सम्पादकीय

'अपूज्या यत्र पूज्यन्ते...'

मनुस्मृति मे एक श्लोक आया है कि-

> अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां तु व्यतिक्रमः ।
> त्रीणितत्र प्रवर्तन्ते, दुर्भिक्षं मरणं, भयं ॥

अर्थात जिस देश समाज और परिवार मे आदर सम्मान और पूजा के अयोग्य व्यक्तियो का तो सम्मान किया जाता है और जो वास्तव मे मान सम्मान और पूजा के पात्र होते है उनकी अवहेलना और तिरस्कार किया जाता है तो ऐसी विपरीत स्थिति मे वहा तीन चीजे सदैव परिव्याप्त रहती है -(1) दुर्भिक्ष = घोर अकाल (भूखमरी) मौत और भय का वातावरण ।

यह श्लोक देश और समाज की वर्तमान परिस्थितियो मे सर्वथा सटीक और सार्थक प्रतीत होता है । आज देश मे हाहाकार मचा हुआ हुआ है । अधिकाश भागो में भयंकर अकाल और दुर्भिक्ष तथा सूखा पड़ा हुआ है । रोज कही दंगा फसाद कही झगड़ा कही दुर्घटनाए मुठभेड़ आदि के रूप मे लोग मरते ही रहते हैं । चारो ओर भय का वातावरण व्याप्त है । आतंकवाद फैला हुआ है । जन-धन असुरक्षित है । अराजकता की स्थिति है । रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार का बाजार गर्म है । अधिकारो की बात सब करते हैं परन्तु कर्त्तव्यो का किसी को भी भान नही है । भौतिकवाद चरम सीमा पर है । अध्यात्मवाद को भूलाया जा रहा है ।

इन सब परिस्थितियो का कारण है कि मानव मूल्यो का ह्रास । सच्चाई ईमानदारी नैतिकता धैर्य, सहिष्णुता, मानवता, आस्तिकता करुणा दया, परोपकार, देश भक्ति आदि मानवीय मूल्यो का पतन हो गया है । इन गुणो की पूजा के स्थान पर बुराइयो के जाल मे मानव फसता चला जा रहा है । वैयक्तिक पतन के साथ2 सामाजिक एवं राष्ट्रीय अधःपतन भी हो रहा है । भाई भतीजावाद स्वार्थवाद क्षेत्रीयवाद भाषावाद प्रान्तीयवाद, जातिवाद साम्प्रदायिकतापृथकतावाद आदि विषफल भी इन्ही मानवीय मूल्यो के ह्रास के फलस्वरूप उत्पन्न हो रहे है ।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने मानवीय, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठापना करे । जो मान सम्मान और आदर (पूजा) के पात्र हैं । उन्ही का सम्मान करें । जो बुरे हैं उन्हे बुरा कहें और बुराइयो पर डट कर चोट करें । तभी हम आर्य कहलाने के अधिकारी होंगे ।

रासा सिंह

निर्वाचन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रधान-श्री दौलतराम चड्ढा
मन्त्री-श्री हरिश्चन्द्र गुरुजी
कोषाध्यक्ष-श्री दौलतराव शिरवलकर
पुस्तकालयाध्यक्ष-प्रा विजय कुमार शिंदे

आर्य समाज सान्ताक्रुज

प्रधान-श्री ओंकारनाथ जी आर्य
उपप्रधान-श्री देवरत्न आर्य
महामंत्री श्री विमलस्वरूप सूद
कोषाध्यक्ष श्री कस्तूरीलाल मदान

समाज की सम्पत्ति पर अनाधिकृत कब्जों की सूचना दें

देश की अनेक समाजो की सम्पत्तियो पर अनार्यो व असामाजिक तत्वो ने अनाधिकृत रूप से कब्जे किए हुए हैं ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान व आर्य समाज अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य उक्त अनाधिकृत कब्जो को हटाने हेतु अपने स्तर पर प्रयास करने के इच्छुक हैं अतएव हमारा सभी आर्य पुरुषो से इस सन्दर्भ मे निवेदन है कि ऐसी किसी आर्य समाज की सम्पत्ति जिस पर किसी असामाजिक व्यक्ति संस्था विशेष ने अनाधिकृत रूप से अधिकार बना रखा हो, की सूचना आचार्य जी को भेजने का कष्ट करें ।

—सम्पादक

संस्कृत भाषा....

(शेष पृष्ठ एक का)

का विषय ले लिया करते थे परन्तु इस प्रकार के त्रिभाषा सूत्र से तो संस्कृत का कहीं स्थान नहीं रहेगा । वास्तविकता यह है कि अकेली संस्कृत भाषा के पढने से भारतवर्ष की समस्त भाषाओं का मर्म पकड़ा जा सकता है । भारतीय का ही क्यो, हम तो कहेगे कि समस्त भारोपीय (इंडो यूरपियन) भाषा परिवार संस्कृत समस्त भाषाविज्ञान का आधार बनी हुई है । संसार का शायद ही कोई विश्वविद्यालय होगा, जहा संस्कृत के शिक्षण की व्यवस्था न हो । कभी कभी ऐसा आभास होता है कि जिस तरह योग याया बन कर पश्चिम मे अधिक पांव फैलाती जा रहा है कहीं संस्कृत के सम्बन्ध मे भी ऐसा न हो । संस्कृत मृत भाषा नही । मृत वे लोग हैं जो इसे 'अपनी' तो कहते है पर इसे अपनाते नही । संस्कृत केवल भारत की थाती नही है । यह समस्त मानव जाति की चिर-निधि है । संसार की सब से प्राचीन भाषा संस्कृत मे ही वह अदभुत कोष सुरक्षित है जो मानव जाति के पूर्वज मनीषियो और ऋषि मुनियो ने हजारो सालो तक अपने चिन्तन-मनन और स्वाध्याय के परिणाम स्वरूप संचित किया था । आज भी सारे भारत की राष्ट्रीय एकता को जैसी सामर्थ्य इस भाषा मे है वैसी किसी और भाषा मे नहीं । कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत के प्रत्येक प्रदेश में आज भी संस्कृतज्ञो का सर्वथा अभाव नही । किसी भारतीय भाषा का कोई प्रतिष्ठित साहित्यकार ऐसा नही होगा जो अपनी भाषा के साथ साथ संस्कृत का भी ज्ञाता न हो । यदि अपने पूर्वजो का उस महान विरासत को हम सुरक्षित रखना चाहते हैं तो नई शिक्षा नीति में इसके लिए एक राष्ट्रीय नीति निर्धारित करनी होगी और संस्कृत के पठन पाठन को सही दिशा देनी होगी । अन्यथा अतीत के साथ वर्तमान को जोड़ने वाली उस महान कड़ी को तोड़कर हम अपने भविष्य पर ही कुठाराघात करेंगे

आर्य समाज की कार्यविधि, संगठन, पुनर्गठन : एक समाज शास्त्रीय अध्ययन

डा. कृष्णपालसिंह

[गतांक से आगे]

वर्तमान समय में यह अनुभव किया जा रहा है कि पहले जैसा आर्य समाज को जनता का सहयोग नहीं मिल रहा है अथवा सहानुभूति में ह्रास हुआ है। पिछले 30 वर्षों से आर्य समाज के प्रति जन साधारण में आस्था की कमी आती जा रही है। इस बात का अनुमान समाज के सत्संगों में उपस्थिति को देखने से ही हो जाता है। आस्था में जो न्यूनता आ रही है उसके कारणों के सम्बन्ध में हमें उत्तरदाताओं से यथोचित जानकारी प्राप्त हुई है।

50 प्रतिशत ने आपसी विवाद वैमनस्यता को आस्था में कमी का कारण माना है। वस्तुतः इस प्रकार वैमनस्यता, पदलोलुपता आदि आर्य समाजों में दृष्टिगोचर हो रही है यह प्रत्यक्ष अनुभव गम्य है। 40 प्रतिशत की यह मान्यता है कि आर्य समाज ने स्वाध्याय तथा आध्यात्मिक भावना की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है। 33 प्रतिशत के अनुसार आर्य समाज के सदस्यों ने राजनैतिक संगठनों को अधिक महत्व प्रदान किया है। 35 प्रतिशत के अनुसार आर्य समाज के अधिवेशनों में जनता को आकृष्ट करने हेतु रोचक प्रोग्राम की व्यवस्था नहीं है। इसी प्रकार 32 प्रतिशत ने आस्था में कमी आने का यह भी कारण बताया है कि समाज वैदिक जीवन की समस्याओं के प्रति उदासीन है। 3 प्रतिशत ने अपनी कोई स्पष्ट राय नहीं दी है।

अत इस सम्बन्ध में तथ्यात्मक दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में आर्य समाज के अधिकारियों एवं उत्तरदायी व्यक्तियों को समाज में स्वाध्याय, आध्यात्मिक उत्थान के साधन की व्यवस्था आपसी विवाद, वैमनस्यता का निराकरण राजनैतिक संगठनों के प्रभाव से समाज को बचाना मानव की वैदिक जीवन की समस्याओं के प्रति जागरूक होकर उनका नेतृत्व करके समाधानार्थ समसामयिक प्रयत्न करना आदि अभीष्ट है ऐसा करने से ही समाज के प्रति जनता की आस्था में वृद्धि हो सकेगी, साथ ही बुद्धिजीवियों को आकृष्ट करने के लिए समुचित प्रयत्न एवं व्यवस्था करना आवश्यक हैं।

प्रबुद्ध व्यक्तियों को समाज के प्रति आकृष्ट करने संबन्धी विभिन्न सुझाव

उपरिवर्णित तथ्यों एवं कारणों से यह स्पष्ट है कि आर्य समाज में शनैः बुद्धिजीवियों की शनैः-शनैः न्यूनता होती जा रही है यह एक अविस्मरणीय तथ्य इस अध्ययन से प्रकट हुआ है। अत समाज में बुद्धिजीवियों को आकृष्ट करने सम्बन्धी सुझावों के विषय में उत्तरदाताओं से जो नवीनतम जानकारी प्राप्त हुई है। वह इस प्रकार है —

दो तिहाई (66) प्रतिशत ने आर्य समाज में चरित्रवान युवकों को प्रोत्साहित करने का सुझाव दिया है। जबकि 64 प्रतिशत ने बुद्धिजीवी, त्यागी, धर्मात्मा, संयमी—संन्यासियों तथा वानप्रस्थियों के द्वारा आर्य समाज का नेतृत्व करने के पक्ष में राय अभिव्यक्त की हैं। 59 प्रतिशत ने बुद्धिजीवियों का यथायोग्य सम्मान किये जाने का सुझाव दिया है।

55 प्रतिशत ने सदाचारी उपदेशकों तथा सदस्यों के निर्माण व प्रोत्साहन दिये जाने का सुझाव दिया दिया है। इसी प्रकार से समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों सभाओं आदि को बौद्धिक स्तर का बनाना तथा सामाजिक राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जागरूक होने के अनेक सुझाव दिये गये हैं।

अत निष्कर्ष रूप मे तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए यह कह सकते हैं कि आर्य समाज में विद्वानों, बुद्धिजीवियों, को आकृष्ट करने से आर्य समाज का नेतृत्व, बुद्धिजीवी, सदाचारी, संयमी, त्यागी, दम्भाविरोध रहित राग-द्वेष ईर्ष्यादि विरहित, मिथ्याभिमान, आडम्बर आदि से रहित सत्योपदेष्टा, न्यायप्रिय लोभादि दोषो से रहित धर्मात्मा सन्यासियों तथा वानप्रस्थियों को सौंपने से समाजोत्कर्ष अवश्यम्भावी है। साथ ही चरित्रवान युवकों का समाज से पृथक न करना अपितु उन्हें समाज मे आने के लिए प्रेरित करना, बुद्धिजीवियों का सम्मान, कथनी-करनी के अन्तरसे रहित उपदेशक भजनोपदेशकों को प्रोत्साहन तथा सत्संग को बौद्धिक स्तर का बनाने के विषय में सचेष्ट होते हुए उपर्युक्त कथित सुझावों को क्रिया रूप (प्रयोगात्मक) में अपनाने से और समाज के प्रति व्यक्तियों का आकृष्ट करने से समाजोन्नति की जा सकती है।

आर्य समाज में प्रारम्भ से ही बुद्धिजीवियों विद्वानों कर्मठ कार्यकर्ताओं का बाहुल्य रहने के कारण स्वतंत्रता संग्राम राष्ट्रीय जागृति जनजागरण, शिक्षा वेदोत्थान छुआछूत उन्मूलन महिला कल्याण, वर्णाश्रम व्यवस्था की शास्त्रीय मर्यादा पर आधारित समाज की पुनर्स्थापना सामाजिक सुधार चरित्र निर्माण इत्यादि अनेक क्षेत्रों मे जो योगदान रहा है, उसके सम्बन्ध मे हमें उत्तरदाताओं से जो तथ्य प्राप्त हुए हैं वे निम्न प्रकार हैं।

यह उल्लेखनीय तथ्य है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने आर्य समाज के विभिन्न क्षेत्रों मे किये गये योगदान की पुष्टि की है। उनकी धारणाओं के आधार पर यह अवगत हुआ कि 75 प्रतिशत ने स्वाधीनता संग्राम आन्दोलन मे इसका अत्यधिक योगदान माना है, महिला कल्याण कार्यक्रम मे योगदान के सम्बन्ध मे 74 प्रतिशत अधिक मानते है। जबकि 18 प्रति कुछ कम का महत्वपूर्ण योगदान मानते है। शिक्षा प्रसार मे 75 प्रतिशत के अनुसार अत्यधिक योगदान रहा है। सामाजिक सुधार जैसे महत्वपूर्ण कार्यों मे भी आर्य समाज की भूमिका के सम्बन्ध मे दो तिहाई उत्तरदाता इसके प्रशंसक रहे हैं।

इसी प्रकार वेदोत्थान 71 % चरित्र निर्माण 61 प्रतिशत राष्ट्रीय जागृति एवं जन जागरण क्षेत्र में 54 प्रति ने इसकी उल्लेखनीय भूमिका को स्वीकार किया है। अत स्पष्ट है कि आज भी आर्य समाज की छवि एक राष्ट्रीय हितचिंतक समाज सुधारक समाज सेवी संस्था के रूप मे तथा इसके विभिन्न क्षेत्रों मे लिये गये कार्यों के सम्बन्ध मे एकराय से सब महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार करते है।

यह एक पृथक विषय है कि वर्तमान में प्रारम्भिक कार्यों जैसा उत्साह विद्यमान नहीं है इसी उत्साह को पुनर्स्थापित करने के लिये आर्यसमाज को पुनर्स्थापित करने के लिये आर्य समाज को पुनर्गठित किये जाने की आवश्यकता विद्वानों द्वारा अनुभव किया जा रहा हैं।

आर्य समाज के पुनर्गठन विषयक दृष्टि कोण

जैसा कि तथ्य सर्वविदित ही है कि महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना सर्वप्रथम बम्बई में की गई थी। उस समय उन्होंने इस समाज के 28 नियमों की व्यवस्था की थी। बाद मे स्वयं स्वामी 10 नियमो के रूप में अन्तिम स्वीकृति प्रदान की इस के साथ ही आर्य समाज के उपनियम संविधान आदि की रूप रेखा निर्धारित की गई थीं। वर्तमान समय मे आर्य समाज में शिथिलता का अनुभव किया जा रहा है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं किंतु कुछ विचारकों का यह भी मंतव्य है या अनुभव कि आर्य समाज को पुनर्गठित किया जाना चाहिए। जिससे इसमे उत्पन्न हुई शिथिलता को दूर किया जा सके। इस सम्बन्ध मे हमने उत्तरदाताओ के दृष्टिकोण जानने के लिये एक प्रश्नावली प्रेषित की। जिसके आधार पर यह एक महत्वपूर्ण तथ्य उभरकर सामने आया है कि 90 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने आर्य समाज के पुनर्गठन पर बल दिया है। इसके साथ केवल 7 प्रति ने अपनी इस सम्बन्ध मे स्पष्ट राय नही दी हैं जबकि 3 प्रति ने ही आर्य समाज के पुनर्गठन की आवश्यकता को स्वीकार नही किया है। यद्यपि अधिकांश उत्तरदाताओ ने आर्य समाज के पक्ष को पुष्ट किया है। तथापि आर्य समाज के उपनियमो मे संशोधन परिवर्तन के विषय में आगामी अनुसंधान एवं विचार विमर्श की उपेक्षा है साथ ही यह भी विचारणीय है कि आर्य समाज का पुनर्गठन किस प्रकार से किया जाना चाहिए तथा उसका स्वरूप कैसा होगा ? उसकी पद्धति कैसी होगी इत्यादि अनेक पक्षो के सम्बन्ध मे गम्भीर विवेचन की आवश्यकता हैं।

आवश्यक सुझाव एवं निष्कर्ष

उपरिवर्णित विवरण से सुस्पष्ट ही हैं कि अधिकांश व्यक्ति यह अनुभव करते है कि आर्य समाज का पुनर्गठन किया जाना अपेक्षित है तथापि इस इस पुनर्गठन की प्रक्रिया क्या है। इससे संबंधित महत्वपूर्ण सुझावों को भी ध्यान मे रखना आवश्यक है। इसी दृष्टि से उत्तरदाताओ ने पुनर्गठन सम्बन्धी जो सुझाव दिये हैं। वे निम्न प्रकार है।

दो तिहाई से अधिक 71 प्रति ने आर्य समाज के केन्द्रीकरण करने का सुझाव दिया हैं। 41 प्रति ने आर्य समाजके उपनियमादि वैधानिक पुनर्गठन की आवश्यकता की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। वर्तमान समय मे जो नेतृत्ववर्ग हैं उसके प्रति असन्तोष प्रकट करते हुए नेतृत्व परिवर्तन के पक्ष मे 22 प्रतिशत ने अपनी राय अभिव्यक्त की है 56 प्रति ने आर्य समाज में व्याप्त विघटनकारी कारणों एवं तत्वों पर नियन्त्रण करने के पक्ष में राय दी हैं। (क्रमशः)

आर्य समाज और हिन्दू जन-समाज

डा. स्वामी सत्यप्रकाश

आर्य समाज का प्रादुर्भाव हिन्दू समाज के अन्तर्गत हुआ। महर्षि दयानन्द हिन्दू परिवार के बीच जन्मे और पले। हिन्दू समाज के गुण दोष दोनों उनके समक्ष आये। भारतवर्ष के मूल निवासी आर्य थे। यह वह समय था जब इस भूमि पर थोड़े से ही मानव प्राणी थे। उत्तर भारत के हिमालय प्रदेश के आस-पास कहीं, इस मानव के मध्य में वेदवाणी आविर्भूत हुई-ऋचाओं की यह शब्दावली जो आर्यों की प्रारम्भिक भाषा बनी, और मानव जाति के नेतृत्व के लिए वेद की ऋचाओं के माध्यम से एक आचार संहिता प्राप्त हुई जो आज तक मनुष्यमात्र की आचार संहिता है। इस आचार संहिता के शाश्वत वचन थे जिन्होंने आर्यों का जीवन-मार्ग प्रशस्त किया। जैसे—

(1) सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
तुम अकेले नहीं हो। साथ साथ चलो साथ-साथ बोलो साथ साथ विचारो।

(2) दुरितानि परा सुव यद् भद्रं तन्न आ सुव?
दुरित दुःख दुर्गुण दुराचरण—सब दूर फेंको। जो भी भद्र कल्याण कारक हो, उसे ग्रहण करो।

(3) स्वस्ति पन्थामनुचरेम—हम सब कल्याण के मार्ग पर चलें।

(4) सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु—समस्त दिशायें मेरी मित्र हों।

(5) भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम—दोनों कानों से अच्छा सुनो, भद्र यश के शब्द ही कानों में पड़ें।

(6) ईशावास्यमिदं सर्वम्—यह समस्त जगत ईश्वर से ईश्वरीय आस्तिक भावों से ओत प्रोत है।

(7) कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
कार्य करते हुए, सौ वर्ष जीने की इच्छा करें।

इस प्रकार की सैकड़ों वाणियों के वातावरण में मनुष्य ने अपने समाज का विकास किया। धरती को स्वर्ग बना दिया। मनुष्य ने मिलकर तपस्या की और प्रकृति का वरदान उसे उपलब्ध हुआ। प्रभु ने मनुष्य को सामूहिक सम्बल दिया। इस स्वर्णिम युग में जिस मानव समुदाय का उद्भव हुआ, उसका नाम 'आर्य' था। ये आर्य समस्त धरती पर फैल गए। यह समस्त धरती (पृथिवी) उनकी माता थी और वे इसके पुत्र थे। वीर-भोग्या वसुन्धरा। पृथिवी पर सर्वलोक हिताय तपस्या और श्रम करने वाली सन्तानों को 'वीर' कहा गया है, यह धरती धनधान्य से पूरित हो गयी फलवती हुई शस्यश्यामला बनी हिरण्यगर्भा और वसुन्धरा बनी। वीर आर्यों को उत्पन्न करके माता पृथिवी सचमुच में सौभाग्यवती बनी।

यह कहानी हजारों वर्ष पुरानी है हो सकता है कि लाखों वर्ष पुरानी हो। किन्तु पिछले चार पांच सहस्र वर्षों के इतिहास में आलस्य, प्रमाद, ईर्ष्या वैमनस्य के क्षुब्ध वातावरण ने धरती को स्वर्ग से नरक बना डाला और इस परिस्थिति के परिणाम स्वरूप अवतारवाद पैगम्बरवाद और नास्तिकतावाद उत्पन्न हुए जिन्होंने आर्य जाति को छिन्न भिन्न करके अनेक कुरीतियों और कुकर्मों का मम ज बना डाला।

महाभारत के गृह युद्ध के अनन्तर भारत के उत्तर पूर्वीय कोनों से बार बार इस देश पर हमले हुए। यूनानी आये, कुषाण आये, हूण आये। इनमें से कुछ विजेता भारत में बस गए और भारतीय आर्यों ने उन्हें अपना बना लिया वे इस देश का अंग बन गये। देश के मुसलमानों ने आक्रमण किया तो ईरानी आर्य (जो पारसी कहे जाते थे) अपनी 'अग्नि' को लेकर भारत आ बसे। उन्होंने मुसलमानी धर्म स्वीकार नहीं किया था ये पारसी भी शान्तिपूर्वक भारत में बस गए। 900 ई. के लगभग से जो मुसलमानी काफिले इस देश पर आक्रमण के रूप में आये, वे अपने साथ कुरान और हजरत मुहम्मद को रसूल के रूप में लाये। इन्होंने नये धर्म और नयी सभ्यता को भारत पर लादना चाहा। इन्होंने इस देश के रहने वालों को काफिर बुतपरस्त और हिन्दू शब्दों से सम्बोधित किया—'हिन्दू' शब्द का इन्होंने अर्थ-व्युत्पत्ति की—काफिर, चोर, गुलाम और बुतपरस्त। मुसलमान भारत में नये नारे लेकर आये थे। भारत छिन्न भिन्न हो गया था मूर्तिपूजा अवतारवाद जन्मना जाति पांत वाद ने इसे जीर्ण शीर्ण कर डाला था। मुसलमान विजेता के रूप में आते रहे, उन्होंने भारत पर राज्य भी किया, और यहां के लोगों को मुसलमान भी बना डाला। 900 ई. से 1900 ई. तक लगभग एक तिहाई भारतीय मुसलमान हो गया। 1000 वर्षों में 10 करोड़ के लगभग मुसलमान भारत की जनगणना में अंकित हुए। इनमें थोड़ी सी संख्या भारत के बाहर से आये हुए मुसलमानों की थी—शेष तो भारतीय हिन्दू ही थे जो मुसलमान बन गए। कुछ हिन्दुओं को मुस्लिम शासन में बलात मुसलमान बनाया गया, कुछ प्रलोभनों से मुसलमान बने, और काफी संख्या में ऐसे हिन्दू भी मुसलमान बने जो भारत में हिन्दुओं के अस्पृश्यता और गर्हित व्यवहार से तंग थे। बंगाल असम उड़ीसा के बौद्ध हिन्दुओं के अत्याचारों से दुःखी होकर पूरे के पूरे ही मुस्लिम बन गए। ये बौद्ध हिन्दू समाज में घृणित और कुत्सित व्यवसाय के लिए बाध्य किए जाते थे।

1860-1870 ई. के लगभग महर्षि दयानन्द ने हिन्दुओं की इस भीषण स्थिति का परिचय प्राप्त किया और उन्होंने इन हिन्दुओं के बीच में अपना कार्य प्रारम्भ किया। स्वामी दयानन्द ने यह देखा कि मुसलमान 1000 वर्ष से इस देश के लोगों को मुसलमान बना रहे हैं, और साथ ही साथ लगभग 200 वर्ष से इस देश के लोग ईसाई भी हो रहे हैं। अंग्रेजी साम्राज्य ने भारत में ईसाईमत को प्रोत्साहन दे रखा है। स्वामी दयानन्द के समय भारतवासियों में ईसाइयों की संख्या 0.1 प्रतिशत से अधिक तो न थी पर देश परतन्त्र था और अंग्रेजी शासन ईसाई धर्म को स्वभावतः प्रोत्साहन दे रहा था। जिन कारणों से भारतीय हिन्दू मुसलमान बनता था, लगभग उन्हीं कारणों से ईसाई भी बनने लगा। स्वामी दयानन्द ने भारतीय हिन्दुओं की इन सब समस्याओं पर विचार किया।

स्वामी दयानन्द जिस परिणाम पर पहुंचे वह यह था—

(1) भारत में रहने वाले हिन्दुओं की रक्षा करना—

(क) मुसलमानों से, (ख) ईसाइयों से, (ग) पश्चिमी सभ्यता के दुर्गुणों से।

(2) हिन्दुओं की यह रक्षा तभी सम्भव है, जब हिन्दू अपने समाज के निम्न पांच कलंकों से छूट जाय। ये कलंक हैं—

(क) मूर्तिपूजा और अवतारवाद

(ख) जन्मना जाति पांतिवाद

(ग) छूआछूत वाद या अस्पृश्यतावाद

(घ) सस्ती मुक्ति दिलाने वाले ठेकेदारों पंडे, पुजारी महन्त मठाधीश आदि से विमुक्ति।

(ङ) अन्ध विश्वास और रूढ़ियां जैसे मृतक-श्राद्ध, फलितज्योतिष, भूत प्रेतवाद, हस्तरेखा और भविष्य, मन्दिर और तीर्थों से सम्बद्ध अन्धविश्वास आदि। (क्रमशः)

आज देश के कोने कोने में साम्प्रदायिक दंगों के समाचार आ रहे हैं। अलग-2 प्रांतों में अलग-2 जातियां संघर्षरत हैं उद्योगों में विरोधी श्रमिक संघों में आपस में ठनी हुई है।

पंजाब, नागालैंड व त्रिपुरा की अपनी समस्याएं हैं। कई राज्यों में जल या सीमा सम्बन्धी विवाद चल रहा है।

यह विश्वास करना कि इन सब लोगों की मातृभूमि एक ही देश भारतवर्ष है। ऐसा नहीं लगता है कि इनके किसी भी क्रियाकलाप का संघ भारतवर्ष अथवा उसके आम नागरिकों के कल्याण से है।

यह है आजके भारत की तस्वीर।

डेढ़ सौ वर्ष पूर्वः

हमारे देश के राष्ट्रीय मंच की लगभग यही दशा स्वामी दयानन्द के समय में भी यद्यपि उस मंच के पात्र भिन्न थे। वे थे शिव विष्णु और राम के पुजारी जो निरंतर संघर्षरत थे। विभिन्न पंथों के अनुयायी भ्रष्ट पंडे पुजारियों की जमात जैन, इस्लाम, ईसाई धर्म के अनुयाइयों का पाखंड मांस मदिरा और अंग्रेजों के गुलाम, विलासिताओं में डूबे हुए राजे रजवाड़े और नारी को नर्क मानने वाले तथाकथित 'पवित्र त्मा' विद्वान एवं पंडित। समाज में चारों ओर अन्धविश्वास पाखंड और विघटन का राज्य था। किसी के सामने राष्ट्रीय दृष्टिकोण नहीं था।

स्वामी दयानन्द का प्रयास

हम ऊपर कह चुके हैं कि देशकी परिस्थिति स्वामी दयानंद के समय में भी लगभग ऐसी ही थी। उन्होंने उससे निकलने का क्या रास्ता सुझाया था? वह बाल ब्रह्मचारी संन्यासी थे अतः उनकी कोई जाति नहीं थी अतः जातियता का लांछन उन पर लग नहीं सकता था। अपने वंश देश का मंत्री या अफसर बनने की संभावना उनके सामने नहीं थी।

सच्चे शिव की तलाश में निकला वह संन्यासी मेवाड़ के शिव मंदिर का आगार का ठाकर मार चुका था। स्त्री को वह मानव की जन्मदात्री और निर्मात्री होने का गौरव देता था। स्वामीजी ने अच्छे इंसान के निर्माण के लिये दस नियम बनाये जिन पर विश्व का कोई व्यक्ति धर्म या देश आपत्ति नहीं कर सकता। स्वामीजी का विचार था कि जैसा वेद ने कहा है हमें सच्चे और अच्छे इंसान बनकर सदा दूसरों के कल्याण की बात सोचनी चाहिए।

तभी हम सब इस पृथ्वी पर एक

आर्य समाज का पुनर्गठनः कुछ सुझाव

—अम्बा प्रसाद शर्मा—

परिवार के सदस्यों की तरह शांति और समृद्धि में रह सकेंगे। इसीलिए सर सैयद अहमद खां जैसे इस्लाम के कट्टर अनुयाई भी उनके प्रशंसक थे।

पाल रिचर्ड अलकाट और रेमसे मेक डानल्ड आदि अनेक ईसाई विद्वानों ने स्वामीजी को भारत का निर्माता कहा है। वैदिक जीवन पद्धति द्वारा अच्छे इंसान बनाने के लिए स्वामीजी ने जो आन्दोलन चलाया वह था आर्य समाज। आर्य समाज के लोगों में मानव मूल्यों और सत्य ज्ञान के लिए गहरी पिपासा थी, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की ललक थी और विदेशी शासन से भारत को मुक्त कराने की आग थी। इन्हीं लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में कूदकर क्रांति का चार चांदलगाये।

आर्यसमाज की निष्क्रियता

समय की गति के साथ आर्य समाज के लोग भी काम क्रोध, मद और लोभ से ग्रसित हो गये। वे समाज के पदों को आभूषण समझ कर उनसे चिपक गये। अपने वर्चस्व को स्थाई रखने हेतु नई संस्थाएं बंद कर दी गई। समाज का संपत्ति पर साप बन कर बैठ गये। जन जागरण के कार्य को तिलांजलि दे दी गई। वे पश्चिमी जीवन शैली के गुलाम बन गये। गुटबंदी और राजनीति समाज में घर कर गई।

फलत समाज निष्ठावान कार्यकर्ताओं के हाथ से निकलकर व्यापारी वर्ग के हाथों में चला गया। सस्ती वाहवाही लूटने के चक्कर में उन्होंने ऐसे लोगों से समझौता कर लिया जो अज्ञान अंधकार और अवैदिक विचारों से ग्रसित थे। जो स्वयं सो जाए वह दूसरे को क्या जगायेगा?

समाधान

इस बात पर देश के सभी वैदिक विद्वान एक मत हैं कि यदि देश को वर्तमान दशा गति से निकलना है तो आर्य समाज का पुनर्गठन करना ही होगा। उन्होंने विचार विमर्श के बाद सुझाव भी दिये हैं यथा- उसके संविधान में संशोधन प्रभावी प्रचार प्रसार, विवादों के लिए न्यायसभाएं पुस्तकालयों तथा शोध केन्द्रों की स्थापना शिक्षण संस्थाओं के केंद्रीय संगठन आदि।

पुनर्गठन तो आर्यों का करना है आर्य होंगे तो उनका पुनर्गठन होगा। अर्थात मूल कार्य तो पहले आर्य बनाने का है। आर्य कैसे बनें? हर आर्य समाजी गृहस्थ को यह दायित्व लेना चाहिये कि वह अपने बालकों के यथा विधि संस्कार कराये, उन्हें ब्रह्मचर्य का महत्व समझाये, वैदिक जीवन चर्या उन्हें सिखाये।

वह देखें कि वे व्यवहार में विनम्रता सुशीलता, आज्ञापालन, छोटों के प्रति स्नेह निर्बलों के प्रति दयालुता का आभास दें। ईश्वरमें आस्था रखें और संध्या हवन नित्य करें। वे घृणा और पाखण्ड से बचें। समाज के सत्संगों में जावें और आर्य विचारों से परिचित हों। वैदिक साहित्य की सामान्य जानकारी अवश्य कराई जाय भले वे वाणिज्य विज्ञान कला कृषि कुछ भी क्यों न पढ़ें। उनका सच्चरित्रता की गारण्टी माता पिता लें।

इस प्रकार बालकों के सुसंस्कारों और चरित्र निर्माण के लिए मातापिता वर्षों तपस्या करें। यदि आर्यों ने आर्य समाज की पौध का परिवार की मिट्टी में पाल पोसकर तैयार कर लिया तो विश्व तो बने या न बने परन्तु देश के लाखों परिवार आदर्श आर्य बन जायेंगे और तब हमारे पास एक ऐसी शक्ति होगी जो भारतीय समाज को वांछित रूप दे सकेगी।

हम अपनी संतान में तो आर्यत्व के संस्कार डालने में असफल रहें और आशा करें कि जुलूसों सभाओं, नारों और भाषणों से स्वयं चलन लाग आकर सच्चे आर्यों की सेना बन कर खड़ा कर देंगे तो यह दुराशा मात्र ही सिद्ध होगा।

आर्यों के निर्माण का यह पावन कार्य परिवारों के साथ साथ आर्य समाज के गुरुकुलों में भी गुरुओं की जिम्मेदारी पर होना चाहिए (वैसे वहां हो भी रहा है)। ... होना चाहिए ... कालेजों में जहां ... निष्पादन ... शर्त बांधे जाता है और ... कोय अनुदान बंद करना ... देती है।

अब ... बात ... श्रद्धानन्द एवं श्र... के सम्मुख ... करना चाहिए।

... आर्य ... ।

अपना दीप जलाओ

—लाखनसिंह भदौरिया "सौमित्र"—

काली चुनौती देता हमको बढ़ता हुआ अंधियारा,
पल पल दूर जा रहा हम से उगता हुआ सवेरा।
निशा नाचनी दसों दिशायें उड़ी तिमिर की धुन्ध
अपना दीप जलाना होगा झंझा के प्रतिकूल।

आत्मा की चिर दीप्त वर्तिका को थोड़ा उकसा दो,
मानो नहीं ज्योति जगना यह, लौ बनकर मुस्का दो,
जगमग अगनी के उपवन में खिलें ज्योति के फूल,
माथे से फिर तिलक लगायें इस धरती की धूल।

अमा अमा मांगे भूतल से भोर मचल उठ ...
धरनी का आलोक स्तम्भ बन, ... भारत मेरा
आज मचलने ... आ मीना न ने
दीप बुझाने नहीं उजलित पलों में दीप जलाने।

तब समझूं मां तुम जलन की कितनी आग लिये हो।
और समझने प्राणों में कितना अनुराग लिये हो।

-जिस्दार महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ०प्र०)

 डाक प स RJ/AJ-169

साहित्य-समीक्षा

पुस्तक का नाम : आंसू डूबी मुस्कानें (कविता संग्रह)
रचयिता : लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र'
प्रकाशक : रचयिता स्वयं
आकार : 20×30×16 पृष्ठ 88
मूल्य · दस रुपया
सम्पर्क सूत्र : सौमित्र, भोजपुरा, मैनपुरी [उ. प्र.]

'सौमित्र' के नाम व उनके काव्य से संपूर्ण आर्य जगत भली-भांति परिचित है। आप आशु कवि हैं। आपकी कविताएं अत्यन्त भावपूर्ण एवं मार्मिक होती हैं। कविवर प्राणाधार ने आपके विषय में सत्य ही कहा है—

लाखन मे कवि एक है, लाखनसिंह सौमित्र।
जाकी कविता महकती, ज्यों कनौजा इत्र॥

आंसू डूबी मुस्कानें सौमित्र जी के मुक्तकों व कविताओं का संग्रह है।

आधुनिक प्रगति के खोखलेपन पर कवि ने भरपूर प्रहार किया है—

प्रगति का सिलसिला सखे कितना आगे चला है।
भूमि, नभ सागर सभी को जीतने का होसला है॥
फासले संसार के नजदीकियो मे बदल डाले।
तय न होता आदमी से आदमी का फासला है॥

कविवर का हृदय जन साधारण द्वारा की गई उपेक्षा से क्षुब्ध है। उसे दुख है कि लोग उसके परिश्रम का कोई मूल्य नही समझते।

कवि का दर्द देखिए—

सर्वदंशिता पीडाओ को कितने जन्म पड़ा लहराना।
तब प्रभाव के नीलकण्ठ से फूट रहा मद भरा तराना॥
कथा कथा पीडा का स्वर है अपना राग सुनाये कैसे।
इतना सरल नही होता है विष के घूट कण्ठ से गाना॥

आशा है कि जन-साधारण कवि के महत्व को समझेगा, उसके उत्कृष्ट के काव्य को समझेगा और उसे अत्यन्त प्रेम व आदर सहित अपनायेगा।

—वीरेन्द्र आर्य

श्रीगुरुकुल चित्तौड़गढ़ मे प्रवेश आरम्भ

संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से आर्ष पद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त प्रक्रिया से मध्यमा शास्त्री व आचार्य कक्षा तक की पढ़ाई व परीक्षा का समायोजन है विगत वर्षों मे यहा का परीक्षा परिणाम अति ही उत्तम रह रहा है पढाई 1 जुलाई से आरम्भ होती है प्रवेश संबंधी अन्य जानकारी के लिए मुख्याधिष्ठाता श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ राजस्थान 312001 इस पते से पत्र व्यवहार या सम्पर्क करें।

स्वत्वाधिकार आर्य समाज अजमेर के लिए व प्रकाशक एवं सम्पादक रासासिंह हेतु रतनलाल वर्मा द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स, बाबू मोहल्ला केसरगंज, अजमेर मे मुद्रित एवं आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 162

सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सम्पूर्ण जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एव भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष 3 बुधवार 15 जुलाई, 1987
अंक 10 ए.स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

श्रावण कृ 5 सवत 2044
वार्षिक मू 15 - एक प्रति 60 पैसे

पंजाब से आतंकवाद समाप्त करने का दायित्व सिखों पर

— दत्तात्रेय आर्य

अजमेर । आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान मे हाल ही मे ही पजाब व हरियाणा मे आतकवादियो द्वारा की गई हत्याओ पर अपना क्षोभ व भारत सरकार की ढुलमुल नीति के प्रति अपना रोष व्यक्त करने हेतु एक सभा का आयोजन किया गया । सभा की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य ने की ।

सभा में सुप्रसिद्ध आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपने विचार रखे । आपने कहा कि आर्य समाज गत महिनो से पजाब मे सेना नियुक्त करने की मांग से कर रहा है । परन्तु केन्द्रीय सरकार इस पर नकारात्मकता का रुख अपनाए हुए है । जिसके फलस्वरूप आतकवादियो को खुलकर खेलने का अवसर मिल रहा है । श्री आर्य ने सुरक्षा पट्टी बनाने व पजाब को सेना को सौंपने की मांग भारत सरकार से की ।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए आचार्य दत्तात्रेय जी ने कहा कि मैं श्री सुरजीतसिंह को इस बात से पूर्णतया सहमत हूँ कि पजाब से आतकवाद समाप्त करने की जिम्मेदारी हिंदुओ की नही अपितु सिखो की है । क्योंकि आतकवादी सिख धर्म से सम्बन्ध रखते है । अतएव स्वर्ण मदिर के मुख्य ग्रथियो को चाहिए कि व आतकवादियो को मनखैया घोषित कर आम सिखो से अलग-थलग करने का महत्वपूर्ण कार्य करें । इससे आतकवाद को समाप्त करने मे बड़ी मदद मिलेगी । यदि भय, व्यक्तिगत स्वार्थो आदि के कारण मुख्य ग्रथी ऐसा नही करते तो समस्त शान्ति व न्याय प्रिय सिखो को उन पर यह कार्यवाही करने का दबाव डालना चाहिए ।

आचार्य जी ने कहा कि मै मानता हू हिंसा का बदला हिंसा लेना मानवता व देशहित मे नही है । परन्तु प्रतिक्रिया तभी रुक सकती है जबकि क्रिया न हो । आपने केन्द्रीय व पजाब मे आतक पीडित लोगो के लिए एक ऐसे सुरक्षित क्षेत्र का निर्माण करे, जहा उनके लिए निवास व्यवसाय आदि जीवनोपयोगी सभी सुविधाओ की व्यवस्था हो । इसके साथ ही आपने उग्रवादियो के भय से पलायन वाले लोगो की सम्पत्ति की रक्षा का पूर्ण दायित्व सरकार तब तक ले, जब तक की स्थिति उनके लौटने के अनुकूल नही हो जाती ।

सभा मे उक्त आशय एव प्रस्ताव भी पारित कर प्रधानमन्त्री को प्रेषित किया गया । सभा के कार्यवाही दो मिनट का मौन रखकर पजाब व हरियाणा मे हुए हत्याकाण्ड मे मारे गए व्यक्तियो को श्रद्धांजलि देने के पश्चात सभा समाप्त हुई ।

संतराम बी. ए. पर डाक टिकट जारी किए जाए

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के वरिष्ठ उपप्रधान व आर्य समाज, अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रेयजी आर्य ने भारत सरकार से श्री संतरामजी बी ए पर डाक टिकट जारी करने की अपील की है ।

आचार्यजी ने केन्द्रीय संचारमंत्री को लिखे पत्र मे श्री संतरामजी के सामाजिक व साहित्यकीय कार्यों का स्मरण कराते हुए, उन पर डाक टिकट जारी कर उन्हे सम्मान देने का अनुरोध किया है ।

हिन्दुओं ने अतीत की गलतियों से कोई सबक नहीं सीखा

— वीरेन्द्र कुमार आर्य —

नाथद्वारा के मंदिर मे हरिजनो के प्रवेश को लेकर जो दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना घटी है, भविष्य मे हिन्दुओ को उसके भयकर दुष्परिणाम भुगतने पड़ेगे । भारतीय इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि अतीत में जब भी ऐसी दुर्घटनाऐ घटी हैं, उन सबकी परिणति हरिजनो द्वारा किए गए सामूहिक धर्मपरिवर्तन से हुई है ।

धर्म परिवर्तन का मतलब राष्ट्रान्तरण है । महामना मालवीय कट्टर पौराणिक थे, परन्तु इस धर्मपरिवर्तन के दूरगामी दुष्परिणामो को भांपकर उन्होने भी छुआछूत की भावना को तिलांजलि देते हुए हरिजनो से कहा था 'हमारे हरिजनो विधर्मियो के बहकावे मे आकर धर्म परिवर्तन न करे । हम उनकी चरण-रज लेने को तैयार हैं ।

हिन्दुओ की अतीत की गलतियो का प्रतिफल तो पाकिस्तान के रूप हमारे सामने है । नाथ द्वारा की दुर्घटना सिद्ध करती है कि वे फिर एक और पाकिस्तान के निर्माण के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार कर रहे है ।

काश अतीत से कुछ सीख सकते ।
[illegible]
जो गिरकर सम्भल जाते ।

आर्यसमाज शाहपुरा

प्रधान—श्री बंशीलाल छोपा
मन्त्री—श्री बंशीलाल सोनी
कोषाध्यक्ष—
श्री सत्यनारायण तोलम्बिया
पुस्तकालयाध्यक्ष—
श्री बादकरण मूंदड़ा

निवेदक :- दत्तात्रेयआर्य प्रधान संपादक : रासासिंह संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य फोन कार्या : 21010

कब तक खून बहता रहेगा......

दिनांक 6 एव 7 जुलाई 87 ई की रात्रिया नरमेध के काले इतिहास में दो पन्ने और जोड गई। चौबीस घटे मे हरियाणा रोडवेज की तीन बसों को पजाब के लाडू तथा हरियाणा के फतेहाबाद के पास आतकवादियो द्वारा रोककर निर्दोष 74 बस यात्रियों को स्टेनगनो की अधाधुन्ध गोलियो से भून दिया गया। रक्तरजित इतिहास का पन्ना पुन खून से सन गया। सारा देश स्तब्ध रह गया, मृतक सब हिन्दू थे। सिक्ख समुदाय के व्यक्तियो को भगा दिया गया। उसकी प्रतिक्रिया देश के अन्य भागो मे भी होना स्वाभाविक था। कही कर्फ्यू लगे, कही बन्द आयोजित हुए, कहीं भर्त्सनाए हुई और कही शोक प्रस्तावों की औपचारिकताए हुई।

सवाल उठता है कि आखिर कब तक इस निर्ममता से देशद्रोही, पैशाचिकवृत्ति वाले हत्यारे आतकवादियो के हाथो हत्याए होती रहेगी? देश का जनधन लुटता रहेगा? बेकसरो को गोलियो से उडाया जाता रहेगा। बहुत हो चुका। हर बार सख्त सुरक्षा कदम उठाने की बात कह दी जाती है और तुरन्त दु खद घटनाए फिर घटित हो जाती है। यह शासको के लिये सत्ताधारियो के लिये, सरकार के लिये घोर लज्जा की बात है। सुरक्षा एव गुप्तचर व्यवस्था सबथा निकम्मी साबित हुई है। पजाब का हिन्दू आतकित है। हजारो की सख्या मे लोग घर बार छोडकर दिल्ली, हरियाणा तथा अन्य राज्यो मे चले गये हैं। पजाब मे भी रोज दो, चार छ जान और कभी ज्यादा भी आतकवादियो के हाथो मारे जाते हैं। मरने वाला हर व्यक्ति चाहे वह सिक्ख है या हिन्दू वह भारतीय है। राष्ट्र का नैतिक दायित्व है कि वह प्रत्येक नागरिक के जानमाल की रक्षा करे।

सरकार को अविलम्ब निम्न कदम उठाने चाहिये —

1 काश्मीर से कच्छ तक की सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाई जाय।
2 लोगो की जान माल की रक्षा करने तथा उनमे आत्मविश्वास पैदा करने हेतु विशेष क्षेत्रो को सेना के हवाले किया जाय।
3 रात्रिकालीन बस सेवाओ मे अनिवार्य रूप से सुरक्षा सैनिक हो।
4 पजाब पुलिस के सदेहास्पद तत्वो की छटनी की जाय। पजाब पुलिस मे अल्पसख्यको समुचित प्रतिनिधित्व दिया जाय।
5 गुप्तचर व्यवस्था सुदृढ की जाय।
6 आतकवादियो का कठोरता से दमन किया जाय।
7 आतकवादियो की धरपकड और पहचान के लिए अधिकाधिक जन सहयोग प्राप्त किया जाय।
8 पीडित व्यक्तियो को फौरन राहत दिलवाई जाय। जैसे हरियाणा सरकार ने तत्परता दिखाई है।

सिक्खों का कर्त्तव्य— पजाब मे आतकवादियो का मुकाबला करने तथा अपने हिन्दू भाईयो की रक्षा करने हेतु सिक्खो को भी सक्रिय होकर आगे आना होगा। बसो से छाँटकर वे डट जावे। हिन्दू भाइयो की खातिर अपनी जान जोखिम में डालें। जिस प्रकार पजाब से बाहर हिन्दुओं ने अपनी जान जोखिम में डालकर अपने सिक्ख भाईयों की रक्षा की है।

सिक्ख भाइयों को खुले दिल से आतकवादियो की निन्दा करनी होगी। आतकवादियो के विरुद्ध सत्याग्रह, धरना, अनशन आदि अहिंसात्मक कदम उठाने में पीछे नहीं रहें। आवश्यकता पडने पर आतकवादियों और उग्रवादियों से कडा लोहा लें।

हिन्दू सिक्ख भाई 2 है। भाई को भाई से कोई जुदा नहीं कर सकता। पर धैर्य की भी सीमा होती है।

—[illegible]

पूर्व आचार्य दत्तात्रेय वाब्ले-कीर्तिकौमुदी

— आचार्यों का [illegible] —

महाराष्ट्रप्रदेशेऽस्य, विप्रवशे सुशिक्षिते ।
दत्तात्रेयाभिधोधीमान्, जात ख्यातश्चरित्रवान् ।१।

अल्पकालेन यो विद्या, अग्राह तु कुशाग्रधी ।
सर्वानधीत्य सिद्धान्तान्, धर्मसम्बन्धिनो मुहु ।२।

सर्वकल्याणकृद् वेद राद्धान्ताना प्रवर्त्तकम् ।
दयानन्दर्षि वरमसौ आराध्य चाप्ययत्नत ।३।

समर्ज्य निखिला शिक्षामुत्तराख्यप्रदेशके ।
राजस्थान प्रजायत्यै, क्रियाक्षेत्रमथाऽवृणोत् ।४।

दयानन्द यशो वृद्धयै तत्सिद्धान्तप्रचारणे ।
पूर्वजै स्थापितो विद्यालयोऽनेन प्रवर्धित: ।५।

आर्यावर्तस्य या भूमिर्मनुजाश्च निरन्तरम ।
धर्माध्वरानले प्राणान् होतु प्ररयति ध्रुवम् ।६।

महर्षे र्जीवनास्याभून, लीलासवृत्तिसत्तमा ।
यत्र सा पावनी भूमिरजमेरस्य विद्यते ।७।

दयानन्दाभिधयेन, तत्र वै स्नातकोत्तरम ।
प्रादनमयत शिक्षायै महाविद्यालयस्तरम् ।८।

योऽय शिक्षाविदा श्रेष्ठ, श्रेष्ठो धर्मधिया ध्रुवम् ।
आचार्य पद शस्तमसो वै समभूषयत् ।९।

दत्तात्रेयाभिधश्चार्य, आर्य गौरववर्धन ।
विश्वविद्यालये काङ्गडधाम् ससम्मान पुरस्कृत ।१०।

विविध - विषयवन्धान्यो निबन्धान् व्यलेखीत,
बहुगरिमसमृद्धा ग्रन्थराशिम् प्रणिन्ये ।
विनरति नितरा यश्चिन्तनीय प्रबन्धान,
स जयति भुवि दत्तात्रेय आर्य सुविज्ञ ।११।

सामाजिके शैक्षणिके सुधारे, धर्मप्रचारे च स्वतन्त्रतायाः ।
आन्दोलने क्रान्तिकृता वरिष्ठो, लब्ध प्रतिष्ठोऽस्ति गुणैर्गरिष्ठ ।१२।

दुखतोऽय तु प्रपीडितोऽपि, नाङ्गीकृता कीर्तिममुञ्चदेवम् ।
प्राणान् परित्यक्त मपीहित च 'महाजनाना तु परम्परैण' ।१३।

क्षेत्रेष्वनेकेषु प्रशस्तनिष्ठ—किन्तवार्य सामाजकृतो वरिष्ठ ।
विद्वद्गणे विश्रुत कीर्तिगाथ, जीमव्यात् शत शारदवर्षमायु ।१४।

पता — आनन्द मन्दिरम्, कूंचापाठो, बदायूं (उ प्र)

धर्म और राजनीति

— श्री — —
पं० कृपाशंकर शर्मा श्री. त्रिज

जब राजनीति से धर्म्म हटाया जाता है,
बढ़ता अधर्म्म-अन्धकार अधरा छाता है।

जो लोक और परलोक सिद्धि का साधक है,
अभ्युदय और निःश्रेयस का आराधक है,
जिसको संकीर्ण भावना कभी न भाती है,
जिसकी प्रभुता प्रति-क्षण पीयूष पिलाती है,

वह परमतत्व सर्वथा भुलाया जाता है—
जब राजनीति से धर्म्म हटाया जाता है।

सद्धर्म सदा सुख शान्ति सुधा बरसाता है
नय न्याय-नीति का शुभ सन्मार्ग सुझाता है,
मानवता में वर बन्धु भाव उमगाता है,
वसुधा का वृहत कुटुम्ब रूप दरसाता है

इस विधि-विधान में सार न पाया जाता है—
जब राजनीति से धर्म्म हटाया जाता है।।

अत्याचारों से भूमि कांपने लगती है
सोती सुनीति, दुर्नीति दानवी जगती है
तब स्वार्थ-असुर दुर्दम्भ दर्प दिखलाता है
निजता-परता का क्षुद्र भाव भर जाता है

मानव मानवता पर विष वज्र गिराता है—
जब राजनीति से धर्म्म हटाया जाता है।।

मत पन्थ सम्प्रदायों को धर्म्म बनाते हैं
वे अज्ञ दीप को दिनकर कह भरमाते हैं
क्या कभी धर्म्म भावना ने युद्ध रचाये हैं
कब सत्य-अहिंसा ने नर रक्त बहाये हैं

विपदा वारिधि में विश्व डुबोया जाता है—
जब राजनीति से धर्म्म हटाया जाता है।।

भ्रष्टाचारों की अग्नि उग्र हो जाती है,
गुटबन्दी स्नेह संगठन का गढ ढाती है,
मँहगाई दिन-दिन दूनी बढ़ती जाती है
जनता सुख शान्ति न नेक कहीं भी पाती है,

सर्वत्र दुःख दुर्दृश्य दृष्टि में आता है—
जब राजनीति से धर्म्म हटाया जाता है।

संग्राम-भूमि में तोप आग उगलती है
अगणित लोगों की देहें जीतो जलती हैं
होकर अनाथ लाखों जन घुट घुट रोते हैं
भूखों मर-मर कर प्राण करोड़ों खोते हैं

दुर्भिक्ष दुष्ट दानव, मानव दल खाता है—
जब राजनीति से धर्म्म हटाया जाता है।।

शासन-सत्ता जब धर्म्मयुक्त जाती है,
बनकर विनीत अति सौम्य रूप सरसाती है
जनता भी नैतिकता को ही अपनाती है,
तब क्रांतिकारी नित सुख-समृद्धि बरसाती है,

सद्भाव-स्नेह का दृढ़ गढ़ ढाया जाता है—
जब राजनीति से धर्म्म हटाया जाता है।।

—•—

आर्य समाज और हिन्दू जन-समाज

— स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती —

(पिछले अंक से आगे)

यदि दूसरे शब्दों में यह कहें तो यह है कि स्वामी दयानन्द "हिन्दुत्व" का विरोध करके हिन्दुओं की रक्षा करना चाहते थे। यदि हिन्दू यह समझता है कि ऊपर दिये गये ५ कलङ्क ही हिन्दू धर्म की विशेषता हैं तो इस प्रकार के 'हिन्दुत्व' का भविष्य अन्धकारमय है। वे हिन्दुओं के बीच एक ऐसे आर्य समाज का संघटन करना चाहते थे, जो हिन्दुत्व के दोषों से सर्वथा मुक्त हो, और जिस संघटन में अभारतीय विदेशी सम्प्रदायवाद भी विलीन हो सके और विशुद्ध मानव समाज बन सके।
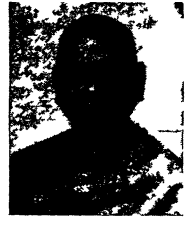
अजमेर के मेरे विद्वान मित्र प्रो दत्तात्रय वाब्ले, ने एक पुस्तक लिखी है—Arya Samaj—Hindu without Hinduism (अर्थात हिन्दुत्व के साथ सम्बन्ध जितने कलङ्क हैं, उनसे मुक्त) महर्षि दयानन्द के स्वप्ना का आर्यसमाज हिन्दुत्वविहीन हिन्दू समाज है।

भारत के परिप्रेक्ष्य में प्रो वाब्ले की बातें शतप्रतिशत ठीक हैं। आर्य समाज की स्थापना के समय महर्षि का दृष्टिकोण भारत की परिधि में सीमित न था, वे इसे विश्वव्यापी आंदोलन बनाना चाहते थे। स्वामी दयानन्द आर्यसमाज के माध्यम के द्वारा ऐसे मानव समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसमें किसी भी सम्प्रदाय की साम्प्रदायिकता न हो, न अन्धविश्वास हो, न नास्तिकता न रूढिवादिता जो केवल प्राकृतिक मानव धर्म द्वारा शासित हो और जिसका एक मात्र आधार सत्य और मानव कल्याण हो।

आर्य समाज उस ईसाई धर्म का पोषक है जिसमें ईसा ईश्वर का इकलौता बेटा नहीं है, जो महान् धर्मोपदेष्टा था किन्तु चमत्कारों से विहीन और जिसको बीच में डाल कर मनुष्य न नरक जाता है न स्वर्ग लोक को।

आर्य समाज उस मुस्लिम धर्म का पोषक है जिसमें ईमान की दृष्टि से मुहम्मद और कुरआन का कोई स्थान न हो और जो पक्षपात रहित सत्य धर्म पर निर्भर हो।

प्रो वाब्ले के शब्दों में कहूं तो

Arya Samaj—Hindu without Hinduism (भारत में)

Arya Samaj—Muslim without Islam
(अरब और मुसलमानी देशों में)

Arya Samaj—Christian without Christianity
(यूरोप और अमरीका में)

Arya Samaj—Buddhist without Buddhism (बौद्ध देशों में)

भारत में आर्य समाज हिन्दू हितों का पोषक है अरब में आर्य समाज अरब हितों का पोषक रहेगा, अफ्रीका में आर्य समाज अफ्रीकी हितों का (नीग्रो आदि का) पोषक रहेगा और यूरोप और अमरीका में आर्य समाज वहां के लोगों के हितों का पूर्णतः पोषक रहेगा।

इस भावना से आर्य समाज विश्व भर में सेवा करने का व्रती है। आर्य समाज के कार्यकर्ता भी इस दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करें।

*

दयानन्द शोधपीठ को सहयोग दीजिए—

दयानन्द वैदिक शोधपीठ, दयानन्द कालेज, अजमेर में ऋषि के पत्र व्यवहार पर शोध कार्य चल रहा है। यदि किसी सज्जन के पास ऋषि के पत्र व्यवहार से सम्बन्धित कोई सामग्री हो तो, कृपया संचालक दयानन्द वैदिक शोधपीठ, दयानन्द कालेज अजमेर को भेजने का कष्ट करें।

—संचालक

प्रो. जी. वाईज के पत्र महर्षि के नाम

— डा. कृष्णपाल सिंह —

जहां महर्षि देश को सामाजिक धार्मिक आर्थिक राजनीतिक दृष्टि से मजबूत देखना चाहते वहां वैज्ञानिक दृष्टि से देश की स्थिति दृढ़ हो इसके लिए भारतीय नवयुवकों को विदेश भेजकर आधुनिक कला-कौशल की शिक्षा प्राप्त करने के लिए योजना पर विचार किया और इस सम्बन्ध मे जर्मन के कतिपय व्यक्तियों से उनका पत्र व्यवहार भी सम्पन्न हुआ। इसके उत्तर मे प्रो. जी वाईज ने जो पत्र महर्षि दयानन्दजी को लिखे जिनमें अनेक विषयो का उल्लेख किया गया है।

पत्रो मे महत्वपूर्ण विषय—

1. भारतीय दर्शन के प्रति अभिरुचि एवं योरोप मे प्रचार—

जर्मन निवासी प्रो जी वाईज ने अपने प्रथम पत्र मे भारतीय दर्शन के प्रति स्वाभिरुचि प्रकट की और सम्पूर्ण योरोप मे इसके प्रचार की महती आवश्यकता समझते थे। जैसा कि उन्होने अपने पत्र मे कहा है कि —जब से मैंने आपकी जिन्दगी और आपकी बनवाई हुई फिलसफी के हालात को पढ़ा और उस पर गौर किया तब से मेरे दिल मे आपकी तरह कुछ निश्चन के लिए उबाल उठ रहे थे। मेरी आत्मा उन मजबूत रस्सियो से जकड़ी हुई आपकी तरफ खिंची जा रही है जो कि इन्सानी आंखों मे नही दिखाई पड़ती लेकिन जो कि मेरे रोके से रुक भी नहीं सकती। — सत्यज्ञान की तलाश मे मै बतौर शिष्य के आपके पास जा रहा हू पचना हू।

— अपनी मिसाल से आत्मे वालो को अपना मौकिद बनाकर सच्चाई और अम्न और रूहानी प्रेम की एक नई सल्तनत कायम करने जो कि नस्ले इन्सानी ने पहले कभी न देखी और न ही जिस तक पहुंचना भी मुमकिन से जाना हो।

मैं अपने अन्दर एक वा-अम्ल जलती हुई आग का शोला पाता हू जो कि मुझे आपकी मिसाल से ज्यादा पवित्रता और ताकत देगा जिससे मैं हिन्दुस्तानी फिलासफी की रूहानी रोशनी को मगरिब मे फैला सकू। वहां आलम—अहादत और मिल्कियत के मुतल्लिक के बुरे असर को रोकने के लिए इल्मे वेदान्त की अशद जरूरत है। साथ ही अपनी मौजूदा नस्ल से (जो करीबन तमाम दुनिया मे फैली हुई बड़ी-बड़ी मजलिसी बबाओ यानी बदआशी, नास्तिकपन और निहिलिज्म मे गर्क हो रही है)।

आने नस्ल की तालीम व तरबियत के लिए भी उसकी जरूरत है, क्योकि एक झूठी तहजीब का वार्निश दुनिया पर चढ़ रहा है, जिससे इन्सान की फितरत तक पहुंचने मे सख्त हानि हो रही है, जिससे इन्सान को रूहानी फितरत गुम हो रही है, जिसके आप सच्चे पुत्र और हम आपके मुकाबले मे शीरख्वार बच्चे हैं।

2 जर्मनी मे शिल्प शिक्षा—

प्रो जी वाईज ने अपने द्वितीय एवं तृतीय पत्र मे उन विषयो का विवरण दिया है जिनका जमनी मे सम्यक विकास हो गया है और उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है। भारतीय नवयुवको को निम्नलिखित शिल्पो से सम्बन्धित प्रशिक्षण दिया जा सकता है। जैसे—राजनीतिक अर्थशास्त्र हाटहैण्ड बढ़ईगीरी (लकड़ी का काम) लोहे का काम रेग-साजी, घड़ी साजी इत्यादि।

द्वितीय पत्र मे ब्रिटिश राजनीतिक अर्थशास्त्र के विषय मे विस्तार से चर्चा की है।

3. घड़ी-साजी तथा उसके लाभ—

प्रो जी वाईज ने महर्षि को तृतीय पत्र मे घड़ी-साजी अर्थात् घड़ी बनाने के काम और उनके लाभ के सम्बन्ध मे विशेष रूप से उल्लेख किया है, इसके साथ ही भारत मे निर्मित होने वाली घड़ियो के विषय मे अपनी राय कई हेतुओ के साथ प्रकट करते हुए लिखा है कि—'हिन्दुस्तानी मण्डी में अपने मौजूदा मुकाबला कुनिन्दगान का अरमान कर सकते हैं क्योकि आपका चन्द मसलन, आपके मुल्क मे मजदूरी सस्ती है। अगर आपके हमवतन इस असूल पर कि 'बयाननवति बहतरीन पालीसी ऐ, सख्ती कारबन्द रहेंगे तो यकीनन आखिर मे वे खुशहाल और फतिह-उल-बाम होंगे और अपने मौजूदा मुकाबला कुनिन्दगान को बहुत जल्द मैदान से निकाल देंगे।'

4 जर्मनी के प्रत्येक विश्वविद्यालय मे संस्कृत का अध्ययन—

प्रो जी वाईज ने चतुर्थ पत्र मे संस्कृत भाषा के अध्ययन अध्यापन के विषय मे उल्लेख किया है। प्रो जी वाईज के लेखानुसार—

'जर्मन मे संस्कृत भाषा के अध्ययन अध्यापन मे विशेष अभिरुचि उस समय तक विद्यमान थी। इसी कारण से उस समय जर्मनो के प्रत्येक विश्वविद्यालय मे संस्कृत का अध्ययन होता है।

संस्कृत अध्ययन के स्थानो के सम्बन्ध मे जैसा कि पत्र मे लिखा है 'मारबग यूनिवर्सिटी के संस्कृत टीचर प्रोफेसर कर्डीलाण्ड ने मुझे लिखा है कि हर एक जर्मन यूनिवर्सिटी मे संस्कृत पढ़ाई जाती है—

—अल्बश वेबर (बर्लिन) पिस्कल (कील), जैकोबी (मिस्टर), हापर (फ्रबर्ग बाल्ड), मस्ट कुहु (नेपन) गिल्ड मर्स्टट और बावफ (डोरिन) मोबिल-उल-जिक सिर्फ नाम मात्र संस्कृत का प्रोफेसर है, ल्युमोड (डोरपेट स्टेज), हल्ल्न पोट (हेली), विण्डश (हेनबर्ग), गोल्ड स्मिद (स्ट्रेसबग), बेनफी (गोटेंजन), ओल्डोप (हेडबग), बानराव (अबेनमग), स्पीराल (ओलामबन) स्मबग (आमोना), फविग और रोस्टाम मे भी संस्कृत पढ़ाई जाती है।'

— आपको इससे मालूम होगा कि संस्कृत तमाम जर्मनी भर मे हर एक यूनिवर्सिटी मे पढ़ाई जाती है।

इसी पत्र मे रंगसाजी के काम के विषय मे उल्लेख करते हुए लिखा है कि रंगसाजी का काम मुनासिब और सिखाया जा सकता है और मुफीद साबित होगा। बीलेवेदन मे कई आला रंगसाज हैं। जिनमे से एक निहायत होशियार हैं, यानी उससे बात-चीत की थी। उसके ख्याल मे जो शख्स इस हुनर का सीखना चाहता है, उसके लिए एक छोटे से कारखाने मे इस काम को सीखना बेहतर होगा क्योकि वहां स्टीम के बजाय हाथ से ज्यादा काम करना पड़ता है। इसके बाद शागिर्द को असली काम के साथ कैमिस्ट्री का इल्म सीखना पड़ता है।

घड़ी साजी की चर्चा करते हुए वहाँ के घड़ीसाजो व अन्य कामो के विषय मे लिखा है कि मेरे घड़ीसाज ने मुझे बताया है कि उसने यह काम जिस आम तरीके से सीखा वह यह है कि उसने उस्ताद के पास तीन साल तक शागिर्दी की थी और वहां इस हुनर के मुतल्लिक हर और इल्म भी सीखा था। बाद में वह स्विटजरलैण्ड मे घड़ीसाजी के एक बड़े कारखाने मे दो साल तक काम करता रहा जो बाद मे सकमना मे घड़ीसाजी के एक स्कूल मे तालीम पाई। उसके ख्याल मे एक तालिमे इल्म के लिये यह हुनर सीखने का बेहतरीन तरीका है।

इस विधि से घड़ी साजी विद्या सीखने का विशेषता तथा लाभ है। उसके विषय मे अपनी राय का बयान करते हुए लिखा है कि 'इस तरीके से वह बढ़िया के तमाम पुर्जों को बनाने का काम सीख लेते हैं, समय कांटे छरियां वगैरह बनाना, नक्काशी और काम मशीन का भी काफी मौका है। हम अपने शागिर्दो को वे यहां आ जाय और कुछ अर्से मे जर्मन सीख लें, तो अच्छी तरह दाखिल कर सकते हैं। —हम हर तरह से करामत और इन्तजाम के मुतल्लिक आपकी और उनकी ख्वाहिशात पूरी करने को तैयार हैं।

(शेष अगले अंक मे पढ़िये।)

आर्यसमाज का भविष्य

—श्री सुरेशचन्द्रजी वेदालंकार, एम ए —

अपरिमित पूर्ण विश्व के इतिहास में आर्यसमाज का एक अपना अद्भुत स्थान है। इस भाव की व्याख्या करते हुए यदि मैं यह कहूँ कि धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों में भ्रमित विश्व को किसी ने दृष्टि शक्ति प्रदान की तो वह निर्विवाद आर्यसमाज है, तो यह अत्युक्ति न होगी। यदि मैं यह कहूँ ईसाई एवं मुसलमानों द्वारा लूटे जाते हुए हिन्दुत्व के कोष की यदि किसी ने रक्षा की और उसे समृद्ध करने का प्रयास किया तो वह आर्यसमाज है, तो इसमें असत्य की जरा गन्ध नहीं। यदि मैं यह कहूँ कि भारतवर्ष को स्वतन्त्रता के मूलमन्त्र का दाता और स्वतन्त्रता संग्राम में फिर चाहे वह हिंसात्मक हो या अहिंसात्मक सबसे आगे बढ़कर लड़ने वाला सैनिक आर्यसमाज है, तो यह एक ऐतिहासिक सत्य ही माना जायगा। परन्तु स्वराज्य प्राप्त होने के बाद आज हम अधिक शिथिल हो गये हैं। आज आर्यसमाज में गति हीनता सी आ रही है इसी कारण आज नवीन वर्ग या नवयुवक इसमें नहीं आ रहे हैं। यदि गम्भीरतापूर्वक हम आत्मनिरीक्षण और मनन करने को तत्पर होंगे तो यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि सं द वाल और कुछ परम्परा की रक्षा करने वाले बूढ़ों के बाद आने वाली पीढ़ी आर्य समाज का उत्सव करा सकती हैं, परन्तु आर्यसमाज की गतिशीलता एवं प्रवाह को जारी नहीं रख सकती हैं। यह स्पष्ट एवं अनुभवजन्य सत्य है। क्यों? यह प्रश्न विचारणीय है। और इस क्यों का उत्तर बाहर खोजने की अपेक्षा हमें अपने अन्तःकरण में खोजना होगा।

अपनी दशा का अनुमान हम आधुनिक समाज और देश में अपने महत्व को देखकर कर सकते हैं। हमारा क्या महत्व है इसके लिए आप सोचेंगे तो आपको पता चलेगा कि आर्यसमाज व्यक्ति को आधार बनाकर चलने वाली संस्था है। अर्थात् व्यक्तित्व के निर्माण द्वारा समाज का निर्माण इस रूप में आर्यसमाज करना चाहता है कि यदि सभी व्यक्ति अच्छे बन जायेंगे तो समाज अच्छा होगा और समाज अच्छा होगा तो राष्ट्र और मानवता को बल मिलेगा और इस प्रकार उसका 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सिद्धांत विश्व लागू हो सकेगा। परन्तु आज आर्यसमाज से व्यक्तित्व का निर्माण करने का कार्य लगभग समाप्त हो गया है। परिणाम यह है कि राष्ट्र ने आर्यसमाज को भुला दिया है।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज ने बहुत कुछ योगदान दिया है। स्त्री शिक्षा, बालकों की शिक्षा विद्यालयों का निर्माण आदि के द्वारा सरकारी स्तर पर उसने शिक्षा का प्रचार किया। परन्तु आज स्वतन्त्र भारत में शिक्षा पर विचार करने वालों को हम कोई अपना दृष्टिकोण नहीं दे सकते हैं। हमारे पास अपना दृष्टिकोण है भी तो नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलों का निर्माण कर इस युग में एक मौलिक शिक्षा-प्रणाली की स्थापना की थी और विश्व के शिक्षा विशेषज्ञ गुरुकुल में समय समय पर आते थे और उस पर विचार करते थे। लेकिन आज स्थिति काफी बदली हुई है। हम शिक्षा में स्वतन्त्र भावना को त्याग अपनी संस्थाओं का सरकारीकरण कर रहे हैं। आज आर्यसमाज के पास कोई भी ऐसा केन्द्र नहीं जहाँ आर्य समाज के वैदिक धर्म के मूल वेदों का उसी श्रद्धा और विश्वास के साथ अध्यापन होता हो। अतः इस दिशा में हमें सोचना है कि भविष्य में हमारी शिक्षा संस्थायें कैसी हों? हम कैसे आर्य विद्वान् उत्पन्न कर सकें।

दूसरी बात आर्यसमाज की प्रचार पद्धति की है। आर्य समाज के प्लेटफार्म से क्या कहा जा रहा है, यह समझना बड़ा कठिन कार्य है। एक व्यक्ति आता है वह अपने व्याख्यान में एक वेद मन्त्र पढ़ता है और उसकी व्याख्या में उस विषय से असंबंधित परन्तु सामयिक बातों का उल्लेख कर देता है। श्रोताओं का स्तर देखकर उसे यह कार्य करना पड़ता है। यह तो कुछ ठीक भी है पर सबसे अधिक महत्ता जिन भजनोपदेशकों को दी जाती है और जिन पर उत्सव की सफलता निर्भर होती है वे भजनोपदेश उस मंच से कितनी सत्य और असत्य घटनाओं द्वारा एक विचित्र प्रकार का मनोरंजन करते हैं जो कि हमीं के बीच आर्यसमाज के सिद्धांतों को उड़ा देता है। मुझे तो अनुभव हो रहा है कि आज के वृद्ध एवं आर्यसमाज के सिद्धांतों से परिचित उपदेशकों के न रहने के बाद आर्यसमाज के प्लेटफार्म मनोरंजन के साधनमात्र रह जायेंगे। यह भी एक सोचने की बात है।

तीसरी बात यह है कि आज आर्यसमाज का देश एवं समाज की किसी भी समिति एवं गठन में कोई पूछ नहीं है। क्योंकि आर्यसमाज को आधार बनाकर व्यक्ति आगे बढ़ते हैं और पुनः वे उसे छोड़कर राजनीति को आधार बना लेते हैं। हमारे पास ऐसा आकर्षण नहीं है कि हम उन्हें अपनी ओर रख सकें। परिणाम यह होता है कि उन्हें अपनी महत्ता बढ़ाने के लिए हमारे पास आने की अपेक्षा हमें आर्यसमाज की महत्ता बढ़ाने के लिए उनके आश्रित होना पड़ता है। हम अपने व्यक्तियों की उपेक्षा एवं उनकी अपेक्षा करते हैं। क्या इसके विपरीत भाव की आवृत्ति ही सकती है?

आर्यसमाज को अपने को सुदृढ़ करने के लिए नव-युवकों को प्रभावित करने के लिए कोई उपयुक्त कार्यक्रम सम्मुख रखना होगा। आर्यकुमार सभाओं की उपेक्षा का परिणाम आज हमें अनुभव हो रहा है। जब आर्य समाज के सत्संगों में सफेद बालों वाले और वृद्ध सज्जन दिखाई देते हैं। अतः मैं तो समझता हूँ कि इन संस्थाओं को पोषण देना चाहिए।

आर्यसमाज के सिद्धांत बुद्धिवादी हैं, सत्य हैं और उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे सभी कालों और सभी समयों पर सत्य हैं। परन्तु सत्य भी अनुपयुक्त व्यक्तियों के हाथ अपना प्रभाव खो देता है। ऐसी दशा में आज जब हम आर्यसमाज के भविष्य पर विचार कर रहे हैं तो हमें उपर्युक्त एवं उससे सम्बन्धित अन्य बातों पर विचार करना चाहिए। अर्थात् हम एक वैदिक धर्म के ज्ञान का केन्द्र बनायें। प्रचार पद्धति में परिवर्तन करें, अपने महत्व को स्थापित करने का प्रयत्न करें तथा आर्यवीर दल और आर्यकुमार सभाओं को बल दें। अन्यथा आर्यसमाज का भविष्य बहुत उज्ज्वल नहीं। युग बड़ी तेजी से बदल रहा है। यदि हम छूट गए तो बहुत पीछे रह जायेंगे। बस परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह हमें शक्ति और बल दें कि हम आगे बढ़ सकें।

पाठकों को सूचना—

गत एक माह से अजमेर शहर के प्राय. सभी प्रेस कर्मचारी हड़ताल पर हैं। फिर भी जैसे-तैसे, विलम्ब से ही सही, हम "आर्य पुनर्गठन" का प्रत्येक अंक पाठकों तक पहुंचा रहे हैं।

आशा है कि आप हमारी विवशता को समझ लेंगे।

— व्यवस्थापक

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 162

सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य .
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 3 शनिवार 15 अगस्त, 1987
अंक 12 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

भाद्रपद कृ 7 संवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

हिन्दू बनाम हिन्दू धर्म

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य —

(गतांक से आगे)

बिना सन्देह मैं हिन्दू इसलिए हूँ कि कि मेरा जन्म हिन्दू परिवार मे हुआ है। मुझे हिन्दू होने की खुशी है। किन्तु मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि रिलीजन के प्रचलित अर्थ मे हिन्दू कोई धर्म नहीं है अपितु जीवन का एक तरीका है। स्वय महात्मा गाँधी ने अपनी उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठ 7 पर यह लिखा है कि "हिन्दू धर्म केवल सतनामी हिन्दुओ का धर्म और मैं अपने आपको उसका अनुयायी मानते हुए भी उसकी अनेक बातो की उपेक्षा करता हूँ। किन्तु यदि मैं सनातन हिन्दू धर्म का अर्थ करू। मैं अपने आपको सनातनी हिन्दू इसलिए कहता हूं कि मैं वेद, उपनिषद पुराण तथा अन्य हिन्दू धर्मग्रन्थो मे विश्वास करता हूं और इसलिए अवतार और पुनर्जन्म को भी मानता हूं। अपने विशेष अर्थ मे वर्णाश्रम धर्म को मानता हूं अर्थात् उसके वैदिक अर्थ मे न कि उसके वर्तमान प्रचलित और विकृत अर्थ मे। मैं गो-रक्षा पर भी व्यापक अर्थ मे विश्वास करता हूं और मूर्तिपूजा मे अविश्वास नही करता।

सावरकर की परिभाषा.—

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और देशभक्त वीर सावरकर ने 'हिन्दुत्व' नामक पुस्तक मे इस बारे मे बड़े सुन्दर और मौलिक विचार व्यक्त किये है। हिन्दू और हिन्दू धर्म का भेद बताते हुए वे पूछते हैं कि हिन्दू कौन है? इसका सही अर्थ जानने के लिए हिन्दूइज्म या हिन्दू धर्म की व्याख्या करनी आवश्यक है। किन्तु अनेक इस प्रयत्न में असफल होकर निराशा अनुभव करते है और इस प्रकार अनेक समुदायो को या तो वे हिन्दू नही मानते या फिर उसके द्वारा हिन्दू धर्म के प्रति विरोध की भावना उत्पन्न करते हैं। इनमे सिख, जैन और देव समाजी ही नही हमारे देशप्रेमी और प्रगतिशील आर्यसमाजी भी हैं। सावरकर आगे लिखते हैं कि हिन्दू धर्म उन सब धार्मिक विश्वासो और भिन्न-भिन्न समुदायों के लिए लागू होना चाहिए या जो अपने का हिन्दू कहते है किन्तु साधारणत. यह उसी धर्म का वाचक है जिसके बहुसंख्यक हिन्दू ही अनुयायी है। किसी धर्म और जाति का नाम ऐसा होना चाहिए कि जो सबके लिए नही तो अधिकांश लोगो की समान विशेषताओ को प्रकट करता हो। ऐसा करना सुविधाजनक भी है किन्तु केवल सुविधाजनक होने के कारण हमे ऐसे किसी शब्द या परिभाषा को स्वीकार नही करना चाहिए जो हानिकारक हो और जिसके कारण गलतफहमी या भ्रम उत्पन्न होता हो। इस दृष्टि से हिन्दुओ का बहुमत जिन विशेषताओ के कारण प्राय एक समझा जाता है उनका आधार स्मृति, श्रुति या पुराण है। इसलिए उसे सनातन धर्म कहना अधिक उपयुक्त है, किन्तु बहुमत के इन हिन्दुओ के अतिरिक्त दूसरे हिन्दू भी हैं जो या तो पूर्ण रूप मे पुराणों और स्मृतियों और यहा तक की वेदो तक का नही मानते। इसलिए यदि हिन्दुओ के धर्म का अर्थ केवल बहुमत के धर्म से लिया जाये और इन्हे ही हिन्दू कहा जाय तो दूसरे उदार और प्रगतिशील हिन्दू इसको स्वीकार नही करेंगे और बहुमत के इस दावे को अनुचित मानेंगे। इसलिए जो हिन्दू अल्पमत मे हैं उनके धर्मों को भी स्वीकार नही करेंगे और बहुमत के इस दावे को अनुचित मानेंगे। इसलिए जो हिन्दू अल्पमत मे हैं उनके धर्मों को भी स्वीकार करके हमे उनका पृथक धार्मिक अस्तित्व स्वीकार करना होगा, अन्यथा केवल पौराणिक और कट्टर हिन्दुओ को ही हिन्दू माना जाय तो यह सुधारवादी हिन्दू व्यापक हिन्दुत्व की सीमा से पृथक समझे जाये गे।

इस प्रकार सावरकर जहाँ यह स्वीकार करते हैं कि बहुमत के हिन्दुओ के धर्म से अल्पमत वाले अनेक हिन्दुओ का धर्म पृथक् और भिन्न है वहाँ वे यह भी चेतावनी देते है कि "हिन्दू धर्म जो बहुमत के हिन्दुओ का धर्म है उसको अन्य सब हिन्दुओ पर थोपने का हमें गलत प्रयत्न नही करना चाहिए अन्यथा हिन्दुओ मे परस्पर कटुता उत्पन्न होगी। यदि हिन्दु धर्म समस्त हिन्दुओ के धर्म का द्योतक नही हो सकता तो हमे ऐसा आग्रह नही करना करना चाहिए और यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि बहुमत के हिन्दुओ के धर्म का नाम सनातन धर्म अर्थात श्रुति, स्मृति, पुराणोक्त धर्म है और बाकी के हिन्दुओ के अपने-अपने धर्म हैं जिन्हे सिख धर्म आर्य धर्म, जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म के नाम से सम्बोधित किया जाता है।"

लोकमान्य तिलक की परिभाषा

लोकमान्य तिलक न केवल हिन्दू धर्म के एक निष्ठावान अनुयायी ही थे अपितु वे हिन्दू धर्म शास्त्र और संस्कृत के भी विद्वान थे। न्यायमूर्ति गजेन्द्रगडकर ने हिन्दू धर्म की उनकी व्याख्या इस प्रकार उद्धृत की है—
प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु साधनानामनेकता।
उपास्यानामनियम एतद् धर्मस्य लक्षणम् ।।"

तिलक द्वारा रचित संस्कृत मे हिन्दू धर्म की इस परिभाषा के अनुसार वेदो के प्रति प्रामाणिक आदर भाव, उपासना की विभिन्नता तथा उपास्य देवो की अनेकता यह हिन्दू धर्म के लक्षण हैं।

प्रश्न यह है कि क्या आर्यसमाज इस परिभाषा के अनुसार हिन्दू धर्म मे आ सकता है? स्पष्ट है कि तिलक की इस परिभाषा और उसकी न्यायमूर्ति गजेन्द्रगडकर द्वारा की गई व्याख्या के अनुसार आर्यसमाज हिन्दू धर्म मे सम्मिलित नही किया जा सकता। स्वय सावरकर ने लोकमान्य तिलक की इस व्याख्या का विवेचन करते हुए 'हिन्दुत्व' के पृष्ठ 107 पर लिखा है कि 'तिलक की यह परिभाषा सनातन धर्म की व्याख्या है जो उन्होने चित्रमय जगत्, (सचित्र मराठी साप्ताहिक) मे अपने विद्वतापूर्ण लेख म की है। लोकमान्य तिलक ने उसमे स्वय स्वीकार किया है कि इस परिभाषा के अनुसार आर्य समाजी हिन्दू धर्म का अंग नही हो सकते यद्यपि वे राष्ट्रीय दृष्टि से भले

(शेष पृष्ठ 2 पर)

निदेशक : दत्तात्रेयआर्य प्रधान संपादक : रामसिंह संपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य फोन कार्या : 21010

स्वराज्य को सुराज्य बनायें

15 अगस्त 1947 ई को देश अंग्रेजो की पराधीनता से स्वतन्त्र हुआ। इस स्वाधीनता के लिए अनेक कुर्बानियां देनी पडी। अंग्रेजो की लाठिया-गोलिया खानी पडी, काले पानी की सजाये भुगतनी पडी, कई क्रांति वीर फासी पर लटक गये, लाखो लोग जेलो मे गये और यातनाए सही। आखिर बलिदान रंग लाया। देश स्वाधीन हुआ। कहा भी है, सर्वआत्मवश सुख, सर्वपरवश दुख" अर्थात सब प्रकार से अपने अधीन रहना ही सुख है, तथा सब प्रकार दूसरो के अधीन रहना ही दुख है। गोस्वामी तुलसीदास भी कह गये "पराधीन सपनेहू सुख नाहि' अर्थात गुलामी मे स्वप्न मे भी सुख प्राप्त नही होता। स्वराज्य तो हो गया पर अब इसे सुराज्य बनाना है।

सुराज्य से तात्पर्य है जहा सब प्रकार की व्यवस्थाये सम्यक् और समुचित हो। किसी का शोषण न हो कोई भूखा, नगा न रहे। सबको रोटी, कपडा और मकान उपलब्ध हो सके। देश सर्वतोमुखी विकास करते हुए उन्नति पथ पर अग्रसर हो जहा कोई बेरोजगार न हो, हर हाथ को काम हो। कल कारखाने, उद्योगधन्धे, यातायात, सदेशवाहन, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, व्यापार सब प्रोन्नत हो। सबसे बढकर समस्त देशवासी ईमानदार, कर्त्तव्यपरायण कर्मनिष्ठ, धार्मिक, आस्तिक नैतिक एव मानवीय मूल्यो के प्रति आस्थावान, चरित्रवान, देशभक्ति एव परोपकारी हो। सर्वजन हिताय लक्ष्य हो। राष्ट्र शक्तिशाली बने, विश्व मे प्रतिष्ठा हो। स्वार्थवाद भाषावाद, साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता, जातिवाद, क्षेत्रीयतावाद, कर्मभेद, जातिभेद, छुआछूत, गरीबी रिश्वतखोरी भ्रष्टाचार आदि सब बुराइयो से मुक्त हो। आतकवाद, नक्सलवाद अथवा उग्रवाद गुण्डागर्दी, चोरी डकैती नशाखोरी आदि न हो। जहाँ के सत्ताधारी शासक अपने आपको जनसेवक समझे। जिनमे सत्ता का मद न हो।

जब समस्त भारतवासी कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक गुजरात लेकर नागालैड तक एकत्व की अनुभूति करे, सब 'सगच्छध्व स सवदध्व, वो मनासि जानताम्'' "समानो मत्र समिति समानी,' के आदर्शो को धारण करते हुए "सर्वे भव तु सुखिन '' का लक्ष्य अपने सम्मुख रखें, जहा भारतीय सस्कृति, भारतीय परिवेश, भारतीय भाषा, वेशभूषा, खान-पान आचार विचार होग तभी हम कह सके गे कि अब स्वराज्य के साथ साथ सुराज्य भी आ गया है।

हमारा आदर्श "रामराज्य' है। रामराज्य की परिकल्पना ही सुराज्य है। "दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, रामराज काहू न व्यापा'। राजा अश्वपति बडे स्वाभिमान के साथ यह गौरवपूर्ण घोषणा करते थे कि "मेरे राज्य मे कोई चोर शराबी, कदाचारी तथा भ्रष्ट नही है।" ऐसा भारत के ही ऋषि दयानन्द का "आर्यावर्त्त, गाधीजी का रामराज्य तथा लाल-बाल और पाल के स्वप्नो का भारत होगा।

आओ हम सब मिलकर स्वाधीनता की चालीसवी वर्षगाठ पर यह दृढ सकल्प ग्रहण कर कि हम स्वराज्य को सुराज्य बनायेंगे। वद भी कहता है, यतेमहि स्वराज्ये अर्थात् हम सब मिलकर स्वराज्य को सुराज्य, सुदृढता और समृद्धि के लिए प्रयत्नशील हो।

भारत माता की जय हो।

— रासासिंह

दृढ़व्रती कर्मवीर पं. जियालाल जी

अनेक सघर्षों के बीच जीवन भर जिन्होने जनसाधारण की निस्वार्थ सेवा को और आर्यसमाज तथा उसकी सस्थाओ को तन-मन-धन और सर्वात्मना लगनसे सीचा उस अजमेरके सुप्रसिद्ध आर्य नेता कर्मवीर प जियालाल जी को हमारा शत-शत नमन। प्रत्येक वर्ष श्रावणी पर्व को उस कर्मवीर और धर्मवीर का जन्मदिवस आर्यसमाज अजमेर और उसके तत्वावधान मे सचालित शिक्षण सस्थाओ मे समारोहपूर्वक मनाया जाता है। आर्यसमाज अजमेर तथा आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर ने दयान द कॉलिज अजमेर जैसी विशाल महाविद्यालय के सस्थापक कर्मवीर प जियालाल जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण सस्थान (बी एड टीचर्स ट्रेनिग कॉलेज), जियालाल कन्या सैकण्डरी स्कूल, जियालाल कन्या प्राथमिक पाठशाला, जियालाल शिशु निकेतन की स्थापना की तथा 1964 मे "सेवा और संघर्ष" के नाम से उनका जीवनवृत्त भी प्रकाशित किया जो एक प्रेरणादायी आलेखन है

कर्मवीर प जियालाल जी महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति अन्य निष्ठावान, आदर्श सेवाभाव के अनुपम उदाहरण तथा धुन के पक्के थे। आततायियो एव समाजकटको से सघर्ष करने मे उन्हे आनन्द का अनुभव होता था। उनका मन्तव्य था —

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है।
मुर्दे दिल क्या खाक जिया करते है।।

अजमेर मे प्लेग के समय उनके द्वारा की गई अनुकरणीय सेवा, हैदराबाद के धर्मयुद्ध सत्याग्रह तथा पजाब हिन्दी रक्षा आदोलन मे सत्याग्रहियो की स्पेशल ट्रेने भिजवाना, सस्थाओ का सचालन, अनाथ एव निराश्रितो, अबला - विधवाओ, परित्यक्ताओ को देखभाल, आर्यसमाज के विशाल नगर कीर्तन, महोत्सव, हिन्दू मन्दिरो की रक्षा निर्भीकता तथा अटूट साहस, छूआछूत के निवारणार्थ विशाल प्रीतिभोजो का आयोजन आदि सब उनके अदम्य कर्त्तव्यनिष्ठ होने के प्रमाण है।

मजनू ही के दम से इस दहर की आबादी
एक उसके न होने से वीरान है वीराना।

— रासासिंह

(शेष पृष्ठ 1 का)

ही हिन्दु हो। यह परिभाषा यद्यपि अपने आप मे बडी अच्छी है किन्तु वह न हिन्दुत्व की परिभाषा है और न ही हिन्दू धर्म की। वह केवल सनातन धर्म अर्थात श्रुति, स्मृति, पुराणोक्त सम्प्रदाय की परिभाषा मात्र है।" लोकमान्य तिलक की इस परिभाषा के सम्बध मे ए वी कुलकर्णी द्वारा लिखी "तिलकाची गेली 8 वर्ष" नामक मराठी पुस्तक के पृष्ठ 220 के अनुसार स्वय तिलक कहते हैं कि 'मेरी इस परिभाषा का उद्देश्य यह है कि उसम हिन्दूधर्म की समस्त जातियों, वर्णों और सम्प्रदायो का समावेश किया जा सके तथा अन्य धर्मों को उससे पृथक् समझा जा सके। दूसरे शब्दो मे यह परिभाषा तर्कशास्त्र के अनुसार न अधिक सकीर्ण होनी चाहिये और न ही अधिक व्यापक।" इस्लाम और ईसाई धर्म से हिन्दू धर्म की भिन्नता दर्शाते हुए तिलक लिखते हैं कि "इन धर्मों के विपरीत हम यह मानते हैं कि ईश्वर के समय-समय पर अवतार प्रकट हुए हैं और आगे भी होंगे यद्यपि ईश्वर को हम एक मानते हैं किन्तु हम यह स्वीकार नही करते कि पृथ्वी पर उसका एक ही तथा अन्तिम अवतार हुआ है। जिस प्रकार उपासना के अनेक तरीके हैं उसी प्रकार उपास्य देवता भी अनेक हैं ऐसी हिन्दू धर्म की मान्यता है। अन्य धर्म के समान हिन्दुओ का कोई निश्चित देवता नही है। हम यह नहीं मानते कि केवल विष्णु या शिव की उपासना से ही मुक्ति हो सकती है। हिन्दू धर्म म शैव, वैष्णव, गणपत्य आदि अनेक मत हैं जो अपने-अपने देवताओं को श्रेष्ठ मानते हैं और उनकी उपासना के लिए ऐसी मान्यता जरूरी है।"

(शेष पृष्ठ 5 पर)

आर्यसमाज का आधार-भूत दृष्टिकोण

— स्व श्री प गगाप्रसादजी उपाध्याय, एम ए —

[आर्यसमाज के नियम हमारे सब कार्यों का आधार होने चाहिए। आर्यसमाज के नियम आर्यसमाज को विश्ववादी सस्था घोषित कर रहे हैं। पूज्य उपाध्याय जी ने नियमो की कसौटी पर अपने दृष्टिकोण और कार्यों को परखने की प्रेरणा दी है।] -सम्पादक

कोई समाज अपने विशेष लक्ष्य के बिना न बन सकता है न चल सकता है। कुछ सस्थाये केवल आन्दोलन के आधार पर चलती हैं। परन्तु वह कोल्हू के बैल के समान विशेष लक्ष्य न होने के कारण कुछ बना नहीं पाती। आर्यसमाज का लक्ष्य आर्य समाज के दस नियमो मे वर्णित है। उसके समझने की आवश्यकता है।

इन नियमो मे तीन बातें विशिष्ट हैं, जो तीनो अलग अलग और मिलकर आर्यसमाज तथा अन्य सस्थाओ मे भेद करती हैं, पहिले दो नियम ईश्वरवाद से सम्बन्ध रखते है। ससार मे प्राय अधिकाश मनुष्य ईश्वरवादी हैं और ईश्वरवाद के पचासो भेद हैं, परन्तु आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द जी का ईश्वर-वाद अपने ढग का निराला है, हर मनुष्य इस निरालेपन को नहीं समझता है। दूसरे ईश्वरवादी जीव और सृष्टि को ईश्वर के लिए ही समझते हैं, ईश्वर के अतिरिक्त इनका अन्य प्रयोजन नही मानते, आर्यसमाज की दृष्टि मे सृष्टि का प्रयोजन जीव है ईश्वर नही, यह बडा भारी भेद है। जिसकी यदि उपेक्षा करदी जाय तो हम भी अन्य मताव-लम्बियों के समान हो जायेंगे।

दूसरी चीज वेद है, तो सभी सनातन धर्मी अपने को वेद का अनुयायी कहते चले आये। परन्तु आर्यसमाज का तीसरा नियम वेद के विषय मे सर्वथा भिन्न दृष्टिकोण रखता है। श्री शकराचार्य जी वेदानु-यायी थे परन्तु उन्होने या उनके शिष्यो ने कभी यह आवश्यक नही समझा कि ब्राह्मणेतर भारतीयो या विदेशियो मे वेद का प्रचार किया जाय, यह निरालापन है स्वामी दयानन्द के दृष्टिकोण का। आर्य-समाज के शेष सात नियमों मे एक तीसरी विशेषता यह है कि आर्य-समाज न भारतीय सस्था है, न हिन्दू सस्था न ब्राह्मण सस्था, यह सार्व-जनिक एव सार्वदेशिक सस्था, काले पीले सफेद गेहुँवे, चीनी, जापानी हिन्दू, हब्शी सभी मनुष्यो की सस्था है। जो आर्यसमाजी इस दृष्टिकोण को नही समझता वह आर्यसमाज को उन्नतिशील नही बना सकता। प्राय आर्यसमाजी अपनी प्रेरणाओ को सीधा आर्यसमाज के नियमो से न लेकर हिन्दू परम्पराओ से लेता है। उसका मस्तिक उन्ही परम्पराओ से बना है। अत आर्यसमाज की गाडी कीचड मे फसी रहती है जिसमे सनातन धर्म की अनेक गाडिया फसी हुई हैं।

आर्यसमाज के नियम आर्यसमाज का मुख्य लक्ष्य है। उसी कसौटी से अन्य सब मन्तव्यो को सोचना होगा। कसौटी से सोने को परखते हैं, सोने से कसौटी को नही जब आर्य समाज के सिद्धान्तो के लिए कसौटी मिल गई तो जहा कही चाहे किसी पुस्तक मे क्यो न हो कोई ऐसी बात मिले जो इस कसौटी पर ठीक न उतरती हो तो उसे त्यागना ही पडेगा। स्वामी दयानन्द जी ने इसी दृष्टि से आर्यसमाज के नियमो के भीतर न कही अपना नाम डाला न अपनी पुस्तको का। इस विषय मे आधुनिक आचार्यों मे ऋषि दयानन्द का नाम निराला है, सब को अपने नाम का प्रलोभन है, महात्मा बुद्ध भी अपने शिष्यो को कहते हैं कि बुद्ध की शरण आओ, गीता मे श्रीकृष्ण जी भी इसी बात पर बल देते हैं मद्‌याजी भव" गीता, लेकिन ऋषि दयानन्द तो कही भी इस प्रकार का दूरस्थ सकेत भी नही करते हैं। यदि आर्यसमाजी अपनी श्रद्धा के आवेश मे इस प्रकार की कोई प्रवृत्ति उत्पन्न करेंगे तो वह न केवल स्वामी दयानन्द जी के मन्तव्यो के विरुद्ध होगा अपितु इससे आर्य-समाज की उन्नति मे बाधा पडेगी।

स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्त मे 'स्वमन्तव्यामन्-तव्य प्रकाश" के नाम से एक परिशिष्ट दिया है जिसको प्राय आर्यसमाज का सिद्धान्त समझा जाता है। परन्तु यह भूल है, यदि ऋषि को ऐसा अभीष्ट होता तो वह मन्तव्य अमन्तव्य के साथ 'स्व शब्द का प्रयोग न करते। यहा भी स्वामी दयानन्द जी ने एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति का दिग्दर्शन किया है वे यह चाहते हैं कि लोग अपने सिद्धान्तो की खोज मे ऋषि दयानन्द की अन्धी पैरवी करें। 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश" है क्या? वस्तुत. यह है एक कुन्जी ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो को समझने के लिए या यो समझिये कि वह कोष है उन शब्दो का जिनका स्वामी दयानन्द जी ने अपने अन्यान्य ग्रन्थो मे प्रयोग किया है। एक शब्द के अनेक अर्थ हो सकते है। कही पारिभाषिक कही लाक्षणिक कही धात्वर्थ, परन्तु शब्दो का अर्थ तो प्रकरण से लेना होगा। इसलिए स्वामी जी ने अपने ग्रन्थो की कुन्जी 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश" मे दे दी है। सम्भव है कही उससे विपरीत

(शेष पृष्ठ 5 पर)

स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष—

सूरज तो उग आया लेकिन

(ले - लाखनसिंह भदौरिया "सौमित्र")

— ६*३ —

सूरज तो उग आया लेकिन, किरणो पर प्रतिबन्ध लगे है ।।

सूरज के उगने की खुशियाँ, किसको नही सुभ बतलाये ?
पर उगने के सदेशो से, कोई कब तक मन बहलाय ?
वचनो से मिलते आश्वासन, सपनो पर प्रतिबन्ध लगे हैं।
सूरज तो उग आया लेकिन, किरणो पर प्रतिबन्ध लगे है ।।

अन्तरिक्ष मे उलझी किरणें अभी धरित्री पर तम सोया,
अभी टटोल रहा पथ जन-जन, अन्धियारे मे खोया-खोया,
चादी का होता अभिनन्दन, रत्नो पर प्रतिबन्ध लगे हैं।
सूरज तो उग आया लेकिन, किरणो पर प्रतिबन्ध लगे हैं ।।

दानी ने सब कुछ दे डाला, याचक की अजली रीति है!
हमको ऐसी मुक्ति मिली है, प्राणो पर मुश्किल बीती है।
कलियो के अधरो पर क्रन्दन, सुमनो पर प्रतिबन्ध लगे हैं।
सूरज तो उग आया लेकिन, किरणो पर प्रतिबन्ध लगे है ।।

मुक्ति स्वार्थ कारा मे बदि, हुआ न सुख महसूस मुक्ति का,
दिल्ली की गलियो से आगे, निकला, नही जुलुस मुक्ति का,
चलने को मिल रहा निमन्त्रण, चरणो पर प्रतिबन्ध लगे हैं।
सूरज तो उग आया लेकिन, किरणो पर प्रतिबन्ध लगे ।।

भागीरथ के भाग जगे हैं, भागीरथी स्वय उमडी है।
सगर-सुतो की राख अभागिन, दो बूदो को तरस रही है।
जन्हु व-ऋषी कर रहे आचमन तृषितो पर प्रतिबन्ध लगे हैं।
सूरज तो उग आया लेकिन, किरणो पर प्रतिबन्ध लगे हैं ।।

प्रो. जी. वाईज के पत्र महर्षि के नाम

— डा. कृष्णपाल सिंह —

(बराक से आगे)

प्राकृतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान के समन्वय की जिज्ञासा—

यद्यपि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रो जी वाइज को एक पत्र प्रेषित किया जिममे उन्होने लिखा कि "कमेटी और कई फाजिल अशखास की यह राय है कि नोजवान आर्यों को यूरोप मे मुफीद सनत व हिरफत सीखने के लिए भेजना जरूरी नही है तथापि प्रो वाइज ने उन्हे अपने विचारो से अवगत कराते हुए लिखा कि " जो मेरा ख्याल था कि वह यूरोप या जर्मनी से सीखना या हासिल करना चाहते हैं तो यह बिल्कुल दुरहत है कि उन्हे अपनी मदद आप करनी चाहिए किन्तु कई बातें ऐसी होगी तो हमारे पास आय की निस्बत बहतर और जो आपके लडके हमारे यहा आकर उनकी माहयत मालूम करके उनके बनाने का तरीका सीखकर खुब बना सकेंगे । इस मकसद के लिए जहा तक हमारी ताकत म है, हम उनकी मदद करने के लिए तैयार हैं और इसके मुआवजे म हम आप से या आपके लडको से वे खूबिया सीखने को तैयार हैं जो उन्ह बवजह आर्यन फिलासफी और आपकी तालीम के हासिल है और आप से और हिन्दुस्तान के दीगर अक्लमन्द असहाब से जिनके पास इसानी और खुदाई राज का हमारे मोजूदा साइस दानो और फिलासफी की निस्बत बहतर तौर पर जाहिर करने और समझने की कुजी है तालीम हासिल करन के लिये तैयार है ।

आगे वाइज ने पत्र मे स्वदेशस्थ प्राकृतिक विज्ञान अर्थात भौतिक विज्ञान की उन्नति से अवगत कराया तथा आध्यात्मिक ज्ञान की जो अलौकिक उन्नति हिन्दुस्तान मे है उसकी उपलब्धि जर्मन देशस्थ नवयुवक एव वैज्ञानिकों मे हो ऐसा परस्पर एक दूसरे क लिए व्यवस्था बनाने का प्रयत्न करना चाहिये जैसा कि पत्र मे स्वगत विचारो को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है कि 'गोया कि इस हिदुस्तान और रूहानी खजाने का बाहर तबादला हो जायेगा और दोनो को आखिर-उल-अमर इससे फायदा होगा ।

जर्मन निवासह व्यक्ति भारतीय आर्यों को किसी प्रकार से अलग नही मानते हैं बल्कि अपने आप को पुरातन आर्यों का वशज ही स्वीकार करते हैं । जैसा कि पत्र की निम्न पक्तियो से सुस्पष्ट होता है—' जर्मनी मे मरे दोस्त और मै आपको गैर नही समझते, बल्कि हम आपके हकीकीचचाजाद भाई है, न सिर्फ मास खून के रिश्ते से बल्कि रूहानी तौर पर भी ।"

नेचुरल हिस्ट्री के यूरोपियन प्रोफेसरों का विचार—

प्रो वाईज ने प्राकृतिक इतिहास के यूरोपियन प्रोफेसरो के विचारो से अवगत कराते हुए महर्षि को लिखा कि—"नेचरल हिस्ट्री के यूरोपियन प्रोफेसरो का ख्याल है और व इसे वे फायदा साबित करने की कोशिश करते हैं कि इसान बालो वाले दरिन्दो की जिनकी दुम भी थी, औलाद है । —दर हकीकत बहुत आदमी बन्दर ही हैं, सिवाय इसके कि उनके बल और दुम नही है । ये लोग अपने लिए आप काम नही और न सोचते हैं,बल्कि बन्दरो की तरह दरखद पर बैठे हुए दीगर बन्दरो की नकल करने पर ही इक्तिफा करते हैं ।"

आगे उन्होने लिखा है कि —' मैं निहायत रहम भरे हुए दिल के साथइस बात को तशलीम करता हूं क्या ही अच्छा होता अगर थोडा वह आलाफलसफा और ज्ञान बनी नो-ए-इसान को हासिल होता को जो कदीम जमाने मे हिन्दुस्तान मे पाया था और उम्मीद है अब भी वहा चन्द अशखास ने जिनके पास इस खजाने की किलीद है । इसे सभाल कर रखा होगा ।"

कम व्यय के लिए विचार—

प्रो वाइज ने लिखा कि हिन्दुस्तानी नव युवको कम खर्च पर कलाकोशल का प्रशिक्षण देने के लिए हम तैयार हैं जैसा कि उन्होने लिखा है कि—

"अगर ऐसा ही मामला है तो मैं आर्यों के लिए अपनी शरायत-ए-खर्चा को उनकी हालत के मुताबिक कम करने को तैयार हू । ताकि वे लडके भी हमारे पास आ सकें जिनके वाल्देन अमीरो जितना रुपया अदा नही कर सकते । —हमसे जो कुछ सकेगा, हम आर्यों को अपने यहा लेने के लिए और मदद करेगे क्योकि हमे इससे रूहानी फायदा हासिल होगा और हमारी ख्याल है कि हमारे अपने नोजवान लडके उनके आला अखलाक और आचरणो से फायदा उठायेगे और वे हमारे लडको के लिए एक काबिल-ए-तकलीद मिसाल होगे । "

आगे लिखा है कि 'मैं उस दिन की प्रतीक्षा करता हू जबकि आर्यो के आला आचरणों और पवित्र मिसाल से हमारे जर्मन नोजवान भी उस आला खुबी से हासिल करेंगे जो कि नोजवानो के लिए निहायत बेशबहा है । —इस लिए आप से प्रार्थना करता हूं कि आप कमेटी की परवाह न करें। कसरत-ए-राय आम तौर पर सही नतयज पर नही पहूँचा करती, अगरचे अकेले, अकेले हर एक शक्स कितना ही होशियार और मुयल्लत क्यो न हो । हो सकता है कमेटी आखिर एक दिन अपने मौजूदा ख्यालात को तबदील कर दे ।

इसलिए आप अपने तुलबा को मेरे पास भेजने में ताम्मुल न करें। हम उनको उनकी बराबत पर ही लेने को तैयार है ।"

महर्षि दयानन्द की भारतीय नवयुवकों को कला कौशल के प्रशिक्षणार्थ जर्मन भेजने की नीति असफल क्यों रही?

जैसा कि स्वामी जी के पत्रो और जर्मन के प्रो जी वाइज के पत्रो के अध्ययन से यह साफ जाहिर होता है कि महर्षि भारतीय नवयुवको को जर्मनी मे कलाकौशल की शिक्षा पाने के लिए भेजना चाहते थे ताकि स्वदेश कलाकौशल तथा आर्थिक स्थिति में सुदृढ हो सके और देश की चहुँमुखी उन्नति हो सके । उधर जर्मनी के विद्वानो भारतीय नवयुवको से भारतीय फिलासफी तथा अध्यात्मिक विज्ञान को प्राप्त करके पारलौकिक अभ्युदय प्राप्त करने की प्रबल जिज्ञासा थी । भारतीय नवयुवकों के विदेश जाने मे कम से कम खर्चे की व्यवस्था भी प्रो जी. वाइज ने की और कमेटी के निर्णय को उचित न मानकर उन्होने महर्षि से प्रार्थना की कि आप अवश्य ही नौजवानो को हमारे यहाँ भेज देंवे हम सम्यक व्यवस्था करेगे ।

उपर्युक्त सम्पूर्ण पत्रीय विचार बनकर ही रह गये और इन विचारो पर कोई यथार्थ योजना नहीं बन सकी, इसके कई कारण हो सकत हैं । प युधिष्ठिर मीमासक जी ने एक विशिष्ट तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया है जिसके कारण महर्षि अपनी योजना को मूर्तरूप नही दे सके । महर्षि का हृदय सरल स्वभाव का होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति पर विश्वास कर लेते थे जैसे मुखीबख्तावरसिह, मुशी इन्द्रमणि अनेक व्यक्तियो पर विश्वास किया और उन्होने धन के लोभवश महर्षि के साथ विश्वासघात किया और विरोध भी किया ।

प्रकृत प्रकरण मे प. युधिष्ठर जी का विचार है कि प्रो.जी वाइज के आवेदन के प्रथम उद्धरण मे जिस कमेटी और विशिष्ट व्यक्तियो की सम्मति का सकेत किया है। उन मे एक विशिष्ट व्यक्ति लाला मूलराज

(शेष पृष्ठ 5 पर)

शान्ति स्थापना हेतु युद्ध आवश्यक

— डॉ देव शर्मा वेदालंकार —

वृष्टि से लेकर आज तक वेद मानव जीवन के लिये सतत् प्रेरणा स्रोत रहा है जब कभी मानव पतन के गर्त की ओर जाने लगता है तब वेद ही उसके उत्थान का मार्ग प्रशस्त करता है। यह सकल चराचर जगत् एक युद्ध के रूप के दृष्टिगत होता है जहा मनुष्य को कदम कदम मे सघर्षों से जूझना पडता है। चतुर्दिक् विघ्नबाधायें एव आन्तरिक व बाह्य शत्रु मनुष्य को निगीर्ण करने के लिये आतुर दिखाई देते हैं। जहा एक ओर काम क्रोध मद लोभ मोह तथा मत्सर-इन षड्रिपुओ की बलवती पैशाची सेना मन पर आक्रमण कर उसे विजित करना चाहती है वही दूसरी नवनवीन व्याधियाँ शरीर को जर्जरित करने का उपक्रम कर रही हैं। कही अनावृष्टि है तो कही अतिवृष्टि। जैसे कोई नदी पहाडो की प्रचण्ड शिलाओ को विदीर्ण करती हुई अपने लक्ष्य की ओर बढती जाती है उसी भाति मनुष्य को भी सर्वविध बाधाओ को ध्वस्त करते हुये अन्त बाह्य शत्रुओ को परास्त करते हुये जीवन के उत्तुग शिखर की ओर बढना चाहिये। मनुष्य को कभी भी आने वाले सघर्षों से त्रस्त होकर कर्तव्यच्युत नही होना चाहिए।

वेद भगवान् का आदेश है कि मनुष्य ! तू अमरपुत्र है अत कभी भी निराश मत हो, निरन्तर आगे बढता जा आशा ही का दीप जलाये जा, हमेशा याद रख-"नहि त्वा कश्चन प्रति" इस भूमण्डल मे कोई ऐसा नही जो तेरी बराबरी कर सके। अतः तेरा प्रयत्न हो कि भूमण्डल मे आर्यो का आधिपत्य हो। कभी भी राक्षसो के अत्याचार को सहन न कर "उद्वृह रक्ष सहमूलमिन्द्र" हे वीर ? तू राक्षसो को जड से उखाड फेंक।।

कर्मवाद वेद का विश्रुत सिद्धात है अकर्मण्य व भाग्यवादी व्यक्ति को वेद मानव कोटि में ही नही मानता कर्महीन भक्ति वाद एव भाग्यवाद न ही भारत के उत्कर्ष को रसातल तक पहुँचाया है अत आज आवश्यकता है वेद के इस सन्देश की- "नहि मे अक्षिपच्चना च्छान्त्सु पञ्चकृष्टय कुवित् सोमस्यापामिति" अर्थात धरती भर के सब मनुष्य मेरे अक्षिपात तक को भी नही रोक सकते क्योंकि मैंने सोमरस-वीररस या परमात्मा के भक्तिरस का यथेच्छ पान कर लिया है।

भारत देश मे अनकेश धर्माचार्यों ने भक्ति और अहिंसा पर बहुत बल है परन्तु उन्होने अहिंसा के जिस भव्य स्वरूप को प्रस्तुत किया था, उसे भूलाकर उससे सवथा भिन्न भक्ति भावना के स्थान पर कर्महीन निर्जीव भक्ति तथा अहिंसा के स्थान पर कायरता फैला दी। राष्ट्र कवि दिनकर ने भी तो यही मान्यता प्रस्तुत की थी "क्षमा सोभती उस भुजग को, जिसके पास गरल हो" अहिंसा कायरो का नही शूरमाओ शस्त्र होता है। वैदिक वीर तो उद्घोष करता है। "कृत मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित" मेरे दाहिने हाथ मे तो कर्म है और बाये हाथ मे विजय एव जीवन की सफलता।

आज ससार मे प्रत्येक व्यक्ति युद्ध की विभीषिका से बचकर शाति का अमृत पान करना चाहता है फिर भी युद्धो की सख्या उत्तरोत्तर बढती दिखाई देती है। इस सन्दर्भ मे यही कहा जा सकता है कि ये युद्ध तब तक समाप्त नही किया जाता। आन्तरिक युद्ध हो या बाह्य इन युद्धो का एक मात्र कारण है-आसोरी वृत्ति। इन आसुरीवृत्ति वाले राक्षसो का सहार करने के लिये क्या युद्ध आवश्यक नही ? जिस दिन भूमण्डल मे आसुरी वृत्ति नष्ट हो जायेगी, युद्ध समाप्त हो जायेगा और युद्ध समाप्त हो जायेगा तो शान्ति हो जायेगी। अत हम इसे इस रूप मे भी कह सकते हैं कि शान्ति का मूल युद्ध है। इसी युद्ध की निरन्तरता का उदघोष सामवेद आरण्यक काण्ड के द्वितीय दशति के चतुथ मन्त्र एव अथर्ववेद के पचम काण्ड के दुन्दुभि सूक्त मे दृष्टि गोचर होता है। वेद का सन्देश है "विरक्षो विमृधो नहि वियत्रस्य हनूरुज। विमन्यु मिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासत" अर्थात् हे वीर तू राक्षसा का सहार कर, हिसको को कुचल दे, दुष्टो की दाढ तोड दे और तुझे जो दास बनाना चाहे उस वैरी के क्रोध को चूर-चूर कर दे।

वीर पुरुष कहता है यदि मेरा शत्रु पृथ्वी से भागकर अन्तरिक्ष मे चला जाये तो "अन्तरिक्षान् त निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि अर्थात् जो हमसे शत्रुता करता है उसे अन्तरिक्ष से भी निकाल दूगा।

जैसे कि वीर हनुमान को प्रारम्भ मे अपनी अमित शक्ति का बोध नही था बाद मे नील जामवन्त ने उन्हे शक्ति का परिचय कराया था उसी भाति मनुष्य भी अपनी अपार शक्ति को नही पहचान पाता उस समय वेद ही मनुष्य को सोते से जगाकर कहता है कि तेरे अन्दर असीम शक्ति छिपी है, उसे तू पहचान और आगे बढ। उस शक्ति को पहचान कर वह शूरवीर कहता है "अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धन न मृत्यवे वतस्थे कदाचन" अर्थात् मैं इन्द्र हूं मेरे समक्ष साक्षात् मृत्यु भी नही टिक सकती।

इस प्रकार सक्षेप मे हम कह सकते हैं कि वेद मे पदे पदे सघर्षों से मुकाबला करने के लिये प्रेरणादायी भावनायें निहित हैं शान्ति व अहिंसा इसका नाम नही कि आततायी अत्याचार कर और हम कायरो की भाति सहन करते रहे हैं। दुष्टा का दमन करना ही अहिंसा है। भगवान् कृष्ण ने जन्म से मृत्यु पर्यन्त दुष्टो का सहार किया एव सत्पुरुषो क द्वारा युद्ध कराया लेकिन उन्ह युद्ध का प्रवतक नही माना जा सकता उन्होने तो पाण्डवो की सहायता से दुष्टो का सहार कर सच्ची शाति स्थापित की थी अत सच्चे अर्थो म शाँतिदूत थे। हम लोगो का भी वैदिक भावना के स्वरूप को समझते हुये आदिकाल से चले आ रहे देवासुर सग्राम से बचन का प्रयत्न नही करना चाहिये प्रत्युत सच्ची शाति के निमित्त युद्ध का आह्वान करना चाहिये और हमारा आदर्श वाक्य गीता का यह वाक्य होना चाहिय-

परित्राणाय साधूना विनाशाय
च दुष्कृताम् ।
धर्मसस्थानार्थाय सभवामि
युगे युगे ।।

श्रावणीपर्व व जियालाल जयन्ती मनाई

अजमेर 10 अगस्त (कास) आयसमाज के तत्वावधान मे कल आर्यसमाज मदिर म प, जियालाल जयति एव श्रावणी उपाकम पव आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष नाथूसिह तँवर ने की।

इस अवसर पर आयसमाज के प्रधान दत्तात्रेय आय ने कर्मवीर प जियालालजी के प्रेरणादाई जीवन पर प्रकाश डाला तथा प्रो बुद्धिप्रकाश आय, डा कृष्णपालसिह व प्रो देव शर्मा आदि ने श्रावणी की महत्ता पर प्रकाश डाला।

विभिन्न विद्यालयो के बालक—बालिकाओ तथा सर्वश्री रामचन्द्र आय अनन्तराव व स्वामी केवलानन्द जी के भजन आदि हुए। अत मे आर्यसमाज के मन्त्री रासासिह ने आभार व्यक्त किया।

डाक पंजीयन सं. RJ/AJ-169

पत्र बोलते हैं ...

ऋषि दयानन्द और हिन्दुत्व

30 जुलाई के आर्य पुनर्गठन मे श्री शरर के विचार उपयुक्त विषय पर पढ़े। सामान्यतया उनके तथा स्वामी सत्यप्रकाश जी के विचारो मे मोटे तौर पर कोई विशेष अन्तर दिखाई नही पड़ा। किन्तु हमे इतना स्मरण रखना होगा कि हिन्दू काल में हमारे धर्म और सांस्कृतिक वैभव का जो सर्वतोभावेन ह्रास हुआ था उसका मूल कारण भी स्वामी जी ने आर्यत्व से हटने तथा हिन्दुवादी पाखण्डो, अन्धविश्वासो तथा रूढिवाद से अपने को बांधे रखने से ही माना है। यो इस तथाकथित हिन्दू के स्वाभिमान को जगाकर उसके मृतप्राय प्राणो मे जीवनशक्ति का संचार करने का अनेकश प्रयास शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह आदि महापुरुषो ने किया कि हिन्दू हिन्दुत्व के साथ हमारा हताशा, निराशा हमारा पराजय बोध तथा दासत्व मूलक प्रवृत्तिया इतनी अधिक जुड़ गई हैं कि उनके आधार पर हमे न तो कोई प्रेरणा ही मिल सकती है और न भारतीय समाज को ही पुन जगाया जा सकता है। अत हमे स्वामी दयानन्द के स्वर मे स्वर मिला कर आर्यत्व को पुन प्रतिष्ठापित करने का ही प्रयत्न करना होगा। यदि हमने हिन्दुत्व का तनिक भी दामन पकड़ा तो सावरकर वाद गोलवलकरवाद और विश्व हिन्दू परिषद का अन्धानुकरण हमारे गले पड़ जायगी। अभी तो इतना ही।

—डा भवानीलाल भारतीय

महापुरुषों पर कीचड़ न फेंके

लगता है डा स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी विवेकानन्द को अच्छी तरह से नही पढ़ा है और किसी एक लेख मे त्रुटिया ढूढने लगे हुए हैं।

स्वामी विवेकानन्द को हिन्दू होने मे महान गर्व था। उन्होने कहा था—भारत ही संसार का धार्मिक गुरु है और ईसायत भारत के कुछ थोड़े से ही विचारों पर आधारित है।

ऐसे विचारो वाला महापुरुष किसी अन्य धर्म का पोषक हो सकता है।

महापुरुषो को यदि हम सम्मान नही दे सकते तो उन पर कीचड़ तो न फेंकें।

—वेदप्रकाश कथूरिया
F 49, कीर्तिनगर
दिल्ली-15

संसार की आंखें खोलने वाला लेख

आर्यपुनर्गठन पत्र लघु आकार से निकलता है परन्तु वह नवीन ज्योति देता है। श्री व र्मा साहब अन्वेषणपूर्ण सामयिकता के लेख कमाल के होते हैं साथही अन्य विद्वानो को भी। हाल ही में अंक 30 7 87 के अंक मे डा स्वामी श्री सत्यप्रकाशजी का लेख श्री स्वामी विवेकानन्दजी के वे निम्न विचारो का जो चित्रण किया है वह संसार की आंखें खोलने वाली यथार्थप्रकाश है धन्यवाद ...

— आनन्द सरस्वती
स्वतन्त्रता सेनानी जयपुर

समाजों पर अनधिकृत कब्जों की सूचना दें

देश की अनेक समाजों पर अनार्यों व असामाजिक तत्वो ने अनधिकृत रूप से कब्जे किए हुए हैं। आर्य समाज अजमेर ऐसी समाजो की जानकारी प्राप्त करना चाहता है।

अन्य सज्जनो से निवेदन है कि उक्त समाजो की सूचना विवरण सहित हमें भेजने का कष्ट करें।

—मंत्री

(शेष पृष्ठ 3 का)

मिले या सत्तात्मक हो या प्रभाव से अन्यथा हो गया हो उसका निर्णय इसी कुन्जी से होना चाहिए। स्वमन्तव्यामन्तव्य का यही मूल्य है। इसको आर्यसमाज के नियमो से उतार कर दूसरी श्रेणी में रखना होगा।

स्वमन्तव्यामन्तव्य से नीचे और उनकी अपेक्षा गौण ऋषि के अन्य समस्त ग्रन्थ हैं। जहा उनका आशय ऊपर की दो कसौटियो पर न कसे वहा उसकी मान्यता उतनी ही कम हो जावेगी। स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तो का समन्वय इसी प्रकार से हो सकता है। आर्यसमाजी आज यह भूल करता है वह इन कसौटियो मे भेद नही कर सकता है उसके लिए आर्यसमाज के नियम, स्वमन्तव्यामन्तव्य ऋषि के अन्य ग्रन्थ ऋषि के ग्रन्थो पर व्याख्यान ऋषि के विषय मे सुनी सुनायी गाथाये ऋषि के व्याख्यानो को सुना सुना कर उनके ऊपर बनाई हुई पुस्तके सब समकक्ष समझी जाती हैं यह एक समस्या है जिसकी ओर हम विशेष ध्यान देना चाहते हैं।

इस प्रकार आर्यसमाज के (१) ईश्वर जीव प्रकृति सम्बन्धी दृष्टिकोण (2) वेद के सार्वजनीन अध्ययन सार्वदेशिक प्रचार की नीति (3) आर्यसमाज का सार्वदेशिक स्वरूप ये ऐसी बातें हैं जिनको प्रत्येक आर्य समाजी को अपनी दृष्टि मे हर समय रखनी चाहिए। महर्षि दयानन्द का पथ प्रदर्शन हमे इस ओर सफलता पूर्वक बढने की शक्ति प्रदान करता रहेगा।

(शेष पृष्ठ 4 का)

एम ए थे। कला कौशल सिखाने के सम्बन्ध में जर्मनी से जितने पत्र भी आये थे, उन्हे ऋषि दयानन्द ने लाला मूलराजको भेजे थे।

जैसा कि हम ऊपर वर्णित कर चुके है कि महर्षि सरल स्वभाव के कारण प्रत्येक व्यक्ति पर पूर्ण विश्वास कर लेते थे। इसी कारण से महर्षि लाला मूलराज पर पूरा विश्वास करते थे। लाला मूलराज भी ऊपर से अपने को महर्षि दयानन्द का अनुयायी और भक्त प्रकट करते थे, परन्तु भीतर से वे महर्षि के अनेक महत्वपूर्ण कार्य मे बाधा उत्पन्न करते थे। जैसे गो करुणानिधि पुस्तक का अंग्रेजी मे अनुवाद करने के लिए महर्षि ने लाला मूलराज को अनेक बार लिखा किन्तु अन्त तक उन्होने इस कार्य को नहीं किया। जोकि एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य था।

पण्डित जी के अनुसार "वस्तुत वे ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के कार्यो पर निगरानी रखने के लिए अंग्रेजी सरकार की ओर से नियुक्त थे। अन्यथा वे देशोन्नति के प्रकृत पवित्र और महत्तम कार्यों मे बाधक न बनते। भला ब्रिटिश सरकार यह [illegible] सकती थी कि भारत [illegible] जमना जाकर तकनीकी [illegible]प्त करें।

(शेष पृष्ठ 2 का)

आर्य समाज न अनेक देवताओ [illegible] के अवतारो मे विश्वास [illegible] ही भिन्न 2 उपासना [illegible]। इसलिए लोकमान्य तिलक ने भी उसे हिन्दू धर्म की व्याख्या मे शामिल नही किया है जैसा सावरकर ने लिखा है। 'इसमे सन्देह नही कि आर्यसमाज भी वेदो को प्रमाण मानता है किन्तु उसकी वेदो की व्याख्या अन्य हिन्दू विद्वानो की व्याख्या से सर्वथा भिन्न है और जिसे आर्य समाज वेदो का धर्म मानता है यह हिन्दू धर्म से सर्वथा अलग है। इस प्रकार वेदों के सम्बन्ध मे दोनो के दृष्टिकोणो मे इतना अन्तर है कि एक प्रकार से यह कहा जासकता है कि आर्यसमाज कट्टर या पौराणिक हिन्दुओ के वेद को नही मानता इस प्रकार वेदो के बारे मे उनके विचारो मे केवल ऊपरी समानता है वास्तविक नही'

—क्रमश

श्री रतनलाल गर्ग से आर्य प्रिन्टर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज, अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 162
सृष्टि सम्वत 1972949087

। ओ३म ।

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एव भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 3 रविवार 30 अगस्त 1987
अक 13 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

भाद्रपद शु 6 सवत 2044
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

हिन्दू बनाम हिन्दू धर्म

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य —

(गताक से आगे)

समालम्बियो द्वारा भी विरोध

सनातन धर्म के अन्य प्रमुख व्यक्तियो के भी आर्य समाज के बारे मे ऐसे ही विचार है। वे उसे एक सर्वथा नवीन धम मानते हैं जो प्रचलित हिन्दू धम के विरुद्ध है। पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र द्वारा द्वारा लिखित तथा व्यकेटश्वर प्रेस बम्बई द्वारा 1905 मे दयानन्द तिमिर भास्कर नामक एक पुस्तक प्रकाशित की गई है। जैसा पुस्तक के नाम से स्पष्ट है कि उसमे स्वामी दयानन्द द्वारा रचित सत्याथप्रकाश का खण्डन करते हुए लिखा है कि दयानन्द ने जो अन्धकार अर्थात तिमिर फैलाया उसे दूर करने के लिए यह पुस्तक लिखी गई है इस पुस्तक म यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि स्वामी दयान द का यह कथन कि उ होने किसी नवीन धम की स्थापना नही की भ्रमपूण हैं। स्वामी जी की इस घोषणा का उपहास करते हुए ज्वाला-प्रसाद मिश्र लिखते हैं कि—"कैसी विचित्र बात है कि एक नवीन धर्म की स्थापना करने के बाद भी इस बात से इ कार किया जाता है कि पुरानी मान्यताओ को तिलांजलि देकर नई प्रारम्भ की गई। शास्त्रो को पूण-तया नष्ट करने का प्रयत्न किया। प्रतिमा पूजा श्राद्ध, तपणमन्त्र, जप तप सबको असत्य घोषित कर दिया गया। नियोग जसे अनाचार का समथन किया गया। सब जगह आय समाज की शाखायें खोल दी गई और ब्राह्मणो का पोप बताया गया। वण व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था नष्ट को गई। शूद्रो को वेद पढने का रास्ता खोल दिया गया। वेदो का अपना पृथक भाष्य किया गया। इस प्रकार प्राचीन प्रथाओ और मान्यताओ को पूरी तरह उखाड फेंकने के लिए कोई कसर उठाकर नही रखी गई और इस उद्दश्य से सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदभाष्य भूमिका आदि अन्य ग्रन्थ लिखे गये। यह भी घोषित कर दिया गया कि ईश्वर पापो को क्षमा नही कर सकता। उसके नाम का जप करने से कोई लाभ नही है। जीव, मुक्ति से वापस लौटकर आता है आदि अनेक अपने सिद्धान्त प्रतिपादित कर दिये गये और इस पर भी दयानन्द का कहना है कि मैंने किसी नवीन मत की स्थापना नही की।'

आगे दयानन्द तिमिर भास्कर के लेखक पृष्ठ 18 पर पूछते हैं कि 'क्या इस प्रकार के झूठ की कोई सीमा है? नवीन धम को स्थापित करने के लिये दयानन्द और क्या कर सकते थे? उन्होंने अपने सत्याथ प्रकाश के अन्त मे अपनी मान्यताओ और मन्तव्यो को शामिल कर दिया है। इसलिए यह पुस्तक अर्थात् तिमिर भास्कर जो सत्याथ प्रकाश का पोल खोलने के लिये लिखी गई है, इन मन्तव्यो और विश्वासो का भी खण्डन करती है। परिणामस्वरूप इन मान्यताओ का भी आधार नष्ट हो जाता है क्योकि न वे वेदो के आधार पर हैं और न ही बुद्धिमान् विचारको को स्वीकार हो सकते हैं। अपने स्वय के मन्तव्यो का स्वय घोषणा करना ऐसी है जैसे अपने पुत्र को स्वय राजा घोषित करना। यह सब निरर्थक है, इसका कोई लाभ नही है। यह सब लोगो को गुमराह करने के लिये लिखा गया है।

पडित मदनमोहन मालवीय जिन्होंने हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना की और जो सनातन धम के एक प्रमुख नेता थे उनकी सम्मति मे भी धार्मिक दृष्टि से आयसमाज सनातन हिन्दू की परिभाषा मे नही आता है। पडित उमापति द्विवेदी द्वारा रचित "सनातन धर्मोद्धार नामक पुस्तक जो मालवीय जी की स्वीकृति से प्रकाशित की गई, उसमे भी हिन्दू धम की जो विस्तृत मान्यतायें दी गई हैं वे स्पष्ट रूप से आयसमाज के सिद्धान्तो के विपरीत हैं। इतना ही नही स्वय मालवीयजी ने अपनी भूमिका मे लिखा है कि सनातन धम के सिद्धान्तो का यह सग्रह उन सब सम्प्रदायो के लिये मान्य और स्वीकार है जो सनातन धर्म की परिभाषा मे आते है और इस प्रकार यह पुस्तक हमारे नवयुवकों के लिय धार्मिक शिक्षा देने और हिन्दू धम का प्रचार करने के काय मे उपयोगी सिद्ध होगी। ग्रन्थ के लेखक ने स्पष्ट रूप आयसमाज और उसके सिद्धान्तो का खण्डन और उसके सस्थापक ऋषि दयान द को कटु शब्दो में निन्दा का है। उन्हे 'वेदविनाशक तक कहा है और लिखा है कि स्वामीजी ने न केवल वेदो का ही विनाश किया अपितु धर्म के नाम पर अनेक और काटे बोये है। धर्मोद्धार नामक अध्याय मे स्वामी दयानन्द के मन्तव्यो और सत्याथ प्रकाश की विस्तार से समालोचना की गई है। वेदविनाशक (अर्थात स्वामी दयान द) और उनके समालोचक (अर्थात लेखक पडित उमापति द्विवेदी) के बीच एक काल्पनिक ससार के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि स्वामी दयानन्द न मूर्तिपूजा के विरुद्ध जो तक दिये हैं वे वेद तथा अन्य हिन्दू शास्त्रो के विरुद्ध हैं। एक स्थान पर द्विवेदीजी लिखते हैं कि ईश्वर की मूर्तिया केवल पत्थर या मिट्टी मात्र है और पवित्र गगा जल केवल पानी या जल है यह बात केवल मूर्ख व्यक्ति ही कह सकता है।

देहली उच्च न्यायालय का निर्णय—

देहली हाई कोर्ट ने आय समाज को पृथक् धार्मिक सगठन न मानकर जहाँ एक कानूनी और सवैधानिक भूल की है (जिसके विरुद्ध उच्चतम न्यायालय मे आयसमाज की अपील विचाराधीन है) वहाँ दूसरी ओर देहली हाई कोट के न्यायाधीशो को विवश होकर यह स्वीकार करना पडा कि प्रत्येक हिन्दू धार्मिक दृष्टि से भी हिन्दू धम का अनुयायी हो यह आवश्यक नही है। उन्होंने हिन्द के दो अथ किये ह एक जो केवल सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दू है और दूसरे वे जो धार्मिक दृष्टि से

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक : दत्तात्रेयआर्य   प्रधान सपादक : रामसिंह   सपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   फोन कार्या : 21010

हमें क्या हो गया है ?

शीर्षक देखकर चौंकिये नही। आत्मालोचन हेतु आग्रह कर कर रहा हूँ। स्व राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 'भारतभारती' मे उल्लिखित ये पक्तियाँ सहज ही याद आती है कि—

'हम क्या थे ? क्या हो गये ? और क्या होगे अभी" ।

'आओ मिलकर विचारे, देश की समस्याए सभी"

यहा मैं देश के स्थान पर "आर्यसमाज" करना चाहूगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 7 अप्रेल 1875 ई को बम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना की थी। स्थापना के बाद आर्यसमाज का अत्यन्त तीव्रता से विस्तार हुआ। बहुत शीघ्र ही भारत के बडे नगरो मे आर्यसमाजे स्थापित हो गई। स्वामी जी के निधन के पश्चात् प गुरुदत्त, लाला लाजपतराय, प लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल प्रभृति महान् आर्य नेताओ ने इस सगठन को अपने-अपने ढग से सक्षम एव सशक्त नेतृत्व प्रदान किया और आर्यसमाज देश का एक प्रमुख क्रान्तिकारी विचारधारा वाला सबल सगठन बन गया और उसने सामाजिक, सास्कृतिक, धार्मिक, साहित्यक तथा राष्ट्रीय क्षेत्र मे आमूलचूल परिवर्तन उत्पन्न कर दिया। इसके बाद भी स्वामी दर्शनानन्दजी, स्वामी ध्रुवानन्दजी, स्वामी स्वतत्रता नन्दजी, घनश्यामसिंहजी गुप्त आदि महानुभाव समय2 पर नेतृत्व प्रदान कर दिशानिर्देश करते रहे। तब तक आर्यसमाज की एक धाक थी, एक शान थी, एक आवाज थी, एक पहचान थी। जब कोई आर्यसमाजी किसी कोर्ट मे जाकर गवाही देता था तो उसकी गवाही सही, प्रामाणिक एव सत्य मानी जाती थी। आर्य समाज का अदना से अदना सभासद या कर्मचारी भी सिद्धान्त निष्ठ एव स्वाध्यायशील होता था। शास्त्रार्थो की धूम रहती थी। लोग आर्यसमाजियो के चरित्र, ईमानदारी देशभक्ति, सत्यनिष्ठा एव सिद्धान्त प्रियता का लोहा मानते थे। आर्यसमाज सघर्षो मे जीवित रहता था। सोना बनकर निकलता था।

परन्तु स्वाधीनता के कुछ वर्षों पश्चात ही धीरे - धीरे सगठनात्मक शिथिलता आने लगी। स्वाध्याय की प्रवृति कम होने लगी। सिद्धान्तनिष्ठा डगमगाने लगी। चुनाव राजनिति एव हथकण्डो का आर्यसमाजो मे धडल्ले से प्रचलन होने लगा। पार्टी बाजी, गुटबन्दी को बीमारी फैलने लगी तथा कई आर्यसमाजो में पौराणिको, गैर आर्यसमाजी विचारधारा के लोगो का बोलबाला होने लगा। कई स्थानो पर स्वामी दयानन्द के अनुयायियो के स्थान पर स्वामी विवेकानन्द के भक्तो तथा अन्धविश्वासियो, मूर्तिपूजको यहा तक कि जैनियो का भी समाज के पदाधिकारियो, मे वर्चस्व होने लगा। नाम के आगे जातिसूचक कुछ नही लगाने अथवा आर्य लगाने के स्थान पर व गौरव से जाति सूचक जाति, उपजाति और गोत्र का प्रयोग करने लगे। ऋषि के भक्तो शुद्ध आर्यजनो की उपेक्षा होने लगी। उन्हे सदस्यता से भी हाथ धोना पड गया। कई आर्यसमाजो पर गैर आर्यसमाजियो का कब्जा हो गया। कई सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद होने लग गए। कोई आर्यसमाज मे किरायेदार बन कर अथवा पुरोहित बन कर घुस गया और फिर धीरे धीरे मकानमालिक होकर बैठगया। कभी इस धडे का सहयोगी तो कभी उस धडे का सहयोगी बनकर आपस मे भिडाने और खुद लाभान्वित होते रहने का लुफ्त उठाते रहे।

आर्य समाजो का यह झगडा ऊपर के नेताओ मे भी पहुँच गया। जिला उपप्रतिनिधि सभाओ फिर प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं में झगडे होने लग गये। एक दूसरे के विरुद्ध कोर्ट के दरवाजे खटखटाने लग गये। हाईकोर्टो मे मामले गये। रिसीवर नियुक्त हुए। आर्यमन्दिरो के ताले लग गये। सीले लग गई तथा दोनो ही पक्ष हाथ मलकर रह गये। यहाँ तक कि हमारी शिरोमणि सभा "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" भी इन झगडो से अछूती नही रह सकी। वहा भी गुट विशेष का आधिपत्य हो गया। और सविधान के नाम पर रातोरात प्रतिनिधि सभाओ के सगठन को भगकर अपनी पसद के या अपने चहेते पदाधिकारियो की तदर्थ समितिया नियुक्त कर दी गई। आर्यसमाज की प्रतिष्ठित सस्थायें गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, अन्य बडे बडे गुरुकुल, कॉलिज और सस्थान भी इन विवादो के अखाडे बन गये। अपार धन और शक्ति का मुकदमो मे ही अपव्यय होने लगा। वेदो के प्रचार-प्रसार आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के मन्तव्यो के प्रचार प्रसार की अपेक्षा हम कोरे सस्थागत हो गये, चहार दिवारी मे बन्द हो गये। जिनके हाथ जो जहा जितना लगा बस उसी पर कुण्डली मार के बैठ गये और अपने तथाकथित विरोधियो को अनुशासन के नाम पर अथवा अपने अन्ध बहुमत के आधार पर अथवा खुशामदियों और चापलूसो की वाहवाही के चक्कर मे आकर अपनी ही दुनिया के हाल मे मस्त रह कर अनेक आर्य जनो को हमेशा के लिए आर्यसमाजो से दूर कर दिया। कई अलग होकर दो चार व्यक्तियो ने मिलकर ही नाम मात्र की समाजे प्रारम्भ कर दी।

यह एक कटु सत्य है। आज आर्यसमाज सस्थाओ और भवनो तक ही सीमित रह गई है। उन सस्थाओ मे भी कितना अन्दर ही अन्दर असतोष एव अनाचार है यह जानने वाले ही जानते हैं, या समझनेवाले ही समझते हैं। समाजे लकीर पिट रही है, जन साधारण से वे सर्वथा कट गई हैं। उनका प्रभाव आर्यजनो तथा आर्यसमाज के पदाधिकारियो पर नही रहा। किन्ही के व्यक्तिगत प्रभाव अथवा आज दिखाई के कारण यत्र तत्र थोडा बहुत प्रभाव रह गया है। यह अत्यन्त भयावह एव घातक स्थिति है।

आज कई आर्यसमाज तो लावारिश हो गई है अथवा उनके भवनो को सम्भालनेवाला कोई नही है विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रो अथवा छोटे कस्बो मे तो वे खण्डहरो का रूप धारण कर रही है। कई स्थानो पर आर्य समाज मे मुकदमे चल रहे है। जो हमारे लिए चिन्ताजनक हैं,कुछ लोग आर्यसमाज के क्षेत्र मे प्रसिद्धि प्राप्त कर राजनीति मे चले जाते है और आर्य समाज को भुला देते हैं।

हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का लक्ष्य लेकर चले थे। आर्यसमाज के अथाह "साहस उत्साह को देखकर अमेरिका के पादरी ने जिस आन्दोलन को महान् अग्नि की भट्टी" कहा था। महान् जीवित और क्रातिकारी आन्दोलन कहा था। आखिर उस भट्टी की आग ठण्डी कैसे पड गई। आजसमाज मे नाना प्रकार के अन्धविश्वासो पाखण्ड, तन्त्र-मन्त्र ढोंग अवतारवाद का बोलबाला है तथा सामाजिक कुरीतिया पहले से ज्यादा बढ गई है। सामाजिक, सास्कृतिक एव मानवीय मूल्यो का ह्रास तेजी से हो रहा है। राष्ट्रीय चरित्र एव नैतिकता मे गिरावट आ गई है स्वार्थवाद, भ्रष्टाचार एव रिश्वतखोरी का बाजार गर्म है। देशभक्ति भुलादी गई है। ऐसे समय मे एक ही सगठन ऐसा है जो कुछ कर सकता है जो चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है वह है ऋषि का प्यारा सगठन "आर्य समाज"। काश हम ऋषि के सपनो के आर्यजन बनकर आज पुन अपने वर्चस्व को प्राप्त कर सके।

जो बोले सो अभय—वैदिक धर्म की जय

—राजसिंह

नये समाज में आर्यसमाज की भूमिका

— डा स्वामी सत्यप्रकाशजी सरस्वती —

1883 में अजमेर मे मृत्यु हुई और 1401 में महर्षि दयानन्द के मिशन का कार्य देश से हजारो मील विषुवत रेखा के सुदूर दक्षिण मे आरम्भ हो गया। मृत्यु के 20-25 वर्ष के भीतर ही वेस्ट इडीज से लेकर दक्षिण अफ्रिका तक मे आर्यसमाज की गतिविधिया प्रारम्भ हो गयी। फीजी गयाना और ट्रिनिडाड नेटाल में आर्यसमाज की स्थापना करने वाले वे दीन-हीन कुली थे (पूर्वी उत्तरप्रदेश और बिहार के) जिन्हे अग्रेज अपने उपनिवेशो मे खेतो में काम करने के लिए ले गये थे। इन कुलियो मे न तो ब्राह्मण थे न ही शिक्षित व्यक्ति। एक चौथाई तो जहाज पर ही ईसाई बन गये थे। शेष भी उपनिवेशो मे जाकर ईसाई बन जाते, यदि 'सत्यार्थप्रकाश' और सस्कारग्रन्थ वहा न पहुच पाते। एक मात्र सस्था आर्यसमाज है जिसने विषुवत रेखा के दक्षिण भाग के उपनिवेशो में हिन्दू कुलियो को ईसाई होने से बचाया। यह काम न तो विवेकानन्द मिशन कर सकता था और न कोई सनातन धर्म की सभा। इधर 20-25 वर्षों से जबसे हिन्दुत्व को कुछ सस्थाए और कुछ राजनैतिक पार्टिया इन देशो मे पहुच गई हैं हिन्दू विघटन का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। आर्यसमाज के प्रति द्वेष की भावना उत्पन्न करदी है और हरिजनो का पृथक सगठन बनाने का प्रयास किया है, अथवा एकमात्र आर्यसमाज ऐसी सस्था थी जिसने हिन्दी गुजराती सीखने के लिए विद्यालय प्रारम्भ किये, जन्मना जातिवाद का बीज-वपन नही होने दिया, जिसने कन्याओ के लिए अध्ययन-अध्यापन का सुयोग और सैकडो वर्षो से चली आने वाली रूढियो को दूर करने का छोटा सा प्रयास किया।

हिन्दू भावना विघटन की प्रतीक है। पूजा पद्धति और आस्थाओ की अनेकताओ के कारण हिन्दू विघटित है—हिन्दू न राष्ट्र का नाम है और न धर्म का और न सस्कृति का। सस्कृति सगठन-सूत्रक होती है। हिन्दू विकृतियो मे विश्वास करता है अतः हिन्दुत्व का आन्दोलन विघटन और विकृतियो का आन्दोलन है। वैदिक सस्कृति समानता और सगठन की सस्कृति है। ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त सज्ञानम् सूक्त कहलाता है। समानो मन्त्र समितिः समानी समान मन सहचित्तमेषाम् न और समानी आकूति, समाना हृदयानि व।—ऐसे मन्त्र समानता और सगठन के द्योतक हैं। समस्त हिन्दू सम्प्रदायो का इतिहास हमारे विघठन का इतिहास है और इसलिए हमारी आज मिलीजुली सस्कृति (कम्पोजिट कल्चर) है। हमे यह सस्कृतियो के मिलीजुली होने पर आपत्ति नही है। आपत्ति तो हमे उस सस्कृति पर है जो मनुष्य मे भेदभाव उत्पन्न करने वाली हो—गप्पो और गपोडो और अनैतिकताओ पर निर्भर करने वाली हो जो स्वर्ग-नरक के नये-नये द्वार खोलने वाली हो। इसलिए हिन्दू सम्प्रदाय निष्प्राण ही नही देश और राष्ट्र के लिए घातक भी रहे हैं।

स्वामी दयानन्द ने सम्प्रदायवाद के इस नग्न रूप को 'सत्यार्थप्रकाश' के एकादश समुल्लास मे चित्रित किया है। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन मे 20-25 वर्षों के परिश्रम मे मन्दिरो, मठो और सम्प्रदायो की जो भ्रष्टाचार वाली स्थिति अपनी आखो से देखी थी उसकी आलोचना की। आर्यसमाज ने प्रयास किया कि भारतीय सस्कृति का यह भ्रष्ट रूप विदेशो मे न जावे, किन्तु पिछले 25-30 वर्ष के हिन्दू आदोलन ने आर्यसमाज के इस प्रयास को विफल कर डाला है। पिछले तीस चालीस वर्षो मे हमारे देश मे भी और इन देशो मे भी जहा भारतीय है हिन्दुओ की अवस्था बिगडी हैं, सुधरी नही। लगभग 900 नयी देवियाँ, नये भगवान या अवतारी पुरुष, नय-नये चमत्कारो द्वारा प्रलोभन दिलाने वाले आचार्य प्रवर्तित हो गये हैं, जिनके सामने पुराने आचार्य, अवतार, पीर पैगम्बर भी फीके पड गये हैं।

इन सब का प्रतिफल यह हुआ है कि भारतीयो के समाज मे अनैतिकता चरम सीमा तक पहुच गयी है। कीर्तन, रतजगे, नये रूप की पदयात्राए और अधविश्वासो का नये रग मे प्रस्तुत करने वाले नये नये पुरश्चरण और पुरश्चरण हमारे लिए एक समस्या बन गये हैं। राजनैतिक जनतन्त्रवाद मे निर्वाचन का प्रत्येक का प्रत्येक प्रत्याशी किसी न किसी ज्योतिषी, भविष्यवक्ता और तान्त्रिक के हाथो में नाच रहा हैं। ऐसी अवस्था मे आर्यसमाज भविष्य मे क्या भूमिकाए निभाएगा, यह हमारे सामन एक चुनौती है क्या शताब्दी समरोह के बाद हम सब मिलकर अपनी इन समस्याओ पर विचार करने का प्रयत्न कर सकगे ?
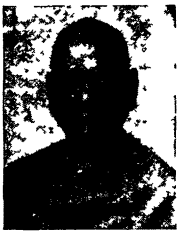
आर्यसमाज को अपने आदोलन को भविष्य मे कल्याणकर बनाने के लिए कुछ प्रश्नो पर गम्भीरता से विचार करना पडेगा।

(1) द्वितीय युद्ध के बाद विज्ञान तकनीकी, उद्योग साधनो और सपर्क साधनो के कारण विश्व मे एक नये समाज का शनैः शनैः आविर्भाव हो रहा है इस प्रगतिशीलता मे आर्यसमाज कितना हाथ बटाने को तैयार है ?

(2) समस्त मानव को नैतिकता और आस्तिकता के एक मच पर खडा कर देने का जो स्तुत्य स्वपन महर्षि ने देखा था क्या आर्यसमाज उस स्वपन को सच्चा बनाने के लिए जागरूक और प्रयत्नशील है ? कही ऐसा तो नही कि कालान्तर मे आर्य समाज हिन्दुओ का एक सप्रदाय मात्र बन कर रह जायेगा ?

(3) हिन्दू बहुत दिनो तक तो धर्मान्तरण के (अथवा शुद्धि के) पक्ष मे गया, किन्तु अब वह मुसलमान और ईसाईयो को धर्मान्तरित करके फिर से हिन्दू बनाना चाहता है। क्या उससे आर्य समाज को सतोष होगा ? अर्थात् क्या अमूर्त्तिपूजक मुसलमान या ईसाई, जो ईसाई, जो धर्मपरिवर्तन करके जन्मना जात-पात के झगडो से और प्रतिमा पूजन म मुक्त हो गया है और जिसने समाज मे प्रतिष्ठावान स्थान प्राप्त कर लिया था, फिर से हिंदू बनकर पूर्वावस्था म (पुरानी जात-पात मे) आ जाय, तो क्या इससे हमे प्रसन्नता होगी ? क्या समस्त हिंदू समाज उसे सम्मान का स्थान देगा ?

(4) आज का युवक स्वप्नहीन है और उच्छृखल भी, सभवतया उसमे निराशा है भी। वह आर्य समाज से दूर हटता जा रहा है और साथ ही साथ वह देश के किसी अन्य क्रियात्मक कार्य मे साथ भी नही दे रहा। ऐसे युवक को उत्साहपूर्ण सफल पुरोगम देने मे क्या आर्यसमाज सफल होगा ?

(5) देश-विदेशो मे आर्य समाजो की स्थापना तो हुई, किंतु अभी तक आर्यसमाज न तो नीग्रो को अपनी ओर आकर्षित कर पाया और न गौरागो को और न पीत राष्ट्रो के व्यक्तियो को। ऐसा क्यो हुआ और इस दिशा मे आर्य समाज को अब क्या करना है ?

(6) देश मे लोकतान्त्रिक निर्वाचन पद्धति असफल हो गयी है। इस असफलता का प्रभाव आर्य समाज की छोटी-बडी सभी सस्थाओ पर पडा है सत्ता, प्रभुता और वित्त, तीनो की आकाक्षाओ ने भारतीय समाज के साथ-साथ क्या आर्य समाज को भी कलुषित नही कर दिया ? क्या आर्य समाज इस महत्वपूर्ण घटक पर विचार करने के लिए जागरूक है ?

(7) भारत की विचित्र राजनैतिक और साम्प्रदायिक परिस्थितियो ने भी विकट समस्याऐ प्रस्तुत कर

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पत्र बोलते हैं ...

लोग सचाई से डरते हैं

स्वामी सत्यप्रकाशजी के लेख की दोहरी प्रतिक्रिया पढी।

महापुरुषो पर कीचड न फेंके' पढकर ऐसा लगा कि लोग सच्चाई से बड घबराते हैं।

—आर्या सत्यवति शर्मा
बुद्ध की हाट, भरतपुर

आप क्यों परेशान होते हैं ?

2 अगस्त के आर्यमित्र मे आर्य समाज बरदहा बाजार बहराइच के सदस्य श्री रमेशचन्द्र गुप्त का सम्पादक के नाम पत्र पढा। श्री गुप्त को इस बात का बडा दुख है कि 27 जून को दूरदर्शन मे प्रदर्शित चित्रहार मे 'परिवार' नामक फिल्म का ऐसा दृश्य दिखाया गया था, जिसमे एक हिन्दू देवमंदिर मे मूर्ति के समक्ष एक अभिनेत्री प्राय नग्न दशा मे नृत्य करती है। मुझे आर्यसमाजी बंधु की इस मन स्थिति का दुख कर तो अवश्य दुख हुआ किन्तु वे व्यर्थ मे ही इसको लेकर परेशान हो रहे हैं। जब बहुसंख्यक मूर्तिपूजको को ऐसे दृश्य देखकर पीडा नहीं होती तो हम व्यर्थ मे ही उसके लिए क्यों चिंता करें और प्रमुख बात तो यह कि देवमूर्तियों के आगे नग्न नृत्य दिखाने के लिए दूरदर्शन को हम क्यों निन्दा करें। क्या दक्षिण भारत के सबडो मन्दिरो मे देव मूर्तियो के आगे वेश्या तुल्य देवदासियां शृंगारी हाव भाव दिखाकर अश्लील नृत्य नही करती। क्या बहुसंख्यक मूर्तिपूजको ने कभी देवदासी प्रथा का भी विरोध किया है? क्या कर्नाटक मे यलम्मा नामक देवी के मन्दिर के ग्रामीण बालाओ को देवदासी बन कर चिरकाल तक दुराचार पूर्ण व्यतीत करनेवाले धर्म व्यवसायियो के खिलाफ भी कभी मूर्तिपूजको ने आवाज उठाई है। क्या ये लोग अपने को हिन्दू नही मानते?

और सच तो यह कि बहुसंख्यक हिन्दुओ की भावनाओ को चोट पहुंचाने की जो आशंका हमारे मित्र को है, तो मैं उन्हे बता दूं कि हिन्दुओ के बहुमान्य पौराणिक धर्म मे तो नाचने गाने को धार्मिक स्वीकृति प्राप्त है। इनके देवताओं के राजा इन्द्र के दरबार मे रम्भा, मेनका, उर्वशी आदि अप्सराएं नाचती और गाती हैं। इनके मान्य देवता शिव स्वय ताण्डव नृत्य करते हैं। देवी पार्वती लास्य नृत्य करती है। महर्षि का सम्मान पानेवाले नारद मुनि भी नाचते और गाते हैं। अधिक क्या इसके धर्म मे तो गंधर्व किन्नर, अप्सरा विद्याधर आदि नाचनेवालो की विभिन्न योनियां ही कल्पित की गई हैं। कहां तक कि इनके प्रमुख आराध्य विष्णु भी मोहिनी का रूप धारण कर नाचते हैं और असुरो को ही नहीं मुग्ध करते अपितु परम इन्द्रियजयी शंकर के मन मे भी विकार उत्पन्न करते हैं इसके मान्य देवताओ के राजा इन्द्र का आदेश पाकर अप्सराएं अपने अश्लील भाव भगिमा युक्त नृत्यो से विश्वामित्र जैसे सयमी ऋषियो की तपस्या भंग कर देती हैं।

जिस धर्म के मान्य देवी देवताओ का ही जब नृत्य गीत आदि से परहेज न हो तो हमारे आर्य भ्राता दूरदर्शन पर दिखाये गये ऐसे दृश्य से क्यो व्यर्थ मे परेशान होते हैं।

—डा भवानीलाल भारतीय

हिन्दू समाज..

(शेष पृष्ठ 1 का)

हिन्दू हैं। जैन बौद्ध और सिख आदि जैन, बौद्ध और सिख आदि जो केवल *सामाजिक* और *ऐतिहासिक* दृष्टि से हिन्दू हैं अथवा केवल हिन्दू व्यक्ति गत कानून अर्थात् हिन्दू कोड बिल के अनुसार हिन्दू हैं। उन्हे न्यायालय ने हिन्दू धर्म को सम्प्रदाय नही माना है।

इसलिए यह सचमुच आश्चर्य की बात है कि देहली न्यायालय ने हिन्दू के दो अर्थ स्वीकार करते हुए जैन बौद्ध और सिखो के विपरीत धार्मिक दृष्टि से केवल आर्य समाज को ही हिन्दू धर्म का एक सुधरा हुआ सम्प्रदाय किस प्रकार घोषित किया है? जबकि आर्यसमाज के पक्ष मे यह सिद्ध करने के कहीं अधिक सबल तर्क हैं कि सनातनी या पौराणिक हिन्दू धर्म का अंग या सम्प्रदाय नहीं हो सकता जैसा हम पूर्व अध्याय मे स्पष्ट कर चुके है।

नये समाज में...

(शेष पृष्ठ 3 का)

दी हैं क्या आर्यसमाज उनके प्रति तटस्थ और उदासीन रह कर सच्ची सेवा कर सकता है, अथवा उसे इस दिशा मे उचित नेतृत्व भी देना है?

(8) पिछली शती आर्यसमाज के इतिहास का स्वर्ण युग थी। क्या यह सच है कि ये संस्थाये हमारे लिए आज केवल समस्याएं हैं (एक प्रकार सिर-दर्द) गुरुकुल कालेज आश्रम, इत्यादि? क्या यह ठीक है कि ये सस्थाएं हमारे अधिकार और स्वत्व से बाहर निकल गयी हैं और इनसे आर्यसमाज के मिशन को कोई विशेष लाभ नहीं हो रहा? क्या इनके चलाने मे हमारी शक्ति का अपव्यय नही हो रहा है? हमारे आपस के झगडे तो इनके कारण नही बढ रहे? क्या इन्हे सरकार को सौंप देना चाहिए या इनका सार्वजनिक ट्रस्ट बना देना चाहिए?

(9) देश देशांतरो मे आर्यमिशन का कार्य सुचारु ढग से बढाने के लिए वैदिक मिशनरी तैयार करने के केन्द्र व्यवस्थित करने का कार्य क्या हमे हाथ मे लेना होगा? देश के बाहर कार्य करने के लिए हमे धन, कार्यकर्ता और विशेष साहित्य की आवश्यकता होगी। इस काम को हम कैसे विस्तार दें, यह बात हमे सोचनी पडेगी।

बहुत सी कमजोरियाँ होते हुए भी आज आर्यसमाज देश की सबसे अधिक सुसगठित सस्था है। आज करोडो रुपये की सपत्ति इसके पास है। कई हजार आर्यसमाज मंदिर हैं। अनेक शिक्षा संस्थाएं हैं। नियमपूर्वक प्रत्येक आर्यसमाज मे एक ही प्रणाली के साप्ताहिक (रविवासरीय) सत्सग होने हैं, जहां एक सी सध्या, एक सा अग्निहोत्र, एक सी स्तुति-प्रार्थना होती है। (विदेशो मे भी वे मन्त्र पढे जाते हैं), एक ही पद्धति से विवाह सस्कार और मृतक सस्कार (और भी अन्य सस्कार) होते हैं। इतनी एक रूपता किसी भारतीय हिंदू सम्प्रदाय मे नहीं है। हमारे यज्ञ और सस्कारो की सरल पद्धति पढ-लिखे साधारण हिंदू घरो मे भी लोकप्रिय हो गयी है। हमारे पुरोहित समस्त वर्गो के व्यक्तियो मे से हैं (हिंदू जातिपात से रहित)। इन्हे हम पण्डित, पुरोहित या आचार्य कहते हैं इनमे अनेक अच्छे शिक्षित वेदज्ञ हैं। जब ये हिंदू घरो मे सस्कार कराने जाते हैं तो इनसे कोई नही पूछता कि तुम जन्मना किस वर्ण के हो।

आर्यसमाज और राजनीति

— डा भवानीलाल भारतीय —

उपर्युक्त शीर्षक से श्री वीरेन्द्र जी के दो धारावाही सम्पादकीय लेख आर्य मर्यादा मे प्रकाशित हुए हैं। मैं श्री वीरेन्द्रजी के इस कथन से शत प्रतिशत सहमत हूँ कि हमारे ही कई शिरोमणि नेता राजनीति के प्रश्न पर एक साथ दो नावो की सवारी करने का दुस्साहस करते हैं। एक ओर वे हिन्दू हितो की बातें करते हैं हिन्दू धर्म, समाज और उसकी सस्कृति को हानी पहुँचाने वाली सरकारी नीतियों की यदा–कदा खुल कर आलोचना आर्य समाज और अन्य सार्वजनिक मचो से करते हैं जब कि दूसरी ओर कांग्रेस के शासक नेताओं से दूध और मिश्री की तरह घुल मिल कर रहने की भी चेष्टा करते हैं। इसी तथ्य को ध्यान मे रख कर 19 जुलाई की आर्य मर्यादा मे जन सत्ता का एक उदारण दिया गया जिसमे कहा गया था कि एक पूर्व सांसद और इ का सम-बंध आर्य समाजी नेता से प्रेस कांफ्रेंस करवाकर हरियाणा के मुख्य मन्त्री श्री देवीलाल की आलोचना करवाई गई और कहा गया कि उनके सत्ता में आने से हरियाणा मे उग्रवाद पनपेगा।

मेरे विचार से दलगत राजनीति से पृथक रहने वाले आर्य समाज को देवीलाल, भजनलाल, बसीलाल के पारस्परिक झगडो से कोई मतलब ही नही होना चाहिए। हमे तो यह देखना है कि जिस समय मे आर्य समाज के हित सुरक्षित रहे, वही हमारी प्रशसा का पात्र होगा। विगत में भी हमारे नेताओं ने ऐसी ही गलतियां की हैं। काश्मीर के मुख्यमन्त्री फारूक अब्दुल्ला के प्रथम कार्यकाल में हुए दगो में हिन्दुओ के जन-धन की पर्याप्त क्षति हुई। किंतु उस समय राज्यपाल की सस्तुति पर डा. फारूक की सरकार को बर्खास्त करने या न करने से आर्य समाज का क्या लेना देना था? फिर भी ऐसे बयान दिये गये और समाचार छपाये गये मानो हमारे नेताओ के परामर्श को मानकर ही उस समय फारूक को काश्मीर की गद्दी से हटाया गया। हमारे लिये यदि फारूक गलत है तो उनका स्थान लेने वाले गुलशाह कैसे अच्छे हो गये। अब तो गुलशाह ने सयुक्त मुस्लिम मोर्चे मे शरीक होकर मुस्लिम साम्प्रदायिकता को जैसा स्पष्ट समर्थन दिया है उससे क्या फारूक के उदार रवैये की प्रशसा नही करनी होगी? वस्तुत आर्य समाज के नेताओ को ऐसे मामलो मे पर्याप्त तटस्थता बरतनी होगी।

जो बात श्री देवीलाल और फारूक के बारे मे कही गई है, वही आन्ध्र के मुख्यमन्त्री श्री एन टी रामाराव के विषय मे भी कही जा सकती है। हमारे पास इस बात के प्रमाण हैं कि हमारे कतिपय शिरोमणि नेताओं ने आन्ध्र की तेलुगु देशम सरकार की आलोचना की थी। जहा तक हमे ज्ञात है कि रामाराव ने जाने अनजाने भी आर्य समाज या हिन्दू जाति का कोई अनिष्ट नही किया, फिर हम आर्य समाज के मच से उसकी आलोचना कर क्या केवल केन्द्रीय शासको के प्रति ही अपनी आसक्ति को सिद्ध नही कर रहे हैं।

यहा एक बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए। केवल भारत के प्रधानमन्त्री से भेंट करने, उन्हे पत्र लिखने अथवा उनसे आश्वासन प्राप्त कर ले लेने मात्र से ही आर्य समाज या बृहत्तर हिन्दू समाज की समस्याओ का समाधान नही हो जाता राजनीतिज्ञ और शासक सीमातीत रूप से चतुर, व्यवहार कुशल और लोकसग्रही होते हैं। वे सुनते सबकी हैं किन्तु करते अपने मन की हैं। अत कोई इस खुश फहमी मे क्यो रहे कि उसके सुझाव को मान कर ही प्रधानमन्त्री ने पहले डा फारूक को डिसमिस कर दिया था। ऐसा सोचने वाले क्या यह मानते हैं कि अब जो काश्मीर मे नेशनल कान्फ्रेंस और कांग्रेस का गठ जोड बना है और दोनो मिल कर वहा शासन कर रही हैं, यह भी उनकी राय से हा हुआ है। इधर हमारे नेताओ का प्रतिनिधि मण्डल नवीन शिक्षा नीति में सस्कृत की स्थिति को लेकर मानव ससाधन मन्त्री श्री नरसिंह राव से मिला और उनकी चिकनी चुपडी बातो मे आकर यह मान बैठा कि नवोदय शिक्षा प्रणाली और दस योजनाओ की शिक्षा पद्धति मे सस्कृत को उसका प्राप्य मिलेगा और उसके विकास को हानि नही होगी। मन्त्रीजी के आश्वासन को मानकर सतुष्ट हो जाना दिवा स्वप्न देखना ही है। इसके सम्बन्ध मे शिक्षा शास्त्रियो का ही मत है प्रमाण है। वे ही हमे बतायगे कि नवीन शिक्षा प्रणाली मे सस्कृत को कोई महत्व नही दिया गया है। मन्त्री का तो काम ही आश्वासन देना होता है।

श्री वीरेन्द्रजी ने जुलाई 1986 मे आर्य समाज द्वारा पजाब की समस्या पर दिल्ली मे बुलाई गई दो दिवसीय बैठक का भी उल्लेख किया है जिसमे बडे जोश खरोश के साथ यह कहा गया था कि 15 अगस्त 1986 तक पजाब मे उग्रवाद के दमन के लिये सरकार ने कोई कारगर कदम नही उठाया तो आर्य समाजी १९३९ के हैदराबाद और १९४६ के सत्याग्रह प्रकाश आन्दोलन जैसी स्थिति की पुनरावृत्ति करेगे। ऐसा कहने वाले और ऐसे प्रस्ताव पास करने वाले वस्तु स्थिति से सर्वथा अपरिचित तथा स्वप्नलोक के वासी हो है। १९३९ और १९४३ का जमाना लद गया। उस समय आर्य समाज को महात्मा नारायण स्वामी स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी, महाशय कृष्ण जी, तथा राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री जैसे निष्ठावान आर्य नेताओ का नेतृत्व प्राप्त था जो सर्वात्मना आर्य समाज के लिये ही समर्पित थे। उनकी निष्ठाये द्विधा विभक्त नही थी और न वे शासक या सत्ता चापलूस हो थ। उन्होने यदि हैदराबाद के निजाम या सिंध के मुस्लिम लीगी मुख्य मत्री सर गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला को सरकार को चुनौती दी तो आर्य समाज के अपने दम खम पर ही दी थी। वे आज के उन नेताओ से कतई भिन्न कोटि के थ जो आर्य समाज के मच पर श्री अर्जुनसिंह जैसे सामान्य व्यक्ति आने पर अपनी तुरीयाश्रम मर्यादा को भी भूल व उनका स्वागत करने के लिये पलक पावडे बिछा देते हैं।

आर्य नेताओ को जान लेना चाहिए कि अब १०३९ और १९४८ का जमाना लौटने वाला नही है। उसके बाद तो आजाद भारत मे न तो आपका गारक्षा आन्दोलन ही सफल हुआ और न पजाब का हिन्दी रक्षा आन्दालन।

पजाब समस्या तथा उग्रवाद का समाधान खोजने मे जब आज सर्व-समय सरकार और पुलिस तथा सुरक्षा सेनाय भी असफल हो रही हैं और अपने आपको असहाय और निरुपाय महसूस कर रही हैं तो भला आर्य समाज इसमे क्या कुछ कर लेगी? उसकी बिसात ही क्या। उग्रवाद के भय से आज पजाब मे तो आर्य समाज की सारी गतिविधि हो ठप्प हो गई है।

अपने कथन को समाप्त करने के पूर्व मध्य प्रदेश हिन्दू सम्मेलन के ग्वालियर अधिवेशन मे दि 12 जुलाई को दिये गये एक आर्य नेता के अध्यक्षीय भाषण की ओर सकेत करना चाहता हूँ। इस भाषण के दौरान यह कहा गया कि विरोधी दल साम्प्रदायिकता को बढावा द रहे

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कुलपति महोदय-
गुरुकुल कांगड़ी विश्व
विद्यालय हरिद्वार
आर्य पुनर्गठन

30 अगस्त, 1987

डाक प स RJ/AJ-168

रोटी से बड़ी आस्था

श्री ज्योतिमय के नाम व उनके लेखन से आप अपरिचित नही होगे। इनका नाम वर्षो से दिल्ली प्रस की पत्रिकाओ (सरिता मुक्ता आदि) मे इनके तथाकथित लेखन के कारण पौराणिक व आय सामाजिक क्षेत्र मे बडा विवाद रहा है।

अब गत कई महीनो से श्री ज्योतिर्मय समूह के लिए लिख रहे है और जा लिख रहे हैं उसमे व दिल्ली प्रस के उनके द्वारा लिखे गए लेखो मे व्यक्त विचारो मे परस्पर 3 और 6 का सम्बध है। हमारे निजी मन मे श्री ज्योतिमयजी के विचारो मे [य]ह आश्चर्यजनक परिवतन उनका आकषण मान देय पर क्सप्रस समूह से जुड जाना हा होगा।

श्री स्व रेन्ग विशेष मवान दाना दनिक ट्टि के विषय मे आपने वरिष्ठ पत्रकार श्री जमना दास अख्तर के स्तभ जमुना क किनारे से मे पढा ही होगा कि रेडडो जा ने किस प्रकार मि जिन्ना के निदशानुसार अपनी आस्था मुस्लिम लीग से जोड कश्मीर मे लीग का प्रापेगण्ड करने का दायित्व ग्रहण कर लिया था।

आइए! अब आपको आर्य सम्माजिक क्षत्र के एक ऐसे धुर धर लेखक से मिलाए जो आर एस एस मे प्र रणा पाकर आर्य समाज का कायाकल्प करन के के लिए कमर कसे हुए है। ये महानुभाव सघ की कृपा दृ मे कई बार बिन्देशा की सर का लुफ भी उठा आए है और परिपन्द सदस्यता भी प्रसाद के रूप मे एव एक बार प्राप्त कर चक हैं मम्पप्रति ये सघ स प्राप्त प्र णा को आर्यसमाज मे ठ कन का जी तोड कोशिश कर रहे है।

वीरेन्द्र आर्य

आर्यसमाज और...

(शेष पष्ठ 5 का)

हैं। बात बहुत कुछ सत्य है चन्द्र शेखर और बहुगुणा जसे व्यक्तियो ने मुस्लिम साम्प्रदायिकता की ओर से सदा ग खें मू दे रखी तथा साम्प्रदायिक वमनस्य के लिए सदा बहुमत को कोसा है। परन्तु मैं पूछना चाहता हू कि अल्पमतीय साम्प्रदायिकता को बढावा देन मे शासक दल ने ही कौन कसर रखी है फिर कवल विरोधी नेताओ को दोष देना बेकार है। 30 माच को बोट क्लब पर आयोजित रली में अब्दुल्ला बुखारी और सैयद शहाबुद्दीन ने जिस प्रकार विषवमन किया उस पर क्या सरकार ने कोई कायवाही की? अब शाही इमाम ने जामा मसजिद के दरवाजे बन्द कर दिये और अपने अनुयायियो म उत्त जन फलाने का प्रयास किया तो क्या दिल्ली प्रशासन ने बुखारी की सासा क आगे झुककर निरपराध पुलिस अधिकारियो के स्थाना तरण करन का आश्व सन उसे नही दिया? तो केवल विरोधी दलो को ही साम्प्रदायिक तुष्टि करण के लिये दोष देना एकागी दष्टिकोण है काग्र स तो 1916 की लखनऊ काग्र स मे ही प्रथम बार जो मुस्लिम साम्प्रदायिकता क स्त्र ग ा ता वह अब तक चलती ह जा ह । भविष्य मे कहा तक ा उसे भगवान ही ज न

इसी याऽव न म श्र न्व लाल को बलगन र जनीति म ऊपर उठने का उपदश दिया गया है सच तो यह है कि हरियाणा का यह चुनाव श्री देवीलाल ने दलगत राजनीति उपर उठकर हा लडा था य यथा उन्हे कभी अभूतपूर्व विजय मिली ही नही जसी कि इस बार उन्हे मिली।

आय समाज क लिए सभी दल एक से ह है जब तक कि म र प्रति उनके यवहार मे कोई विशिष्टता न दिखाई पडे। इसलिय एक को दूसर पर वरीय ता दन का कोई प्रश्न ी है सच तो यह है कि आय समाज का भला न तो शासक दल ही करेगा और न विरोधी दल। उसे त खद के बल बूत पर ही अपना प्रतिष्ठा को बरकरार रखना है।

उन्हें अपनी आंख का शहतीर नजर नही आता

ईरान के धार्मिक प्रमुख मियां आयतुल्ला खुमैनी ने मेरठ के दगो के लिए भारत सरकार की भत्सना करते हुए दगो मे मरे मुसलमानो के प्रति अपनी सहानुभूति प्रगट की है। यद्यपि उनका यह कृत्य हमारी सम्प्रभुता का सरासर उल्लघन है परन्तु इस तथ्य की हम उपेक्षा भी कर द तो ~~श्री~~ इस्लामी लीग मक्का मे सकडो निर्दोष मुस्लिमो को मौत की बलि चढाने वाले खुमनी को मेरठ के दगो मे मरे मुसलमानो के प्रति सहानुभूति दर्शाने का अधिकार प्राप्त नही हो जाता है।

आयतुल्ला खुमनी की अगु-वाई मे ईरान ईराक से गत सात वर्षों से युद्ध लड रहा है। ये दोनो देश ही मुस्लिम देश हैं। और इस युद्ध मे लाखो मुस्लिम अपने प्राणो को गवा चुके है।

गर मुस्लिम देशो के मुसलमानो के प्रति कथित सहानुभूति दिखानेवाला मे एक अकेला ईरान नही है। बल्कि ऐसा स्वभाव तो प्रत्येक मुस्लिम राष्ट्र का ही रहा है यहा तक का पाकिस्तान जसा देश जो पठान मुजाहीर व शिया सुन्नी के परस्पर खूनी जग का मैदान बना हुआ है मेरठ के दगो के लिए भारत सरकार की आलोचना करते वक्त किंचित मात्र भी लज्जा अनुभव नही करता है।

—वीरेन्द्र आर्य

डा यादव दयानन्द शोधपीठ के अध्यक्ष नियुक्त

आयजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान एव लेखक श्री डा बाबू लालजी यादव एम ए पी एच डी डी लिट अध्यक्ष सस्कृत विभाग श्री वार्ष्णेय कालेज अलीगढ को दयानन्द वदिक शोधपीठ के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है।

डा यादव 1 अक्टूबर 1987 से अपना नया कायभार सभालेगे।

—प्रशासनिक अधिकारी

आर्यसमाज अजमेर में वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया

आयसमाज अजमेर द्वारा श्रावणी के उपलक्ष मे आयोजन वेद प्रचार सप्ताह के अ तगत जन्माष्टमी पव तक (दि 9 8 87 ई से लेकर दि 16 8 87 तक) आयजगत के प्रख्यात विद्वान एव विज्ञान वेत्ता डा स्वामी स य प्रकाशजी सरस्वती की वेद कथा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री रामच द्रजी एव श्री अनतरावजी के भक्तिपूण भजन भी हुए।

पं. मजुनाथ शास्त्री का निधन

अजमेर 18 अगस्त। डी ए वी उ मा विद्यालय के भूतपूव प्रधानाध्यापक प मजुनाथ शास्त्री का गत दिवस हैदराबाद मे निधन हो गया। स्व शास्त्री कसर से पीडित थे। उ होने उक्त विद्यालय मे बीस वष तक प्रधानाध्यापक के पद पर काय किया था।

आयसमाज के प्रधान आचाय श्री दत्तात्रय आय मत्री एव प्रधानाचाय श्री रासासिह ने श्री शास्त्री के निधन पर शोक सवदना व्यक्त करते हुए उनके परि

पत्र भेजा।

श्री रतनलाल गग स आय प्रि टस अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिह न आयसमाज भवन केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द · 162
सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एव भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष · 3 मंगलवार, 15 सितम्बर, 1987
अंक · 14 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

भाद्रपद कृ 8 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

आर्यसमाज अजमेर का 106 वाँ वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन सम्पन्न

राजस्थान की सबसे प्राचीन व विख्यात आर्यसमाज, अजमेर का का 106 वा अधिवेशन श्री दत्तात्रेय आर्य की अध्यक्षता मे रविवार दि 5-9-87 ई को प्रात काल सम्पन्न हुआ । इस अधिवेशन के मत्री श्री रासासिंह जी द्वारा विगत वर्ष का कार्य विवरण प्रस्तुत किया गया । इसके अन्तर्गत आर्य समाज शिक्षण सस्थाओं की प्रगति-क्रम शिक्षा की व्यवस्था एव प्रोत्साहन, आर्य साहित्य का प्रकाशन, आर्य पुनर्गठन का प्रकाशन, वैदिक सत्सग आश्रम पुष्कर, मुन्नालाल प्रचारिणी सभा, दयानन्द बाल सदन, आर्यो अन्तर्जातीय विवाह, वेद प्रचार, विभिन्न उत्सवो एव पर्वो के आयोजन आदि के सम्बन्ध मे कार्य विवरण प्रस्तुत किया । वार्षिक कार्य विवरण के अन्तगत आर्य समाज के द्वारा सचालित आर्य समाज शिक्षा सभा, दयानन्द बाल-सदन, मुन्नालाल नागरी प्रचारिणी सभा, आर्य वस्तु भण्डार आदि की प्रगति से भी सदस्यो को अवगत कराया । आर्यसमाज के अन्तगत सचालित दयानन्द कॉलेज, डी ए वी स्कूल आदि विभिन्न 13 शिक्षण सस्थाओ का कुल वार्षिक व्यय 79 लाख रुपये, पढनेवाले छात्रो की सख्या 7 हजार तथा उनमे कार्य करनेवाले अध्यापकों, प्राध्यापको एव कर्मचारियो की सख्या 380 रही । इस विगत वर्ष के आय व्यय एव आगामी वर्ष के लिए बजट को सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया ।

अन्त मे श्री दत्तात्रेय जी आर्य ने सभी सभासदो से भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग देते रहने का आह्वान किया । मत्री रासासिंह ने सभी महानुभावो के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया ।

आगामी वर्ष के लिए निम्न प्रकार सर्वसम्मति से निर्वाचन हुए—

प्रधान आचार्य दत्तात्रेयजी आर्य, उपप्रधान—श्री ठा प्रेमसिंह जी, श्री कृष्णराव जी वाब्ले, मत्री—श्री रासासिंह जी, उपमत्री—आचार्य गोविन्दसिंहजी श्री शिवचन्दसिंहजी, श्री वेदरत्नजी आर्य, प्रचार-मत्री—श्री नवीनकुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री किशनलाल शर्मा पुस्तकालयाध्यक्ष व आतरिक अकेक्षक—श्री पी एन. मेहरा ।

प्रतिष्ठित सभासद—

श्री रामपालसिंह वर्मा, आचार्य विनयसिंह, श्री प्रो जी एल जोशी श्री कृष्णपालसिंह, प्रो देव शर्माजी, प्रो बुद्धिप्रकाश आर्य, श्री देवदत्त तनेजा, श्री किशनलाल आर्य ।

वार्ड प्रतिनिधि—

प्रो सत्यपाल पिलानिया, श्री लाखनचन्द शर्मा, श्री हरीशचन्द शर्मा, श्री लालकिशन वर्मा, श्री जगदीशप्रसाद भारद्वाज, श्रीमती मनोरमा चाँद, श्री लालचन्द आर्य ।

न्यायोपसभा—

श्री ठा प्रेमसिंहजी, श्री कृष्णारावजी वाब्ले, श्री प्रो जी एल जोशी ।

—रासासिंह (मत्री)

रासासिंह श्रेष्ठ अध्यापक के रूप में सम्मानित

स्थानीय डी ए वी उच्च मा. विद्यालय, अजमेर के प्रधानाचार्य श्री रासासिंह को अभिभावक सघ राजस्थान (पेरेंटस एसोसिएशन ऑफ राजस्थान) द्वारा श्रेष्ठ अध्यापक चयन समिति की अभिशसानुसार सत्र 1986 87 मे उत्तम शिक्षण कार्य के लिए श्रेष्ठ अध्यापक के रूप मे विभूषित कर शिक्षक दिवस पर सम्मानित किया गया ।

श्री रासासिंह को विगत् दिनो विद्यालय की प्रशसनीय उपलब्धियों के लिए महावीर इटरनेशनल की ओर से भी शाल ओढ़ाकर अभिनन्दित किया गया ।

अमर स्वामी दिवंगत

आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान्, शास्त्रार्थ महारथी महात्मा अमर स्वामी जी महाराज का 4 सित को गाजियाबाद मे देहावसान हो गया । वे गत काफी समय से गले के कैंसर से पीडित थे ।

उल्लेखनीय है कि स्वामी जी महाराज रोग शय्या पर पड़े हुए भी 'निर्णय के तट पर' नामक शास्त्रार्थ सग्रह के सपादन व प्रकाशन मे लगे हुए थे ।

आर्यसमाज के प्राण, ऋषिवर के सच्चे सेनानी, पौराणिक व विधर्मियो को शास्त्रार्थ समर मे पराजित करनेवाले महात्मा अमर स्वामी जी का निधन आर्य जगत् को अपूरणीय क्षति है ।

महात्माजी को 'आर्य पुनर्गठन' परिवार की विनम्र श्रद्धाजली सादर समर्पित है ।

—सपादक

निरीक्षक : दत्तात्रेयआर्य प्रधान संपादक : रासासिंह संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य फोन कार्या : 21010

सम्पादकीय —

घेराव जोशी का नहीं, शंकराचार्य का करिए

"पीठ शंकराचार्य" के पद-त्याग को लेकर कांची पीठ के पूर्व शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती गत एक माह से विवाद का केन्द्र बने हुए हैं।

इस संदर्भ मे जहाँ एक ओर स्वामी जयेन्द्र सरस्वती का कहना है कि उन्होने पद-त्याग अपनी इच्छा से किया है, वही दूसरी ओर पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देवजी का कहना है कि उन्होंने स्वय पद नही छोडा अपितु उन्हे बलात् निकाला गया है। क्यो निकाला गया? इस पर उनका कहना है कि स्वामी जयेन्द्र सरस्वती सती-प्रथा के और हरिजनो के मंदिर प्रवेश के पक्षधर हैं और उनके यह विचार पौराणिक धर्म के विरुद्ध हैं।

उपर्युक्त संदर्भ मे हमारा कहना है कि यदि स्वामी जयेन्द्र सरस्वती को अपने उक्त विचारो के कारण पद-त्याग के लिए बाध्य होना पडा, तो वे बधाई के पात्र हैं। इसके साथ ही देवराला के रूप कंवर सती काण्ड को लेकर राजस्थान के मुख्यमन्त्री जोशी का घेराव करनेवाली महिलाओ को हमारा सुझाव है कि वन्हे घेराव बेचारे जोशी का नही वास्तविक अपराधी पुरी के शंकराचार्य का करना चाहिए और प्रबुद्ध जनो को चाहिए कि अपने तुच्छ राजनैतिक स्वार्थों के लिए सतीप्रथा जैसी कुरीति को प्रोत्साहन देने वाली भारतीय जनता पार्टी का बहिष्कार करें।

रूपकंवर सतीकांड राजस्थान के आर्यसमाजियो के लिए भी लज्जा का विषय है। और उनकी अकमण्यता का परिचायक है।

आर्यसमाज और हिन्दी

किसी भी देश की अखण्डता व प्रगति के लिए किसी भी एक सम्पर्क भाषा का होना आवश्यक है महर्षि दयानन्द इस तथ्य को समझते थे।

उनकी मातृभाषा गुजराती थी। लेकिन उन्होने हिन्दी को अपनाया, क्योकि एक मात्र हिन्दी ही समस्त देश मे सम्पर्क भाषा का काय कर सकती है।

स्वामी जी की मृत्यु के के पश्चात आर्यसमाज हिन्दी के प्रसार प्रचार मे, अग्रणी रहा। यहा तक कि पंजाब मे उसे अपने हिन्दी प्रचार के कारण अकालियो का कोप भाजन भी बनना पडा।

भारतवर्ष की एकता हिन्दी से ही सम्भव हैं, यदि इस सत्य को दयानन्द की तरह स्वतन्त्र भारत के प्रशासक भी समझ जाते तो आज देश टूटने की परिस्थितियों मे न होता।

—वीरेन्द्र आर्य

राष्ट्रवादी युवा मुस्लिम नेता : एम.ए. नकवी

एम ए नकवी, अध्यक्ष इंडियन मुस्लिम यूथ कान्फ्रेंस अपने राष्ट्रवादी विचारो के कारण गत कई वर्षों से जहां मुस्लिम कट्टरपंथियो के रोष के पात्र रहे हैं, वही दूसरी ओर उन्हे राष्ट्र के सभी देश भक्त नागरिको से भारी सम्मान भी प्राप्त हुआ है। मेरठ व दिल्ली के दंगो पर भी उनके विचार पक्षपात रहित और सत्यता से ओत-प्रोत हैं। हाल ही मे 'धर्मयुग' को दिए उनके साक्षात्कार का अवलोकन कीजिए .—

★ क्या कारण है कि आजादी के 40 साल बाद भी सांप्रदायिकता का जहर बढता ही जा रहा है?

* इसका श्रेय हमारे राजनीतिज्ञो को जाता है, जिन्होने वोटो के लालच मे साम्प्रदायिक तत्वो, विशेषकर मुस्लिम समुदाय की कट्टरपंथी ताकतो को प्रोत्साहन और राजनीतिक संरक्षण दिया है, आज तो आप देखिए, राजनैतिक दलो मे कट्टरपंथी मुस्लिम नेतृत्व पैदा करने की जैसे होड लगी है सैयद शहाबुद्दीन (जनता पार्टी), जेड आर अंसारी, तारिक अनवर (कांग्रेस-इ), आजम खां (लोकदल-ब), रशीद मसूद (लोकदल-अ)।

★ क्या आप मानते हैं कि आजादी के बाद मुस्लिम समुदाय सरकार के पक्षपातपूर्ण रवैये का शिकार हुआ है?

* नहीं मैं ऐसा नही मानता, हिन्दुस्तान में आजादी के बाद इस्लाम जितनी तेजी से पनपा है और उसे सुरक्षा मिली है, वैसा तो पाकिस्तान तथा अरब देशो मे भी नही हुआ है।

★ तो फिर क्या कारण है कि मुस्लिम समुदाय ने नरमपंथियों और सुधारवादियो की अपेक्षा कट्टरपंथी साम्प्रदायिक नेतृत्व को जल्दी मान्यता और समर्थन दिया है?

* मोहम्मद अली जिन्ना ने जिस तरह अपनी शर्तों पर पाकिस्तान लिया, उससे मुस्लिम समुदाय मे यह भ्रांति पैदा हो गयी कि कट्टरपंथी नेतृत्व ही उनके हितो की रक्षा कर सकता है, मांगें पूरी करा सकता है।

★ मेरठ दंगो मे पुलिस - पी ए सी पर साम्प्रदायिक होने का आरोप दोहराया गया है?

* देखिए, ये सब सुरक्षाबलो का मनोबल गिराने की साजिश है, आप पुलिस-पी ए सी को जालिम तो कह सकते हैं, पर साम्प्रदायिक नही छात्रो, अध्यापको, वकीलो या दूसरे कर्मचारियो को हडताल के दौरान पी ए सी. का जो रवैया रहता है, वही दंगो के दौरान भी रहता है वह हमलावर पर हमले का काम करती है ईंट का जवाब डंडे से देती है बम का गोली से। लेकिन यह भी गलत है। लोग अपनी साम्प्रदायिकता छुपाने के लिये जिम्मेदारी पुलिस पी.ए सी. पर थोप देना चाहते हैं।

★ साम्प्रदायिकता से निबटने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

* राजनीतिक दल वोटो की राजनीति से बाज आये, सरकार सम्प्रदाय विशेष के तुष्टिकरण की नीति छोड़े, राष्ट्र की मुख्य-धारा से जुडी सोचवाली प्रगतिशील ताकतों को प्रोत्साहन दे और जनसाधारण मे इन सांप्रदायिक, कट्टरपंथी ताकतों को बेनकाब किया जाये बाकी इनसे निबटने का कार्य जनता खुद कर लेगी।

सत्यता, सत्साहस और स्पष्टवादिता जैसे सद्गुणो से अलंकृत श्री नकवी को हमारी हार्दिक बधाई।

—वीरेन्द्र आर्य

(शेष पृष्ठ 5 का)

यह गिरोह खालसा परम्पराओ का कडाई से पालन करने वाला गुरुद्वारो का दुरुपयोग को बुरा समझने वाला और दर्शनसिंह रागी द्वारा स्वर्ण मन्दिर में छिपे लोगों को बाहर निकाले जाने की कमजोर कोशिशो का समर्थक और निर्दोष स्त्री-पुरुषो को अंधाधुंध हत्या करने के बजाय अपनी हिट लिस्ट के अनुसार खास-खास लोगो को निशाना बनाने पर चलता है। इस लिस्ट मे पांच जनरल और दो कर्नल हैं। इनमें राजनितिज्ञ और पत्रकार हैं। हिन्द समाचार समूह के विजय कुमार चोपडा का नाम सबसे ऊपर है और मेरे जैसे लोग भी हैं। रिबेरो के अनुमान के अनुसार सदस्यों की संख्या 30 से 100 के बीच है।

इन गिरोहो को हथियारो की पूर्ति मुख्यत पाकिस्तान से होती है। अब खालिस्तानियो को हथियारो का मूल्य चुकाना पडता है। खालिस्तानी बैंको मे डकैती डालकर ये धन इकट्ठा करते हैं। आतंकवादियों में पाकिस्तानी जेलों मे प्रशिक्षण दिया जाता रहा है।

आतंकवादियो मे अधिकांश किसान परिवारो के हैं और उनमें कुछ स्नातक हैं। अधिकांश मैट्रिक हैं। दर्जन से अधिक महिलाएं हैं जिन्होने आतंकवादियों को या तो शरण दी है या उनके लिए कार्य किया।

आतंकवादी देश के गुरुद्वारो का उपयोग अपने इस कार्य के लिए लगातार कर रहे हैं। स्वर्ण मन्दिर भी इससे अछूता नही है।

खालिस्तानी आतंकवादियो का शिकार होनेवालो में भी परिवर्तन हुआ है। पहले अधिकतर हिन्दू होते थे, पिछले छः माह से ज्यादातर सिख रहे हैं।

पुलिस कमिश्नर जुलियस रिबेरो और राज्यपाल सिद्धार्थ शंकर दोनो ने आतंकवाद को समाप्त करने की दिशा में अपनी परिपक्वता का परिचय दिया।

वे कहते हैं कि जिस दिन वे और उनकी पत्नी अंगरक्षकों के बिना निर्भय होकर स्वर्ण मंदिर जा सकेंगे तब ही वे मान सकते हैं कि पंजाब अपनी पहले जैसी स्थिति में आ गया है।

हिन्दू और आर्य में अंतर

मांगे राम आर्य, प्रधान, आर्य समाज, अहमद नगर (महाराष्ट्र)

"आर्य' हिन्दू नही हो सकता क्योकि आर्य शब्द की परिभाषा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज ने अपनी कृति आर्योद्देश्य-रत्नमाला क.स 4) मे इस प्रकार लिखी है—आर्य जो श्रेष्ठ स्वभाव धर्मात्मा, परोपकारी सत्यविद्यागुण-युक्त और आर्यावर्त्त देश मे सब दिन से रहने वाले हैं, उनको "आर्य" कहते हैं। इसी प्रकार क स, 42 में दस्यु (अनार्य) अर्थात् अनाडी, आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक डाकू चोर, हिंसक जो कि दुष्ट मनुष्य हैं, वह दस्यु कहाता है। जैसे "आर्य' श्रेष्ठ और "दस्यु" दुष्ट मनुष्य को कहते हैं वैसे ही मैं भी मानता हूँ। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश क स 29)।

"हिन्दू" शब्द हमारी सस्कृति का नही है। यह विदेशी भाषा अरबी तथा फारसी का है, जिसके अर्थ काला। काफिर और चोरादि होते है, जो दस्यु अनार्य शब्द का पर्याय-वाची है, "आर्य शब्द का ही नहीं। इसलिए "आर्य" हिन्दू नही हो सकता। और आगे देखिये महर्षि दयानन्दजी महाराज क्या कहते हैं— आर्यो ब्राह्मणकुमार्यो। पाणिनि सूत्रम्। राजा भागीरथ के समय ब्रह्मचारी और ब्राह्मण का नाम "आर्य" था ऐसी व्यवस्था होते हुए हमारे देश का नाम, आर्य स्थान "आर्यखण्ड' होना चाहिए सो उसे छोड न जाने "हिन्दुस्तान" यह नाम कहा से निकला ? भाई लोगो सुनो ! हिन्दू शब्द का अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि और स्थान कहने से काले, काफिर, चोर लोगो की जगह अथवा देश, ऐसा अर्थ होता है, तो भाई इस प्रकार का बुरा नाम क्यो ग्रहण करते हो ? और अर्थात् आर्यश्रेष्ठ अथवा अभिज्ञात इत्यादि और प्रवर्तक कहने से ऐसो का देश अर्थ आर्यावर्त्त का अर्थ श्रेष्ठो का देश, ऐसा होता है। सो भाई ऐसे श्रेष्ठ नाम को तुम क्यो स्वीकार नही करते ? क्या तुम अपना मूल का नाम भी भूल गये हो ! हम लोगो की यह स्थिति देखकर किसके हृदय को क्लेश न होगा, सब को ही होगा। अस्तु सज्जन जन ! अब हिन्दू इस नाम का त्याग करो और आर्य तथा आर्यावर्त्त इन नामो का अभिमान धरो। गुण भ्रष्ट हम लोग हुए तो हुए परन्तु नाम भ्रष्ट तो हुमे न होना चाहिए। ऐसी आप सबो से मेरी प्रार्थना है। ओ३म् शान्ति। शान्तिः। शान्तिः।

(उपदेश मजरी व्याख्यान न 8-स्वामी दयानन्द सरस्वती)

इस उपरलिखित व्याख्यान से महर्षि के दुःख का पता चलता है। इस पर भी जो आर्य समाजी सज्जन अपने लेखो मे "आर्य" (हिन्दू) लिखते हैं और आर्य व आर्यत्व को छोडकर हिन्दू तथा हिन्दुत्व का दम भरते हैं, वह महर्षि की प्रार्थना व मान्यता के विरुद्ध बर्तते हैं। ऋषि सिद्धातो को छोडकर ऐसा जो अपने निज विचारो से कर रहे हैं वह गहरी भूल पर हैं। कोष्ठ मे हमेशा पर्यायवाची शब्द लिखा जाता है। हिन्दू शब्द का एक मात्र समानार्थक शब्द दस्यु (अनार्य) है जिस को आप हिन्दू (अनार्य) या दस्यु (हिन्दू) लिख सकते हैं। क्या आप आर्य (अनार्य) और (दस्यु) लिख सकते हैं ? कदापि नही। इस प्रकार लिखना अनुचित है, क्योकि इन दोनो शब्दो के अर्थ भिन्न-भिन्न सो आर्य (हिन्दू) लिखना सार्थक नही भ्रम मूलक है और त्यागने योग्य है। इसलिए मेरा सभी आर्यसमाजी विद्वानों, लेखकों और पत्रकारो से नम्र निवेदन है कि वह देव दयानन्द के सिद्धातो को दृढतापूर्वक अपनायें और अपने लेखो और उपदेशो मे हिन्दू शब्द का खण्डन और आर्य शब्द का मण्डन इसे सर्वत्र क्रिया मे लायें, जिससे वैदिक सस्कृति की रक्षा होवे। परमेश्वर आर्यो को आर्यत्व ग्रहण करने और हिन्दुत्व को छोडने की शक्ति और सदबुद्धि प्रदान करे जिससे वह अपने धर्म, सस्कृति और सभ्यता का प्रचार प्रसार करने मे सफल होवे। आर्य नेता असत्य को छोडकर सत्य को धारण करें, यही वेद का सदेश है और गुरु दयानन्द का उपदेश है।

ओ३म् शम्।

'वैदिक धर्म्म'

— डा हरिशंकरजी शर्मा डी लिट् —

'वैदिक धर्म्म विश्व व्यापी है, क्यो सकीर्ण बनाएँ हम,
कल्याणी वाणी ऋषियो की, सबको क्यो न सुनाएँ हम।
वैदिक धर्म्म प्रेम का प्रेरक, वैर-वृक्ष का नाशक है,
मानव-धर्म्म-दिवाकर है वह, उज्जवल ज्ञान-प्रकाशक है।

विश्व बन्धुता भर हृदयो मे सदाचार की ओर बढे
'मानवता' के उच्च शिखर पर, सुदृढ धारणा धार चढे।
जो चरित्र की कडी कसौटी पर, पहले कस जाते है,
वही वीरवर भ्रान्तजनो को, शुभ सन्मार्ग सुझाते हैं।

'ब्राह्मण' ज्ञानी उठे, देश का मोह-तिमिर, अज्ञान हरें,
'क्षत्रिय अत्याचार मिटाकर, सत्याचार प्रचार करे।
'वैश्य' अभाव दूर कर सबका, जीवन वस्तु प्रदान करे,
'शूद्र' लोक की सच्ची सेवा करने मे अभिमान करे।

कर्म्म-योग मे हँस-हँस सकट सहना 'तप' कहलाता है,
तजना पडे धर्म्म-हित जो कुछ, वही त्याग' पद पाता है।
'त्याग तपस्या' रुष्ट हो गये, आओ इन्हे मनाएँ फिर,
'त्यागी' और तपस्वी' बनकर, एक बार दिखलाएँ फिर।

शुभ सकल्प युक्त सब मन हो, तन परिपुष्ट अरोगी हो,
धन का स्रोत धर्म्म-ध्रुव बना हो जन न विलासी भोगी हो।
स्वार्थवाद का भूत भयकर, कभी न विश्व विघातक हो,
दानवता का दम्भ न मौलिक मानवता का पातक हो।

ऋषि-शोणित से सिंचित होकर जो फुलवारी फूल रही,
वैदिक वायु विकम्पित देखो, झुक झूमर-सी झूल रही।
जिसकी सुखद सुगन्ध विश्व को, बना रही है मस्ताना
मिटने कभी न देना उसको, चाहे तुम खुद मिट जाना।

समाजों पर अनधिकृत कब्जों की सूचना द

देश की अनेक समाजो पर अनार्यो व असामाजिक तत्वो ने अनधिकृत रूप से कब्जे किए हुए हैं। आर्य समाज अजमेर ऐसी समाजो की जानकारी प्राप्त करना चाहता है।

आर्य सज्जनो से निवेदन है कि उक्त समाजो की सूचना विवरण सहित हमे भजने का कष्ट करें।

—मत्री

राजस्थान प्रतिनिधि सभा का इतिहास

राजस्थान के आर्य जनों को यह जानकर हर्ष होगा कि हमारे प्रांत की आर्य प्रतिनिधि सभा अपने जीवन के 100 वर्ष पूर्णकर द्वितीय शताब्दी मे प्रविष्ट हो रही है। इस उपलक्ष मे सभा का शतवर्षीय इतिहास लिख कर प्रकाशित किया जायेगा। इतिहास लेखन के लिए जो समिति हमारी सभा ने गठन की है उसका सयोजक मुझे नियुक्त किया गया है। अत आपसे प्रार्थना है कि राजस्थान की आर्य समाज के अधिकारीगण अपनी आर्यसमाजो की पुरानी वार्षिक रिपोर्ट तथा अन्य आवश्यक जानकारी अविलम्ब मुझे भेजें।

—भवानीलाल भारतीय

बी-3, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़—160014

वेद प्रचार समारोह

आर्यसमाज उदयपुर में दिनाक 19 से 23 अगस्त तक वेद प्रचार समारोह मनाये गये, जिसमें आर्यजगत के सुप्रसिद्ध चिंतक प्रवक्ता श्री महात्मा आर्य भिक्षु जी ज्वालापुर (हरिद्वार) के प्रवचन एव श्री विजय सिंहजी 'विजय' इन्दौर के मधुर भजनोपदेश हुए।

इसी अवसर पर श्रीमती मालती जी अग्रवाल उपप्रधाना के प्रयत्न से महौला आर्यसमाज की स्थापना भी की गई।

आर्यसमाज शाहपुरा द्वारा वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया।

—मंत्री

पंचम् श्री घूडमल आर्य पुरस्कार स्वामी विद्यानन्द सरस्वतीजी को

हिण्डौन सिटी। स्थानीय नगर आर्यसमाज हॉल में 9 अगस्त से 16 अगस्त रक्षाबन्धन से श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत यजुर्वेद ब्रह्म पारायण का सफल आयोजन स्वामी ओमानन्द जी महाराज के आचार्यत्व मे उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सत्यपाल सरल के भजनोपदेश तथा प्रसिद्ध अनुसंधानकर्ता विद्वान प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु के प्रवचन हुये।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर श्री प्रहलाद कुमार आर्य द्वारा अपने पूज्य पिताजी की स्मृति मे स्थापित श्री घूडमल आर्य पुरस्कार आर्यजगत के ख्याति प्राप्त विद्वान् सन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को उनकी पुस्तक "वेदमीमांसा" पर स-सम्मान, समारोहपूर्वक विशाल उपस्थिति मे दिया गया। सम्मान-स्वरूप उन्हे अभिनन्दन पत्र, एक शाल एव 150 रु. की राशि समर्पित की गई। समारोह का सफल सचालन डा ओमप्रकाश वेदालकार एम ए पी एच डी ने किया। —सचिव

विद्यालय भवन का शिलान्यास

डी ए वी शताब्दी पब्लिक स्कूल, जयपुर के विद्यालय भवन का 19 सितम्बर को साय 4 बजे वैशाली स्कीम के पास, छावनी मे श्री बी डी बाली के कर-कमलो द्वारा शिलान्यास होगा।

—प्रधानाचार्य

वेद प्रचार सप्ताह मनाया

आर्यसमाज, सुमेरपुर (पाली) द्वारा 17 अगस्त मे 24 अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया।

आर्य वीर दल का उद्घाटन

13 सितम्बर को आर्यवीर दल, केकडी का उद्घाटन श्री सत्यवीर शास्त्री, प्रान्तीय सचालक, आर्यवीर दल, राजस्थान के कर-कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ।

—अशोक आर्य

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बारा जिला-कोटा (राज) का 56 वां वार्षिकोत्सव दिनांक 8 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर सक्षिप्त "चतुर्वेद पारायण यज्ञ", का भी आयोजन है।

उत्सव मे स्वामी सत्यानन्द जी, गुरुकुल झज्जर स्वामी चन्द्रदेव वैदिक, हरिद्वार, श्री नरदेव जी भजनोपदेशक, भरतपुर व श्री दिनेश दत्तजी आर्य आदि आदि विद्वान महानुभाव पधार रहे हैं।

—रामकरण गुप्ता

—मंत्री

आर्यसमाज सुमेरपुर का निर्वाचन

प्रधान—श्री भवरलालजी गोयल मंत्री—श्री गणेश विश्वकर्मा

प्रचार मंत्री—श्री श्रद्धानद शास्त्री कोषाध्यक्ष—श्री कन्हैयालाल

आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

प्रो दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1 वेद, धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2 हमारी राष्ट्रीयता का आधार-मूल्य रु. 1 00
3 आचार सहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4. दी आर्य समाज हिन्दू विदाउट हिन्दूइज्म (अंग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु 75 00
5 आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही मूल्य—50 रु

अन्य प्रकाशन

1 आर्य समाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द 20 00 रु. अजिल्द 16 00
ले. लाला लाजपतराय
2 धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सेट का मूल्य रु 32-00
3 दयानन्द कथा सग्रह—मूल्य रु 3 00
4 परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण सस्थाओ का
5 परिचय)—मूल्य रु 12 00

सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला 15-भाग

(प्रत्येक समुल्लास पर स्वतंत्र ट्रैक्ट)

1- ईश्वर का नाम अनेक
2- आदर्श माता-पिता
3- शिक्षा और चरित्र निर्माण
4- गृहस्थाश्रम का महत्व
5- सन्यासी कौन और कैसा हो ?
6- राज्य व्यवस्था
7- ईश्वर और वेद
8- जगत की उत्पत्ति
9- स्वर्ग और नरक कहा है ?
10- चौके चूल्हे में धर्म नही है
11- हिन्दू की निर्बलता
12- बौद्ध और जैन मत
13- वेद और ईसाई मत
14- इस्लाम और वैदिक धर्म
15- सत्य का अर्थ तथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत् के चोटी के विद्वानो के द्वारा लिखित हैं एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान प्रो दत्तात्रेयजी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के पूरे सेट का मूल्य 8/- रुपए है।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल हैं ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द · 162
सृष्टि सम्वत् : 1972949087

। ओ३म् ।

पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष . 3 बुधवार, 30 सितम्बर, 1987
अक · 15 पं स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा नः सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

अश्विन कृ. 8 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

सार्वदेशिक सभा का महत्वपूर्ण निर्णय

आर्यसमाज में पौराणिक घुसपैठियों पर प्रतिबन्ध

आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मुख गत पाच वर्षों से आर्य समाज की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य के सम्बध में सभा द्वारा आचार्य दत्तात्रेय आर्य के सयोजन मे नियुक्त उपसमिति की रिपोर्ट विचाराधीन थी । इस बार 18 व 19 सितम्बर को केवल इसी की सिफारिशो पर विचार करने के लिए सभा के प्रधान स्वामी आनदबोध जी ने अतरग के सदस्यो तथा कुछ प्रमुख आर्य बुद्धिजीवियो की एक विशेष बैठक आमत्रित की । और दोनो दिन रिपोर्ट के प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार-विनिमय किया गया । जिसकी विस्तृत जानकारी हम 'आर्य पुनर्गठन के आगामी अक मे देंगे ।

20 सितम्बर को अतरग मे औपचारिक रूप से यह विषय पुन प्रस्तुत किया गया । जिसमे अन्य बिन्दुओ पर अनेक निर्णयात्मक निश्चय किए गए किन्तु उनमे सबसे एक उल्लेखनीय निर्णय यह था कि भविष्य मे ऐसा कोई व्यक्ति आर्यसभासद् या अधिकारी नही बन सकेगा जो ईश्वर के स्थान मे जड या किसी व्यक्ति विशेष की आराधना करता है मृतक श्राद्ध करता हो, स्थान विशेष को तीर्थ मानकर यात्रा करता हो या जन्मजात जात-पात और छुआछूत मे विश्वास अथवा व्यवहार मे उनपर आचरण करता हो तथा अन्य किसी अवैदिक कार्य मे लिप्त हो ।

कई वर्षों से अनेक आर्य पुरुषो द्वारा ऐसी शिकायतें प्राप्त होती रही हैं कि अनेक स्थानो पर आर्य समाज और उसकी शिक्षण सस्थाओ पर ऐसे व्यक्तियो का नियत्रण व अधिकार बढ रहा है, जिनका आर्यसमाज के मौलिक सिद्धातो पर पर विश्वास नही है और जो मूर्ति-पूजा, मृतक श्राद्ध व तीर्थ जैसे अवैदिक और आर्यसमाज व ऋषि दयानद के सिद्धातो के विपरीत कार्य करते रहे हैं ।

सभा मे यह भी निश्चिय किया गया कि भविष्य मे आर्यसमाज का सदस्य बनने के लिए जो प्रार्थना-पत्र दिया जायेगा उसमे सदस्यता के इच्छुक व्यक्ति के लिए उपर्युक्त आशय की घोषणा करना अनिवार्य होगा ।

उपसमिति की अन्य अनेक सिफारिशो को भी सैद्धातिक रूप से स्वीकार कर लिया गया है । जिसका विवेचन हम आगामी अक मे प्रस्तुत करेंगे ।

भूल-सुधार

'आर्य पुनर्गठन' के 15 सितम्बर के अक मे पृष्ठ 2 सपादकीय' की 9 वी पक्ति मे प्रेस व सपादकीय विभाग की मिली-जुली असावधानी से 'सती-प्रथा' के पश्चात् विरुद्ध शब्द छपने से रह गया । कृपय। पाठक सुधार लें ।

—सपादक

पंजाब में हिंसा रुक सकती है बशर्ते.....

— वीरेन्द्र कुमार आर्य —

पंजाब से मिली खबरो से पता चलता है कि पजाब की स्थिति अब पहले से कही बेहतर है । यद्यपि अब भी प्रतिदिन उग्रवादियो द्वारा किसी ना किसी हिंसात्मक कार्यवाई का समाचार मिल ही रहा है । परतु फिर भी वे अब पहले की तरह खुलकर नही खेल पा रहे हैं । और यह छिटपुट हिंसा उनकी असहायता और क्रोध की मिली-जुली प्रतिक्रिया की परिचायक मात्र ही है ।

पंजाब के पूर्व मुख्यमत्री श्री सुरजीत सिंह बरनाला का यह कथन कि उनके शासनकाल मे उग्रवादियो द्वारा मारे गए लोगो की सख्या से राष्ट्रपति शासन के दौरान मारे गए लोगो की सख्या कही ज्यादा है, सत्य हो सकती है । और आकडे भी उनकी इसदलील के पक्ष मे हो सकते हैं । लेकिन जो भी हो आज का पजाब बरनाला के समय के पजाब से कही बेहतर अवस्था मे है । पजाब के राज्यपाल श्री रे व पुलिस प्रमुख श्री जुलियस रिबैरो के सम्मिलित सद्प्रयासो से ही यह सब सभव हो सका है । आतकवादियो की गतिविधियो पर अकुश लगा है और उनकी व्यापक रूप मे से धर पकड की गई है ।

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनमे सोचने-समझने की सामर्थ्य नही होती या वे सब समझकर भी अपने तुच्छ स्वार्थों को दृष्टिगत रखते हुए वास्तविकता को नकारने की कोशिश करते हैं । और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो तस्वीर के उजले पक्ष की अपेक्षा कालिमायुक्त पक्ष की ओर देखना अधिक पसद करते हैं । तथाकथित कुछ राजनीतिज्ञो व पत्रकारो को आज के पजाब व बरनाला के पजाब मे कोई भी अतर नजर नही आत। । और यहा तक कि मुख्यग्रथियो के बयान का हवाला देते हुए वे स्थिति की भयकरता का जासूसी उपन्यासो जैसी भाषा मे वर्णन करते हैं । जबकि यदि आप मुख्यग्रथियो के बयान को सूक्ष्म दृष्टि से देखने का प्रयास करें तो वास्तविकता आपके सामने आ जाएगी । दरअसल मुख्य ग्रथियो का यह बयान भी उग्रवादियो के टूटते मनोबल का ही परिचायक है और फिर बदूक के डर से बय न देने वाले ग्रथियो की विश्वनीयता सिखो मे रह ही कहा गई है ।

पजाब क। माहौल बदल रहा है । और आशा की कुछ धुधली किरणें दिखाई दे रही हैं । जरूरत है केवल कुछ बुद्धिमता पूर्ण कदमो की-शाति की सूरज निकल आयेगा ।

पजाब-समस्या एक जटिल राजनीतिक समस्या है । परतु किसी राजनैतिक बातचीत से पूर्व वातावरण को तो उपयुक्त बन।ना ही होगा । अतएव पहल। काम हिंसा को रोकना है । श्री

(शेष पृष्ठ 6 पर

निरीक्षक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान संपादक · रामसिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   कार्या : 21010

आर्यसमाज को गम्भीर चुनौती

पुराणपंथियों की जड़ें उखाड़े बिना सती जैसी अमानवीय प्रथाएं बन्द नहीं हो सकती

गत 4 सितम्बर को राजस्थान के दिवराला गाव में हुए रूप कवर सती काड को लेकर इन दिनो देश मे एक जबरदस्त बहस छिडी हुई है। जहाँ एक ओर बुद्धिजीवियो का एक बड़ा वर्ग इस अमानवीय व धर्म विरुद्ध कुप्रथा का विरोध कर रहा है वही दूसरी ओर कुछ तथाकथित पौराणिक धर्माचार्य बुद्धिजीवी व राजनेता ऐसे भी हैं जो शास्त्रोक्त बताकर धार्मिक स्वातन्त्र्य की दुहाई देकर इसे अनुचित प्रश्रय देने का अपराध कर रहे हैं।

सती प्रथा अवैदिक है वैदिक शास्त्रो मे इसकी कहा लेश मात्र भी चर्चा नही मिलती। और न ही प्राचीन भारत मे सती होने का किसी घटना का ही उदाहरण मिलता है। क्या महाराजा दशरथ की पत्नियाँ पतिव्रता नही थी ?

जात पात छुआछूत और मृतक श्राद्ध जैसी अनेक कुरीतियो का जन्म दाता पौराणिक समाज ही सती प्रथा जैसी कुप्रथा का जनक रहा है।

अपने स्वार्थ के लिए वेदादि शास्त्रो के कथनो को तोड मरोडकर पेश करने के क्षेत्र मे पौराणिक समाज अपना कोई सानी नही रखता है। कहते हैं कि राजा राममोहन राय और अन्य समाज सुधारको से प्रेरणा प्राप्त कर लार्ड विलियम बैंटिक ने जब सती प्रथा विरोधी कानून बनाया तो तत्कालीन पौराणिको ने ऋग्वेद के निम्न मन्त्र को सती प्रथा के पक्ष मे प्रस्तुत किया

इमा नारीरविधवा सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवा सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे॥

ऋग्वेद—मण्डल 10 सूक्त 18 मन्त्र 7

मन्त्रार्थ को अपने पक्ष मे करने के लिए इन लोगो ने मन्त्र के अन्त मे विद्यमान अग्रे के स्थान पर अग्ने पाठ करके उसका निम्न अर्थ किया

सुपत्नी का लक्षण यह है कि वह वैधव्य से बचने के लिए घृतदीप जला उसका अंजन लगा बिना आख मे आसू लाए रोग शोक से रहित प्रसन्न वदन रत्नाभूषण धारण कर अग्नि (का चिता) पर आरोहण कर।

परन्तु जब किसी प्रबुद्ध महानुभाव की शका पर वेदपाठी विद्वानो से इसका पाठ कराया गया और अर्थ जाना गया तो इन महाधूर्तों की पोल खुल गई। मन्त्र का सही अर्थ यह है—

सुपत्नी वह होती है जो सुहागिन रहती हुई अजन मंजनादि और घृत के सेवन मे सदा नीरोग रहे दुःख मे अश्रुपात न कर धैर्य धारण करे अच्छे आभूषण धारण करे और आने वाली योग्य सतान को जन्म दे। और इस प्रकार तभी से सती प्रथा विरोधी कानून लागू हो गया।

इस सदर्भ मे यह भी उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द जी का ही अन्य वेद मन्त्रो के समान उपयुक्त मन्त्र का सही अर्थ करने का श्रेय प्राप्त है। वस्तुत राजा राममोहन ने तो मात्र कानून द्वारा सती प्रथा को रोकने का प्रयास किया परन्तु महर्षि ने वेद आदि शास्त्रो के आधार पर इसे अधार्मिक घोषित कर एक महान कार्य किया था। जिसके लिए समस्त नारी समाज को उनका आभारी होना चाहिए।

वर्तमान मे सती प्रथा की छिटपुट घटनाओ मे अधिकाश घटनायें राजस्थान मे घटित होती हैं। राजस्थान को एक ओर जहाँ महर्षि दयानन्द जैसे महान समाज सुधारक के जीवन के अधिकाश समय तक उनके सानिध्य मे रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वही दूसरी ओर इसी के एक कस्बे ब्यावर को सती प्रथा जैसी अमानवीय कुप्रथा का धार्मिक कृत्य कहकर समर्थन करने वाले पुरी के वर्तमान शकराचार्य स्वामी निरंजन देव को जन्म देने का दुर्भाग्य भी प्राप्त है। ये स्वामी जी हरिजनो के मदिर प्रवेश के भी विरोधी हैं। आखिर हैं तो ये पौराणिक बिरादरी के ही ? फिर कुप्रथाओं और पाखडो का पोषण व समर्थन करने वाली अपने पूर्वजो द्वारा विरासत मे मिली परम्परा का वे कैसे त्याग कर सकते हैं।

राजस्थान के कुछ राजनैतिक दलो के नेताओ ने अपने क्षुद्र राजनैतिक स्वार्थों की खातिर सती प्रथा को अपरोक्ष रूप से बढ़ावा देने का गभीर अपराध किया है। जयपुर जिला भाजपा ने तो बाकायदा एक प्रस्ताव पास कर राज्य सरकार से यह अनुरोध किया कि वह रूपकवर के देवर ससुर तथा इस काड के लिए अन्य दोषी व्यक्तियो को गिरफ्तार करने की कारवाई न करे। राजस्थान जपा के अध्यक्ष श्री कालवी के भी इस सबध मे इसी प्रकार के विचार हैं और उल्लेखनीय है कि वे दिवराला मे सती मदिर की स्थापना के अभियान मे अपना सक्रिय सहयोग मदाध राजपूतो को प्रदान कर रहे हैं। लेकिन भारतीय जनता पार्टी की अखिल भारतीय महिला मोर्चा की उपाध्यक्षा और विधायिका श्रीमती विद्या पाठक स्वय एक महिला होते हुए भी महिला हितो के विपरीत इस बर्बर प्रथा का धार्मिक और नागरिक स्वातन्त्र्य की दुहाई देकर औचित्य सिद्ध करने का दुस्साहस करती हैं। ऐसी नारी नारी जाति पर कलक नही तो और क्या है ? आप फरमाती हैं सरकार सती मन्दिर नही बनने देना चाहती है क्योंकि इससे सती को महीमान्यन प्राप्त होगा ? फिर सरकार यह क्यो भूल जाती है कि भारत की धरती पर शिव पत्नी सती के के खंडित हुए अवयव जहा-जहा गिरे श्रद्धालुओ ने उन स्थानों को शक्ति पीठ कहा और वहा महिमामही शक्ति स्वरूपा देवी की आराधना आज भी की जाती है जडूला परिक्रमा शादी विवाह आदि शुभ अवसरो पर उस सत्य भाव की पूजा प्रतीक रूप मे करते हैं ?

सती माता और सत चढ़ने की भावना बनाने के लिए मनाकर सरकार सविधान की भावना एव मूलभूत अधिकारों का हनन और लोगो की भावनाओ पर कुठाराघात कर रही है।

राजपूत स्त्रियों द्वारा जौहर करना या पति के साथ जल मरना एक आपद धर्म हो सकता है। परन्तु फिर भी वे या कोई तथाकथित सती (पति के साथ जल मरने वाली) सती न होने वाली महारानी लक्ष्मीबाई व महारानी दुर्गावती से महान नहीं हो सकती।

आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज में व्याप्त कुरीतियो और पाखड के उन्मूलन के लिए की थी। अतः आर्यसमाज का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह सती प्रथा जैसी कुत्सित प्रथा को समाप्त करने का दायित्व ग्रहण कर इसके विरुद्ध एक जोरदार अभियान चलाए।

—वीरेन्द्र आर्य

अल्पसंख्यकों की परिभाषा की समस्या

भारतीय राजनीति मे यह एक परम्परा सी हो गई है एक सभा बुलाने की जब भी भारत की एकता तथा राष्ट्रीय एकता खण्डित होते हुए देखा गया। 28 अगस्त 1986 ई को इस सभा की एक मीटिंग बुलाई गई। इस सभा ने ऐसा महसूस किया की अल्प सख्यको की सही व उचित परिभाषा दी जाये।

माईनोरिटी (अल्पसख्यक) लेटिन शब्द "माईनर" (Minor) तथा "ity" के समिश्रण से बना है। जो एक दूसरे मे पूर्ण हैं। सख्या मे कम होते हुए भी वो एक पूर्ण सख्या बनाते हैं।

अल्पसख्यको की परिभाषा कही भी पूर्ण रूप से नही दी गई है। बीसवी शताब्दी के मध्य अल्पसख्यको की सही परिभाषा न ता ब्रिटेनी शब्दकोष, ना वारसलीस की सन्धि और ना राष्ट्रसघ के द्वारा दी गई हैं। यहाँ तक की सयुक्त राष्ट्र सघ ने भी अल्पसख्यको की सही परिभाषा देने का कष्ट नही किया है, इस अल्पसख्यको को परिभ षित नही कर सके हैं।

भारत का सविधान बनाते समय भी अल्प सख्यको की धारणा को परिभाषित करते समय कठिनाई अनुभव की गई। इस तथ्य के बावजूद हमारे सविधान निर्माताओ ने इस ओर अधिक विचार (ध्यान) दिया। फिर भी इस धारणा को सक्षिप्त तथा सही रूप से परिभाषित करने का प्रयास नही किया गया। सविधान सभा के सदस्य श्री टी टी कृष्णामाचारी ने उच्च विशिष्ठ वर्ग को अल्पसख्यको की सज्ञा दी।

कानूनी व्यवस्था अल्पसख्यकों के बारे में सविधान मे अल्पसख्यक शब्द को बहुत कम स्पष्ट (प्रयोग) किया गया है। और ना ही इसके अन्तर्गत किसी वर्ग विशेष का उल्लेख किया गया है। अल्पसख्यक शब्द का प्रयोग सविधान मे केवल दो धाराओ 29 और 30 मे किया गया है। यहाँ भी इस शब्द का प्रयोग परिभाषा की दृष्टि से नही किया गया हैं। यहाँ इस धारा मे अल्पसख्यक शब्द को एक उपशीर्षक के रूप मे प्रस्तुत किया गया है न कि विषय वस्तु के रूप मे है। सविधान की धारा 366 जो विभिन्न पारिभाषिक शब्दो के अर्थ को स्पष्ट करने के लिये काम मे ली गई है। वह इस प्रकार के 30 शब्दो का अर्थ स्पष्ट करती है। किन्तु इसमे भी अल्पसख्यक शब्द को सम्मिलत नही किया गया है। यहाँ तक की सविधान निर्माता भी इस शब्द को आरक्षण की दृष्टि से प्रयोग करने मे विचलित हो जाते हैं। यह इस कारण हो सकता है कि देश का बटवारा मुस्लिम लीग द्वारा पोषित अल्पसख्यको के आधार पर किया गया था। अल्पसख्यको का प्रश्न सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष सर्वप्रथम 1957 मे केरल शिक्षा विधेयक के समय उठाया गया था। सर्वोच्च न्यायालय ने इस शब्द की व्याख्या इस प्रकार की। अल्पसख्यक शब्द को सविधान ने परिभाषित नही किया है। और किसी सक्षिप्त परिभाषा के अभाव मे यह कहा जा सकता है अल्पसख्यक समुदाय वह समुदाय है जिसकी सख्या समाज की कुल जनसख्या के आधे से भी कम है। इस 50% की व्याख्या इस प्रकार की गई है कि यदि विधेयक राज्य विधान मण्डल से सम्बन्ध रखता है, तो इसका तात्पय उस राज्य की जनसख्या के 50% से है और सघीय ससद के अधिनियम का प्रश्न आता है तो सारे देश की जनसख्या के आधार पर निर्धारित होना चाहिये।

अल्पसख्यक का शीर्षक

देश की सर्वोच्च न्याय पालिका द्वारा दिया गया सूत्र अधिक सरल और अकमणित्य है। किन्तु इसमे भी कुछ बाधायें आ सकती हैं। यह सम्भव है कि किसी राज्य की जनसख्या मे विभिन्न वर्ग बिखरे हुए हो और कोई एक समुदाय राज्य की जनसख्या के 50% प्रतिशत से अधिक ना हो तब इस दशा मे उस राज्य के सभी वर्ग अल्पसख्यक होने का दावा कर सकते हैं।

सविधान मे अल्प सख्यक शब्द की स्पष्ट परिभाषा पाने मे असफल होने पर प्रश्न यह उठता है कि देश मे अल्पसख्यको को कौन बन ता है (अल्पसख्यक वर्ग किसको कहा जाता है?) यह दृष्टिकोण इस शब्द की व्यवहारिक परिभाषा को ढू ढ निकालने के लिये मार्ग दर्शन करता है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि सविधान की धारा 29 और 30 भारत के अल्पसख्यको के हितो की रक्षा करने की गारन्टी है। धारा 29 मे कहा गया है कि नागरिको का कोई भी वर्ग जिसकी कोई विशिष्ट भाषा लिपि अथवा सस्कृति हो उसे इसे बनाये रखने का अधिकार होगा और दूसरी धारा अर्थात धारा 30 के अनुसार अल्पसख्यको के अधिकार जो कि धर्म व भाषा पर आधारित है। वे अपनी पसन्द की शिक्षण सस्थाएँ स्थापित कर सकते है। यदि हम इन दोनो धाराओ को सम्मिलित करें तो इसका तात्पर्य यह होगा कि भारतीय सविधान म तीन प्रकार के अल्पसख्यको के हितो की रक्षा की गई है। यह तीन प्रकार के अल्पसख्यक भाषा, धर्म सस्कृति पर आधारित हैं।

भाषा और धर्म के आधार पर भेद समझ मे आता है। किन्तु सस्कृति के आधार पर भेद करना कठिन प्रतीत होता है। यदि हम सस्कृति के आधार पर अल्पसख्यक वर्ग का परीक्षण करें तो भारत मे अल्पसख्यको की सख्या की कोई सीमा नही रहेगी। इसके अतिरिक्त भारत मे विभिन्न प्रकार की सस्कृतियाँ प्रचलित है। अत यह निश्चय करना कठिन हो जायेगा कि कौन अल्पसख्यक है। और कौन बहुसख्यक हैं। किन्तु भाषा और धर्म ऐसी दो वस्तुएँ है जो किसी समुदाय की सस्कृति का निर्धारण करती हैं। अत यह कहना अधिक ठीक होगा कि भारतीय सविधान म केवल दो आधारो पर भाषा और धर्म के आधार पर अथवा इन दोनो के आधार पर अल्पसख्यको को मान्यता दी गई है।

भारतीय सविधान 15 क्षेत्रीय भाषाओ को मान्यता प्रदान करता है। और हिन्दी को राष्ट्रीय अथवा सरकारी कामकाज की भाषा के रूप मे मान्यता देता है। कई राज्यो मे प्रशासनिक उद्देश्य से क्षेत्रीय भाषाओ का प्रयोग किया गया है और उन्हे स्कूल और कॉलेजो म प्रथम भाषा के रूप मे पढाया जाता है। इससे भाषा के आधार पर अल्पसख्यक वर्ग का जन्म हुआ है। सविधान की विषय वस्तु के अनुसार अल्पसख्यको की भाषा इन 15 भाषाओ से किसी एक भाषा का होना आवश्यक नही हैं। दूसरे शब्दो मे भाषा के आधार पर राज्य स्तर पर अल्पसख्यक का तात्पय सविधान की धारा 29 के अनुसार है। इस धारा मे यह कहा गया है कि नागरिको का कोई वर्ग जिसकी विशिष्ट भाषा हो वह अपनी इस भाषा को बनाये रख सकता है। चाहे उसकी सख्या कितनी भी क्यो ना हो।

भाषाओ समूह

वर्तमान भारतीय सदर्भ मे यह कहा जा सकता है कि कोई एक भाषा बोलने वाला समूह किसी खास धर्म का ही हो यह आवश्यक नही है। उदाहरण के लिये बगाल मे बगला भाषा, हिन्दू मुस्लिम, और यहा तक की ईसाईयो द्वारा भी बोली जाती है। इस प्रकार के समूह किसी क्षेत्र विशेष मे धार्मिक भेद के साथ-साथ सम न भाषाई हित भी रख सकते हैं। इसीलिये कहा जाता है कि यदि धर्म भारतीयो को लम्बवत रूप मे विभक्त करता है तो भाषा क्षितिजवत भारतीयो को विभाजित करती है। और यह विभाजन एक दूसरे पर "लीपापोती" करते हैं।

भारत मे हिन्दुत्व बहुसख्यक वर्ग का धर्म है तथा मुस्लिम सिक्ख और ईसाई तीन बडे अल्पसख्यक वर्ग हैं। 1981 की जनगणना के आकडो के अनुसार हिन्दुओ की जनसख्या 82 64% मुस्लिम 11 35%, ईसाई 2 43% सिक्ख 1 96% तथा अन्य 1 62% है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि भारत मे अल्पसख्यको का प्रतिशत 17 36% कुल जनसख्या का है। किन्तु कहानी यहाँ खत्म नही होती।

एक सापेक्षिक धारणा—

जम्मू कश्मीर	–	मुस्लिम	64 19%
लक्षद्वीप	–	मुस्लिम	94 84%
मेघालय	–	ईसाई	52 62%
नागालैंड	–	ईसाई	80 21%
मिजोरम	–	ईसाई	83 81%
पजाब	–	सिक्ख	60 75%

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सत्यार्थ-प्रकाश का ऐतिहासिक महत्व

—प्रतापसिंह शास्त्री—

अन्धेरे मे सोये हुए लोगो को जगाने की आवश्यकता है, इससे पहले कि वह सूर्य के प्रकाश को देख सकें। भूले हुए पथिक को सीधे मार्ग मे चलाने से पहले आवश्यक है कि उसको उच्च स्वर मे बतलाया जाये कि तू उल्टे मार्ग पर आ रहा है वहाँ से लौटकर इधर सीधे मार्ग पर चला आ। "सत्यार्थ प्रकाश" अविद्या अज्ञान मे सोए हुए मनुष्यो को वेदसूर्य के दर्शन के लिए सकेत करता है। इस ग्रन्थ की रचना करके ऋषि ने मानव जाति पर अवर्णनीय उपकार किया है। सत्य का ग्रहण कराना और असत्य का परित्याग कराना सत्यार्थ प्रकाश का मुख्य उद्देश्य है यही सब सुधारो का मूल मन्त्र है। सत्यार्थ प्रकाश को पढकर अनेक व्यक्तियो ने अपने जीवन का कायाकल्प किया है। आर्य समाज के महापुरुष युवा विद्वान प गुरुदत्त विद्यार्थी एम ए जो अत्यन्त मेधावी थे, वे लिखते हैं—सत्यार्थ प्रकाश को मैंने सत्तरह बार पढा, जब जब मैं इस ग्रन्थ को पढता हूँ तब-तब मुझे नई नई बातें ही मिलती हैं। यदि इस ग्रन्थ का मूल्य हजारो रुपये भी होता तो भी मैं इसे अवश्य पढता और अपनी समस्त सम्पत्ति बेचकर भी इसे खरीदता।

वास्तव मे सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से प गुरुदत्त के समान अमूल्य रत्न प्राप्त किए जा सकते हैं। आर्य समाज के नेता 'सम्राट समाचार पत्र के सम्पादक व सचालक स्व प जगदेव जो सिद्धान्ती के भाषण तो आधे से अधिक अक्षरश सत्यार्थ प्रकाश का मूलपाठ ही होते थे, उनका सत्यार्थ प्रकाश पर गहन अध्ययन था। अपने जीवन मे अनेक समस्याओ का समाधान उन्होने सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से किया।

सत्यार्थ प्रकाश मे ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषि मुनियो के वेद प्रतिपादित सारभूत विचारो का सग्रह है। वेदादि सत्य शास्त्रो के अध्ययन बिना सत्य ज्ञान की प्राप्ति सम्भव नही है। उनका समझने के लिए सत्यार्थ प्रकाश कुंजी (गाईड) का कार्य करता है। जन्म से मृत्युपर्यन्त मानव जीवन की सभी प्रकार की लौकिक और पारलौकिक समस्याओ को सुलझाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश रामबाण दवा है। महाभारत के समय नष्ट हुए विज्ञान को महर्षि दयानन्द ने इस अमर ग्रन्थ मे प्रकट किया है जिससे पाश्चात्य वैज्ञानिको का मिथ्या अभिमान झुठलाया जा सकता है और भारतीयो मे स्वाभिमान की भावनाए पैदा की जा सकती है। सत्यार्थ प्रकाश को पढे बिना कोई भी व्यक्ति ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की विचारधारा को, कार्यक्रम को भली प्रकार नहीं समझ सकता तथा अन्य विविध मतमतान्तर वाले विद्वानो के उपदेशो मे, पुस्तको मे, प्रतिपादित मिथ्या सिद्धान्तो की पहचान नही कर सकता।

आर्य समाज के मन्तव्यो पर जितनी भी शकाए किसी को हो सकती हैं वे सब सत्यार्थ प्रकाश का निष्पक्ष रूप से अध्ययन कर लेने पर स्वत ही समूल नष्ट हो जाती हैं। ऋषि दयानन्द कृत सभी ग्रन्थो का साराश सत्यार्थ प्रकाश मे मिलता है। यही कारण है कि वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश पर स्वामी वेदानन्द जी जैसे आर्य समाज के उच्च कोटि के सन्यासियो ने भाष्य-टीकाए लिखी हैं, जिन्हे पढने से सत्यार्थ प्रकाश के कठिन व दार्शनिक स्थल सरलता से समझे जा सकते है। सत्यार्थ प्रकाश के कारण ही आर्यसमाज एक आन्दोलन प्रतीत होता है। आजादी से पूर्व सत्यार्थ प्रकाश को पढने मात्र से अनेक युवक स्वतन्त्रता के दीवाने बने। काग्रेस की स्थापना से कई वर्ष पूर्व सन् 1875 मे हो सत्यार्थ प्रकाश ने स्वतन्त्रता का सदेश दिया। इस ग्रन्थ को विद्रोही पुस्तक समझा जाता रहा और आज भी समझा जाता है। स्वतन्त्र भारत के रेडियो आकाशवाणी, टी वी आदि के माध्यम से गीता कुरान के सदेश का प्रसारण हो सकता है किन्तु सत्यार्थ प्रकाश के अमरग्रन्थ शब्दो का प्रसारण करते ही आपको साम्प्रदायिक घोषित किए जाने का डर आज भी सम्भव है।

समाचार पत्रो मे आपने पढा होगा कि रामकुमार भारद्वाज को सऊदी अरब की सरकार ने केवल मात्र इसलिए जेल मे डाल दिया क्योकि वह सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर रहा था। घबराईए नही। सत्यार्थ प्रकाश वैचारिक क्रान्ति का स्रोत है, इस ग्रन्थ पर ऋषि दयानन्द के जीते जी किसी की हिम्मत न हुई कि प्रहार कर सके। किन्तु ऋषि के बलिदान के बाद विधर्मियो, विविध मतमतान्तर वालो ने सोचा अब सेनापति नही रहा, सेनापति के अभाव मे सैनिको के पाँव उखड जाऐंगे और इन आर्य समाजियो के प्रमुख ग्रन्थ पर पाबन्दी लगवाकर हम इन्हे आसानी से जीत लेंगे। किन्तु आर्यों ने ऋषि की भाति अनेक मोर्चों पर युद्ध स्तर पर कार्य प्रारम्भ कर दिए। आर्यों के बढते कदम देखकर सन् 1902 मे सबसे पहले राजनैतिक प्रहार राजनैतिक उद्देश्य से किया गया। एक हिन्दू सन्यासी आलाराम सागर ने सन्यास धर्म को बदनाम करते हुए एक सन्यासी द्वारा ही लिखित सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगवाने की माग की।

इस आलाराम सन्यासी ने, धर्म के प्रचारक ने स्वय सत्यार्थ प्रकाश के कुछ उदाहरण देकर यह सिद्ध करना चाहा कि आर्य समाज एक षड्यन्त्रकारी राजद्रोही सस्था है। इस सन्यासी ने सत्यार्थ प्रकाश व आर्यसमाज के विरुद्ध एक पुस्तिका भी लिखी, परन्तु अपनी इच्छापूर्ति मे असफल रहा। बैसे इलाहाबाद के जिला मजिस्ट्रेट मि पी हैरिसन की अदालत मे मुकदमा चला। न्यायधीश महोदय ने निर्णय दिया—'जो उदाहरण सन्यासी आलाराम सागर मे दिये हैं उनमे राजद्रोह की कोई गन्ध नही है। केवल इस बात पर दुख प्रकट किया गया है कि कुछ धार्मिक व अन्य कारणो से भारतवासी पराधीन हुए हैं। स्वामी दयानन्द ने हथियार उठाने या बगावत करने के लिए लेख नही लिखे। मुकदमा खारिज हुआ और सन्यासी आलाराम सागर से जमानत मागी गई।

सत्यार्थ प्रकाश एक ही व्यक्ति के दो हाथ :

आर्य मुसाफिर प लेखराम ने कहा था— सत्यार्थ प्रकाश उस मनुष्य के समान है जो एक हाथ मे औषधि की बोतल और दूसरे हाथ मे रोगी के लिए आयोग्यदायक भोजन लिए खडा हो। यदि उत्तरार्ध भाग औषधि है तो पर्वार्द्ध वेद रूपी स्वास्थ्य का मडन कर रहा है। मडन रूपी भोजन स्वस्थो के लिए है परन्तु खण्डनरूपी औषधि और मण्डनरूपी आहार रोगियो के लिए आवश्यक है।

ब्रिटिश सरकार का संदेह :

कुछ वर्षों के बाद पार्लियामेन्ट के सदस्य सर वेलेण्टाइन चिरोल ने भी आर्यसमाज तथा सत्यार्थ प्रकाश को राजद्रोह की प्रेरणा देने वाला कहकर सदेह प्रकट किया। चिरोल स्वय लेखक व पत्रकार थे, पार्लियामेन्ट के सदस्य भी थे। सासद, पत्रकार व लेखक के नाते इनकी बात मे वजन था किन्तु यह प्रहार भी अमर ग्रन्थ का कुछ न बिगाड सका केवल पार्लियामेन्ट तथा चन्द समाचार पत्रो मे प्रकट होकर नक्कार खाने मे तूती की आवाज बनकर रह गया।

रियासत के शासकों द्वारा प्रहार :

सन् 1909 ई में पटियाला रियासत की सरकार ने वहाँ के 76 आर्य समाजियो के विरुद्ध षड्यन्त्र का एक सगीन मुकदमा बनाया। इस मुकदमे मे सत्यार्थ प्रकाश को राजद्रोह का प्रचार करने की प्रमुख पुस्तक बताया और इसे जब्त करने की माग की किन्तु रियासत की सरकार पाबन्दी नही लगा सकी। आर्यसमाज ने इस सरकार का मुकाबला किया। अदालत मे केस चला, न्यायालय ने सत्यार्थ प्रकाश को राजद्रोह की पुस्तक मानने से इन्कार कर दिया। पर विरोधी भी चैन से नही बैठे। इसी प्रकार की योजनाए बनाते रहे।

मुसलमानों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश का विरोध :

पंजाब में सर फजल हुसैन, सर सिकन्दर हयात खाँ, सर छोटूराम जैसे महात्मा हस राज के शिष्य युनियनिष्ट पार्टी की सरकार के सञ्चालक थे। सन् 1926 मे पजाब के मुसलमानो ने 14वें समुल्लास को दिखाकर सत्यार्थ प्रकाश पर आरोप लगाया कि इस ग्रन्थ मे इस्लाम की आलोचना की गई है। अत प्रतिबन्ध लगाया जाए। बडा विवाद खडा हो गया। इस पर हजारो आर्य समाजियों ने हस्ताक्षर करके पजाब सरकार को लिखा कि हम सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिए हर प्रकार का बलिदान देने को तैयार हैं। पजाब—→

की सरकार साम्प्रदायिक सद्भाव कायम रखना चाहती थी अतः वह मुस्लिम लोगों के दबाव में नहीं आई और मुसलमानों का यह प्रयत्न भी असफल रहा।

सिन्ध सरकार द्वारा प्रहार :

26 जून 1943 ई. में इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर मुस्लिम सम्प्रदाय ने पुनः प्रहार किया। सिन्ध में मुस्लिम मन्त्रिमण्डल था। मन्त्रिमण्डल ने सिन्ध सरकार की विज्ञप्ति में कहा कि सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए सरकार विचार कर रही है। यह सुनकर साम्प्रदायिकता के गढ़ समझे जाने वाले विशाल पंजाब में जो लाहौर और रावलपिण्डी तक फैला हुआ था, सर्वत्र आर्यजगत में खलबली मच गई। सिन्ध सरकार को 8 जुलाई 1943 को घोषणा करने पर विवश होना पड़ा—"सिन्ध सरकार सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध कोई भी कार्यवाही नहीं करना चाहती।"

मुस्लिम लीग द्वारा विरोध :

लार्ड कर्जन की फूटनीति व उसका डिवीजन को बंगाल से असम करने की नीति व कोहाट व जम्मू के दंगों से आर्य जगत् को काफी ठेस पहुंची थी। लार्ड मिन्टो के संकेत पर सन् 1906 में मुस्लिम लीग स्थापित हो चुकी थी। आर्यसमाज व आर्यसमाजी नेता सर छोटू राम के प्रभाव से अब तक साम्प्रदायिक नेता मि. जिन्ना पंजाब में आता हुआ घबराता था किन्तु सन् 1943 के अगस्त मास में मुस्लिम लीग ने लाहौर में एक मीटिंग की। मीटिंग में पुनः 14 वें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु विचार विमर्श किया गया। प्रस्ताव पंजाब सरकार को भेज दिया गया। किन्तु इस बार भी असफलता ही हाथ लगी। अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर कोई आंच न आई।

सिन्ध सरकार द्वारा पुनः सत्यार्थ प्रकाश पर पाबन्दी

सिन्ध सरकार ने 8 जुलाई 1943 की घोषणा के बाद भी 16 मास के बाद अर्थात 1944 में पुनः भारत रक्षा विधान की आड़ लेकर शान्ति व सुरक्षा के नाम पर अपने सिन्ध प्रान्त में 14 वें समुल्लास के प्रकाशन व मुद्रण पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इसकी सभी समाचार पत्रों में घोर निन्दा की गई, हिन्दू संगठनों ने भी विरोध करके सरकार की निन्दा की, आर्य जगत् में पुनः खलबली मच गई। 7 मई 1944 को समस्त आर्य जगत में सत्यार्थ प्रकाश दिवस मनाया गया। सिन्ध सरकार को पुनः अपना निर्णय वापस लेना पड़ा।

विविध मत मतान्तर वाले हिन्दुओं द्वारा विरोध :

केवल अंग्रेजों और मुसलमानों ने ही सत्यार्थ प्रकाश पर प्रहार किए हों ऐसी बात नहीं। हिन्दू भी उनसे पीछे नहीं रहे। हिन्दुओं में अनेक सनातन धर्मी विद्वान ऐसे हुए जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश व आर्यसमाज के विरुद्ध जिहाद छेड़ा, पुस्तकें लिखी, शास्त्रार्थ किए और पराजित होकर अपना सा मुंह लेकर रह गये।

पौराणिक पण्डित ज्वाला प्रसाद मिश्र ने 'दयानन्द तिमिर भास्कर' पुस्तक लिखी जिसमें सत्यार्थ प्रकाश के 11 समुल्लासों का प्रतिवाद किया। आर्यसमाज के विद्वान पं. तुलसीराम सामवेद भाष्यकार ने भास्कर प्रकाश लिखकर करारा उत्तर दिया। यह सिलसिला यहीं बन्द नहीं हुआ। यह तो पक्ष विपक्ष के विद्वानों का लम्बा सिलसिला चला। शास्त्रार्थ होता रहा। पं. रामचन्द्र देहलवी, ठाकुर अमर सिंह, दादा बस्तीराम, कंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, पं. बुद्धदेव विद्यालंकार आदि विद्वानों ने आर्यसमाज का प्रचार करते हुए वेद प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों का मण्डन किया एवं अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के उदाहरण देकर इस ग्रन्थ को अमर कर दिया।

पता—आट वैदिक हाई स्कूल,
हिसार (हरि.)

पत्र बोलते हैं....

सती प्रथा और आर्यसमाज

आदरणीय दत्तात्रेय जी,

राजस्थान में इतना शर्मनाक सतीकाण्ड हो जाय और आर्यसमाज तटस्थ प्राय रहे यह कैसे हो सकता है? जब तक देश में अज्ञान और अन्याय है — कहीं भी, आर्य समाज का कार्य अधूरा है। राजस्थान सरकार एक सती विरोधी कानून बनाने जा रही है। लेकिन क्या केवल कानून निर्माण से सामाजिक कुरीतियां नष्ट हो सकती हैं? शारदा एक्ट को ही लीजिये। आज साठ वर्ष उपरान्त भी राजस्थान में बाल विवाह होते हैं। कानून भी तभी सफल हो सकते हैं जब उन की सहायता के लिये प्रबल जनमत हो। राजशक्ति और जनशक्ति मिल कर देशोद्धार का कार्य करें, आज यही रणनीति नजर आती है।

तो फिर हम आर्य कहलाने वाले सज्जन इस प्रसंग में क्या करें?

कम से कम डी ए वी कालिज, अजमेर के सजग छात्रों की एक टीम एक अध्यापक के नेतृत्व में, दिवराला जाकर इस निर्मम हत्याकाण्ड की सामाजिक जांच करे और इस का प्रतिवेदन प्रकाशित हो। प्रश्न जो उठते हैं वह यह हैं—

(1) इस जघन्य कार्य की पृष्ठभूमि क्या है?
(2) क्या बेचारी विधवा को इस कार्य के लिये मजबूर किया गया? या फिर
(3) क्या वह अपनी मर्जी से चिता पर सवार हुई?
(4) क्या उसे ड्रग दिया गया था?
(5) क्या उसने चिता से भागने की कोशिश की?
(6) सती होने/करने का निश्चय कब किया गया?
(7) निश्चय और क्रियान्वित में कितना समयान्तर था?
(8) क्या इस बीच इस हत्या को रोका जा सकता था?
(9) स्वामी दयानन्द के इस बात में क्या मन्तव्य हैं?
(10) हमारा (आर्य समाज का) इस बात में क्या कर्त्तव्य है? इत्यादि

कृपया मेरे पत्र को अपने प्रतिष्ठित पत्र में स्थान देने एवं अन्य आर्य पत्रिकाओं से आग्रह करेंगे कि वह भी इसे यथोचित स्थान दें ताकि देश व्यापी जनमत, इस सबंध में सजग और सचेष्ट हो। आशा है आप इस आन्दोलन को नेतृत्व देंगे।

—के हूजा

सिनेमा स्लाइडों द्वारा प्रचार

'आर्य पुनर्गठन' खोजपूर्ण एवं वैदिकता से ओत-प्रोत लेख प्रकाशित करने में अपना एक विशेष स्थान रखता है। समाचार-पत्र के अतिरिक्त सिनेमा स्लाइडों द्वारा भी आर्यसमाज का प्रचार होना चाहिए।

—शिवनाथ आर्य "टेलर"
अध्यक्ष, आर्यवीर दल, देहरादून

अल्पसंख्यकों की परिभाषा

(शेष पृष्ठ 3 का)

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि देश में अल्पसंख्यक शब्द की धारणा एक सापेक्षिक धारणा है चाहे वह भाषा के आधार पर हो अथवा धर्म के आधार पर हो। लोगों की एक संख्या, भाषा एवं धर्म के आधार पर द्विस्तरीय स्थिति रखती हैं। अर्थात् यह जनसंख्या एक दृष्टि से तो बहुसंख्यक है। किन्तु दूसरी दृष्टि से अल्प संख्यक है। भारत में अल्पसंख्यक कोई स्थाई धारणा नहीं है। देश की जनसंख्या आर्थिक, सामाजिक कारणों से परिवर्तनशील होती है। अतः धार्मिक अथवा भाषाई एकरूपता कभी भी स्थाई रूप से प्राप्त नहीं हो सकती है। यह एक निरन्तर प्रक्रिया है।

इस सम्बन्ध में यह महत्वपूर्ण है कि हमारा संविधान देश के सभी भागों में अवसर की समानता की गारन्टी नागरिकों में बिना किसी भेदभाव के प्रदान करता है। देश का प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी भी भाग में रहता हो उसे पूर्ण रूप से अपने विकास का अधिकार प्राप्त है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भारत में अल्पसंख्यक वास्तव में हैं। काल्पनिक रूप से नहीं उनकी विशेषता विभिन्न तथा रुचिकर है। किसी क्षेत्र-विशेष में कम संख्या के होने के कारण वे ईर्ष्या एवं उत्साह के साथ राज्य में अपना पृथक् अस्तित्व बनाये रखने के लिये राज्य से अपने पक्ष में प्रयास अथवा उपचार कराते रहते हैं।

(ऑर्गेनाइजर से साभार)

दयानन्द कालेज अजमेर के घेवरचन्द पर डिक्री तथा अभियोग

दयानन्द कॉलेज, अजमेर के कृषि विभाग मे कार्यरत श्री घेवरचन्द जैन (कोटेवा) के विरुद्ध कालेज की ओर से सन् 1969 मे न्यायालय मे एक वाद प्रस्तुत किया गया था कि उन्होंने कॉलेज कृषि विभाग के दूध आदि के रु-59, 128/- का गबन किया । जिसमे से ৪ 000/- रु उनसे प्राप्त होने पर रु 51, 128/- उनकी ओर बाकी रहा । गत 18 वर्षों से यह वाद न्यायालय में विचाराधीन था जिसका दिनाक 27-7-87 को कॉलेज के पक्ष मे निर्णय हुआ और घेवरचन्द के विरुद्ध उपरोक्त राशि की डिक्री जारी की गई। इस सम्बन्ध मे उनके विरुद्ध तीन फौजदारी अभियोग भी सन् 1969 से न्यायालय मे विचाराधीन हैं।

दयानन्द कॉलेज के पूर्व लेखा लिपिक घेवरचन्द (कोटेवा) जैन के विरुद्ध न्यायालय ने कॉलेज के पक्ष मे लगभग पचास हजार रुपये की डिक्री दी है। इस सम्बन्ध मे इच्छुक सज्जन मन्त्री, आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर से सम्पर्क करे।

दिवराला का सती काण्ड ?

है महा दुखद व शर्मनाक, जो काण्ड हुआ दिवराला में।
धर्मान्ध जनो ने भस्म करी, इक नारि अग्नि की ज्वाला में।।
सीकर के गाव दिवराला मे अठारह वर्षीय रूप कवर।
क्या सती हुई या जुलाई गई, वह अबला नारी अग्नि पर।।
क्या यही धर्म है नारी का, कोई तो हमे बता दीजे।
किस वेद-शास्त्र मे है ऐसा, कोई तो हमे जता दीजे।।
यदि पतिव्रत धर्म यही है तो, सब विधवाए जल जावे क्या?
जो जलकर सती नही होती, वे धर्म हीन कहलावे क्या?
यदि पतिव्रत धर्म यही होता तो राम की तीनो माताए।
अनसूया-सावित्री जैसी, जलजाती यह सब विधवाए।।
जो मुगलकाल में सती हुई, वह तो इक बात निराली थी।
इस भांति उन्होने जौहर कर, दुष्टो से लाज बचानी थी।।
कुछ बाते हैं जो सास-ससुर, यह विधवा को समझाते हैं।
जीवेगी तो दुख मानेगी, मरजाय तो स्वर्ग बताते हैं।।
इस भय व लालच मे आकर, यह सतीकाण्ड हो जाते हैं।
फिर बनाके मठ व मेले लगा, पाखडी मौज उडाते है।।
क्या यही गति है नारी की, क्या उसकी यही कहानी है।
क्या 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' शास्त्रो की मिथ्या वाणी है।।
क्या यही वीरता युवको की, तलवार जो ले शमशान खडे।
काटो कुरीति पाखडो को, यदि हो तुम सच्चे वीर बडे।।
यदि शक्ति है कुछ भी तुम मे, पजाब की जाके रक्षा करो।
निर्दोषो को जो मार रहे उनसे जूझो मारो या मरो।।
तुम नही जानते धर्म है क्या, व सत्य है क्या, विज्ञान है क्या?
यह अन्ध प्रथाए मानते हो, नही जानते हो इन्सान है क्या?
जब बूढे विधुर विवाह करते, तब तुमको आती शर्म नहीं।
क्या ऐसी बालविधवाओ का फिर विवाह करना धर्म नही।।
पर वेद-शास्त्र तो विधवा की, शादी करना बतलाते हैं।
वे कहते हैं जलने वाले तो घोर नर्क मे जाते हैं।।
यो कब तक धर्म, दहेज के खातिर नारी जलाई जावेगी।
कडे कफट की भाति नारि की होली मनाई जावेगी।।
ऐ समाज सुधारक वीरजनो, इन हत्यारो को ललकारो।
अन्याय, अधर्म की शर्मनाक, इस पाप-प्रथा को सहारो।।
यदि यह हत्याए नही रुकी, तो मानवता मर जावेगी।
"भास्कर" इस भीषण ज्वाला में सारी जाति जल जावेगी।।

—भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर,
1430, प० शिवदीन मार्ग कृष्णपोल, जयपुर।

पजाब में हिंसा (पृष्ठ 1 का शेष)

रे बमी रिबैरो इस दिशा मे बडे अच्छे प्रयास कर रहे हैं। और आंशिक रूप से सफल भी हुए हैं। यदि केन्द्र सरकार सुरक्षा पट्टी के पास प्रस्ताव को लागू कर दे तो उन्हे अपने अभियान को पूर्ण करने मे बडी मदद मिलेगी।

कुछ राजनीतिज्ञ व बुद्धिजीवी जो सरकार को पजाब समस्या के लिए मिजोरम का उदारण देकर उग्रवादियो से बातचीत करने की सलाह दे रहे हैं। यह श्री रे व रिबैरो के अभियान की प्राप्त उपलब्धियो को तारपीडो करने वाली बात है। इससे राज्य के आम नागरिकों का मनोबल उग्रवादियों को भावी मन्त्री के के रूप देखने से टूट जायेगा। और स्थिति पहले से भी बदतर हो जाएगी। सरकार को चाहिए कि कि नागरिको के मनोबल को गिराने वाली ऐसी किसी भी सलाह या माग को कठोरता पूर्वक ठुकरा दे।

आर्य जगत्

❋जिला आर्य समाज समस्तीपुर मे आचार्य रामानन्द शास्त्री की प्रेरणा से आर्य युवा परिषद् का गठन हुआ श्री चन्दन कुमार आर्य-अध्यक्ष, मन्त्री श्री अरुण कुमार आर्य व श्री जनार्दन आर्य को कोषाध्यक्ष बनाया गया। —मनोज प्रसाद आर्य (उपमन्त्री)

❋आर्य समाज पाली (राज) का 10, 1 , 12, 13 सित को 47 वा वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी प्रेमानन्द जी के प्रवचन व श्री आत्मानन्द जी के भजनोपदेश हुए। —बालाराम आर्य (मन्त्री)

❋छोटानागपुर आर्य प्र सभा ने दो प्रस्ताव पास कर सरकार द्वारा आर्यसमाज मंदिर को डी ए वी स्कूल का हिस्सा मानकर खाली कराने के प्रयास का विरोध किया औरद्वितीय प्रस्ताव में छोटा नागपुर आ प्र सभा के गठन के बारे मे आर्य जगत् को वस्तुस्थिति से अवगत कराने और निरन्तर आर्यसमाज का प्रचार करने का सकल्प लिया। —दयाराम पोद्दार (मन्त्री)

श्री रतनलाल गर्ग से आर्य प्रिन्टर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज, अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 162

सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 3 बृहस्पतिवार 15 अक्टूबर, 1987 अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात । कार्तिक कृ 8 सवत 2044
अक 16 प स -43338/84 II अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥ वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

अजमेर आर्यसमाज द्वारा सती कांड की कड़ी भर्त्सना

अजमेर 5 अक्तूबर। आर्य समाज अजमेर की रविवार को हुई एक सभा मे प्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने रूप कवर सती काण्ड की कडी भत्सना करते हुए इसे भारतीय नारी समाज के लिए एक कलक तथा समस्त विश्व मे भारत की प्रतिष्ठा को धूमिल करने वाला अमानवीय कृत्य बताया।

सभा मे पारित एक प्रस्ताव मे इन वक्ताओ ने राजस्थान सरकार द्वारा जारी किए गए सरकारी अध्यादेश का स्वागत किया। परन्तु रूप कवर के सती होने के पूर्व एव पश्चात् प्रशासनिक मशीनरी द्वारा बरती गई उपेक्षा एव अकर्मण्यता के विरुद्ध कडा रोष भी प्रकट किया। सभा मे राज्य सरकार स इस काण्ड मे लिप्त दोषी व्यक्तियो के विरुद्ध कडी कायवाई करने तथा सती मदिर न बनने देने का भी अनुरोध किया गया। सभा म इस बात पर चिन्ता प्रकट की गई कि बाल विवाह छुआछूत दहज प्रथा मृत्यु भोज तथा सती प्रथा जैसी सामाजिक कुप्रथाओ एव बुराइया के विरुद्ध पहल मे ही कानून बने होने के बावजूद भी सरकार द्वारा समय पर कारगर कारवाई नही की जाती है जिससे इन सामाजिक कुप्रथाओ को प्रोत्साहन मिलना है। एक अन्य प्रस्ताव द्वारा पुरी के जगदगुरु शकराचाय निरजनदव तीथ द्वारा सती प्रथा का समथन करन पर रोष व्यक्त किया गया।

आर्यसमाज शंकराचार्य को सती प्रथा पर शास्त्रार्थ की चुनौती दे

अजमेर 5 अक्टूबर। अजमर आय समाज क भवन मे आयोजित आय सज्जनो की एक सभा को सम्बोधित करते हुए आचाय दत्तात्रय जी आय ने आय समाज की शिरोमणि सभा सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा को पुरी के शकराचाय स्वामी निरजनदेव को उनके सती प्रथा के वेदानुकूल होने के दावे को असत्य सिद्ध करने हेतु शास्त्राथ की चुनौती देने का सुझाव दिया।

आचाय जी के मत मे उक्त शास्त्राथ जयपुर या दिल्ली मे होना चाहिए ताकि सम्बन्धित राज्य राजस्थान की जनता इससे विशेष रूप से लाभान्वित हो सके

आर्यसमाज राची का प्रस्ताव

आय समाज राची न 27 सित को सव सम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया है। जिसमे रूपकवर सती काड की कठोर निन्दा करत हुए सती प्रथा को एक बबर एव अमानुषिक प्रथा बताया गया है।

जोगी का भेद नहीं पाया

स्वामी दयानन्द सरस्वती

नादान लोगो ने उस,
जोगी का भेद नही पाया ॥

कोई कहे मत आ इस द्वारे।
विषदाता कह पत्थर मारे।

क्या जानें किस्मत के मारे।
सुधा कलश ले आया ॥

गाली देते नही लजाये।
विष का प्याला लेकर आये।

जोगी मेरा प्रेम दिवाना।
विष का घूट उडाया ॥

रोम रोम बन फोडा बोला।
मेरा सेवा के कारण था चोला।

खूब करी प्यारे ने लीला।
उसका उसे चढाया ॥

रोम रोम का बना फव्वारा। फूट पडी अमृत की धारा ॥
एक बूँद ने नास्तिक मुनि का। सारा मोह बहाया ॥
बार बार नर जीवन पाऊँ। बार बार बलिदान चढाऊँ ॥
ऋण तो भी मुझसे तेरा। जावे नही चुकाया ॥

– बुद्धदेव विद्यालङ्कार

आलोक को अभिव्यक्ति

मातृ की ममता बिलखती छोडकर तुम भाग कर निकले।
बाँटने संसार को अपना, सहज अनुराग निकले!
चार लोगों का समर्पण, विश्व को क्या दान देगा?
था किसे मालूम, जैसी तुम धधकती आग निकले।

रात के उस जागरण की, अर्चनायें हैं न थोडी।
प्रात लाने की तुम्हारी साधनाय है न थोडी।
भोर की तरुणाइयो पर विश्व की आख चकित हैं—
यामिनी मे रोशनी की रश्मिया तुमने निचोडी!

तम किया है क्षार जिसने, वह किरन की ज्योति लाये,
विश्व को पीयूष बाटा पर गरल के घूंट पाये,
है किसी मे दृष्टि जो, व्यक्तित्व की वह दीप्ति देखे!
किस तरह से तुम सुबह के सूर्य बनकर मुस्कुराये!

आग को ऐसा सहेजा, क्रान्ति फूँकी थी निराली!
वेद की जलती ऋचा से जिन्दगी तुमने जला ली!
साधना आलोक की अभिव्यक्तियो मे लय हुई यो–
तुम जले तो भोर आया, तुम बुझे तो थी दिवाली!

—लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र'

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य प्रधान संपादक रामसिंह संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य कार्या : 21010

: महर्षि दयानन्द का महत्व :

—प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक रोम्यां रोलां—

ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर मे अपनी दुर्घर्ष शक्ति अविचलता तथा सिंह पराक्रम फूंक दिये हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष सिंह उन मे से एक था जिन्हे यूरोप प्राय उस समय भुला देता है जबकि वह भारत के सम्बन्ध मे अपनी धारणा बनाता है किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मानकर उसे याद करने के लिए बाधित होना पडेगा, क्योकि उसके अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता की उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था।

दयानन्द ने अस्पृश्यता वा अछूतपन के अन्याय को सहन नही किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारो का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने मे भी दयानन्द ने बडी उदारता और साहस से काम लिया। वास्तव मे राष्ट्रीय भावना और जन-जागृति के विचार का क्रियात्मक रूप देने मे सबसे अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वहनिर्माण और राष्ट्र सगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरो मे से था।

***

सम्पादकीय — दयानंद देश हितकारी, तेरी हिम्मत की बलिहारी

आगामी दीपावली अर्थात् 22 अक्टूबर 1987 ई को समस्त विश्व मे आयसमाज के प्रवतक तथा स्वराज्य स्वभाषा स्वदेशी, स्वसस्कृति के प्रथम मत्रदाता युगपुरुष महर्षि दयानद सरस्वती का 104 वा निर्वाण दिवस सवत्र समारोह पूवक आयोजित होगा। 30 अक्टूबर 1883 ई को अजमेर स्थित भिनाय काठी मे अमावस्या की रात्रि के प्रारम्भ होने पर जब दीपमालिका पव के दीपक जगमगा उठ थे उसी समय प्रकाश का अदभुत पुज वह महामानव गायत्री मत्र का जाप करने हुए हे ईश्वर तेरी इच्छा पूण हो कहते हुए परलोक वासी हुआ था।

आज महर्षि भौतिक शरीर से इस ससार मे जीवित नही है परन्तु उनका यशरूपी शरीर सदैव अमर रहेगा। इसमे कोई अतिशयोक्ति नही कि जब तक सूरज चाद रहगा दयानन्द तेरा नाम रहेगा।

राष्ट की वतमान विषम परिस्थितियो म जबकि एक ओर सती प्रथा छुआछूत बाल विवाह दहेज अध विश्वास आदि सामाजिक बुराईयाँ पुन सिर उठा रही है दूसरी ओर भाषावाद प्रान्तीयतावाद जातिवाद सम्प्रदायवाद आदि के नाम पर देश मे अलगाववादी ताकतें हमारी राष्ट्रीयता को चोट पहुचा रही हैं तथा उग्रवाद एव आतकवाद की आधी का बवडर जोरो पर चल रहा है विदेशी शक्तिया भी देश की सीमाओ पर सक्रिय होकर हमारे अस्तित्व को आघात पहुचाना चाहती हैं और ऋषि द्वारा सस्थापित आर्यसमाज रूपी क्रान्तिकारी सगठन भी आलस्य और प्रमाद का शिकार होकर सक्रियता को भुला बैठा है ऐसे समय उस महान ऋषि का स्मरण सहज ही हो आता है। ऋषि ने आय भाषा आर्य धम और आर्यावत के रूप मे जिस राष्ट्रीयता की अनुभति की थी तथा राष्ट्र के स्वाभिमान को जाग्रत करने के लिए वेदो का आधार लेकर जिस क्रान्ति का शखनाद फूका था आज समाज और राष्ट्र मे समग्र क्रान्ति लाने हेतु तथा भ्रष्टाचार मिटाने व नैतिकता के ह्रास को रोकने हेतु उसी क्रान्ति के बिगुल को पुन निनादित करना होगा।

ऋषि के हम पर सामाजिक धार्मिक राष्ट्रीय सास्कृतिक मानवीय दृष्टि से बहुत एहसान हैं। परमात्मा हमे ऋषि के ऋण चुकाने की सामर्थ्य प्रदान करें जिससे हम सच्चे आय बनकर महर्षि दयानन्द और आय समाज के सदेश को जन-जन तक पहुचा सकें। यही हमारी ऋषि को सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

—रासासिह

सामाजिक चेतना की आवश्यकता

विगत 4 सितम्बर 87 ई को राजस्थान के सीकर जिले के दिवराला गांव मे रूपकवर नामक महिला का तथाकथित जो सतीकाड हुआ और उसके बाद सारे देश म पत्र-पत्रिकाओ मे जो इसके पक्ष और विपक्ष मे माहौल बना और उसके बाद राजस्थान सरकार को भी अविलम्ब सती प्रथा निषेध हेतु कठोर अध्यादेश लागू करना पडा। यद्यपि सरकार के उठाये गये कदमो तथा अध्यादेश कानून की अवहेलना ही हुई जिससे जनसाधारण पर स्वस्थ प्रभाव नही पडा।

देश मे सतीप्रथा निरोध कानून तथा इसी प्रकार से अन्य सामाजिक कुरीतियो बाल-विवाह दहेज मृत्यु भोज छुआ-छूत महिला सम्मान आदि सबधी कानून तो पहले से ही बने हुए हैं परन्तु उन कोरे कानूनो से ही यदि समाज सुधार हो जाना तो भारत मे आज ऐसी सामाजिक भयावह स्थिति के दुर्दिन नही देखने पडते और महर्षि दयानन्द जैसे महान समाज सेवी को जीवन मे 18 बार जहर के प्याले नही पीने पडते तथा अन्त मे अपने प्राणो की आहुति नही देनी पडती। केवल सरकार और कोरे कानून कुछ भी प्रभावी नही हो सकते जब तक कि जनसाधारण मे सस्कारगत सामाजिक चेतना उत्पन्न न हो तथा इन सामाजिक कुरीतियो के प्रति तिरस्कार उपेक्षा तथा हीनता के भाव पैदा न हो तथा इसके लिए कोई अपने प्राणो की आहुति देकर भी और सक्रिय विरोध सहन कर घर फूक तमाशा देखने वाले क्रान्तिकारी आगे नहीं आवें तब तक समाज को सही रास्ते पर लाना अत्यन्त कठिन है। कोरे निन्दात्मक भाषणो अथवा विरोध प्रस्ताव पारित करने मात्र से ही इन सामाजिक बुराइयो का मूलोच्छेदन नहीं होगा।

खेद के साथ कहना पडता है कि वोट की राजनीति ने समाज की बुराइयो को पनपाने मे सहयोग ही प्रदान किया है। सभी केवल यह सोचते है कि हमारे द्वारा आलोचना करने अथवा सही बात कहने पर हमसे कोई नाराज हो जायेगा अथवा जनमत हमारे खिलाफ हो जायेगा।

काश! आय समाज तथा अन्य समाज सेवी सगठन मिशनरी भावना से सक्रिय होकर इन सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन मे प्रयत्नशील हो।

अत में जैसा कबीर ने कहा है — कबीरा खडा बाजार मे लिये मुराडा हाथ अब घर जालो आपना चले हमारे साथ ॥

—रासासिह

भारत में जाति व्यवस्था और डा. अम्बेडकर

डा भीमराव अम्बेडकर एक विद्वान विचारक थे यह स्वीकार करने मे हमे कोई प्रतिवाद नही करना चाहिए। यद्यपि किसी विचारक के किन्ही विचारो से आप असहमत हो सकते है। परन्तु इतना तो अवश्य है कि उसके विचार तर्कों पर आधारित और मौलिकतापूण तो होते ही हैं।

डा अम्बेडकर ने भारत मे प्रचलित जातिवाद (जाति व्यवस्था) पर बडी गम्भीरता स चिन्तन किया था। इस सदभ मे व्यक्त आपके निम्न विचार विशेष रूप मे उल्लेखनीय है

मुझ वह समय याद है जब राजनीति मे रुचि रखने वाले भारतीय लोग भारत के लोग शब्दो पर तीखी आपत्ति किया करते थे, और इस के स्थान पर भारतीय राष्ट्र के नाम से सम्बोधित किए जाने पर बल देते थे। मेरे मत के अनुसार यह कहना कि हम एक राष्ट्र है भ्रान्ति के अतिरिक्त कुछ भी नही है। हजारो जातियो मे विभक्त समाज एक राष्ट्र कैसे हो सकता है? जितनी जल्दी हम यह स्वीकार करलें कि हम सामाजिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण स अभी एक राष्ट नही है उतना ही हमारे हित म होगा। क्योकि इसका आभास होने पर ही हम एक राष्ट्र के रूप मे उभर सकते है। और तभी इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु चिन्तन व प्रयत्न कर सकते हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु हमे सयुक्त राष्ट अमेरिका की अपेक्षा अधिक परिश्रम करना होगा क्योकि वहाँ का समाज छोटी 2 जातियो मे विभक्त नही है जब कि भारत के लोग जातियों मे विभक्त हैं। यह व्यवस्था राष्ट्रीयता की भावना के प्रतिकूल है। यह जातीय भावना भारतीय सामाजिक जीवन मे अलगाव की भावना को बल प्रदान करती है समाज का यह ढाचा जातीय समूहो के बीच ईर्ष्या व शत्रुता की भावना को जन्म देता है। इन सब कठिनाइयो का दमन करने के लिए हमे सतत परिश्रम करना होगा। यदि हम सच्चे अर्थों मे एक राष्ट्र के रूप मे ससार मे अपने लिए स्थान बनाना चाहते हैं। केवल एक राष्ट्र मे ही भाईचारे की भावना की कल्पना की जा सकती है उसकी अनुपस्थिति मे नही। भ्रातत्व समानता एव स्वतन्त्रता के अभाव मे एक राष्ट्र' की कल्पना करना किसी वस्तु पर की गयी रग की परत के समान निबल होगा।'

देश के सभी प्रबुद्ध जनो को डा अम्बेडकर के उक्त विचारो पर गम्भीरता से मनन करना चाहिए।

—वीरेन्द्र आर्य

ऋषि दयानन्द क्या चाहते थे ?

— क्षितीश वेदालंकार —

प्रिय महोदय,

आपका पत्र मिला। आप चाहते हैं कि ऋषि दयानन्द क्या चाहते थे—इस विषय में मैं अपने विचार लिखूं। आपने जिस सरलता से यह प्रश्न कर दिया है, मुझे उसका उत्तर उतना ही दुरूह लगता है। प्रत्युत मेरे मन में तो यह भी आता है कि यदि आपने यही प्रश्न साक्षात् ऋषि-दयानन्द से किया होता तो कदाचित् वे भी तुरन्त उत्तर देने से पहले कुछ देर सोच में पड़ जाते। चाहना तो मन का विषय है। कितने ऐसे लोग हैं जो स्वयं अपने मन का विश्लेषण कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द जैसे योगिराज क्षण भर सोचने के पश्चात् इस प्रश्न का उत्तर दे ही देते, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु जो भी भिन्न व्यक्ति किसी व्यक्ति विशेष के मन की बात का ज्ञान प्राप्त कर सके, यह अत्यन्त दुष्कर काय है। योगियों के लिए ही वह सुकर हो सकता है।

ऋषि दयानन्द क्या चाहते थे—इसका यथार्थ उत्तर तो वही दे सकते थे। परन्तु उनका जीवन चरित्र पढ़ने से तथा उनके द्वारा रचित ग्रन्थों का पारायण करने से उनकी चाहना के सम्बन्ध में मेरे मन में जो धारणा बनी है, उसका संकेत मैं अवश्य कर सकता हूँ। शायद आप के पत्र का प्रयोजन भी यही है।

ऋषि दयानन्द क्या चाहते थे—इस प्रश्न का एक संक्षिप्त उत्तर जो प्रत्येक आर्यसमाजी के मन में सद्य स्फुरित होगा, यह हो सकता है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"—अर्थात् सारे संसार को आर्य बनाओ, यही चाहना ऋषि के मन में थी। कुछ भाई शायद यह कहना पसन्द करें कि गुरु विरजानन्द ने दीक्षान्त के समय ब्रह्मचारी दयानन्द को वैदिक धर्म के प्रचार का जो उपदेश और आदेश दिया था, उसी को पूरा करना ऋषि दयानन्द के मन की कामना थी। परन्तु यह उत्तर तो प्रश्न को आवश्यकता से अधिक सरल कर देता है।

मेरे मन को चिरकाल से एक प्रश्न लगातार कुरेदता रहा है—और वह यह कि क्या व्यष्टि के बिना समष्टि की कोई सत्ता है? क्या इकाई के बिना कभी दहाई की कल्पना की जा सकती है? क्या घर के अभाव में बाहर का कोई मूल्य है? क्या व्यक्ति में सुधार किए बिना समाज में सुधार सम्भव है? इसलिए सारे विश्व को सुधारने का ठेका लेने के बजाय व्यक्ति को ही सुधारने की बात कही जाए तो व्यवहारिकता की दृष्टि से कदाचित् अधिक समीचीन हो।

परन्तु इस बुनियादी बात से भी मेरे मन को सन्तोष नहीं होता। मुझे लगता है कि ऋषि दयानन्द व्यक्ति को केवल व्यक्तिगत जीवन की परिधि तक ही सीमित नहीं रखना चाहते थे। व्यक्ति समाज का अविच्छिन्न अंग है और समाज राष्ट्र का अविच्छिन्न अंग है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों अन्योन्याश्रित हैं और इनको अलग-अलग करके देखना दृष्टि की धूमिलता का परिचायक है। 'आर्य समाज' में आर्य शब्द यदि व्यक्ति का वाचक है तो समाज शब्द ऐसे जन समूह का वाचक है जो राष्ट्र का अविच्छिन्न अंग है। ऋषि दयानन्द के मन में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में तीनों सदा एक साथ उपस्थित रहे हैं, क्षण भर को भी अलग नहीं हुए, मुझे ऐसा प्रतीत होता है। अपनी इस धारणा के समर्थन में मेरा विवेचन निम्न प्रकार है —

ऋषि दयानन्द ने इस देश को आर्यावर्त के नाम से अभिहित किया है और देश के सुनागरिक को आर्य शब्द से सम्बोधित किया है। निस्सन्देह आर्य शब्द गुणवाची है। इससे यह ध्वनित होता है कि ऋषि भारत के प्रत्येक नागरिक को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाना चाहते थे। आर्यावर्त के निवासियों का धर्म उन्होंने वैदिक धर्म बताया और भाषा आर्य भाषा (अर्थात् हिन्दी, संस्कृत नहीं) साथ ही अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में उन्होंने महाभारत कालीन महाराज युधिष्ठिर से लेकर दिल्ली के राजा यशपाल तक की पीढ़ियों का उल्लेख करके आर्य राजाओं की वंशावलि भी दी है। इस प्रकार जब मैं आर्य राजाओं की वंशावलि, भारतवर्ष का नाम आर्यावर्त धर्म का नाम वैदिक धर्म भाषा का नाम आर्यभाषा और नागरिकों का आर्य नाम से सम्बोधन देखता हूं, तब मेरे मन में इस बात के लिए सन्देह नहीं रहता कि वे एक देश एक धर्म, एक भाषा और एक जाति के पक्षपाती थे। आर्य राजाओं की वंशावलि देने का तात्पर्य इसके सिवाय और कुछ नहीं है कि वे इस देश में पुनः वैदिक धर्मावलम्बी आर्य राजाओं का राज्य देखना चाहते थे। इस देश की पराधीनता से कितनी मानसिक वेदना ऋषिवर दयानन्द को होती थी इसकी कल्पना हम सत्यार्थप्रकाश में स्थान-स्थान पर विकीर्ण देश के अधःपतन के मर्मान्तक विवरण से ही जान सकते हैं। परन्तु स्वराज्य-प्राप्ति मात्र से ही वे सन्तुष्ट होने वाले नहीं थे। स्वराज्य के साथ सुराज्य भी उनका ध्येय था। इस सुराज्य के सु को चरितार्थ करने के लिए ही तो नागरिकों का आर्य (श्रेष्ठ) बनने की उन्होंने प्रेरणा दी थी।

जब ऋषि के इन विचारों की ओर मेरा ध्यान जाता है तब मुझे लगता है कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के बजाय पहले आर्यावर्त को ही उसके अपने सत्य स्वरूप में प्रतिष्ठित करना उनका तात्कालिक उद्देश्य था और आर्यावर्त में आर्यों का राज्य स्थापित करने के पश्चात् सशक्त और बलाढ्य आर्यावर्त के माध्यम से वे संसार में आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य या कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लक्ष्य की पूर्ति करना चाहते थे। बिना 'जयहिन्द' के वे जय-जगत् का नारा लगाना उचित नहीं समझते थे, क्योंकि इकाई के बिना दहाई को प्राप्त करना व्यवहारिकता नहीं है।

शायद मेरे इस विश्लेषण को कुछ लोग अंग्रेजी के Chauvinism (उग्र राष्ट्रवाद) शब्द से, जिसे आजकल की राजनीतिक शब्दावली में गाली की तरह प्रयुक्त किया करते हैं अभिहित करें परन्तु मैं समझता हूँ कि ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व का कण-कण इसी उग्र राष्ट्रवाद की भावना से मण्डित था। यदि स्वप्निल आदर्शवाद के वशीभूत होकर हम ऋषि के व्यक्तित्व में से इस उग्र राष्ट्रवाद को निकाल दें जैसा कि अनेक धुरन्धर विश्ववादी और अध्यात्मवादी आर्यसमाजी नेता किया करते हैं, तो मुझे लगता है कि ऋषि की मानसिक भावना का वह अव्यवहारिक और अपूर्ण आकलन होगा। ऐसा कह कर मैं ऋषि के व्यक्तित्व को संकुचित नहीं करना चाहता, किन्तु उसे यथार्थ की भित्ति पर स्थापित करना चाहता हूँ।

परन्तु सम्पादक जी ऋषि क्या चाहते थे—यह प्रश्न तो अब गया-बीता हो गया। अब तो आप मुझ से यह पूछते कि आर्यसमाजी क्या चाहते हैं या देशवासी क्या चाहते हैं? आज के स्वार्थ परायण पदलोलुप परस्पर पगड़ी उछालने में पटु सदा संघर्षरत आर्यसमाजियों को इस बात की क्या चिन्ता है कि ऋषि क्या चाहते थे? या पहले अंग्रेजों के दास और अब अंग्रेजी के दास भारतवासियों को इस बात की क्या परवाह है कि ऋषि का स्थान क्या था या ऋषियों की इस भूमि का क्या होगा? राष्ट्र जाय भाड़ में सबको अपने स्वार्थ से प्रयोजन है।

और सम्पादक जी सच कहूँ—जिस महापुरुष के गीत गाते लोग नहीं थकते और जिसकी चरणरज तक का स्पर्श करके आज के स्वनाम-धन्य महतो महान् राष्ट्रीय नेतागण आज भी राष्ट्रीयता के मन्त्र से अभिषिक्त हो सकते हैं—वह ऋषि दयानन्द यदि आज की स्थिति में पुनः भारत में आ जाएँ तो उन्हें स्वतन्त्र भारत सरकार के किसी भी विभाग में छोटे से छोटे क्लर्क तक की नौकरी नहीं मिल सकेगी, क्योंकि उन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी। इसलिए यह मत पूछिए कि ऋषि क्या चाहते थे या हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान का तकाजा क्या है? हमसे केवल यह पूछिए कि हम क्या चाहते हैं? हमें न ऋषि से प्रयोजन है, न ही राष्ट्र से, हम केवल अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रयोजन है।

***

विश्व ज्योति ऋषि दयानन्द

— .प मदनमोहन जी विद्यासागर, हैदराबाद —

दीपावली का पवित्र ऐतिहासिक दिवस प्रतिवष की भाति एक बार फिर अपनी पूरी शान सजधज और गौरव के स थ आ गया है। भारत राष्ट्र मे मनाये जाने वाले अनेक प्रकार के पर्वों मे दीपावली का अपना ही विशेष स्थान है। प्रतिप्राचीनकालीन से कार्तिकमास की अमावस्या की तिथि नवान्नेष्टि पव तिथि (त्यौहार दिवस) के रूप मे विख्यात है। नवसस्येष्टि का अथ है—नव नया सस्य-फसल इष्टि यज्ञ करना अर्थात नयी फसल से यज्ञ करना।' इस दिन नये अन्न से यज्ञ करने क आचार जब से मनुष्य ने कृषि आरम्भ की है तभी से चला आ रहा है। कृषि के द्वारा धन-धान्य की अधिकता होने से यह पव लक्ष्मी पूजा के रूप मे भी प्रसिद्ध है।

पौराणिक साहित्य मे धन-सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी को लक्ष्मी नाम से पुकारा गया है उसका वाहन उल्लू को माना हैं। वेदविद्या के लोप हो जाने पर जब भारत देश मे पौराणिक युग आ गया तब इस कल्पित उलूक वाहिनी लक्ष्मी देवी के पूजन की भी यही तिथि ठहराई गई। लक्ष्मी क्या है और कहा रहती है यह न समझ कर अज्ञो ने कल्पित-मूर्ति बनाकर पत्त-फूल-बताशो से उसी की पूजा शुरू कर दी। फिर भी इस रूपक से पुराणो ने इतना अवश्य सकेत किया कि लक्ष्मी के उपासक धनलोलुप उलूक हैं क्योकि लक्ष्मी का बोझा उलूक ही उठाता है। उल्लू का जहाज र त को ही यात्रा करता है और धन का आना जाना भी ब्लैक-मार्केट ही होता है।

आर्यों का एक-एक पव किसी विशेष कृत्य के लिये उद्दिष्ट है इस लिये उसका सम्बन्ध किसी न किसी विशेष वर्ग के साथ स्थापित है। समाज-विकास मे चार तत्व प्रधान हैं विद्या शक्ति धनधान्य और सेवा। विद्या मे सभ्यता सस्कृति-धन के प्रचारक ब्राह्मण कहलाते हैं राष्ट्र हित मे अपना रक्त बहाने वाले तथा उत्तम शासन द्वारा सुख शान्ति कायम रखने वाले क्षत्रिय कहलाते हैं राष्ट्र के व्यापार को बढा प्रजा का पालन-पोषण करने वाले वैश्य और खून पसीना बहाने वाले श्रमिक शूद्र कहलाते हैं। श्रावणी उपाकम (अगस्त मास) स्वाध्याय से सम्बन्ध होने के कारण ब्राह्मण-पव है विजयदशमी (अक्टबर मास) आयुध पूजा दिग्विजय यात्रा से सम्बन्ध रखने के कारण क्षत्रिय-पव है इस दीपावली या नवसस्येष्टि के पव का विशेष सम्बन्ध वैश्यकर्म अर्थात कृषि वाणिज्य गोसेवा तथा उनकी अधिष्ठात्री समृद्धि की देवी लक्ष्मी से है सो यह वैश्य पव है और होली शूद्र पव माना जाता है।

प्राचीन वैदिककाल मे जिस पद्धति से यह पव नये अन्न से यज्ञ करने के रूप मे मनाया जाता था उस पद्धति का अब सवथा लोप हो गया है। और उसके स्थान पर केवल उसके बाह्य आडम्बर गृहपरिशोधन गृहपरि-मार्जन दीये जलाना पटाखे बजाना मिष्टान्न तथा लाजा (चिवड) वितरण और पौराणिक काल मे प्रचलित हुए लक्ष्मीपूजन द्यूत एव दुराचारादि ही शेष रह गय है। इस शुभ पव पर व्यापारियो मे जुआ खेलने का बहुत ही बुरा रिवाज चल पडा है। अपनी पावन सस्कृति की रक्षा के लिए इसको नष्ट करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

विजयादशमी का रावणवध और लका विजय हुआ और दीपावली के दिवस मर्यादापुरुषोत्तम राम ने वनवास पूरा कर अपनी राजधानी अयोध्या म प्रवेश किया वह सब इतिहास विरुद्ध होने से असत्य है। रावण-वध फाल्गुन (फरवरी) या वैशाख (अप्रैल) म हुआ था। इस दशा मे श्रीराम प्रत्यागमन कार्तिक मास (अक्टूबर नवम्बर) म किस प्रकार सम्भव है? जो भी हो जब भी पौराणिको ने लका विजय करके अयोध्या मे श्रीराम के आगमन की प्रसन्नता मे स्वागत समारोह की तिथि भी यह ठहराई तो इस कल्पना की प्रसिद्धि होते-होते घर-घर दीपमाला जलाने की प्रथा इसी से जारी हुई और इस नवसस्येष्टि पव को दीपमालिका यह एक और नाम दिया गया।

जैन धम के अन्तिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के स्वर्गारोहण की भी यह ही ऐतिहासिक तिथि है तथा इसी पावन तिथि को श्रद्धेय स्वामी रामतीर्थ जी महाराज ने भी अपने भौतिक देह का त्याग किया था।

किन्तु इस दीपमाला की महारात्रि का महत्व एक अन्य युगपरिवर्तनकारी घटना ने और भी बढा दिया है। इस युग मे आय जाति और वैदिक धर्म सस्कृति सभ्यता के उद्धारक और समस्त ससार को शान्ति का सन्देश देने वाले सुचेता महर्षि दयानन्द को बिना स्मरण किये दीपावली पव अधूरा रह जावेगा। इसी तिथि का एक सायकाल विक्रमी सम्वत् 1940 तदनुसार 30 अक्तूबर सन 1883 ई मगलवार को आयसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की आत्मा ने नश्वर शरीर त्याग कर परमपद प्राप्त किया था। महर्षि अपने बिस्तर पर पड थे। उन्हे दूध मे काच घोलकर दिया गया था। यह 16 वीं बार उन्हे विष का प्रसाद मिला था। सब आँतें फट चुकी थी। सारा शरीर लाल-लाल फफोलो से भरा था मानो महर्षि अपनी देह पर दीपमालिका सजाये हो। एक परम नास्तिक महान वैज्ञानिक गुरुदत्त विद्यार्थी उनके पास बैठा उन पर टकटकी लगाये था। महर्षि ने मधुर स्वर मे प्राथना की श्वास-श्वास मे ओ३म! ओ३म!! ओ३म!!! की ध्वनि प्रस्फुटित होने लगी और ईश्वर तेरी इच्छा पूण हो की ध्वनि मे ग्रस्त होते होते सूय के साथ ही युग प्रकाशक महर्षि दयानन्द अनन्तपथ मे विलीन हो गया। इसलिये वैदिक सभ्यताभिमानियो के लिये विशेष रूप से कार्तिकीय अमावस्या दीपावलि का दिन दयानन्द-निर्वाण-पव की पुण्यतिथि बन गई। महान ऋषि की स्मृति को चिरस्थायी बनाये रखने तथा प्रतिवष उस दिव्य-जन के आत्मोत्सग के पावन चित्र को अपने हृदय-पटल पर चित्रित रखने के लिये इस तिथि को दयानन्द निर्वाण पव के नाम से मनाया जाने लगा है।

यूरोप के प्रसिद्ध साहित्यिक विद्वान् श्री रोमा रोल्या ने गत शताब्दी मे रामकृष्ण परमहस का जीवन चरित्र फ्रेंच भाषा मे लिखा है। उस ग्रन्थ के प्रथम भाग का अग्रेजी अनुवाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफसर श्रीयुत ई एफ मलकालन स्मिथ एम ए पी एच डी (कैंटब) ने किया है और प्रकाशन 1930 म अद्वैत आश्रम मायावती अल्मोडा (उत्तर प्रदेश भारत) द्वारा किया गया है। इस जीवन चरित्र मे श्री रोमा रोल्या ने Bilders of Unity नामक अध्याय मे लगभग 25 पृष्ठो मे वतमान भारत की धार्मिक सामाजिक एव राष्ट्रीय जागृति के सूत्रधार महर्षि दयानन्द और आयसमाज के कार्य और महत्व के सम्बन्ध मे भी आलोचनात्मक दृष्टि से विचार किया है। उससे पता चलता है कि विचारक रोमारोल्या के दिमाग पर महर्षि दया नन्द के महान व्यक्तित्व और पवित्र सिद्धान्तो एव देश सेवा की जो अमिट छाप लग चुकी थी उसे एक अन्य भारतीय सन्त की जीवनी लिखते समय भी वे भुला न सके। उन्होने लिखा है—

सिंह समान निर्भीक प्रकृति वाला यह महापुरुष उन व्यक्तियो मे था, जिन्हे भारत का मूल्याकन करते समय यूरोप (का विचारक मण्डल) भुलाने की चेष्टा करता हुआ भी न भुला सकेगा। क्योकि ऐसा करना उस (यूरोप) के लिये एक महगा सौदा साबित होगा। इस महान् पुरुष मे चिन्तन कम और नेतृत्व का अनुपम सम्मिश्रण था। (पृ 146)

ऋषि दयानन्द ने भारत मे बढते हुए ईसाइयत और पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव को देखा। वे आय जाति के लिये इनको घातक समझते थे। राजा राममोहन राय की तरह उन्होने उनके साथ समझौता नहीं किया। वे आय धम आय सभ्यता आय सस्कृति तथा आय ज्ञान सम्पत्ति को अपने आप मे पूण समझते थे। इसलिये रोमारोल्या का यह कथन ठीक है कि— दयानन्द वह व्यक्ति नहीं था, जो कि पाश्चात्य विचारो से विमुग्ध (प्रभावित) दार्शनिको से समझौता कर लेता। (पृष्ठ 153)

→

विश्व ज्योति ऋषि (शेष पृष्ठ 4 का)

इस पृष्ठभूमि के प्रकाश मे ही उस महान व्यक्ति का उत्साहपूवक स्वागत होने का कारण सरलता से समझ मे आ सकता है कि वह वेदो का उग्र प्रचारक एव मन्त्र द्रष्टा महर्षि था महान आय जाति के महर्षियो की परम्परा का अग था और वीर भावना के साथ प्राचीन भारत के पवित्र ग्रथो का आधार लेकर कायक्षेत्र मे अवतीण हुआ था। उसने अकेले भारत पर आक्रमण करने वालो के विरुद्ध मोर्चा लगाया। (पृष्ठ 157) इसीलिये यह ऐतिहासिक तथ्य है कि– दयानन्द की तेजस्वी और प्रौढ शिक्षाए उसके देशवासियो की विचारधारा के अनुकूल थी और उन शिक्षाओ से भारतीय राष्ट्रीयता का सवप्रथम जागरण हुआ। (पृ 153)

'सत्य यह है कि भारत के लिए वह दिन एक युग प्रवतक दिन था जब एक ब्राह्मण ने न केवल यह स्वीकार किया कि उस वेदज्ञान पर मनुष्यमात्र का अधिकार है जिनका पठन-पाठन उनके पूव कट्टरपन्थी ब्राह्मणों ने निषिद्ध कर दिया था अपितु इस बात पर भी बल दिया कि वेदो का पढना पढाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धम है। (पृ 156)

इन उद्धरणो से यह स्पष्ट है कि–

वस्तुत भारतीय राष्ट्रीय चेतना के पुनजन्म और जागरण मे जो इस समय (ईसवी सन 1930) उस (भारत) देश मे अपने पूणयौवन मे देख पड रही है सबसे प्रबल प्रेरणा दयानन्द से प्राप्त हुई थी। (पृष्ठ 165)

तो क्या ऋषि दयानन्द भारत राष्ट्र के ही उन्नायक और जागरूक नेता थे? उन्हे ऐसा समझना विश्व म सब जातियो के वतमान उत्थान की वास्तविक पृष्ठभूमि को न समझना होगा।

(1) सब राष्ट्रो की उन्नति मे ही अपने राष्ट्र की उन्नति समझना यह अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण वतमान युग के राजनीतिज्ञो को महर्षि दयानन्द की सवप्रथम अमूल्य देन है।

(2) सबको अपने शारीरिक बौद्धिक व आत्मिक हितकारी नियम म स्वतत्र और सामाजिक सव हितकारी नियम पालने मे परतत्र अर्थात समष्टि के आधीन रहना चाहिये इस प्रकार मे ही व्यक्ति समष्टि का सम्बन्ध होना चाहिये यह विचार भी महर्षि दयानन्द के दिमाग की ही उपज है।

(3) जाति रग मत मजहब व वग की दृष्टि से न कोई बडा है न कोई छोटा है इसलिये सबको समानता स्वतन्त्रता-भ्रातृ भाव का समान अधिकार मिलना चाहिए यह नारा सवप्रथम महर्षि दयानन्द ने लगाया।

हमने ऋषि दयानन्द को बहुत छोटे ढग पर सोचा है। बहुतो ने उन्हे हिन्दू जाति के रखवैया के रूप म देखा है। यह सूय को दीपक बताने जैसा है। इस दीपावलि के पुण्यपव पर युग पुरुष के रूप मे ऋषि का स्मरण होना चाहिये। भवसागर म प्रकाश स्तम्भ के रूप म दिग्भ्रमित का माग दिखाने वाले के रूप मे उसका स्तम्भ होना चाहिये।

भारतीय स्वराज्य के प्रथम मन्त्र-द्रष्टा—

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(81 वें ऋषि निर्वाण दिवस पर दी गई श्रद्धांजलि)

— स्व प दीनदयाल जी उपाध्याय

विक्रमाब्द 1914 के स्वातन्त्र्य समर मे हमारी पराजय के बाद जब अग्रेजो की विजय पताका चातुरन्त भारत मे फहरा रही थी हमारे राष्ट्र जीवन पर चतुर्दिक से मर्मान्तक प्रहार ही रहे थे और हम आत्मविस्मृत और आत्माभिमान शून्य हो निरीह भाव से अग्रेज प्रभु की करुणाकोर की लालायित अपना सवस्व गवाते जा रहे थे तब भारत के जीवन मे जागृति शख फूकने वाले जो महापुरुष अवतीण हुए उनमे महर्षि दयानन्द का स्थान अग्रगण्य है। उनके पास राष्ट्र की दुरवस्था को देखकर दुखित होने वाला सवेदनशील हृदय था रोगो का सही निदान और उपचार करने वाले चिकित्सक की बुद्धि थी एक सुधारक की लगन और कमठता तथ बुराई से जूझने वाले एक शूरवीर का साहस था और सबसे बढकर वह आष दृष्टि थी जो विश्व के द्वन्द्व और मोहान्धकार को चीर कर सत्य का दर्शन कर सके। सत्य सेवा का सम्बल लेकर वे जीवनपथ पर बढे। परायो की क्षमकिया और अपनो की उपेक्षा तिरस्कार और अवहेलना कोई भी उनको विचलित नही कर पाया। भारत के पतित और विकृत जीवन को उन्होने समुज्ज्वल सुसस्कृत एव सत्य प्राचीन आदर्शो के साथ जोडा तथा समाज मे कुरीतियो से लडने तथा अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा पैदा की।

धार्मिक क्रान्ति को आधारभूत मानकर उन्होने मूलत उसी क्षत्र मे काम किया। किन्तु जीवन का ऐसा कोई क्षत्र नही जिसको अछूता छोडा। स्वदेशी और स्वराज्य का मन्त्र सर्वप्रथम उन्होने ही दिया। जिनकी दृष्टिमात्र राजनीतिक है तथा जो पश्चिम की राजनीतिक विचारधाराओ और परम्पराओ का अनुकरण ही भारत की नियति मानते हैं वे महर्षि को एकपन्थीय अथवा धार्मिक नेता मानकर उनकी अवहेलना कर देते हैं। उन्हे न तो भारत की आत्मा का ज्ञान है और न महर्षि दयानन्द की महत्ता का।

महर्षि दयानन्द का काम अभी पूरा नही हुआ। स्वराज्य के बाद तो हमारा व्यामोह और बढ गया है। महर्षि ने हमे बताया था कि हम उलूकवाहिनी की पूजा के स्थान पर उसे साधन मानकर ऋत की उपासना करें। पर अमावस की कालरात्रि मे आज्वल्य भास्कर का निर्वाण हो गया। हम दीपावली मनाकर अन्धकार से लडने का प्रयास कर रहे हैं सत्य को छोडकर लक्ष्मी की पूज मे लगे है। स्वराज्य मे स्वधम चला गया। आर्थिक उन्नति की आकाक्षा मे दर दर भीख का कटोरा लेकर घूम रहे है विदेशी मुद्रा अर्जन के लालच मे भारत का जनता का धमभ्रष्ट एव राष्ट्रभ्रष्ट करने वाले मसीही पुजारियो को आमन्त्रण देकर उनके आदरातिथ्य मे अपने को धन्य मान रहे है। आवश्यकता है कि महर्षि का वज्र घोष फिर से भारताकाश म गूजे। क्या आय बन्धु महर्षि के सन्देश को लेकर खडे होगे? तभी तो दीपावली की रात्रि जिसम महर्षि का निर्वाण हुआ के सम्बन्ध म कवि के प्रश्न का सत्य उत्तर मिल सकेगा—

इसे रात कहू कि प्रभात कहू?

दीपावली हमारे लिये घोर तमाच्छन्न रात्रि ही रहेगी अथवा नववष का नव सदेश और नव चैतन्य लानेवाली प्रतिपदा के प्रभात की पूववाहिका।

—प्रस्तुति ऋचा आर्य्या

पत्र बोलते हैं

आर्यसमाज और पौराणिक घुसपैठिये

महोदय

आय पुनगठन 30 सित 87 की प्रति मेरे सामने है। भले ही पृष्ठ छ है परन्तु यह सामग्री पठनीय मननीय प्रेरक एव हृदयोद्वेलक है। यह सत्य है कि कुछ पौराणिक घुसपैठिये बनकर आय समाजो मे प्रवेश कर चुके है जिनका आयसमाज के मौलिक सिद्धान्तो पर विश्वास नही है। इसलिए शुद्धवातावरण नही बन पा रहा है। आपने सावदेशिक सभा के प्रस्ताव को पहले पृष्ठ पर छाप कर एक नई जागृति पैदा करने का प्रयास किया है आप साधुवाद के पात्र हैं।

श्री वीरेन्द्र कुमार आय ने ठीक कहा कि पजाब समस्या सुधार की ओर अग्रसर है। और श्री रे व श्री रिबैरो इस दिशा मे बड अच्छे प्रयास कर रहे है। उग्रवादियो से बातचीत नही की जाती चाहिए जब तक माहौल शान्त नही हो जाता नही तो राज्यपाल एव पुलिस प्रमुख के अभियान को तारपीडो का मामला बन सकता है। सपादकीय मे आपने पुराण पथियो की जडें उखाडने का ठीक परामश दिया। यह अभियान ऋषि की नगरी अजमेर से चले और राजस्थान के अज्ञानियो व अधविश्वासियो को झकझोड दे ताकि भविष्य मे ऐसा काण्ड दोहराया न जाय।

—वीर भान वीर
आयसमाज तिलकनगर दिल्ली

आर्य जगत्

छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची के उल्लेखनीय कार्य

31 मई 1987 ई को नवस्थापित सभा से रांची आर्यसमाज को केन्द्र बनाकर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक सराहनीय कार्य किए है। यथा—एक पूर्ण कालिक सवैतनिक प्रचारक की नियुक्ति रथयात्रा मेले मे प्रचार कैम्प का आयोजन, गढवा आर्यसमाज को सरकारी अधिकारियो द्वारा खाली कराने के प्रयास के विरुद्ध विशाल मौन जुलूस, वेदप्रचार कार्यक्रम का विशाल आयोजन, जैनामोड मे नवीन आर्यसमाज की स्थापना तथा शांति आश्रम, लोहरदगा मे गुरुकुल के सचालनार्थ प्रति माह पाच सौ रुपयो की स्वीकृति। निर्देशन सभा प्रधान श्री जयमगल शर्मा व सभा मंत्री श्री दयाराम पोद्दार।

—कार्यालय मंत्री

आर्यसमाज किशनगढ (अजमेर) का वार्षिकोत्सव 28, 29 व 30 सितम्बर को मनाया गया। श्री प रासासिंह जी, प्रो बुद्धिप्रकाश जी आर्य के उपदेश व श्री सत्यपाल जी 'सरल' के भजनोपदेश हुए।

—मंत्री

डी ए वी शताब्दी समापन समारोह, रविवार 15 नवम्बर को प्रात 10 से दोपहर 1 बजे तक तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली मे मनाया जा रहा है। भारत के उप राष्ट्रपति माननीय डा शकर दयाल जी शर्मा ने उसके मुख्य अतिथि होने की स्वीकृति दे दी है।

—सगठन सचिव

आचार्य जी द्वारा पुरस्कार राशि आर्य समाज को भेंट

आर्य समाज अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य ने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय द्वारा उन्हे प्रदत्त गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित होने के उपलक्ष मे प्राप्त 1000/- रुपये की नगद राशि आर्य समाज, अजमेर को जन-कल्याणकारी कार्यों के लिए उपहार रूप मे प्रदान कर दी।

आर्य समाज अजमेर का प्रशसनीय निर्णय

आर्य समाज अजमेर की यह आदर्श परम्परा रही है कि यहा सदा ही वार्षिक चुनाव सर्व सम्मति से निर्विरोध होते है। इस बार भी दिनाक 6-9-87 रविवार को आर्यसमाज अजमेर के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न हुए। इसका श्रेय हमारे प्रधान आदरणीय दत्तात्रेय जी आर्य को है। जिनके प्रयत्नो से एव प्रेरणा से आर्य समाज की गतिविधिया निरन्तर साकार रूप धारण करती जा रही है।

इस अवसर पर वेदरत्न आर्य ने चुनाव के पश्चात् एक सुझाव दिया कि 'आर्य समाज के नवनिर्वाचित पदाधिकारियो एव अतरग सदस्यो की उपस्थिति का एक अलग से रजिस्टर बनाया जाय। जिसमे आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सगो तथा पर्वो पर उपस्थित पदाधिकारी तथा अतरग के सदस्य हस्ताक्षर करें।" इससे मालूम पडेगा कि आर्य समाज की विभिन्न गतिविधिया मे हमारा क्या योगदान है। उपरोक्त प्रस्ताव साधारण सभा के द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

इस प्रस्ताव को आर्य समाज अजमेर द्वारा क्रियान्वित भी कर दिया गया है। प्रत्येक पदाधिकारी तथा अतरग सदस्य की पचास प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है।

—वेदरत्न आर्य, उप मन्त्री

श्री मुलखराज भल्ला व स्वामी वेदानन्द जी के निधन पर आर्य समाज का शोक प्रस्ताव

आर्य समाज, अजमेर ने एक शोक प्रस्ताव पारित कर प्रख्यात आर्य नेता श्री मुलखराज भल्ला के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। और परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा को शाति देने की प्रार्थना की है। एक अन्य शोक प्रस्ताव म समाज ने स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश जी के निधन को आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति बताते हुए शोक प्रकट किया। प्रस्ताव मे स्वामी जी को गम्भीर विद्वता एव लेखन प्रतिभा का धनी बताया गया है। और आर्यसमाज के प्रचार प्रचार के लिए की गई उनकी सेवाओ को स्मरण किया है।

भव्य ऋषि मेला

ऋषि निर्वाण पर्व के उपलक्ष्य मे परोपकारिणी सभा के तत्वावधान मे दिनाक 28 अक्टूबर से 1 नवम्बर एक भव्य ऋषि मेले का आयोजन ऋषि उद्यान, आनासागर तट, अजमेर मे किया जा रहा है। ऋषि मेले मे पधार रहे हैं आर्य जगत् के मूर्धन्य नेता वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी सत्यप्रकाश जी, व स्वामी ओमानन्द जी, श्री क्षितीशजी वेदालकार, डा भवानीलालजी भारतीय, प्रो वेदव्यासजी श्री रामनाथ सहगल, ब्रह्मचारी आर्य नरेश। भजनोपदेशक श्री गुलाब सिंह राघव व श्रीमती शिवराजवती जी आर्या।

धर्म शिक्षा पढ़ाने वाले शिक्षकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान मे आर्य समाज शिक्षा सभा के उपमंत्री श्री वेदरत्न जी आर्य के सयोजकत्व मे धर्म शिक्षक प्रशिक्षण कार्य 8 अक्टूबर से 10 अक्टूबर 87 तक सम्पन्न हुआ।

प्राथमिक कक्षाओ को पढने वाले धर्म शिक्षको को श्री आचार्य गोविन्द सिंह उच्च प्राथमिक कक्षाओ को पढाने वाले धर्म शिक्षको को प्रो बुद्धि प्रकाश आर्य तथा उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओ को पढाने वाले धर्म शिक्षको को श्री श्री डा कृष्णपालसिंह जी ने प्रशिक्षण एव मार्गदर्शन प्रदान किया।

प्रशिक्षण के दौरान आर्य समाज अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य ने सभी शिक्षको से निष्ठा पूर्वक प्रभावशाली ढग से अपने कर्तव्य पालन की प्रेरणा दी।

समाज के मत्री श्री रासासिंह ने सभी विद्वानो एव प्रशिक्षणार्थियो के प्रति आभार व्यक्त किया।

—प्रचार मंत्री

श्री रतनलाल गर्ग से आर्य प्रिन्टर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज, अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 162
सृष्टि सम्वत् : 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष : 3 शुक्रवार, 30 अक्टूबर, 1987
अंक : 17 पं सं.-43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभयं नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥

कार्तिक शु. 8 सम्वत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

मूर्ति पूजा का अभिशाप

— आचार्य दत्तात्रेय आर्य —

भारत में और विशेषकर हिन्दुओं मे मूर्तिपूजा उनके मध्यकालीन ह्रास और पतनोन्मुखकाल का अवशेष है। इस अभिशाप तथा उससे सम्बन्धित अंधविश्वासों से ऋषि दयानन्द ने देश को मुक्त करने का जो प्रयत्न किया वह भी उनकी एक महान देन है।

पौराणिक युग मे प्रारम्भ हुई मूर्तिपूजा और उनकी अनेक हानियों ने हिन्दुओं और परिणामस्वरूप भारत को जिस पतन के मार्ग पर खड़ा किया उसका इतिहास भी तभी से प्रारम्भ होता है। देवी देवताओं के मन्दिरो ने न केवल मूर्तिभजक इस्लाम के आक्रमणों को निमंत्रित किया बल्कि उनसे सम्बन्धित अंधविश्वासो और काल्पनिक चमत्कारो ने इन आक्रमणकारियो की विजय को भी निश्चित कर दिया। मथुरा, काशी और अत मे सोमनाथ की इन तथाकथित चमत्कारी मूर्तियो के टूकडे करने वाले गजनी को मदिरो मे सचित अपार धन राशि तो मिली ही साथ मे उसके मुट्ठी भर सह धर्मियों को 33 करोड देवी-देवताओं के इस विशाल देश पर सदियो तक राज्य करने का वरदान भी मिला। सम्भवत वेदों के एक मात्र निराकार ईश्वर के सैकडो साकार प्रतिस्पर्धी बनाकर उनकी अनेक कुत्सित विकृत मूर्तियो द्वारा ईश्वर का उपहास करने का ही हमारे देशवासियों को यह घोर दण्ड मिला और साथ ही अपने इन नादान भक्तो की नास्तिकता सिद्ध करने के आक्रमणकारियों को राज्य और सम्पत्ति का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

काशी शास्त्रार्थ और मूर्तिपूजा

ऋषि दयानन्द द्वारा आज से 112 वर्ष मूर्तिपूजा के गढ़ काशी मे किया गया शास्त्रार्थ धार्मिक जगत में एक बड़ी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है, मूर्तिपूजा के विरोध में उनके पूर्व भी अनेक सुधारकों और सतो ने आवाज उठाई थी, किन्तु 'न तस्य प्रतिमा अस्ति" इस मन्त्रद्वारा यजुर्वेद में मूर्तिपूजा का निषेध किया गया है दयानन्द की यह घोषणा काशी के पण्डितो के लिए चकित कर देने वाली एक चुनौती थी। इससे पूर्व किसी वैदिक विद्वान ने ऐसा करने का साहस नहीं किया था और न आज तक कोई वेद का पडित वेदो मे मूर्तिपूजा सिद्ध कर सका है।

संतों द्वारा मूर्तिपूजा का विरोध

वेदो का प्रमाण तो मूर्तिपूजा के विरुद्ध है ही किन्तु हमारे देश के प्राय समस्त ईश्वर भक्त सतो ने भी उसका कडा विरोध किया है। गुरु नानक ने कहा था कि —

"जो पत्थर को माने देव।
उसकी बिरथा जावे सेव॥"

सत कबीर की यह उक्ति प्रसिद्ध है —

"पत्थर पूजे हरि मिले
तो मैं पूजू पहाड।
पत्थर से चाकी भली
जो पीस खाय ससार।"

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध योगी ज्ञानेश्वर के अनुसार ईश्वर स्वय कहते हैं कि—

"अज अक्रिय सी कर्म
विदेहासि देह धर्म"

अर्थात् कर्म से मुक्त ईश्वर को कर्म धारी और देह विहीन ईश्वर को देह धारी बनाना मूर्खों का काम है। संत तुकाराम तो यहाँ तक कहते हैं कि—

"ज्याला टाकिने फोडली,
त्याच्या पुढे हात जोडती
ज्याचा शौच कूप बाधति
त्याला देव म्हणति॥"

अर्थात जिन मूर्तियो को हम टाकियो से तोडकर बनाते हैं और जिन पत्थरों के हम शौचालय बनाते उन्ही को ईश्वर मानकर कैसे पूजते हैं? शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास जी कहते हैं —

"धातु पाषाण मृतिका
चित्र लेप काष्ट देवा,
तेथेदेव कैचा मूर्ख
भ्रान्ति पडली।

अर्थात हे मूर्ख सोने चादी पत्थर लकडी और मिट्टी की मूर्तियों में या दीवार के बने चित्रो मे ईश्वर देखना तेरा भ्रम है। मूर्तिपूजा के समर्थक कहते हैं कि मूर्ति के उपासक उसे ईश्वर' नही मानते केवल साधारण व्यक्तियों के लिए ईश्वर भक्ति का साधन मात्र समझते हैं इस तर्क का भी इन्हीं सतो ने स्वय खडन किया किया है। गुरु रामदास कहते हैं कि—

"आत्मा सोडूनि अनात्म्यास
ध्यानी धरती, परितो
धरिता ही धरवेना ध्यानी
येती व्यक्ति नाना, उबेची
कष्टविति मना कासावीस करुनी,
मूर्तिध्यान करिता सायसि
ते थे एकच एक दिसे,
भासू लये तेचि भासे विलक्षण।"

अर्थात आत्मिक ध्यान छोडकर अन्य साधनो से ईश्वर का ध्यान सम्भव नही हैं। मूर्ति द्वारा उसका ध्यान करने के प्रयत्न मे हम जो नही है उसी को कल्पना मे देखते हैं और इस प्रकार अपने मन को भटका कर कष्ट उठाते हैं। सत तुकाराम इसे मूर्खों का आविष्कार कहते हैं उनके अनुसार —

'दगडाचे देव पूर्वी नव्हते
जनहे अज्ञान झाले जेव्हा
हे अज्ञानी दगडा मानिले।'

अर्थात पहले देवो की पत्थर की मूर्तियाँ नही होती थी किन्तु जब जनता मे अज्ञान फैला तब इन अज्ञानियो ने पत्थरो को मानना शुरू किया। नानक, कबीर ज्ञानेश्वर, तुकाराम और रामदास प्रसिद्ध भक्त सत थे इसलिए इस विषय मे उनके अनुभव और विचार विशेष महत्व के है। उनकी तुलना मे साधारण तो क्या बडे से बडे विद्वानों के तर्क भी निरर्थक है क्योकि ये सत विद्वान न होने पर भी ईश्वर भक्ति के क्षेत्र मे अधिकृत विशेषज्ञ थे। आज भी सभ्य ससार मे मूर्तिपूजा एक दकियानूसी प्रथा समझी जाती है जिसका सबसे अधिक विकृत और विस्तृत प्रचार भारत में ही है।

धार्मिक जगत मे प्रोटेस्टेन्ट ईसाई, मुसलमान और आर्य समाजी आदि मूर्ति पूजा विरोधी धर्मो के अनुयायियो की सख्या करोडो से अधिक है। अत यदि बिना मूर्ति के ससार के ये बहुसख्यक लोग ईश्वर की उपासना और ध्यान कर सकते हैं तो क्या हिन्दू धर्म के अनुयायी ही बौद्धिक और आध्यात्मिक दृष्टि से इतने घटिया है कि उन्हे ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलना सीखने के लिए छोटे बच्चो के समान लकडी और पत्थरों के इन खिलौनो की आवश्यकता है?

(शेष पृष्ठ 6 पर)

-: मननीय :-

—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—

आर्यसमाज के आरंभकाल मे कुरीति निवारण के लिए और लड़ाइया लड़नी पड़ी। अब नई-नई कुरीतिया बढ रही हैं और सुधार के लिए वह जोश नहीं है। विधवा पुनर्विवाह का जब तक विरोध होता रहा आर्यसमाजी लडते रहे। अब विरोध नहीं है, न कानून की ओर से न बिरादरी की ओर से। परन्तु विधवा लडकी और मृत लडकी व लडके मे अब भी वही भेद है। आर्यसमाज की वर्तमान मनोवृत्ति यह है कि हम समाज सुधार का काम पूरा कर चुके। विवाह आदि संस्कारो में आडम्बर बढते जा रहे हैं। जिनके पास है उन्हे धन का घमंड है और वह उसका प्रदर्शन करना चाहते हैं। निर्धन लज्जावश अनुकरण करने के लिए बाध्य हैं। इस विषय मे ईसाई हमसे बहुत आगे हैं। और उनकी सामाजिक कठिनाइयां बहुत कम हैं।

सम्पादकीय........

अग्ने नय सुपथा......

अभी-अभी 22 अक्टूबर को देश विदेश की समस्त आर्यसमाजो ने अनेक समारोह आयोजित कर ऋषि निर्वाण दिवस मनाया है। परन्तु आज ये समारोह औपचारिकता मात्र रह गये हैं। इस अवसर पर प्रत्येक आर्य-समाजी को आत्म-निरीक्षण करना चाहिये, अपने पूर्व वर्ष के कार्यों का लेखा जोखा करना चाहिये कि हमने वर्ष भर मे क्या खोया है ? क्या पाया है ?

आज भी देश मे छुआछूत, प्रान्तीयता, भाषावाद, जातीयता आदि की संकीर्णताएं बदस्तूर जहर उगल रही हैं। दहेज, बाल-विवाह, गुरुडम, मूर्तिपूजा, अन्ध विश्वास, शराबखोरी आदि की बुराइया दिन दूनी रात चौगुनी सिर उठा रही हैं। देश के राजनैतिक दल एक दूसरे की उठापटक तथा सत्ताधारी दल अपनी कुर्सी को येनकेन प्रकारेण बचाये रखने मे तल्लीन हैं। देश धर्म, कौम की किसी को कोई चिन्ता नही है। स्वार्थ हर व्यक्ति के रक्त मे घुल मिल गया है। रिश्वत खोरी, बेईमानी, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी आदि देश द्रोहात्मक दुष्प्रवृत्तिया पनपती जा रहे हैं। नाना प्रकार के मत-मतान्तर, अवतार पनप रहे हैं। ऐसी विषम परिस्थितियो मे आर्यसमाज और उसके कर्णधारो का उत्तरदायित्व और भी बढ जाता है।

हमने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का उद्घोष किया है परन्तु अभी सम्पूर्ण अर्थों मे हम स्वय ही आर्य नही बन पाये हैं। आर्यसमाज के प्रति स्वामी श्रद्धानन्द सी तड़प, प लेखराम जैसी लगन, महात्मा हसराज जैसी त्यागवृत्ति प गुरुदत्त जैसी निष्ठा, लाला लाजपतराय जैसी आस्था आज के आर्यों मे दुर्लभ है। आज भी आर्यसमाज ही एक ऐसी आशा की किरण है, ऐसी शक्ति का स्पन्दन है जो यदि अपनी शक्ति का आत्म साक्षात्कार कर ले तो, बहुत कुछ कर सकता है। विश्वहिन्दू परिषद्, विराट हिन्दू समाज, हिन्दू मच, हिन्दू रक्षा समिति आदि सगठन अच्छाई और बुराई, सत्य और झूठ के सह-अस्तित्व के आधार पर भले ही सामयिक धार्मिक एकता लाने का प्रयास करें परन्तु अततोगत्वा वह सगठन 'मेले की भीड़' से बढकर कुछ नही होगा। आर्यसमाज डके की चोट "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने" का आह्वान करते हुए एक भाषा, एक धर्म एक कौम, एक राष्ट्र की आधार भूमि पर वेदो की ऋचा का अमृतपान करवाकर, बुराइयो एव अध-विश्वासो पर करारी चोट कर अविद्या का खण्डन और विद्या का मण्डन कर देश, धर्म, कौम एव मानवता का त्राण कर सकता है।

अत आर्य वीरो उठो, जागो और आगे बढो। देश की कोटि-2 जनता आपकी ओर निहार रही है। हम आपस के भेदभाव को भुलाकर, दलबन्दी एव गुटबन्दी के दायरे से निकल कर, लोक-कल्याणकारी 'सुपथ' की ओर अग्रसर हो। यही प्रभु से प्रार्थना है।

—रामसिंह

हिन्दू धर्म वेदों पर आधारित नहीं है

— पं राजेन्द्र, अलीगढ़ —

हजारो वर्षों से उपेक्षित तथा शताब्दियो से न केवल त्याज्य अपितु निन्दित वेदो के पुनरुद्धार का श्रेय इस युग मे यदि किसी को प्राप्त है तो वह एक मात्र दयानन्द है। यह ठीक ही है कि मध्यवर्ती काल मे वेदो के भाष्य भी हुए उन ग्रन्थो मे कहीं-कहीं गुणगान भी होता रहा। किन्तु उनका जो स्वरूप हमारे समक्ष प्रस्तुत किया गया वह अपूर्ण और विकृत था। फलत हम वेद वर्णित ईश्वर ज्ञान-कर्म-उपासना, जीवन के चार अवलम्ब—धर्म अर्थ काम, मोक्ष वर्णाश्रम व्यवस्था, सभी से धीरे-धीरे विमुख होकर अनेकानेक सम्प्रदायो के जाल मे फस गये।

आज जिस ढाचे पर बहु सम्प्रदायमूलक हिन्दू कहा जाने वाला धर्म खड़ा है, वह वेदो से इतना ही दूर है जितने ससार के अन्य सम्प्रदाय। आज चाहे अपनी आत्मप्रवचना के लिये कोई कह ले कि हिन्दू धर्म वेदो पर आधारित है किन्तु यह सत्य से बहुत परे है। हिंदुओ के सभी मत-मतान्तर और उनके सिद्धान्तो का मूल पुराण हैं, वेद नही। इनका ईश्वर, उपासना विधि जप-तप, वर्णाश्रम सस्कार तीर्थ पर्व सब ही पुराणानुमोदित हैं। इनके अवतार जिन्हे यह ईश्वर समझते हैं, वेद के सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, अजन्मा, सृष्टिकर्ता और कर्मफल दाता परमात्मा से सर्वथा भिन्न हैं। इनकी उपासना विधि अर्थात् विभिन्न जड मूर्तियो की अर्चना, उनका नाम कीर्तन, जप-तप, कथा-वार्ता इन ही कल्पित ईश्वरावतारो पर आधारित हैं। अनेक देवी-देवता भूत-प्रेत, नदी, पहाड, वृक्ष, सभी इनके उपास्य देव हैं। इनके तीर्थ स्थान आचारहीन पन्डे-पुजारियो के व्यापार केन्द्र हैं - जहा भोली जनता को ठगकर यह लोग अपनी जीविका चलाते हैं। हिन्दू पर्वों की दुर्दशा, आज किसी से छिपी नही है। इन अवसरो पर मद्य-भग आदि का खुला प्रयोग, अश्लील गाली-गलौज, कीचड, धूल, मिट्टी का सर्वत्र उपयोग पशु-बलि अवतारों का नाट्य मडलिया के मात्र रूप म घृणित प्रदर्शन, द्यूतक्रीडा यह सब इन पर्वो के कार्यक्रम है। यह सब होते हुए इसे वेदमूलक कहना न केवल वेदो का उपहास अपितु उनका अपमान है और अनादर है। आज हमारे भोले शिक्षित-अशिक्षित जिसे सनातन धर्म कहकर मन बहलाव कर लेते हैं—यही उनका रेखाचित्र है जिस सक्षेप मे ऊपर प्रस्तुत किया गया है। यह अभागे ऋषि दयानन्द अनुमोदित वैदिक धर्म को 'नवीन' और अपने को 'सनातन' कहते हैं। यह है वेदो की उपेक्षा का दुष्परिणाम जिसे ऋषि दयानन्द ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा।

वेदो पर जैन-बौद्ध मतो ने कुठाराघात किया, शकराचार्य न जिन्हे भ्रम से वेदोद्धारक समझा जाता है, यद्यपि नाम वेदो का लिया किन्तु उनकी आड मे प्रचार उपनिषदो, वेदान्त और गीता का ही किया। यह प्रस्थानत्रयी, इनके वेद, दर्शन और स्मृति हैं जो इनके अद्वैतवाद के आधार है। वेद इनके मत मे केवल यज्ञयागादि मे प्रयुक्त होने वाले कर्मकाण्ड के ग्रन्थ हैं - अर्थात् इनका ब्रह्म विद्या से न कोई सम्बन्ध है न यह विद्या वेदो में है। उपर्युक्त प्रस्थानत्रयी पर भाकर भाष्य इसी का प्रतिपादन करते हैं। उन्होने उपनिषदो के ही श्रुति नाम से जिन्हे वह ब्रह्मविद्या का मूल कहते हैं, सर्वत्र प्रमाण दिये हैं। गीता भी इसी सिद्धान्त का खुला प्रतिपादन करती है।

यही अवस्था वैष्णवाचार्य—रामानुज के विशिष्टाद्वैतवाद, माधवाचार्य के द्वैतवाद, निम्बकाचार्य के द्वैताद्वैत की है जो वैष्णव शाखाओ के प्रवर्तक हैं। इन्होने भी यत्र-तत्र वेदो की प्रशंसा की है किन्तु विशेषता अपने ही साम्प्रदायिक सिद्धान्तो को दी है और हेय सिद्ध करने का यत्न किया है।

आर्यसमाज की वेदी से कही जाने वाली कथाओं, प्रवचनो और व्याख्यानो मे जितनी चर्चा उपनिषद् और गीता की होती है उतनी वेदो की प्राय नही होती। उनमे जितने प्रमाण उपनिषद् और गीता के दिये जाते हैं उतने वेदों के नही होते। यही अवस्था अनेक आर्य विद्वानो के लेखों और ग्रथो मे आप पाएगे। वेदो का नाम अवश्य लिया जाता है किन्तु अभी उपनिषद और गीता हमारे मस्तिष्क पर छाये हुए हैं।

ऋषि दयानन्द वेदवादी थे वेद और केवल वेद ही उन्हे स्वत प्रमाण थे, वह आजीवन उसी मे निमग्न और रत रहे। आर्यसमाज पर वेद और वैदिक धर्म प्रचार का महान् उत्तरदायित्व है। उसने अब तक जो कुछ किया है, यद्यपि वह अपना महत्व रखता है परन्तु कार्य की महानता को दृष्टि में रखते हुए वह अभी नगण्य है। यह तभी सम्भव है जब हम अपनी सारी शक्ति वेद प्रचार पर केन्द्रित कर दें। हमने अपनी सीमित शक्ति को शाखा प्रशाखाओ मे विभक्त करके इस कार्य को जो क्षति पहुचाई है—आर्यसमाज की वर्तमान शिथिलता उसका ही दुष्परिणाम है

सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आर्य समाज द्वारा नवीन अभियान की आवश्यकता

— स्वामी अग्निवेश द्वारा सती प्रथा का विरोध —

सवाल तथाकथित सती प्रथा को लेकर पूरे देश मे एक बहस चल रही है इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है ?

जवाब बहस! बर्बरता पर कही बहस होती है। मैं आर्य समाजी हूं और आर्यसमाज की तो स्थापना ही सती प्रथा बाल विवाह नरबलि छुआछूत और पाखंड को समूल नष्ट करने के लिए हुई है। सती प्रथा न तो शास्त्रसम्मत है और न ही विवेकसम्मत। यह तो स्त्री पर पुरुष प्रधान समाज के कारण उत्पन्न एक मध्ययुगीन विकृति है और भारतीय समाज व हिन्दू धर्म का कलक है।

सवाल लेकिन पुरी के शंकराचार्य स्वामी श्री निरंजनदेव तीर्थ न तो इसे पूर्णतया शास्त्रसम्मत और वेदो के अनुकूल बताया है। इसके समर्थन में वह फासी पर तक चढने को तैयार हैं।

जवाब मैंने श्री निरंजनदेव तीर्थ का बयान अखबारो में पढा है और मुझे खेद है कि उन्होने शंकराचार्य जैसी महत्वपूर्ण व गरिमायुक्त गद्दी पर बैठने के बावजूद ऐसा वक्तव्य दिया है कि पूरे हिन्दू धर्म का सिर शर्म से झुक जायगा। एक तरफ तो हम यह बखान करते हैं कि हिन्दू धर्म सबसे ज्यादा तार्किक और मानवीय है दूसरी तरफ सती जैसी बर्बर प्रथा को धर्मसम्मत बताते है।

सवाल लेकिन उन्होने तो चुनौती दी है कि कोई भी व्यक्ति उनसे गोवर्धनपीठ (पुरी) मे आकर शास्त्रार्थ कर ले।

जवाब देखिए जब राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरोध मे अभियान चलाया था और तत्कालीन वायसराय लार्ड विलियम बैंटिक ने सती प्रथा निरोधक अधिनियम पारित किया तब भी तत्कालीन पुरातन-पंथिया परम्परापंथियो और निरंजनदेव तीर्थ जैसे धर्माचार्यों ने इसे हिन्दू धर्म में हस्तक्षेप बताते हुए विरोध किया। तब लार्ड बैंटिक ने उन धर्माचार्य से सती प्रथा के वेदानुकूल होने का प्रमाण मांगा। प्रमाण में ऋग्वेद का एक उदाहरण तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया। इस मंत्र में पति की मृत्यु के बाद पत्नी के लिए अग्रेगक्ष का प्रयोग है लेकिन वायसराय के सामने उसे अग्नेगक्ष करके दिखाया गया। इसके बाद सरकार ने मूल पाडुलिपियो मे इस मंत्र को देखा और सभी समर्थको की अपील को रद्द कर दिया। बाद मे तमाम तर्कों-कुतर्कों के बावजूद तत्कालीन पंडित वेदो मे सती प्रथा का समर्थन नही सिद्ध कर सके।

सवाल लेकिन शंकराचार्य की शास्त्रार्थ की चुनौती ?

जवाब हम तो शास्त्रार्थ की परम्परा का सम्मान करते है। रही चुनौती की बात तो पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजनदेव को मेरी चुनौती है कि वह अपनी गुफा गोवर्द्धन पीठ से निकल कर प्रबुद्धजनो के बीच मे दिल्ली के रामलीला मैदान मे आकर शास्त्रार्थ कर लें।

सवाल मान लीजिए यदि शंकराचार्य ने सती प्रथा को वेदो मे सिद्ध कर दिया ?

जवाब पहली बात तो वेदो मे सती प्रथा का समर्थन सिद्ध हो नही किया जा सकता। दूसरा यदि एक क्षण के रूप मे आपकी बात मान भी लें तो महर्षि दयानन्द का अनुयायी होने और आर्यसमाजी होने के बावजूद ऐसे वेद का बहिष्कार कर दूंगा जिसमे सती प्रथा का समर्थन किया गया है। हम वेदो को ब्रह्म मानते हैं लेकिन ब्रह्म स्वरूप मानवीय विवेक मेरे लिए सर्वोपरि है। वेद को भी मैं इसीलिए स्वीकारता हूं क्योकि मेरे विवेक ने उसे स्वीकार किया है। मैं आर्यसमाज मे अपने विवेक के साथ आया इसलिए जो बात मेरा विवेक स्वीकार नही करेगा उसे बिल्कुल नही मानूंगा।

सवाल लेकिन कुछ लोगो का विवेक सती प्रथा' को स्वीकारता हो तो ?

जवाब विवेक ज्ञान और तर्क की कसौटी के बाद ही मान्य होता है। वैज्ञानिक चेतना और तर्क से शून्य मनुष्य का विवेक अपने आसपास के सामाजिक परिवेश और परम्पराओ के अनुरूप ढल जाता है। और वह अंध श्रद्धा का रूप ले लेता है। सती प्रथा नरबलि शिशुहत्या छुआछूत आदि इसी श्रेणी मे आते हैं।

सवाल समाज मे नारी की स्थिति को लेकर शास्त्रो की क्या राय है ?

जवाब वैदिक साहित्य में नारी को समाज मे पुरुष के समान दर्जा प्राप्त है। शास्त्रो मे गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाओ का उल्लेख है। स्वयं स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि स्त्री का धर्म रसोईघर का काम करना नही है, बल्कि ब्राह्मणी को अध्ययन शिक्षण और सामाजिक कार्यों मे व्यस्त रहना चाहिए युद्ध-प्रेमी वीर स्त्रियां रणभूमि मे सेनापति का भूमिका निभा सकती है जैसे दशरथ के साथ कैकई गई थी। यह तो मध्य युग मे पुरुषो ने अपनी श्रेष्ठता स्थापित करते हुए स्त्री का दर्जा गिरा दिया और मध्ययुगीन पंडितो व आचार्यों ने स्त्री के लिए विधान व नियम बना कर उसे घर में कैद कर दिया। मनुस्मृति ने तो एक कदम आगे जाकर स्त्री श्रेष्ठता की वकालत करते हुए लिखा है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। लेकिन बाद में मनुस्मृति मे भी तोड़-मरोड़ करके स्त्रियो के विरुद्ध सूक्त लिख दिए गए।

सवाल कुछ लोगो का तर्क है कि स्वेच्छा से सती होने में स्त्री की महिमा बढती है वह पूज्यनीय हो जाती है। फिर यह स्त्री पर अत्याचार क्यो जब तक जबरदस्ती न की जाए।

जवाब अजीब बात है। स्वेच्छा मे कोई स्त्री सती नही होती। यदि किसी लड़की के अन्दर बचपन से यह भावना ठूसी जाए कि सती होना देवी बनना है उसके सामने सती परम्पराओ का बढा-चढा कर गुणगान किया जाय ऐसे मे यदि अचानक वह स्त्री विधवा हो जाए और पति वियोग में एकाएक आवेश में आकर वह विधवा के लांछित जीवन की अपेक्षा आत्महत्या करके देवी बनने की बात मुंह से निकाल दे तब भी उसे समझाने की बजाय उसकी जय-जयकार होने लगे तो इसे आप स्वेच्छा की संज्ञा देंगे ? यदि शुरू से ही सती परम्परा को गौरवान्वित न किया जाए पति वियोग में विवेक से शून्य कोई स्त्री आत्महत्या का निर्णय भी करे तो जय-जयकार की बजाय उसे समझाया जाय व हिम्मत बधाई जाए उसके सामने भावी जीवनका अधपण चित्र खीचा जाए तो मेरा दावा है कि कोई भी सती नही होगी। रहा महिमा की बात तो भारतीय परम्परा ने सच्चा सती सावित्री को माना है जिसने जिन्दा जलने की बजाय पति को भी जिला लिया।

सवाल शंकराचार्य श्री निरंजनदेव तीर्थ ने तो विधवा समस्या का कारण राजा राममोहन राय का पाप बताया है।

जवाब श्री निरंजनदेव तीर्थ आखिर चाहते क्या है ? क्या विधवा समस्या का एक मात्र हल पति के शव के साथ स्त्री को आग मे झोंक देना है। राजा राममोहन राय जैसे महान समाज सुधारक पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है। उनके महान अभियान को पाप की संज्ञा देना शंकराचार्य को शोभा नही देता। स्वयं आदि शंकराचार्य ने पाखंड के विरुद्ध एक व्यापक सुधार अभियान चलाया था। समय-समय पर सामाजिक व धार्मिक विकृतियो के खिलाफ ऐसे अभियानो की जरूरत पड़ती है। इन्हें पाप की संज्ञा देना गलत है।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

कट्टरपंथ की गिरफ्त में निर्धन मुसलमान

इस्लामी पुनरुत्थान कहीं भी मुख्यत दलितों का आंदोलन नहीं बना है। अन्य देशों की भांति मुस्लिम देशों में भी गरीब लोग अपनी दैनन्दिन रोजी-रोटी की फिक्र में रहते हैं। कट्टरपंथ उन मध्यम वर्गीय मुसलमानों द्वारा शुरू किया गया है जो प्रारंभ में आधुनिक और पश्चिमी तौर तरीकों से प्रभावित होते हैं परन्तु लौकिक सुख या आध्यात्मिक पूर्णता पाने में असमर्थ होकर कुण्ठित हो जाते हैं। यह कहना है विख्यात इस्लाम विशेषज्ञ कैरेन इलियट हाउस का। हाल ही में एशियन वाल स्ट्रीट जनल में छपे उनके एक लेख के कुछ भावांश यहां प्रस्तुत है —

दुनिया के प्राय मुस्लिम बहुल देश आज कट्टरपंथ की गिरफ्त में है। ये सारे देश बहुत ही असुरक्षित महसूस करते हैं। इन देशों में बढ़ते कट्टरपंथ पर काबू पाने में दोनों महाशक्ति स्वयं को अक्षम समझ रही है।

मुस्लिम देशों में बढ़ते कट्टरपंथ का कारण मजहब और राजनीति के बीच के अन्तर का पतन समाप्ति है। यह सोच इस्लाम की मूल अवधारणा पर आधारित है। मूल रूप से इस्लाम में किसी भी धर्मनिरपेक्ष तत्व को अस्वीकार किया जाता है तथा मजहबी मुल्लाओं और आयतुल्लाओं को ही एक साथ राजनीतिक सामाजिक और धार्मिक नेता माना जाता है।

इस्लाम के अन्दर दो फिरके हैं—शिया और सुन्नी। सुन्नियों की अपेक्षा शिया ज्यादा कट्टरपंथी होते है। परन्तु दोनों ही मजहब और राजनीति के बीच किसी अंतर को स्वीकार नहीं करते है। दुनिया के सभी मुसलमानों में 90 प्रतिशत सुन्नी है। ईरान को छोड़कर किसी भी देश में शिया बहुमत में नहीं है।

ऐसे कई प्रमाण हैं कि सभी इस्लामिक देशों में निम्न वर्ग के लोग बुरी तरह प्रताड़ित किए जा रहे हैं। सभी इस्लामी देशों में मध्य वर्ग के लोग ही कट्टरपंथी हैं जबकि निम्न वर्ग जो बहुमत में है कट्टरपंथी के दल-दल से निकलकर धर्मनिरपेक्ष प्रजातंत्र में खुलकर सांस लेना चाहता है। मजहब की आड़ में इस्लामी देशों का मध्य वर्ग ही सत्ता पर हावी है तथा उसने मजहब और राजनीति को इस हद तक मिला दिया है कि वहां न धर्मनिरपेक्षता है न प्रजातंत्र कुछ है तो वह है कट्टरपंथी अधिनायकवाद।

इसका कारण हमें इस्लाम में मिलता है जिसकी स्थापना 7वीं शताब्दी में एक अरब व्यापारी मोहम्मद ने की थी। उसी ने मजहब और राजनीति को एक-दूसरे से पूरी तरह मिला देने की शुरुआत की थी। उसने अपने मजहब का प्रचार सिर्फ शब्दों से नहीं बल्कि सैन्य विजयों और तलवार के बल पर धर्म-परिवर्तन करके भी किया।

दूसरी ओर इंडोनेशिया जैसे कुछ ऐसे भी देश हैं जिन्होंने मजहब और राजनीति के बीच एक दूरी बना रखी है। यह कारण है कि वहां लोग सुख-शांति से जी रहे है। जबकि ईरान इराक सऊदी अरब, मोरक्को पाकिस्तान ट्यूनिशिया बहरीन आदि देशों में कट्टरपंथी के कारण वहां की जनता त्राहिमाम कर रही है। ईरान के शाह और राष्ट्रपति अनवर सादात जैसे लोगों को इस्लामी कट्टरपंथी का विरोध करने की भारी कीमत अदा करनी पड़ी है। कट्टरपंथी मुसलमान संघर्ष करने में इसलिए भी नहीं हिचकिचाते हैं क्योंकि मजहबी मान्यताओं के अनुसार ऐसा संघर्ष करने से उन्हें जन्नत का पासपोर्ट मिल सकता है।

(पाञ्चजन्य से साभार)

ऋषि कौन

— परिपूर्णानन्दवर्म्मा —

कलियुग में सिर्फ एक व्यक्ति को महर्षि की उपाधि मिली स्वामी दयानन्द सरस्वती को इसलिए कि उन्होंने वेदों को एकदम नये रूप में हिन्दू समाज के सामने प्रस्तुत किया। किन्तु इसी युग में उनसे पूर्व वेदों का भाष्य करने वाले आदि शंकराचार्य को भी महर्षि नहीं कहा गया है। स्वामी दयानन्द जी ने वेदों की व्याख्या अभूतपूर्व रूप में अपने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में इस प्रकार की है।

जिसमें सभी मनुष्य सत्य विद्या को जानते हैं अथवा प्राप्त करते है अथवा विचारते है अथवा विद्वान होते हैं अथवा सत्य विद्या की प्राप्ति के लिए जिनमें प्रवृत्त होते है उनको वेद कहते है।

वृहदारण्यक उपनिषद में (2 1 19) 22 वैदिक महाब्राह्मण ग्रंथ का उल्लेख है जिसके अनुसार वेद मंत्रों को प्रकट करने वाले या विधि निर्धारक को ऋषि कहते है। इस दृष्टि से भी स्वामी दयानन्द ऋषि हुए।

परमिन्वी दिव्य दृष्टि वाला ज्ञान के द्वारा जो मंत्रों का प्रथम प्रवक्ता हो संसार की अंतिम सीमा तक का ज्ञान रखता हो उसे ऋषि कहते हैं। रत्नकोष के अनुसार ऋषियों की सात श्रेणियां हैं ब्रह्मर्षि देवर्षि महर्षि काण्डर्षि श्रुतर्षि तथा राजर्षि। शास्त्र के अनुसार व्यास आदि महर्षि थे भेल आदि परमर्षि कण्ववद इत्यादि देवर्षि थे वशिष्ठ आदि ब्रह्मर्षि थे जैमिनी आदि काण्डर्षि थे तथा ऋतुपर्ण आदि राजर्षि थे। बाद में वैदिक साहित्य के अनुसार वैदिक ऋचाओं के साक्षात्कार करने वाले पुरुष तथा स्त्रियां भी ऋषि कहे गये। ऋग्वेद के अनुसार कुत्स अत्रि रेभ अगस्त्य कुशिक वशिष्ठ व्यश्व आदि ऋषि है। वृहदारण्यक उपनिषद ने विश्वामित्र भरद्वाज गौतम जमदग्नि कश्यप अत्रि को ऋषि लिखा है। राजर्षि कोई नहीं है। अथर्ववेद ने इस सूची में अंगिरा गविष्ठिर कक्षीवान मधातिथि त्रिशोक मुद्गल तथा उशना काव्य जोड़ दिया है। राजर्षि कोई नहीं है।

ऋतुपर्ण राजा थे। ऋतुपर्ण के बाद जनक का नाम ही राजर्षि में आता है। प्राचीन भारत में एक से एक महान नरेश तथा धर्मप्रचारक राजा हो गये पर किसी को भी राजर्षि इसलिए नहीं कहा गया कि वे वेदज्ञ नहीं थे। जनक के यहां याज्ञवल्क्य ऋषि भी उपदेश लेने गये थे। और उनके दरबार में रत्न के रूप में रह गये थे। श्री मद्भगवद गीता में श्री कृष्ण ने ऋषियों में अग्रणी कपिल को कहा है जिन्होंने सांख्य दर्शन की रचना की। व्यास को गीता में केवल मुनि कहा गया है। व्यास का अर्थ है सम्पादक। इसीलिए गीता से लेकर पुराणों के अनेक सम्पादक व्यास कहलाये जो वेद तथा ब्रह्मसूत्र के वेदव्यास से भिन्न हैं। महाभारत में युधिष्ठिर को राजन कहा है राजर्षि नहीं।

इधर बहुत वर्ष पूर्व जब श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन को राजर्षि की उपाधि प्रसिद्ध सन्त तथा महात्मा देवरहा बाबा ने दी तब भी काशी के पण्डितों ने आपत्ति की थी। राजनीति वालों को यह उपाधि देने पर। किन्तु सन्त देवरहा बाबा के अधिकार को चुनौती देने का साहस नहीं हुआ।

अब उसी काशी नगरी में विद्वानों की सभा ने राजनीतिज्ञों को राजर्षि की उपाधि देना शुरू किया है तब, कौन जाने वह महर्षि की उपाधि भी बांटना शुरू कर दे। ऐसी उपाधि देने वाली मण्डली में एक भी ऋषि की व्याख्या में नहीं आता। न कोई सन्त है। विद्वत सभा अब एक राजनैतिक प्रपंच बन गयी है। यदि उनमें एक भी वेद का द्रष्टा हो व्याख्याकार हो तथा स्वामी दयानन्द की तरह विधि निर्धारक हो तो उसे कुछ बोलने का अधिकार होता अन्यथा अब यह मण्डली हिन्दू धर्म के विरुद्ध एक व्यापक आघात तथा बदनामी कराने पर तुली है जिससे हमारी प्राचीन सभ्यता धर्म तथा शिष्टाचार पर गहरी चोट पहुंचेगी और महर्षि या राजर्षि की उपाधि धर्म व ईश्वर उपाधि की श्रेणी में आ जायगी।

(दैनिक जागरण से साभार)

पुरुषार्थ बनाम भाग्य

— डॉ० देवशर्मा वेदालंकार —

कर्म योनि एवं भोगयोनि—ये दो योनिया प्रसिद्ध हैं इनमे मनुष्येतर पशुपक्षी आदि जीव भोगयोनि के अन्तर्गत आते हैं जो केवल पूर्व कर्मों का फल ही भोगते हैं, उस योनि मे किये गये कर्मों का फल वे नही प्राप्त करते। कर्मयोनि में मनुष्य की गणना होती है, क्योकि इस जन्म मे मनुष्य जहा एक ओर पूर्वजन्मकृत कर्म फल भोगता है वही दूसरी ओर वर्तमान एव भावी जन्मो के लिए जाति, आयु एव भोग का निर्धारण भी करता है। कर्म करना मनुष्य का सहज स्वाभाविक गुण है, प्रतिपल वह कोई न कोई कर्म अवश्य करता है यदि वह शुभ कर्म नही करेगा तो अशुभ करेगा, लेकिन वह खाली नही बैठ सकता। इतना अवश्य है कि मनुष्य, कर्म करने मे स्वतत्र है जैसे कि कोई विद्यार्थी परीक्षाभवन मे बैठकर प्रश्नो का उत्तर सही लिखे या अशुद्ध लिखे वह उत्तर लिखने मे स्वतत्र होता है, उसी प्रकार मनुष्य भी शुभ कर्म करे या अशुभ, वह पूर्ण स्वतत्र होता है। लेकिन फल प्राप्त करने मे वह स्वतत्र नही होता। जैसे परीक्षक सही या गलत उत्तरो के अनुसार विद्यार्थी को उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण करता है उसी भाति परम पिता परमात्मा भी हम मनुष्यो के शुभाशुभ कर्मों के अनुरूप सुख या दुख रूप फल प्रदान करता है। परमात्मा की यह न्याय व्यवस्था नियत एव अपरिवर्तनशील है।

यह ध्रुव सत्य है कि मनुष्य अपने पुरुषार्थ (कर्म) के आधार पर सुख दुखात्मक फल प्राप्त करता है। यहा विचारणीय बिन्दु यह है कि क्या सभी कर्म पुरुषार्थ कहाते हैं? नही, मनुष्य का प्रत्येक कर्म पुरुषार्थ कोटि मे नही आता और न ही पारिभाषिक अर्थ मे वह कर्म होता है—"कि कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिता" (गीता 4-6)। हम प्रत्येक कर्म को पुरुषार्थ समझ लेते हैं भले ही वही कुकर्म या अकर्म ही क्यो न हो। एक विद्यार्थी परीक्षाभवन मे परीक्षा देते हुये उत्तीर्ण होना चाहता है। इस निमित्त समुचित ढग से परीक्षा देना, परीक्षा नियमो का पालन करना-यह तो पुरुषार्थ है। लेकिन परीक्षा उत्तीर्ण करने के उद्देश्य से नकल-करना, गुरुजनो को धमकी देना, अन्य अवैधानिक तरीके अपनाना कर्म तो है लेकिन पुरुषार्थ नहीं। इस भाति अविवेक के कारण प्रत्येक चालाकी, मक्कारी, झूठ फरेब आदि क्रियाओ को भी हम लोग पुरुषार्थ समझ बैठते हैं और उन बुराईयो मे उलझे रहते हैं। अत यह मानना चाहिये कि कर्तव्य परायणता तो पुरुषार्थ है शेष अपुरुषार्थ—जिनका परिणाम सदा दुखद होता है।

योगदर्शन मे भगवान् पतजलि लिखते हैं - कि पूर्वजन्म के कर्म समूह जाति आयु और भोग इन तीन रूपो मे फलीभूत होते हैं "सति मूलेत-द्विपाकोजात्यायुर्भोगा" अर्थात् कर्म का मूल रहने पर उन कर्मों का परिपाक जाति आयु और भोग के रूप मे आविर्भूत होता है। कोई मनुष्य अपने पूर्व कर्म के आधार पर वर्तमान जीवन मे मनुष्य योनि मे जन्म लेता है और भविष्य मे भी मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली आदि के रूप मे पैदा होगा, इस योनि विशेष को ही "जाति" कहते हैं। कोई जीव एक माह तक, कोई 1 वर्ष तक, कोई दस, बीस, पचास और सौ वर्षों तक जीवित रहता है। इतने वर्ष तक जीवित रहना जीव की "आयु" होती है। और इस जीवन काल मे वह जीव नाना प्रकार की सुख दुखात्मक अनुभूतिया ग्रहण करता है यह जीव का भोग है। इस प्रकार जीवात्मा अपने पूर्व सचित कर्मों के आधार पर सामान्य रूप से जाति आयु और भोग को प्राप्त करता है। लेकिन यह त्रिविध फल जीवन का विस्तार है जीवन की चरम परिणति नहीं, क्योंकि जीवन स्वय एक अलग उद्देश्य रखता है। जीवात्मा का लक्षण है—"कर्तृत्व ज्ञातृत्वभोक्तृत्ववानणु जीव इत्युच्यते"—जिसमे कर्तृत्व ज्ञातृत्व एव भोक्तृत्व गुण रहते हो उसे जीव कहते हैं जाति आयु आदि विविध फलो का भोक्ता तो जीव है ही, इसके अलावा ज्ञातृत्व एव कर्तृत्व भी उसमे रहते हैं। और यह भी शास्त्रसम्मत है—ऋतेज्ञानान्न मुक्ति—ज्ञान के बिना जीव की मुक्ति नही होती। यहा ज्ञान का अर्थ है—अज्ञान का नाश अथवा आत्म तत्त्व का बोध। यह अज्ञान नाश अथवा आत्मबोध कर्मों के बिना सम्भव नही अत नये कर्म तो जीव को करने ही होंगे। अतएव यह कहा गया है कि जीवन का मुख्य उद्देश्य स्वतत्र कर्म करना एव आत्मबोध प्राप्त करना है। यदि यह न माने तो फिर मनुष्य को कर्म स्वातन्त्र्य एव उसके द्वारा मुक्ति पद की प्राप्ति कैसे सम्भव होगी?

यहा एक प्रश्न पैदा होना स्वाभाविक है कि जब पूर्व कर्मों के द्वारा जाति आयु भोग-तीनो पहले से ही नियत है तब फिर उन्हे बदलने का प्रयास करना सर्वथा व्यर्थ है जो होना होगा वह होकर ही रहेगा। यदि हमारे भाग्य मे पत्नी की मृत्यु और दूसरी पत्नी से विवाह लिखा है तो वह होकर ही रहेगा। यदि हमारी आयु चालीस वर्ष की पूर्वत निश्चित है तो हम उतने वर्ष ही जियेंगे भले ही हम कुछ भी कर लें। सन्त तुलसीदास जी भी यही कहते हे—"हानिलाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ"। अत अपनी आयु एव भाग्य को परिवर्तित करने के लिये प्रयत्न व्यर्थ है।

इसका समाधान यही है कि यद्यपि यह ठीक है कि जाति आयु भोग अथवा हानि लाभ जीवन मरण आदि फल हम अपने पूर्व कर्मों के परिणाम स्वरूप प्राप्त करते है लेकिन इसका आशय यह कदापि नही कि वर्तमान जन्म के नये कर्मों से इन फलो की इयत्ता मे परिवर्तन नही किया जा सकता। यदि केवल पूर्व कर्म ही सब कुछ हो और नये कर्मों का कोई महत्त्व न हो तब तो फलो की 'इयत्ता' उतनी ही माननी पडती। लेकिन हम पहले ही कह चुके है कि जीव का कर्तृत्व गुण कभी समाप्त नही होता जब वह नये कर्म करेगा तो उनके फल भी अवश्य मिलेंगे। ऐसी दशा मे पूर्व कर्म के फलो की इयत्ता मे भी परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इसे हम निम्न उदाहरण से भलीभाति समझ सकते हैं—

मैंने जुलाई 87 मे अध्यापन कार्य किया अगस्त 87 मे एक हजार रु वेतन मिला। यह वेतन मेरे पूर्व माह के कर्म का फल है। इसे हम भोग भी कह सकते हैं क्यो कि यह वेतन हमारे सुख दुख का विधायक है। अब मैं इस एक हजार रु की राशि को—जो कम से कम एक माह के सुख साधन जुटाने के लिये पर्याप्त है—चाहूं तो जुआ खेलकर एक ही दिन मे समाप्त कर दू और चाहूं तो बुद्धिमत्ता पूर्वक खर्च करके दो और तीन माह तक के लिये सुख सामग्री जुटा सकता हूं। इस भाति मैं अपने दुष्कर्म या सुकर्म द्वारा एक हजार रु से प्राप्त होने वाले भोग को घटा भी सकता हूं और बढा भी सकता हू।

एक दूसरा उदाहरण लेते हैं—मैंने एक अच्छी प्रतिष्ठित दुकान से नई साइकिल खरीदी। उसने हमे दो वर्षों की गारन्टी दी कि दो वर्षों तक इसमे कोई गडबड नही होगी। अब यह हम पर निर्भर है कि साइकिल को मे कैसे रखता हूं। चाहू तो दस दिन बाद ही कार से टक्कर मार कर साइकिल को नष्ट भ्रष्ट कर दू और चाहूं तो उसकी नियमित देखभाल करते हुये पाच और सात वर्षों तक उसे ठीक रक्खू, उसका कुछ भी नही बिगडता। ठीक इसी भाति हम अपने कर्मों से प्राप्त आयु एव भोग की इयत्ता मे परिवर्तन कर सकते हैं सयमी जीवन एव सदाचरण से आयु एव भोग को सौ एव सौ से भी अधिक वर्षों तक बढाया जा सकता है। इसीलिये वेदादि शास्त्रो मे भी आयुवृद्धि सुखादिवृद्धि के साधन वर्णित है।

सक्षेप मे—"कर्मप्रधान विश्व रचि राखा"—इस सूक्ति के अनुसार हमे अपने कर्मों मे पूरा-2 ध्यान देते हुये अपने जीवन का मार्ग प्रशस्त करना चाहिये केवल भाग्यवादी बनकर पूर्वकृत कर्मों का सहारा लेना और आगे के लिये अकर्मण्य बने रहना अपने अविवेक को सूचित करना है। निरन्तर कर्म करते रहना ही सच्चा जीवन है—'चरैवेति चरैवेति'।

ऋषि निर्वाण दिवस समारोह

आर्य समाज, अजमेर मे दीपावली के पावन पर्व पर युग प्रवर्तक एव राष्ट्रीयता के प्रथम उन्नायक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 104 वा निर्वाण दिवस बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के अभियान्त्रिकी विभाग के रीडर डॉ आनन्द प्रकाश की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक आयोजित हुआ जिसमे श्री आचार्य दत्तात्रेय आर्य, प्रो देवशर्मा वेदालकार प्रो बुद्धिप्रकाश जी आर्य तथा डॉ कृष्णपालसिंह जी ने महर्षि के अनुपम व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए भाव-विभोर होकर श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

—नवीन कुमार शर्मा (प्रचार मत्री)

महर्षि - महिमा

रासासिंह रावौरिया "सौमित्र"

सत्य से जन्मे हुए तुम सत्य में लयमान !
बन गया जीवन तुम्हारा सत्य का अभियान !

एक मूषक ने जगाया उग्र ऊहापोह,
जन्म के सग क्रान्ति लाया, सत्य का विद्रोह,
बाध पायी थी नही, पितु मोह की जजीर।
मातु की ममता बहाती रह गई दृग-नीर !

तुम छुपाये थी गंगा, बन गये चट्टान !
था तुम्हारे सामने, इस विश्व का कल्याण !

व्यष्टि के व्यक्तित्व मे, बाधे समष्टि विवेक,
तुम युगो के बाद आये, एक केवल एक !
क्रान्तिदर्शी दृष्टि झांकी, पार युग के पार !
सृष्टि की सुख-शान्ति का सपना लिए साकार!

देश के अन्तिम पतन मे तुम प्रथम उत्थान !
पूर्व के उगते अरुण, मध्याह्न के दिन मान !

वेद की गगा मरुस्थल मे गई थी सूख !
था तिमिर वह व्याप्त, भूपर थी न एक मयूख !
थे घुटन मे मनुजता के छटपटाते प्राण,
कर रहा था विश्व, वैदिक वायु का आह्वान !

तुम उदय के साथ लाये प्राण का पवमान !
पा गये जिससे पुन निष्प्राण भी नव प्राण ! !

वर लिए अभिशाप सारे, तज दिये वरदान !
विश्व को अमृत पिलाकर, खुद किया विष-पान!
फूल बाटे विश्व को पा शूल के प्रतिदान !
हैं तुम्हारे अनगिनत, अहसान पर अहसान !

भूल सकता कौन तुमको देव, श्रद्धावान ?
तुम हुए माँ भारती के क्रान्ति पुत्र, महान !

आर्य स्पेशल ट्रेन का भव्य स्वागत

श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा दिल्ली के ओर से श्री रामलाल मलिक के नेतृत्व मे भारत भ्रमण एव प्रचार पर निकली आर्य स्पेशल ट्रेन के यात्रियों का अजमेर पहुचने पर आर्यसमाज अजमेर की ओर से रेलवे पर स्टेशन भव्य स्वागत किया गया। वैदिक धर्म की जय हो आर्यसमाज अमर रहे, ऋषि दयानन्द की जय के उदघोषो से स्टेशन गूज उठा।

श्री रासासिंह के नेतृत्व मे आचार्य गोविन्दसिंह श्री नवीन शर्मा श्री स्वामी सदानन्द श्री किशनसिंह आदि आर्य सज्जनो तथा स्वयसेवको ने इस आयोजन मे सहयोग दिया।

सती कांड की निन्दा

आर्य समाज जीन्द शहर (हरियाणा) ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर रूपकवर सती काड की निन्दा की है। और सती प्रथा को एक बर्बर प्रथा बताया है।

—इन्द्रदेव शास्त्री

मातृ मन्दिर रजत जयन्ती समारोह

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का रजत जयन्ती समारोह 30-31 अक्टूबर, 1 नवम्बर 1987 को होगा।

— डॉ पुष्पावती (अध्यक्ष)

मूर्ति पूजा का ...

(शेष पृष्ठ 1 का)

ऋषि दयानन्द और मूर्तिपूजा

आधुनिक भारत के राजाराम मोहन राय आदि जिन धार्मिक और सामाजिक सुधारको ने मूर्तिपूजा का निषेध किया है उनमे ऋषि दयानन्द का एक विशेष स्थान है। स्वामीजी ने धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भी मूर्तिपूजा की अनेकों हानियां बताई हैं। उदाहरण के लिए मूर्ति और मन्दिरो मे जिस प्रकार धन और शक्ति का अपव्यय होता है उसे लोगो की दरिद्रता और अन्य कठिनाईयो को दूर करने मे उपयोग किया जा सकता है। मूर्ति और मन्दिरो के नाम पर अनेक अनाचार लड़ाई झगड़े होते हैं। मूर्तियों को ही धर्म अर्थ काम और मोक्ष का साधन समझने के कारण लोग आलसी और पुरुषार्थ विहीन बन जाते हैं। नाना प्रकार की शक्लो नामो और भिन्न भिन्न आकृतियो की मूर्तियों के कारण धार्मिक एकता नष्ट होकर परस्पर विरोधी मत और सामाजिक अनेकता उत्पन्न होती है जिससे देश को बडी हानि होती है। मूर्तियो के चमत्कारो के भरोसे विजय के स्थान में आक्रमणकारियों से पराजय मिलती है जिसके परिणामस्वरूप देश की स्वतन्त्रता धन और राज्य सब पर शत्रुओ का अधिकार हो जाता है। पत्थर व उसकी कृत विकृत शक्लो को यदि कोई हमारे नाम से पुकारे तो हम इसे अपना अपमान समझकर क्रोधित हो जाते हैं तो भला पूज्य ईश्वर के बदले ऐसी मूर्तियो को ईश्वर के नाम से पुकारना या सम्बोधित करना कितना अपमान जनक है। मन्दिरों और मूर्तियो के दर्शन के लिए लम्बी लम्बी यात्राएं करके जहा अनेक दु ख और कष्ट होते हैं तथा धन व समय नष्ट होता है वहा यदि हम अपना समय और ये साधन दूसरो की भलाई और उपकार मे लगाए तो कितना लाभ होगा। मन्दिरो मे चढाये धन का बहुधा पुजारियों द्वारा मद्यमांस के सेवन तथा लड़ाई झगडे और यहा तक कि व्यभिचार जैसे कुकर्मों मे उपयोग होता है। माता पिता आदि जीवित मूर्तियो के स्थान मे निर्जीव मूर्तियो की सेवा और सत्कार करना एक प्रकार की कृतघ्नता है। मन्दिरो मे मूर्तियो की चोरी और तोड फोड के कारण आत्मग्लानि तथा अनावश्यक दु ख और कष्ट भोगना पड़ता हैं। अनेक मन्दिरो मे देव दासियो पुजारियो तथा अन्य स्त्रीयो की कुसगति से व्यभिचार फैलता है। मन्दिर के पुजारी जिन सुगन्धित पदार्थों और सुन्दर फूलो को तोड़कर मूर्तियो पर चढाते हैं वे पुष्प तथा अन्य पदार्थ शीघ्र नष्ट ही नहीं होते बल्कि पानी के साथ नालियो मे सडकर रोग और दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार मिट्टी मे मिलकर जल वायु दोनो दूषित हो जाते हैं और कभी-कभी उनमे कीडे आदि उत्पन्न होकर रोग फैलाते हैं।

श्री रतनलाल गर्ग आर्य प्रिन्टर्स, अजमेर में मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज, अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 162

सृष्टि सम्वत · 1972949087

। ओ३म् ।

पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव हैं, सत्य हमारा कर्म ॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 3 रविवार, 15 नवम्बर, 1987
अक 18 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

मार्गशीर्ष कृ 9 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

तथाकथित भगवानों का षडयन्त्र

किस प्रकार मे तथाकथित भगवान अन्य प्रमुख-प्रभाव शाली लोगो को अपने अनुसार बनाते है यह एक अदभुत रहस्य पूर्ण बात है यथा रौनैल्ड रीगन एव मागरट थैचर जैसी विश्व विभूतियो को ऐसे तथाकथित प्रभु येन केन प्रकारेण प्रभावित करके अपना वचस्व ससार मे स्थापित कर लेत है। यदि भारत मे प्रधानमन्त्री इनसे यज्ञ कराने हेतु निवेदन करें ताकि किसी भी प्रकार आसन्न सकट समाप्त हो सके तो फिर अन्य साधारण व्यक्ति तो इन भगवाना के स्वत ही भक्तजन बन जावेंगे।

यदि किसा म अधिक विशेष नही अपितु थोडी सी चतुराई-चालाकी रूपी जादुई सदृश ज्ञान हो तो वह अपने जादू से अन्यो को प्रभावित कर लेता है जैसे की सोने की अगूठी बना देना, आग मु ह मे रखना अथवा पानी को तल मे परवर्तित करना आदि।

एसे भगवान अपने देश एव विदेश मे अपने तथाकथित चमत्कारो तथा एसे ही अन्य कारनामा से जनता जनार्दन को विश्वास म लेकर उनसे मन चाहा काय सपन्न करान म सफल हो जाते हैं जब इस प्रकार के दुश्चरित्र बल पर उन्हे आराम सुख एव ऐश का जीवन यापन सम्भव हा तो फिर वे परिश्रम रूपी कमाई की ओर क्यो ध्यान दें। दुर्भाग्य यह है कि अनेक व्यक्ति इनके जाल मे फसते रहत हैं, और इस तरह य कुत्सित खेल चलते रहते हैं। विचित्र बात यह है कि ऐसे तथाकथित अपने को भगवान कहने वालो की कोई कोई कमी नही होती, एक के बाद दूसरे स्थान ग्रहण करते रहते हैं। इस तरह से यह धार्मिक शोषण का सिलसिला अनवरत रूप से चलता आता है। ऐसे धम और अनर्थल बातो का भडाफोड करने वाले श्री बी परमानद हैं। 57 वर्षीय श्री परमानन्द अपने व्यक्तित्व के धनी हैं। यदि वे चाहते तो उक्त प्रकार के भगवान बन सकते थ कुछ आश्चयजनक तथाकथित ऐसे ही कार्ग कलापा के द्वारा अन्यो को विमाहित कर सकत थे। और उसी प्रकार अपना उल्लू सीधा करके एशो आराम का जीवन यापन कर सकते थे किन्तु इसके विपरीत उन्होन ऐसे भगवानो की पोल खालकर समाज के सामने नग्न करने का ठानी और यही माग चुना।

श्री परमानन्द की काय शैली बडी सरल एव विचित्र है। वे जब कभी पढन या सुनत है कि ऐ, षडयन्त्री भगवान अपन ऐस जाद क करिश्मे दिखान जा रहे हैं ता ये सावधानी से उनकी चाला का द ~ हैं समभत है कि य धत किस स अपना झूठा वचस्व बनाते हैं। यदि किसी व्यक्ति मे थोडी सा भी जादू आदि (Magic) की जानकारी हो तो वह ऐसी बातो को सरलता से जान सकता है। वैसे श्री परमानन्द ऐसे तथाकथित भगवानो का भडा फोड दस वर्षों से करते आ रहे हैं। वैसे ये ऐसे आश्चर्यजनक एव अद्भुत खेल दिखाने वालो को इस काय मे पारगत होने के लिए एक्सपर्ट बनना होता है।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि मनुष्य ऐसे भगवाना के पास जाते ही क्यो हैं? क्योकि वे भ्रमवश मानते हैं कि उन तथाकथित भगवान मे विशिष्ट शक्ति है जिससे उन लोगो के कार्य एव समस्यायें हल भी हो सकती है। परमानन्द नें हसत हुए कहा, दुर्भाग्यवश मनुष्यो का इन भगवानो म अटूट अन्ध श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न हो हो जाती है। वे लोग भूल जाते हैं कि ये भगवान होकर भी फिर क्यो कर धन हरण-एंव शोषण करते हैं। ऐसा अधविश्वास अपने स्वार्थ के कारण होता है। वे आगे कहते हैं "क्या मनुष्य ऐसी प्रार्थनायें प्रभु से अपने स्वार्थ सिधि के लिए नही करता जैसे प्रभु मेरे रोग को हटा दो तो मैं प्रसाद बाटूगा अथवा 100/-दान दूगा चुनाव मे जीत हो ऐसा 2 करूगा आदि 2।" क्या यह भगवान को रिश्वत नही है? यदि मनुष्य सच्चे अर्थों में भगवान को मानता है ता फिर जो कुछ उसकी इच्छानुसार होता है वही ठीक और उपयुक्त है एसा मानना चाहिये।

परमानन्द इस प्रकार के व्यक्ति चाहे वे साधु हा अथवा भगवान कहलातें हो अति विराधी है। श्री परमानन्द न विशेष रूप स देश की एव विदेश की अनक यात्रायें की 4000 वक्तव्या म विज्ञान क आधार पर वार्ताए सुनी समझी हैं। श्री परमानन्द न तथा उनके अनेक साथी जिनमे वैज्ञानिक दार्शनिक विचारशील लोग थे, न्यूयार्क से सन् 1976 मे एक पत्रिका "The Sceptical Inqmrer' निकाली प्रकाशित की। इस पत्रिका का अध्ययन अनक विद्वाना धार्मिक एव दार्शनिक लोगो ने किया। परमानन्द को इस मासिक पत्रिका प्रकाशन हेतु किस बात ने आकर्षित किया? वे कहते है कि जब मै ऐसी Mircle मे बडा विश्वास करता था तथा मैं भी इस कला मे पारगत होना चाहता था। इस कार्य के लिए मैंनें 19 वर्ष मे अपना घर छोड दिया। किन्तु कोई भी मुझे भगवान की वास्तविक परिभाषा न दे सका। छ माह के इस विश्वास के साथघर लौट कर आया कि ये सब धोखा है और Miracle जैसी चीज कुछ भी नही कि ऐसे भगवान बनने वाले मात्र धोखा देते हैं और वे विशेष परिस्थिति मे Mircle करना जान जाते हैं विशेष कुछ नही-धोखा है इस। विश्वास एव मान्यता को सिद्ध करने लिए वे उदाहरण देते हैं "मैं जब 8 वर्ष का था, प्रोफेसर काजीकन्नम जो मेरे पिता के मित्र थे, ने एक आश्चर्यजनक खेल दिखाया। उसने मैं, मेरे मित्र को अपने घर पर बुलाया और हमने उन्हे अपने घर के टैंक बगीचे मे स्नान करते पाया। जैसे ही हम उनके पास पहुँचे उन्होने हमारे उपर पानी उछाल कर फेंका। आश्चर्य कि वह पानी केला बन गया बाद म उन्होनें कहा कि यह मैं आपकें टैंक मे नही कर सकता।

साई बाबा को लो जो कि अपन हाथ के पानी को पेट्रोल म बदल देने हैं किन्तु जब हमनें उन्हे चेलेन्ज दिया कि हमारे बताये द्वारा ऐसा करके दिखाये तो चुप रहे। सच ता यह कि ऐसे चमत्कार दिखानें वाले स्वय क्या दूसरो से भीख-दान मागतें है अर्थात सब धाखा ही धाखा है।'

सत्य साई बाबा भारत क प्रसिद्ध अनक तथाकथित भगवानो मे से एक हैं। जिन पर पहले परमानन्द का भी विश्वास था। किन्तु जब श्री लका के डाक्टर ए क कोवूर नामक ने सन् 1976 म उन्हे दावे क साथ सिद्ध करन को कहा ता वे हक्के बक्के रह गये-सब धोखा। इन्ही

शेष पृष्ठ 5 पर

मननीय

— प० गंगाप्रसाद उपाध्याय —

हमारी पद्धति में यान्त्रिक युग की भावनायें बड़े वेग से आ रही हैं। उन सूक्ष्म विचारधाराओं के परीक्षण की आवश्यकता है जो साधारण जनता को असोलन में डाल रही हैं और हमारा पुरोहित वर्ग उन पौराणिक रूढ़ियों को प्रोत्साहन दे रहा है जिनके उन्मूलन के लिए 'यज्ञ' को सीमित करने की आवश्यकता है।

सम्पादकीय—

नीड का निर्माण फिर-फिर, नेह का आह्वान फिर-फिर

प्रति वर्ष दीपालिका पर्व (शारदीय नवस्स्येष्टि पर्व) पर प्रत्येक आर्य समाज "महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव" का आयोजन करता है। क्योंकि मृत्युजयी दयानन्द ने भौतिक देह का 30 अक्टूबर 1883 ई० को दीपावली पर्व के ही दिन परित्याग किया था। अत इस दिन आर्य समाज निर्वाणोत्सव का आयोजन कर महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करती है उनके गुण का श्रवण, स्मरण और स्तुतिगान करते हैं। वैदिक परम्परा मे मृत्यु दिवस या पुण्यतिथि मनाने की परम्परा नही है, अतः हम इसे बलिदान दिवस भी कह देते हैं और आर्यजनो को ऋषि के देश जाति धर्म और सस्कृति की रक्षा के लिए विषपान के कारण हुए अपूर्व गौरव पूर्ण बलिदान से प्रेरणा लेते रहने, धर्म रक्षाहित सर्वस्व अर्पण कर देने तथा आत्मालोचन एव आत्म निरीक्षण करने का आह्वान भी करते रहते हैं।

अभी पिछले दिनो ऋषि का 104 वा निर्वाणोत्सव मनाया गया। रस्मी आयोजन हुए। शब्दो के घटाटोप मे मूलशकर की मूल भावना को भुलाकर के दयानन्द को दया और आनन्द दोनो को भूलकर केवल वाचिक श्रद्धाजलिया एव गुण कीर्तन कर अपने कर्तव्य की इति श्री समझ लेते है इस कारण इन रस्मी आयोजनो से हम कोई नई स्फूर्ति नया जोश और उत्साह अथवा सरफरोशी की तमन्ना प्राप्त नही हो पाती। उर्दू शायर की ये पंक्तिया सभवत मेरे मतव्य को उजागर करेंगी।

"शुक्र करता हूँ कि गैरो मे नही कोई गिला
शर्म आती है कि अपनो से शिकायत है मुझे।
"नश्तर को लेके हाथ मे फस्साद ने कहा
रग रग मे है करम मैं लगाऊ कहा कहा?
पूछता रहता है अजुम इस सुलगती आग से,
इक नशेमन के लिए, वह गुलिस्ता बचेगा क्या?

आत्मालोचन के इस अवसर पर हम अपने अन्दर टटोल कर देखें कि आज हमारा विशाल सगठन क्यो शिथिल हो गया? गुटबाजियो और दलबन्दियो के रोग हमारे अन्दर क्यो पनप रहे है? पदलिप्सा का घुन हमे क्यों खाये जा रहा है? हमारी प्रमाणिकता क्यो अविश्वसनीयता का शिकार हो रही है? अगारो पर राख जमकर क्यो कोरा धुआ बाहर निकल रहा है? नई पीढी हमारी ओर क्यो आकर्षित नही हो रही है? हमारा नेतृत्व क्यो अकर्मण्य होकर रह गया? पौराणिकता हमारे अन्दर भी क्यो घुसपैठ कर रही है? नई पीढी के विद्वान आर्य समाज के प्रचार-प्रसार मे क्यो आगे नही आ रहे? हमारा सदाचार और आदर्श व्यवहार क्यो शकित हो रहा है? हमारे उत्सवो समारोहो जलूसो और आयोजनो मे सजीवता क्यो नही आ रही है? इन सब सवालो का एक ही उत्तर है कि हम निर्माण पथ से भटक गये है। आर्यत्व के सस्कारो का निर्माण आयजनो का निर्माण, आर्य परिवारो का निर्माण आर्योचित आदर्शों का निर्माण, आर्य जीवन का निर्माण। प्रत्यक आयजन जीवित और जाग्रत आर्य समाज का रूप बने। आन, बान, शान मे निराला आर्य पन हो। व्यक्तित्व मे चुम्बकीय आकर्षण हो, आर्य सगठन का निर्माण हो। जो प्रेम, सदाचार दया करुणा परोपकार सच्चरित्रता, सिद्धान्तनिष्ठा सेवाभाव रग-2 मे रमा हुआ हो। अत हमे इस निर्वाणोत्सव के निर्माणोत्सव म बदलने का सकल्प लेना होगा।

—रासासिंह

आर्य वीर

लाला लाजपतराय

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सस्थापित आर्य समाज ने जहा एक ओर पराधीन भारत मे सामाजिक एव धार्मिक क्षेत्रो मे महान सुधारात्मक कार्य किया था, वही दूसरी ओर स्वाधीनता की लडाई मे भी बढ चढकर भाग लिया था। आर्य समाज के जिन प्रमुख व्यक्तियो ने परतत्र भारत की बेडियो को काटने मे अपना सर्वस्व स्वतन्त्रता की देवी का अर्पण कर दिया था उनम लाला लाजपतराय जी का नाम अग्रगण्य है।

लालाजी ने अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ एक आर्य समाजी प्रचारक के रूप मे किया था।

उनके क्रातिकारी मित्र श्री विपिन चन्द्रपाल ने लिखा है कि लालाजी को मैने सबसे पहले 1887-88 म एक आर्यसमाज युवक प्रचारक के रूप मे देखा था- लालाजी आर्य समाज को अपनी माता और महर्षि दयानन्द को अपना धर्म पिता कहा करते थे।

लालाजी सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी थे। प्रसिद्ध पत्रकार श्री फतेहचन्द शर्मा आराधक के शब्दो मे— "लाला लाजपतराय एक ही समय मे सब कुछ थे। शिक्षाशास्त्री भी, राजनीतिज्ञ भी, नेता भी नागरिक भी, विचारक भी और प्रचारक भी।"

आप एक उच्चकोटि के विचारक थे। इसका प्रमाण आपकी पुस्तक दी आर्य समाज है, जिस सकट का सामना आज आर्य समाज कर रहा है, उसकी भविष्यवाणी आपने अपनी पुस्तक मे बहुत पहले ही कर दी थी। आपने लिखा था-"मैं जहा यह चाहता हू कि आर्य समाज सबसे पहले हिन्दुओ के लिए कार्य करे और बाद मे अन्य ससार के लिए वहा मैं यह कभी नही चाहूँगा कि आर्य समाज हिन्दू धर्म के विशाल समुद्र मे विलीन हो जाय। हिन्दू धर्म या और अन्य किसी म उसके विलीन हो जाने पर मुझे बडा खेद होगा। आर्य समाज का स्वतन्त्र अस्तित्व उसकी उपयोगिताओ के लिए आवश्यक है।"

जीवन के अतिम वर्षो म लालाजी आर्य समाज के प्रति थोडे उदासीन हो गये थे। और उनकी उदासीनता उचित भी थी। उचित क्यो थी? इस सदर्भ श्री विपिनचन्द्रपाल के निम्न शब्द विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं

"लाला लाजपतराय बडे अच्छे आर्यसमाजी थे किन्तु उन्हे अच्छे मित्र नही मिले थे। इस सस्था के बहुत थोडे व्यक्तियो ने इतना भारती बलिदान किया होगा जितना लाला लाजपतराय ने किया किन्तु उन दिनो पजाब के आर्य समाजी नेताओ ने पजाब के गवर्नर को यह कहा था कि लाला लाजपतराय का हमसे और आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नही। लालाजी को जितना दुःख अपने मित्रो की कायरता पर हुआ उतना नौकरशाही के दमन से नही।"

आर्य जाति के गौरव, ऋषिवर के अमर शिष्य, अमर हुतात्मा लाला लाजपतराय को उनके बलिदान-दिवस 17 नवम्बर के अवसर पर पडितराज जगन्नाथ के निम्न शब्दो मे श्रद्धांजलि सादर समर्पित है- तोयै रल्पैरपि करुणया भीममानौ निदाघे, मालाकार व्यरचि भवता या तरोरस्य पुष्टि।

सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषेण्येन वारा धारा सारानपि विकिरता विश्वतो वारिदेन॥

अर्थात हे माली भयकर झुलसाने वाली गर्मी के दिनो मे पानी के छोटे-छोटे घडो से सींचकर उस वृक्ष को जो तूने जीवनदान दिया। उसकी तुलना मूसलाधार जल बरसाती हुई वर्षा ऋतु की घनघोर घटाए नही कर सकती। क्यो कि इस सुखमय समय के दर्शन तुम्हारी कृपा से ही हो रहे हैं।

—वीरेन्द्र आर्य

परमात्मा का स्वरूप

— डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती —

(आर्य समाज अजमेर में दिया वेद प्रवचन)

नम शम्भवाय च मयोभवाय च नम शंकराय च
मयस्कराय च नम शिवाय च शिवतराय च

वेदों के इस मन्त्र में शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, शिवतर आदि नाम ईश्वर के आये हैं, तथा पांच मिनट की सध्या में 20 25 नाम परमात्मा के आते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश मे परमात्मा के अनेक नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बताये हैं। परमात्मा के नाम गुण कर्म स्वभाव बताते हैं। व्याख्यान देने पर व्याख्याता, न्याय देने पर न्यायाधीश कर्म बताता है तो स्वामीजी बडे स्पष्ट वक्ता हैं, वे गुण बता रहा है। आर्य समाज मे काले, गोरे पीले तीनो का प्रभाव रहा है पीले चीनी, काले हब्शी व गोरे अमरीकी है।

परमात्मा के सभी नाम उसके गुण कर्म स्वभाव को बताते है। नही है निर्गुण तथा है सगुण का परिचायक है क्योंकि सगुण भी है तो निर्गुण भी है महर्षि स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होने स्पष्ट किया कि परमात्मा निर्गुण भी है तो सगुण भी जैसे प्रभु तुम अवतार नही लेते हो निर्गुण रूप बनाता है। प्रभु तुम सच्चिदानन्द हो यह ईश्वर का सगुण रूप बताता है आर्य धर्मावलम्बी वेदानुकूल वेद मन्त्रो पर आधारित सगुण व निर्गुण ईश्वर को मानते हैं, जबकि आर्येत्तर निर्गुण नही सगुण ईश्वर को मानते है।

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रण मस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभू स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य समाभ्य ॥ अकायम् अर्थात् ईश्वर का शरीर नही है। परमात्मा को कोई टेलीविजन पर प्रदर्शित नही कर सकता। जिसका फोटो है वह परमात्मा नही है। जिसे आखो से देखा वह कुछ भी है परन्तु परमात्मा नही हो सकता है। जो दीखे, जो स्वप्न मे आये वह मस्तिष्क का विक्षेप हो सकता है पुनस्मृति हो सकती है, पर वह भूत प्रेत नही हो सकता। आखो म जिसे देखा वह परमात्मा नही। मेरे परमात्मा को कोइ तीर नही मार सकता।
अस्नाविरम शुद्धम् अपापविद्धम्
कवि मनिषि परिभू स्वयम्भू अर्थात कान्ति दर्शक-मनीषी तथा स्वयम् होवे वाला है। अर्थात् परमात्मा अपने आप बना है उसे किसी ने नही बनाया वह स्वयम्भू अर्थात् स्वय होने वाला स्वय ही है वह परिभू है।

न मेरे जन्मने का कोई दिवस है न उसके जन्मने का कोई दिवस है। तू मुझे अपने राज्य से नहीं निकाल सकता तथा मै तुझे नहीं निकाल सकता। क्योंकि तेरा शासन क्षेत्र अनन्त है। परमात्मा दण्ड दे सकता है पर किसी को काला पानी नही भेज सकता। आर्य कौन है ? आर्य वह है जो कही भी बैठ कर पूजा कर सके क्योकि उसका परमात्मा वहां है। आर्य समाज की व्यक्ति कहीं भी किसी भी समय पूजा कर सकता है जबकि आर्येत्तर पूजा के लिये ढूढता मन्दिर मस्जिद गिरजा। मेरा अत्यन्त प्रिय वेद वेद की उपासना अतिप्रिय है। मेरे परमात्मा को पाने के लिए कोई हज नही करना होता तथा न ही काशी प्रयाग जाना पडता है। मै जहा हू मेरा प्रभु वहां है। परमात्मा जहा है पूरा है अर्थात हर स्थान पर विद्यमान है सर्वम वै पूर्णम् परमात्मा प्रत्येक स्थान क्षण मे पूरा है। वेद की विशेषता तुलसीदास सूरदास शैक्सपियर या कालीदास की नही बल्कि सभी के लिये वेद की समान विशेषता है।

वेद पारायण की विधि वेद मन्त्रो के साथ आहुति देने की पद्धति आर्येत्तर पद्धति है। वेद पारायणयज्ञ व्यर्थ हैं। वेद का पारायण आवश्यक है वेद मे रुचि रखने वाला को वेद पारायण करना चाहिये। वेद न मिले तो कोई पुस्तक ले लो उसका पारायण शुरू करो। वेद पारायण से सबसे बडा लाभ संस्कृत का ज्ञान है। वेद की बडी विशेषता है वो है प्राचीनता, देश का कोई समय ऐसा नहीं जब वेद न हो जब आर्यावर्त आर्यावर्त था इसे वहां पर अभिमान था। महाभारत से पूर्व कोई पुस्तक ऐसी न थी जिसका सम्बन्ध वेद से न हो। स्वामी दयानन्द कहते है ब्रह्मा से जैमिनी तक वेद व वेद के चारो तरफ समस्त साहित्य है। दर्शन निरुक्त उपनिषद व्याकरणादि की रचना वेद को समझने के लिये की गई। हमारी आस्था ईश्वर मे, ईश्वर की सृष्टि मे, वेद के ज्ञान म, ईश्वर की व्यवस्था म सदा रहे। आर्य विचार-ईश्वर का का ज्ञान वेद व उसकी बनायी सृष्टि मे है। ईश्वर म विश्वास करे व ईश्वर की सृष्टि को मिथ्या समझे वह नास्तिक है। ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या से वेद बिलकुल उल्टा कहता है।

वेद का पहला मन्त्र है इषेत्वा ऊर्जेत्वा। हे मेरे ईश्वर तू मुझे अन्न व इष का अर्थ है अन्न यजुर्वेद का पहला मन्त्र है परमात्मा तू मुझे इष व उर्ज दे मै तुझ इष व उर्ज के लिये याद करता हू। परमात्मा की सृष्टि मे अन्न के साथ-साथ उर्जा है। सप्त पदी विवाहोपलक्ष मे अपनाई जाती है

पहला पद इष के लिये व दूसरा पद उर्ज के लिय है।

ओउम् अभ्यादा नय पडवप्टये।

उद्योग में इस कच्चा माल है। सबसे पुराना वैदिक अन्न यव (जौ) है जिसके पास यव (जौ) अधिक हैं वह यवमन्त अर्थात यवमान है। दूसरा अन्न धान है धन शब्द की उत्पत्ति धान से है जिसके पास धन वह धनवान जिसके पास यव है व यवमन्त व जिसके पास गौ है वह गोमन्तक है तथा जिसके पास अश्व है वह अश्वमन्तक है। तथा जिसके पास कुश (घास) है वह कुशवान है, कुशनवान नही है।

कुशा-घास चारा। वेद की दृष्टि से सुख के भौतिक साधन यव (जौ) ईश कुश (घास चारा) है, तथा वेद के अनुसार सुख का आन्तरिक साधन बुद्धि (मेधा) है।

ओ३म् या मेधा देव गणापितर श्चोपासत तयामा यद्य मेधयाऽग्ने मेधाविन कुरुस्वाहा हम बुद्धि चाहिये, आपस मे सौमनस्य चाहिये, प्यार चाहिये। समानो मन्त्र समिती समानी समानम् मन सह चित्तमेषाम् समान मन्त्रम् निमन्त्रये व समानेन वो हविषाजुहोमि तथा—

सगच्छध्व सवदध्व सवोमनासि जानताम्
देवा भाग यथा पूर्वे स जानाना उपासते।

हमारा बोलना कार्य करना व विचार करना एकसा हो, हमारे घर मे सारे काम मिलकर मतैक्य म करें। वेद चाहता है हम एक साथ बोले अच्छा बोल मीठा बोले, भद्र बोल ओ३म भद्र कर्णोभि शृणुयाम भद्र पश्येम् अक्षभि हम काना से अच्छा सुने आखो से अच्छा देखे, अथर्ववेद का मन्त्र है आ-यु सुभु तो कर्णो भद्र श्रुना कर्णो भद्र श्लोक श्रुयात।

मेरे दो काना से अच्छा सुनु भद्र सुनने वाले हो। दूसरा की अच्छाई ही हम सुने, भद्र सुनने वाले हो कान बुराई सुनने वाले न हो विरोध के लिये विरोध न हो। वेद सर्व्यक्ति परिवार समाज व देश के लिए समान रूप से बात कही है वेद सबका है किसी वर्ग विशेष का नही हम भूमि पुत्र है अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त राष्ट्रीयता का पाठ पढाता है। तच्चक्षुर्देवहितपुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत पश्येम शरद शतम्, जीवेम् शरद शतम् शृणुयाम् शरद शतम् प्रब्रवाम शरद शतम् अदीनास्याम शरद शतम् भूयश्च शरद शतात।

प्रस्तुति : नवीनकुमार शर्मा

चिता से लौटाकर पुनर्विवाह कराने वाली ऋचाएं

यह देखकर अचम्भा और सदमा होता है कि आज भी हिन्दुओं में यह माना जा रहा है कि सती-प्रथा निर्विवाद रूप से शास्त्रोक्त है और वह बहुप्रचलित रही है। सिर्फ सती-प्रथा ही नहीं, हिन्दुओं के तमाम इस तरह के विश्वासों को यदि शास्त्रों या अन्य प्रमाणों की कसौटी पर परखा जाए तो वे अधिक से अधिक अर्धसत्य ही ठहरते हैं। लेकिन कोई धूर्त या मूढ़ 'फलावेद/प्रमुख शास्त्र में ऐसा कहा गया है' से शुरू कर किसी भी मानवविद्रोही विचार को वर्षों के लिए प्रचलित कर सकता है।

चूंकि सती की अवधारणा स्त्री के विधवा होने से जुड़ी हुई है इसलिए देखना यह होगा कि हिन्दु संस्कृति के आदिकाल वैदिक युग में विधवाओं का क्या स्थान था। सबसे पहले तथ्य यह है कि युग में विधवा होना कोई दुर्भाग्य कलंक या विपत्ति नहीं माना जाता था। तब समाज में विधवा को केवल विधवा रहकर भी जीने का अधिकार था। एक ऋग्वेदीय ऋचा में ऐसी स्त्रियों का उल्लेख है।

लेकिन यह कहीं भी अनिवार्य न था कि विधवाएं विधवा ही रहें। उन्हें पुनर्विवाह का अधिकार था। अथर्ववेद में ऐसी पुनर्निविवाहित स्त्रियों को 'पुनर्भू' कहा गया है। ऐसे पुनर्विवाह का ठोस प्रमाण इस तरह मिलता है —

या पूर्वं पतिं वित्वाथान्यं विन्दते परम्।
पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वि योषतः ॥
समानलोको भवति पुनर्भुवापरः पतिः ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥
(अथर्ववेद 9, 5 27 28)

"जिस स्त्री का पहला पति था यदि वह दूसरे से विवाह करती है और यदि वे पति पत्नी पंचौदन (पचमेल भोजन या भात) के साथ देते हैं तो वे कभी अलग नहीं होंगे। दूसरा पति अपनी इस दूसरा विवाह करने वाली पत्नी के साथ उसी लोक को प्राप्त करेगा "

इससे यह संकेत अवश्य मिलता है कि पंचौदन के रूप में पुनर्विवाह का कोई सामाजिक शुल्क प्रायश्चित शुल्क दिया जाता था। किन्तु यह एक 'टोकन' के अलावा कुछ न था।

कुछ लोगों का ऐसा मत है कि अथर्ववेद में विधवाओं के पुनर्विवाह का प्रकारान्तर से एक और उल्लेख है —

उत यत् पतयो दश स्त्रियाः पूर्वे अब्राह्मणाः ।
ब्रह्मा चेद्धस्तमग्रहीत् स एव पतिरेकधा ॥
ब्राह्मण एव पतिर्न राजन्यो न वैश्यः ॥ (5, 17 8 9)

"किसी नारी के दस अब्राह्मण पति भी हो चुके हों किन्तु यदि ब्राह्मण उससे विवाह करे तो वही उसका वास्तविक पति माना जायेगा। वह ब्राह्मण ही उसका पति होगा (पिछले) क्षत्रिय या वैश्य नहीं।

असंदिग्ध प्रमाण होने के बावजूद वैदिक साहित्य में विधवा पुनर्विवाह के उल्लेख इसलिए अधिक नहीं पाए जाते क्योंकि तत्कालीन समाज में संतानोत्पत्ति स्त्री का चरम साफल्य माना जाता। उसके लिए उसका विधिवत विवाह करना आवश्यक न था क्योंकि तब नियोग नामक प्रथा भी विवाह जितनी ही समादृत और प्रचलित थी। नियोग के अन्तर्गत निस्संतान विधवा (या नपुंसक की पत्नी) अपने देवर या उस उद्देश्य के लिए जायज किसी अन्य नजदीकी रिश्तेदार से संतान प्राप्त कर सकती थी। नियोग-प्रथा से प्राप्त किया गया पुत्र दत्तक पुत्र से ज्यादा श्रेयस्कर समझा जाता था।

अश्वि-युगल को सम्बोधित करते हुए ऋग्वेद में एक जगह कहा गया है "तुम्हें उस तरह कौन बुलाता है जैसे विधवा अपने देवर को बुलाती है? को वां शयुत्रा विधवेव देवरं (10, 40,2)। इससे देवर से विवाह या नियोग का स्पष्ट संकेत नहीं मिलता लेकिन निरुक्त (3/15) में इस ऋचा की व्याख्या में देवर को दूसरा पति माना गया है।

वैधव्य, सती-प्रथा और समाज में विधवा के पुनर्स्वीकार के बारे में एक महत्वपूर्ण उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है, जिसमें नियोग प्रथा का जो स्पष्ट हवाला है?

इयं नारी पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उपत्वा मर्त्य प्रेतम्।
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि ।
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ ॥
अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम्।
अन्धेन यत् तमसा प्रावृतासीत् प्राक्तो अपाचीमनयं तदेनाम् ॥
प्रजानत्यघ्न्ये जीवलोकं देवानां पन्थामनुसंचरन्ती।
अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमधि रोहयैनम्।
अथर्ववेद 18, 3, 1-4)

इन ऋचाओं का सदर्भ इस तरह है प्राचीन धर्म का पालन कर पहले मन्त्र में विधवा अपने मृत पति के साथ लेट जाती है। तब दूसरे मन्त्र में उसका देवर या अन्य कोई निकट का सम्बन्धी उसे चिता पर से उठने के लिए कहता है। तीसरे मन्त्र में वापस घर ले जाया जाता है और अन्त में जो भी योग्य पुरुष उससे विवाह की कामना करे उसके बारे में कहा जाता है कि यही तेरा पति है।

प्राचीन धर्म का पालन कर पतिलोक की कामना करती हुई यह स्त्री मृत पति को त्याग कर तेरे पास आई है। इस धर्म को पालन करने वाली स्त्री को तू इस संसार में संतान और धन दे। हे स्त्री! तू जो इस मृत पति के पास लेटी है उठकर उसके पास से चली आ। संसार में लौटकर तेरा पाणिग्रहण करने वाले (अपने-दूसरे) पति की संतान को प्राप्त हो। श्मशान की ओर जीवित ले जाई गई और मृत, मनुष्यों के बीच से वापस लाई गई युवती को मैंने पुनर्विवाह किया देखा है। जो शोकजनित अंधियारे से घिरी हुई थी उस घर की ओर जाने वाली इस स्त्री को यहां समक्ष लाया हूं। हे अवध्य स्त्री! संसार को खूब जानती हुई और देवताओं की राह पर चलती हुई, यह जो तेरा गोपति (नया पति) है उससे प्रेम कर। इस तरह इस गोपति को स्वर्ग का पात्र बना।' (हिन्दुस्तान से (साभार)

प्रतिनिधि आर्य

—देवनारायण भारद्वाज

कुछ अधिक बनो या बनो नहीं, मानव हो सच्चे बन जाओ।
निधि दयानन्द के बन न सको, प्रतिनिधि ही सच्चे बन जाओ ॥

ऋषि-मुनि पंडित सन्त मनीषी,
मानव के विविध विशेषण थे,
यदि मूल मनुज हो मिट जाये,
तो व्यर्थ हुए विश्लेषण ये, ॥
जीवित की शोभा आभूषण,
मृत हेतु व्यर्थ परिवेशन ये।
अनुशासन स्नेह संगठन बिन,
सब अर्थहीन अधिवेशन ये।
स्वामी समान यदि बन न सको, सेवक ही बन जाओ।
निधि दयानन्द के बन न सको, प्रतिनिधि ही सच्चे बन जाओ ॥

सत युग त्रेता द्वापर बीते,
जब आर्य धर्म का था प्रकाशन
कलयुग के आरम्भ काल तक,
था वेद यज्ञ का ही विकास ॥
मतभेद द्वंद्व उमड़े ऐसे,
हो गया महाभारत विनाश।
ऋषि दयानन्द ने आकर के,
था रोक दिया ये ध्वंस ह्रास ॥
ऋषि के अनुयायी बन न सको, न्यायी ही सच्चे बन जाओ।
निधि दयानन्द के बन न सको, प्रतिनिधि हो सच्चे बन जाओ ॥

रामायण पर एक प्रतिक्रिया ऐसी भी

राम और सीता

— सीताराम गोयल —

टी वी सीरीयल रामायण मे सीता का चित्रण जो किया गया है उससे सती के जुर्म को कानूनी सहायता मिलती है। मेरा सुझाव है कि दूरदर्शन इसके साथ दूसरे विचार जो कि बंकिमचन्द्र की रामायनेर आलोचना मे दिये गए है, भी प्रस्तुत करे।

प्रसिद्ध बंगाली लेखक की इच्छा है कि साधु सतो के हिन्दू औरतो पर कटाक्ष के मूल मे जाना चाहिए जिसमें हिन्दुस्तानी औरत मनुष्य प्रधान समाज के अधीन व उनकी शिकार रही है। खासकर पुराने काल के कवियो ने औरत को नीचा गिराया है उसको सीधी साधी अल्प बुद्धि तथा पति व सुसराल वालो पर पूर्ण रूप से आश्रित जताया है इसलिये लेखक ने खोज कर पश्चिमी हिन्दी प्रभावी लेखको के विचार साथ मे रखे हैं जिसमे वाल्मिकी रामायण पर कठोर आलोचना की है तथा युरोप म जो विचार का विषय बना हुआ है। इस खोज मे सीता का जो चित्रण उभरा है वह वास्तव मे हृदय विदारक है। उस काम मे कवियो ने छोटी मोटी कहानियो मे स्त्री के चरित्र पर आघात किया है तथा अपने कर्तव्य म गिर गये थे। औरत अपने आप मे ऊंचे स्तर व वास्तविक मान मर्यादा पर रही है।

सीता की पुनरावृति मे कभी भी गुलामी व मीथ रूप का भासनही होता है। उसने अपने दिमाग स्वेच्छा से जो सही था निर्णय लिए थे। यह भी सही है कि कभी 2 राम के मोहनी रूप से आकर्षित हुई। लेकिन वो चाहती थी की पिता के राज को ठुकराने तथा वन जाने के आदेशो का पालन न करें।

राम के पिता के आदेशो का भीरुता से पालन करनें पर उसको धक्का लगा लेकिन उसको विश्वास था की उसके साथ होने से राम अपनी वीरता पर गौर करऔर राज पानें के लिए अयोध्या वापस लौटेगें। इसीलिए वह राम के साथ वन में भी गई। लेकिन राम ने इस रुख पर ध्यान नही दिया। इसके उपरान्त दण्डकारण्य में राम जीव जन्तुओ व जंगलवासियों से मोह करने लगे।

सीता जिसने राजकुमारी का जीवन जिया उसको यह वनवास-मौत की जिन्दगी ने ऊबा दिया था। तथा उसने रावण के साथ जो कि राम जैसा खबसूरत नही था फिर भी मनुष्य से उपर था साथ रहना चाहा। वह एक वर्ष मे लंका मे रही तथा वहा के वैभव का आनन्द लिया। राम अपने जंगली वीरो की सहायता से सीता के आनन्द के समय मे कमी कर सका तथा रावण पर विजय पाई। सीता जब राम के पास आई उसने कोई दुःख व पछतावा प्रगट नही किया। जब मनुष्य श्रेष्ट ने उसको जिन्दा जलाने का आदेश दिया तो उसने बड़ी हिकारत की निगाह से देखा। वह बड स्वाभिमान से भरी तथा उस कमजोर डरपोक से निगाह मिलाई लेकिन मनुष्य श्रेष्ट प्रधान के सामने झुकी नही।

बंकिम चंद्र के लेख उनकी किसी पुस्तको मे आसानी से मिल सकते है। दूरदर्शन को तो केवल उनके आधार पर टी वी लेख तैयार करना होगा। यह आलेख व प्रदशन भावी पीढियो के लिए बहुत ही उत्साह वर्धक रहेगा क्योकि वो आगामी काल मे राज्य करेगें। अब समय आ गया है अबकी औरत के स्वाभिमान को बचाया जा सके जिसको बहुत हद तक वाल्मिकी तथा तुलसीदास जैसे लोगो मे काफी नुकसान पहुँचाया है। यहा तक की जवान औरत को मरनें वाले के साथ जलना पड़ा। अब तक जिन्दगी मे जवानी रहती है उमके आकर्षण को पूरा भोगना चाहिये और स्वर्गयी सुख के लिए बलिदान न कर देना चाहिए। (टाइम्स आफ इण्डिया से साभार)

दयानन्द वैदिक शोधपीठ, अजमेर

महोदय,

दयानन्द वैदिक शोधपीठ अजमेर शीघ्र ही वैदिक विज्ञान, धर्म दर्शन संस्कृति शिक्षा, शिल्प एव इतिहास-प्रचारिका एक षाण्मासिक शोध-पत्रिका के प्रकाशनाथ कृतसंकल्प है उत्तमकोटि के शोध-निबन्धो के लिए समुचित दक्षिणा की व्यवस्था है। शोध-निबन्ध 10-20 पृष्ठ का होना चाहिए। भाषा हिन्दी तथा टंकण काय सुस्पष्ट होना चाहिये। ये शोध-निबन्ध दिनाक 15-12-87 तक अनिवाय रूप से अधोहस्ताक्षरकर्त्ता शोधपीठ के अध्यक्ष के पास पहुंच जाने चाहिए। विलम्ब से प्राप्त होन वाले निबन्धो को इस अंक म प्रकाशित करना सम्भव न हो सकेगा। निबन्ध की कोटि तथा प्रकाशनार्हता का निर्धारण तदर्थ गठित समिति करेगी। स्तरावर तथा अमर्यादोचित निबन्धो को समुचित डाक-व्यय प्राप्त होने पर वापस भेजना सम्भव हो सकेगा।

सरक्षक
आचार्य दत्तात्रेय आर्य
निदेशक

प्रधान-सम्पादक
(डा) बाबूराम शास्त्री
आचार्य एम ए, पी एच डी, डी लिट.
प्रोफेसर एव अध्यक्ष

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज अजमेर ने अपने सभासद तथा हैदराबाद सत्याग्रही श्री मूलचन्द तवर के दिनाक 29 अक्टूबर को हुए असामयिक निधन पर दुःख प्रकट किया है और परम पिता परमात्मा से उनकी आत्मा को चिरशांति एव सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

सम्मेलन

आर्यसमाज बांसवाडा मे 6 नवम्बर से 8 नवम्बर तक वनवासी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसी अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अतरंग सभा का अधिवेशन 8 नवम्बर को सम्पन्न हुआ। इसमें सभा के शताब्दी समारोह सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

शुभ विवाह

आर्यसमाज शिक्षा सभा क उपमत्री श्री वदेरत्न आर्य की सुपुत्री सौ मंजुला का विवाह शिमला निवासी चि विनय से 4 नवम्बर को सानंद सम्पन्न हुआ।

'आर्य पुनर्गठन' परिवार की ओर से नवदम्पति को हार्दिक शुभ-कामनाए।

आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर

आवश्यकता

अध्यापक १. द्वितीय ग्रेड अंग्रेजी, एम. ए. बी. एड. २. तृतीय ग्रेड, बी. ए. बी. एड. ३. बी. एस. सी. बी. एड ४. हायर सेकण्डरी, एस. टी. सी. आवेदन पत्र पांच रुपये के फार्म पर मंत्री को सात दिन में भेजें।

भगवानो का षडयन्त्र : [पृष्ठ 1 का शेष

डाक्टर साहब ने उन्हे एक लाख देनें को कहा फिर भी चुप लगा गयेइतना ही नही परमानन्द स्वय नें भी साईं बाबा को अनेक बार ललकारा किन्तु वे तो उनका (परमानन्द) नाम सुन कर ही चले जाते थे। वे तो अपने 5000 भक्तो के बीच मे आश्रम मे ही कुछ करते रहते थे। परमानद ने अनेक भाषणो के अतिरिक्त अनेक पत्रिकायें-पर्चे प्रचारित किये जिनमे श्री साईंबाबा की पोल एव धोखा धड़ी के विषय मे बताया। वे भी साईं बाबा को अपनें इस घृणित धन्धे मे बड़ा धोखेबाज कहतें हैं। इतना ही नही परमानन्द नें तो इस भगवान के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही भी की। अधिक क्या कहे, साईं बाबा को गत वर्ष गोल्ड कन्ट्रोल एक्ट के विरुद्ध कोट म दावे मे घसीटा गया क्योकि वे अपने भक्तो को हवा-पानी से सोना बनाकर दते थे। (हम प्रिन्ट से साभार)

श्री रासासिंह के नेतृत्व मे आर्य स्पेशल ट्रेन के स्वागतार्थ स्टेशन पहुँचे आर्यजन

आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर की बैठक सम्पन्न

स्थानीय दयानन्द कॉलिज, डी. ए वी. स्कूल, छियाबास सस्थान तथा अन्य दस विभिन्न शिक्षण सस्थाओं की प्रबन्धकारिणी सभा आर्य समाज शिक्षा सभा की कार्यकारिणी की एक विशेष बैठक रविवार 1 नवम्बर, 1987 ई० को सभा के प्रधान न्यायमूर्ति जस्टिस श्री वी. पी. बेरी की अध्यक्षता मे दयानन्द कॉलिज सभागार मे सम्पन्न हुई।

आर्य समाज शिक्षा सभा की प्रबन्ध समिति ने तीन लाख के नवीन भवन निर्माण एवं दयानन्द कॉलेज मे अजमेर विश्वविद्यालय को स्थान देने के प्रस्तावों को स्वीकृति प्रदान की।

इस बैठक में डी ए वी मैनेजिंग कमेटी, दिल्ली के अध्यक्ष प्रो वेदव्यासजी, श्री दरबारीलाल व श्री रामनाथ सहगल तथा बम्बई के कैप्टेन देवरत्न आर्य ने भी भाग लिया।

दयानन्द कॉलेज ट्रस्ट स्थापित

आर्य समाज शिक्षा, अजमेर के अन्तर्गत संचालित दयानन्द कालेज तथा अन्य शिक्षण सस्थाओं की अचल सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु दयानन्द कॉलेज ट्रस्ट की स्थापना की गई है। ट्रस्ट के सात ट्रस्टी सर्व सम्मति से नामजद किए गए हैं। जिनमे न्यायमूर्ति जस्टिस श्री वी पी बेरी, डी ए. वी मैनेजिंग कमेटी, दिल्ली के प्रधान प्रो वेदव्यासजी व मत्री श्री दरबारीलालजी, श्री दत्तात्रय वाब्ले श्री रासासिंह, कैप्टेन देवरत्नजी आर्य, बम्बई, श्री मेजर प्रभाकर वाब्लेजी के नाम शामिल हैं।

रविवार 1 नवम्बर को हुई ट्रस्ट की प्रथम बैठक में आर्य समाज शिक्षा सभा की सम्पत्ति की सूची प्रस्तुत की गई जिसमें लगभग चार करोड के छोटे-मोटे भवन हैं। बैठक मे इन सभी का रख-रखाव, नक्शा व रजिस्टर सुव्यवस्थित रखने का निश्चय किया गया।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज विज्ञान नगर द्वारा तृतीय वार्षिकोत्सव व यजुर्वेद पारायण यज्ञ ५ से ८ नवम्बर तक धूमधाम से मनाया गया।

—केवल कृष्ण शास्त्री

हैदराबाद के सत्याग्रहियों की संगोष्ठी

अजमेर। नवम्बर। आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान में हैदराबाद के सत्याग्रहियो की समस्याओ के विषय मे विचार-विमर्श करने हेतु एकसगोष्ठी का आयोजन समाज भवन मे किया गया। संगोष्ठी मे श्री ब्रह्मदत्त स्नातक (जनसम्पर्क अधिकारी सार्वदेशिक सभा) ने सत्याग्रहियो की समस्याओ के समाधानार्थ अपने सुझाव दिए।

गोष्ठी में सर्वश्री फैय्याज अली व बक्षीलाल, शाहपुरा, भवरलाल बलवन्तसिंह, जगन्नाथप्रसाद व स्वामी देवारामजी आदि सत्याग्रही सम्मिलित हुए।

सचालन श्री नवीन कुमार शर्मा ने किया।

आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

1 देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन—मूल्य 0.50 पैसे
2 हमारी राष्ट्रीयता का आधार—मूल्य रु. 1 00
3 आचार सहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4 दी आर्य समाज हिन्दू विदाउटहिन्दूइज्म (अग्रेजी) —विशेष रियायती दर रु 75 00
5 आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही मूल्य—50 रु.

अन्य प्रकाशन—

1 आर्य समाज (हिन्दी मूल्य सजिल्द20 00 रु अजिल्द 16 00
— ले लाला लाजपतराय
2 धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक)—पूरे सैट का मूल्य रु 32 00
3 दयानन्द कथा सग्रह—मूल्य रु 3 00
4 परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण सस्थाओं का परिचय)—मूल्य रु. 1200

सत्यार्थ-प्रकाश ग्रंथ माला—15 भाग

[प्रत्येक समुल्लास पर स्वतन्त्र ट्रैक्ट]

1 ईश्वर एक नाम अनेक
2 आदर्श माता पिता
3 शिक्षा और चरित्र निर्माण
4 गृहस्थाश्रम का महत्व
5 सन्यासी कौन और कैसे हों?
6 राज्य व्यवस्था
7 ईश्वर और वेद
8 जगत् की उत्पत्ति
9 स्वर्ग और नरक कहा है?
10 चौके चूल्हे मे धर्म नही है
11 हिन्दू धर्म की निर्बलता
12 बौद्ध और जैन मत
13 वेद और ईसाई मत
14 इस्लाम और वैदिक धर्म
15 सत्य का अर्थ तथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत् के चोटी के विद्वानो के द्वारा लिखित एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान प्रो. दत्तात्रेय आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के पूरे सैट का मूल्य 8/- रुपये है।

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा आर्य प्रिन्टर्स अजमेर मे मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एव भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

दयानन्दाब्द : 162

सृष्टि सम्वत् · 1972949087

वर्ष : 3 सोमवार, 30 नवम्बर, 1987
अंक 19 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।।

मार्गशीर्ष शु 10 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

सती प्रथा विरोधी पदयात्रा में–

अजमेर आर्यसमाज का जत्था भी भाग लेगा

अजमेर। सती प्रथा तथा नारी उत्पीडन के विरोध मे आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे दिल्ली से दिवराला तक आयोजित पदयात्रा मे आर्य समाज अजमेर का भी एक 51 सदस्यीय जत्था भाग लेगा। इस आशय का निश्चय आचार्य दत्तात्रेय आर्य प्रधान, आर्य समाज अजमेर की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई आर्य समाज के पदाधिकारियो की बैठक मे लिया गया।

यह ज्ञातव्य है कि स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे यह हजारो आर्य सत्याग्रहियो एव आर्यवीरो की पदयात्रा दिल्ली से 5 दिसम्बर को प्रारम्भ होकर 23 दिसम्बर को दिवराला पहुचेगी। इसमे सम्मिलित आर्य पदयात्री-गण सतीप्रथा तथा नारी उत्पीडन के विरोध मे जन जागरण तथा महिलाओ के प्रति सम्मान एव कल्याण की भावना जाग्रत करते हुए सरकार से 'रूपकवर काण्ड' मे सम्मिलित दोषी व्यक्तियो के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने की पुरजोर माग करेंगे।

आर्यसमाज, अजमेर की ओर से श्री रासासिह मत्री, आर्य समाज, अजमेर के सयोजन म एक समिति का भी गठन किया गया है। श्री रासासिह ने अजमेर क्षेत्र के जत्थे मे सम्मिलित होने के इच्छुक व्यक्तियो से आर्य समाज, अजमेर से सम्पर्क करने का अनुरोध किया है। अजमेर का जत्था पदयात्रा मे जयपुर से सम्मिलित होगा।

जत्थे के सत्याग्रहियो के व्यय का वहन आर्य समाज, अजमेर करेगा।

पदयात्रा कार्यक्रम—स्वामी अग्निवेश के पत्रानुसार पदयात्रा का कार्यक्रम इस प्रकार है। 5 दिसम्बर को पदयात्रा जत्था दिल्ली से चलकर 17 दिसम्बर को आमेर पहुचेगा। 17 दिसम्बर को 5 बजे साय आमेर से चलकर 18 दिसम्बर की सुबह जयपुर मे, सती विरोधी विशाल सभा के आयोजन मे सम्मिलित। 19 दिसम्बर को जयपुर के उपनगर विश्वकर्मानगर मे पडाव। वहा से आगे चौमू, समोदा, अजीतगढ होते हुए स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर 23 दिसम्बर की सुबह दिवराला मे प्रवेश।

सचाई सिर पर चढ़कर बोलती है

— वीरेन्द्र कुमार आर्य —

विश्व प्रसिद्ध लेखक एव विचारक बर्नार्ड शा का कथन है–"सच बोलना दुनिया का सबसे बडा मजाक है।" कितना वास्तविकतापूर्ण है—उनका यह व्यग्य! आज के युग मे सत्य का पूर्णतया लोप हो गया है। लोग सच बोलने मे, लिखने मे डरते हैं। आज सत्य का आलम्बन लेना एक बडा 'महगा सौदा' हो गया है। किन्तु फिर भी कभी-कभी कुछ लोग अपनी अतरात्मा की आवाज पर सत्य को प्रकट करने पर विवश हो जाते हैं। ऐसे ही एक सज्जन इग्लैण्ड की प्रसिद्ध चर्च के धर्माधिकारी डा जैनकिन्स हैं।

श्री जैनकिन्स मानते है कि ईसाई धर्म सम्बन्धी जा चमत्कारिक बातें ईसाई लेखक लिखते हैं, वे सत्य पर आधारित नही है और वास्तविकता से उनका दूर का भी नाता नही है। वे इन लेखको को ऐसे धर्मप्रचारक मानते हैं, जो अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु नाना प्रकार की युक्तियो व तकनीको के द्वारा अपनी धार्मिक चमत्कारिक बातो को येन-केन–प्रकारेण सिद्ध करते हैं।

श्री जैनकिन्स आगे कहते है कि वस्तुत ये सारी चमत्कारिक बातें मात्र एक ढोग हैं और इस सदर्भ मे चर्च का इतिहास तो अत्यन्त भयावह है। आप कहते हैं कि भगवान के नाम पर जो अलौकिक एव अद्भुत चमत्कारो की बातें की जाती हैं वह सब धोखा है, शैतान लोगो की शरारत है। इसके अतिरिक्त कुछ भी नही है।

डा जैनकिन्स को अपने उपर्युक्त क्रातिकारी विचारो के कारण चर्च की तथाकथित धर्मसभा के कट्टरपथियो की आलोचना का भी शिकार होना पडा है। अपनी इस आलोचना की प्रतिक्रिया मे डाक्टर साहब का कथन है—"लगता है कि धर्म के विषय मे लोग सच्चाई को आख बन्द कर स्वीकार करने की बात करत हैं, और यह अत्यन्त भयानक स्थिति है।"

आशा है कि प्रबुद्ध जन और विशेषकर हमारे ईसाई बन्धु दुर्हम के विशप डा जैनकिन्स के तर्कों पर आधारित उपर्युक्त विचारो पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

ईसाईमत और विशप जोन राबिन्सन

ईसाई धर्म व ईसा के तथाकथित् करिश्मो के विषय मे प्रश्नचिन्ह पैदा करने वाले विशप डा जैनकिन्स से पूर्व इग्लैण्ड के ही एक अन्य विख्यात विशप जोन राबिन्सन ने भी। 62 मे 'अरनेस्ट टू गॉड नामक अपनी पुस्तक म अनेक तर्क पूर्ण प्रश्न इस सदर्भ मे उतरे थे।

श्री राबिन्सन लिखते हैं कि वर्तमान वैज्ञानिक युग मे चौथे आसमान मे स्थित तथाकथित ईश्वर के प्रति आस्था उत्पन्न करना सम्भव नही है। विशप महोदय आगे लिखते हैं कि मानव को अब तथाकथित स्वर्गीय पिता की मान्यता से ऊपर उठना होगा और यह मानना ही होगा कि ईसामसीह सदेह चौथे आसमान पर नही गए।

यह सत्यान्वेषी विशप अन्य साधारण ईसाईयो की भाति यह स्वीकार करने पर भी उद्यत नही कि ईसा स्वय ईश्वर अथवा ईश्वर का इकलौता पुत्र था। और विशप की दृष्टि मे बाबा आदम तथा माता हव्वा का स्वर्ग से अवतरण होना केवल कार्टूनो का विषय ही हो सकता है।

विशप 'मरियम के कुमारी रहते मा बनने' की मान्यता को भी एक कपोल कल्पना समझता है। इस सदर्भ मे पूछे जाने पर उसका कहना है 'भले ही लोग मुझे नास्तिक कहे, किन्तु मैं इस प्रकार के विश्वास रखने मे असमर्थ हू। बाईबिल मे इस सम्बन्ध मे जो प्रमाण एव साक्षिया अकित की गई हैं, वह अपर्याप्त हैं। बाईबिल ने यह भी स्पष्ट निर्देश नही किया कि ईसा स्वय परमात्मा था।"

हमारा लक्ष्य

—: पं० बिहारीलाल शास्त्री —

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं, न पुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणीनामार्ति नाशनम् ।।

भावार्थ —हम न राज्य चाहते है, न स्वर्ग, न मोक्ष, मात्र अंधविश्वास से पीडित जनता को स्वस्थ सत्य मार्ग पर हमे लाना है।

सम्पादकीय—

अफसोस! इन्हें तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदों का

आर्यसमाज के इतिहास मे एक समय ऐसा था जब वेदो के प्रचार प्रसार, वैदिक धर्म के दुन्दुभि गर्जन तथा शास्त्रार्थों के चर्चे एव अंधविश्वासो, बुराइयो पर करारी चोट मारने का वातावरण गरमाया रहता था। आर्यसमाजो मे वेद प्रचार की धूम रहती थी। उपदेशक, भजनीक तथा सन्यासीगण एक निराला दीवानापन लेकर महर्षि के सदेश तथा आर्यसमाज के मतव्यो को पहुचाने मे एक अलौकिक आनन्द का अनुभव करते थे। लोग वेदोपदेश सुनने को उतावले रहते थे प्यासे रहते थे। राष्ट्रीय जीवनधारा मे आर्य समाज ने क्रान्ति का बिगुल बजाया जागरण और चेतना का शखनाद फूका। सर्वत्र यही बात गूजा करती थी—

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म्' हमारा देव है सत्य हमारा कर्म ।।"

ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि आर्यसमाज का अदने से अदना सेवक भी भाषण सुन-सुन कर तथा उस वातावरण म रह-रह कर पक्का सिद्धान्तवादी हो जाता था भले ही वह कम पढा लिखा क्यो न हो। सत्सगो मे भी भीड करती थी। देर रात तक खुले मैदानो मे आर्यसमाजो के जलसे हुआ करते थे। आर्य विद्वानो कवियो भजनीको तथा प्रचारको म बिना दक्षिणा का लोभ किये मिशनरी भावना रहती थी। सब दुःख सहकर या जान की बाजी लगाकर वे आर्य जन आर्यसमाज की आन बान और शान को कायम रखते थे। आर्यों मे परस्पर प्रेम और सत्य का व्यवहार था। मनसा वाचा-कर्मणा वे एकरस रहते थे। **पर अफसोस आज** महर्षि दयानन्द सरस्वती के इस सदेश को भूला दिया कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, वेद का पढना-पढाना सुनना-सुनाना सब आर्यो का परमधर्म है। आज समाज की क्या स्थिति है? कहते हुए बहुत दुःख होता है। गत दिनो आर्यसमाज मे उत्तर प्रदेश के एक 86 वर्षीय पुराने आर्य सन्यासी श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी (विदकी) स मिलना हुआ। उन्होने मेरी बात सुनकर एक पुराना उर्दू गीत मुझे बताया जो आज हमारे हाल पर सटीक उतरता है। मुझे विश्वास है कि वर्तमान आर्यजन इस कविता म व्यक्त भावो से प्रेरणा ग्रहणकर स्वय आर्य बनकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार म सहायक बनेंगे।

समाजो मे मगर अब रात दिन तकरीर होती है,
न वो तकरीर होती है न वो तहरीर होती है।
रवा गर्दन पर वो अगियार की शमशीर होती है।
जो होनी है तो हर एक बात बेताशीर होनी है।
न वो लेखक रहे हममे न वो तक्कार बाकी है,
कि इस गुलशन के गुल मुरझा गये, अब खार बाकी है।
यही लीडर रहे तो हो चुका विस्तार वेदो का
इन्हे तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदो का ।। 1 ।।
जिन्हे ससार मे ससार क उपकार करना था,
जिन्हे दुनिया में वैदिक धर्म का विस्तार करना था।
अनाथो और अछूतो का जिन्हे उद्धार करना था,
जिन्हे निज देश और जाति का बेडा पार करना था।
उन्हे देखो तो बाहम बर्सरे पैकार बैठे हैं,
वजूद अपना मिटाने के लिये तैयार बैठे है ।। 2 ।।
यही लीडर रहे तो हो चुका विस्तार वेदो का
इन्हे तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदो का।
जमाना रश्क करता था कभी वह प्यार था हमम,
धर्म के काम मे हर एक मानिशो गम खार था हमम।
गजब अब आर्यों म वो उलफत नही मिलती,
न वो श्रद्धा न वो हिम्मत नही मिलती।
निकलते थे जो हम वेदो का अलम रखकर,
फरिश्ते भी फिदा होते थ उस पर
जोश मजिर पर जला देते थे दुश्मन के खरमन को कलम रखकर,
हटाते ही न थे पीछे कभी आगे कदम रखकर ।। 3 ।।
यही लीडर रहे तो हो चुका विस्तार वेदो का
इन्हे तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदो का।
ऋषि किस्मत से अगर भारत मे फिर एक बार आ जाय,
रूखे अनवर मुसाफिर आके फिर एक बार दिखलाये।
हमारे इस दम्भ को देखे और इस आचार आ जाये,
तो सच कहता हूं गैरत से बिलाही मौत मर जाय।
पदो की लालसा से रोज लडते और लडाते हैं
अदायें शासको की हैं मगर सेवक कहाते है ।। 4 ।।
यही लीडर रहे तो हो चुका विस्तार वेदो का
इन्हे तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदो का।

—रामसिंह

धर्मपरिवर्तन के लिए विदेशी सहायता

इस तथ्य की पुष्टि म अनेको प्रमाण मिल चुके हैं कि विभिन्न विधर्मी सगठन अपनी तथाकथित समाज सेवा सम्बन्धी योजनाओ की आड म प्राप्त विदेशी धन (सहायता) का 90 प्रतिशत भाग धर्मपरिवर्तन तथा अन्य राष्ट्र विरोधी कार्यों म व्यय करते है।

तमिलनाडु का मीनाक्षीपुरम हो या उत्तरप्रदेश का आजमगढ बिहार व राजस्थान का आदिवासी बहुल क्षेत्र हो या फिर समुद्रतटीय प्रदेश गोआ — इस पैसे की काली छाया को आप देख सकते है।

मानवता के नाम पर अवैध बच्चो के तथाकथित 'पवित्र गृहो' के सचालक इन गृहो द्वारा ईसाई-प्रचारको की एक नई पौध तैयार करते हैं। मिशनरी सस्थाओ का सेवा-धर्म एक ढोंग है। इनकी सेवा का एक ही उद्देश्य है—धर्मपरिवर्तन। और धर्मपरिवर्तन का अर्थ है राष्ट्रीयता परिवर्तन। इनका लक्ष्य है 'नागस्थान'! और ये अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु 'मानव सेवा' के मुखौटे का प्रयोग कर रहे है।

क्या लैनिन और रूस के हत्यारे कभी मानवता के पुजारी हो सकते हैं? अरब म आए पैट्रो-डालर का उपयोग धर्मपरिवर्तन और साम्प्रदायिक दगो के लिये होता है। इसके अनेको प्रमाण है। मेरठ का तो अभी हाल ही का मामला है।

अभी गत 25 नवम्बर को केन्द्रीय गृह राज्य मत्री श्री चिदम्बरम ने लोकसभा म बताया कि सन् 1986 म विभिन्न सगठनो ने 434 करोड रुपये विदेशी सहायता के रूप में प्राप्त किये। कितनी विशाल धनराशि है यह! जिसके अधिकाश भाग का दुरुपयोग राष्ट्रविरोधी कार्यों मे होता है।

सरकार वस्तुस्थिति को जानती है, समझती है। समय-समय पर इस विदेशी सहायता के दुरुपयोग सम्बन्धी प्रमाण भी उसके सम्मुख प्रस्तुत किए गए हैं। परन्तु वोटो की राजनीति म फसी धर्म निरपेक्षता की दुहाई देने वाली सरकार सब कुछ जानते हुए भी इस विषय मे कोई भी उचित कार्रवाई नही करना चाहती।

आचार्य बृहस्पति का कथन है—अभिव्यसन पूर्वं सात्वा व्यसन प्रतीकार कामम् (चतुर्थ अ 26) अर्थात् शासको को भावी आपदाओ का ज्ञान होना चाहिए, उनके निराकरण की सामर्थ्य भी उसमे होनी चाहिए। किन्तु खेद है कि वर्तमान सत्ताधारियो मे उपयुक्त गुणो का सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

—वीरेन्द्र आर्य

विधवा पुनर्विवाह वेदोक्त

— डॉ० कृष्णपालसिंह —

यद्यपि विधवा पुनर्विवाह की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है तथापि इसका अधिक प्रचार उस समय शूद्रो मे ही था अन्य त्रिवर्ण मे अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यो में विशेषकर नियोग की व्यवस्था का अधिक सम्मान था। इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द ने पूना प्रवचन के बारहवें प्रवचन मे कहा है कि 'विधवा विवाह का प्रचार केवल शूद्रो मे था। द्विजो अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यों मे नियोग का प्रचार था' इतना होने पर भी विधवा पुनर्विवाह सभी के लिए सामान्य वेदोक्त व्यवस्था थी जिसका उल्लेख हम इसी लेख मे आगे करेंगे।

विधवा पुनर्विवाह का अधिकार तर्कपूर्ण तथा बुद्धिगम्य—

जैसा कि हम मानव समाज मे व्यावहारिक रूप में देखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी पत्नी के मृतक हो जाने के पश्चात् अपनी इच्छानुसार दूसरा विवाह करने का अधिकार समझता है। इसमे किसी प्रकार का कोई विरोध भी नहीं करता है। उसी प्रकार विधवा स्त्रियो को भी अपने पति के मरणोपरान्त दूसरा विवाह विवाह करने का अधिकार पुरुषो समान ही प्राप्त होता है किन्तु समाज मे ऐसा व्यावहारिक रूप मे देखने मे बहुत ही कम आता है। परमेश्वर की इस सृष्टि में स्त्री-पुरुष सभी बराबर हैं क्योकि वह न्याय-कारी है, उसमे पक्षपात नाम मात्र मे को भी नही है। इसी दृष्टि से स्वामी दयानन्द ने पूना प्रवचन मे कहा है कि जब पुरुषो को पुनर्विवाह करने की आज्ञा दी जाये तो स्त्रियो को दूसरे विवाह के करने क्यो रोका जावे।' इस महर्षि की युक्ति के आधार पर प्रत्येक स्त्री को स्वपति के मृत्योपरान्त [यदि वह चाहे तो] पुनर्विवाह करने का पुरुषो की तरह समान अधिकार प्राप्त होता है जो कि तर्क पूर्ण एव बुद्धिगम्य है।

वर्तमान समय मे सामाजिक व्यवस्था ऐसी रूढिपथ पर आरूढ हो गयी है कि पुरुष की एक पत्नी की मृत्यु के पश्चात् दूसरी पत्नी तथा उसके भी दिवगत हो जाने पर तीसरी पत्नी भी करने का अधिकार है। इस प्रकार वह पुरुष अपनी इच्छानुसार पुनर्विवाह करके अनेक स्त्रियाँ प्राप्त कर सकता है जबकि स्त्री के लिए यह व्यवस्था समाज के दकियानूसी ठेकेदारो ने नही प्रदान की है। जो कि स्त्री जाति के प्रति घोर अन्याय है। अधर्म है। जैसा कि महर्षि ने पूना प्रवचन मे कहा है 'पुरुष अपनी इच्छानुसार जितनी चाहे उतनी स्त्रियाँ कर सकता है। देश, काल पात्र और शास्त्र का कोई बन्धन नही रहा। क्या यह अन्याय नही ? क्या यह अधर्म नही ?' इसलिए इस अन्याय एव अधर्म के दुर्ग का विनाश करने के लिए स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा तथा विधवा पुनर्विवाह का प्रवतन किया।

महर्षि दयानन्द के समय मे विधवाओ की बहुतायता थी और उनके ऊपर समाज के व्यक्तियो का व्यवहार अच्छा नही था उन्होने इस विधवा सख्या वृद्धि के कारण को खोजने का प्रयास किया और यह पाया कि देश मे बाल विवाह का अधिक प्रचार है और इसी कारण से विधवाओ की सख्या अधिक है। जैसा कि कहा है कि 'बालविवाह प्रचलित न होता तो विधवाओं की सख्या कभी इतनी न होती। इस लिए उन्होंने बालविवाह को रोकने तथा विधवाओ के कल्याण के लिए सामाजिक नवचेतना का सूत्र पात किया और विधवा आश्रम की स्थापना की, शिक्षा, समान अधिकार आदि का वेदों के आधार पर सर्वत्र प्रचार किया।

स्त्री का मृतपति के साथ जलकर भस्म होना वेदादिशास्त्र विरुद्ध—

भारतीय सस्कृति में स्त्री को बहुत ही सम्मान प्रदान किया गया है। जैसा कि मनुस्मृति में कहा गया है कि जहाँ स्त्री की पूजा होती है अर्थात् सत्कार होता है उसमें पुरुष देव सज्ञा रख के आनन्द से क्रीडा करते हैं। किन्तु जिस घर मे स्त्रियों का सत्कार नही होता वहाँ सब क्रिया निष्फल हो जाती हैं। और जिस घर में अथवा कुल मे स्त्री शोकाकुल होकर दु ख पाती है वह कुल शीघ्र ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। जिस कुल मे स्त्री आनन्द उत्साह और प्रसन्नता से भरी (पूर्ण) रहती है वह कुल सर्वदा बढता रहता है। इस लिए ऐश्वर्य की कामना वाले पुरुषों का चाहिए कि सत्कार और उत्सव के समय मे भूषण वस्त्र, भोजनादि से स्त्रियों का नित्य सत्कार करें।

इस प्रकार जहाँ महर्षि मनु ने स्त्रियो को अपूर्व सम्मान प्रदान किया है वहाँ वर्तमान समय मे उन्हे अपमानित कर तथा अमानवीयता के द्वारा अग्नि मे धू धू कर जलाकर भस्मी भूत किया जा रहा है। यह एक महान् दुर्भाग्य एव अमगल का सूचक है। वैदिक वाङ्मय मे कहो भी किसी ऋषि मुनि ने यह व्यवस्था नही दी है कि पति की मृत्यु हो जाने पर स्त्री को उसके साथ चिता मे दाह कर देना चाहिए। इसके विपरीत वेदादि शास्त्रो मे पति की मृत्यु के उपरान्त यदि वह स्त्री चाहे तो पुनर्विवाह अथवा नियोग कर सकती है।

यद्यपि सायणाचार्य ने अथर्ववेद 18/3/1 के आधार पर सती प्रथा को वैदिक सिद्ध करने का प्रयास किया है तथापि यह उनको खीचतानी ही है। मन्त्र मे कही सती होने का उल्लेख नही है। मन्त्र निम्न प्रकार है—

इय नारी पतिलोक वृणाना
निपद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम।
धर्म पुराणमनुपाल यन्ती
तस्यै प्रजा द्रविण चेह धेहि॥ अथर्व 18/3/1

उपर्युक्त मन्त्र का अर्थ करते हुए प क्षेमकरण दास त्रिवेदी ने लिखा है कि हे मनुष्यो ? यह नारी पति के लोक को चाहती हुई और अपन पुरातन धर्म को निरन्तर पालती हुई मरे हुए पति को स्तुति करती हुई तुझको प्राप्त होती है। उस स्त्री को सन्तान और बल यहाँ परधारण कर।'

इस मन्त्र को महर्षि दयानन्द ने —ऋ भा भूल मे नियोग प्रकरण मे व्याख्यान किया है। इस प्रकार अथर्ववेद 18/3/2 जो कि क्वचित् प ठ भेद से ऋ 10/18/8 मे आया है। इस मन्त्र का व्याख्यान सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास तथा ऋ भा भू मे नियोग प्रकरण मे किया है। इन मन्त्रो मे कही भी स्त्री को पति के साथ जलने का उल्लेख नही है। अथर्व वेद 18/3/2 का मन्त्र तो विधवा स्त्री को जीव लोक मे रहने का उपदेश दे रहा है। जैसा कि सायणाचार्य ने लिखा है कि मृत पति के पास बैठी हुई विधवा स्त्री यदि जीवित रहना चाहे तो उसे उठा कर जीव लोक मे ले आये।

ऋ 10/18/8 के भाष्य मे सायणाचार्य ने आश्वलायन गृह्यसूत्र का विनियोग दिखाते हुए लिखा है कि जो विधवा स्त्री पति के पास साथ मरण का निर्णय अथवा निश्चय करके लेटी हुई है उसे उसका देवर, अथवा अन्य कोई भृत्य आदि उठाकर जीवलोक अर्थात् पुत्र पौत्रो वाले घर मे ले आवे।

इस प्रकार सायण ने जहाँ अथर्ववेद 18/3/1 मे सती के पक्ष को समर्थन प्रदान करने का प्रयत्न किया वही ऋ 10/18/8 तथा अथर्व 18/3/3 मे उसके विरुद्ध भाष्य लिखकर सती के पक्ष को त्यागना पड़ा अर्थात् उस पक्ष का खण्डन किया है।

विधवा का पुनर्विवाह वेदोक्त—

डा रामनाथ वेदालकार ने अपने लेख मे अथर्ववेद के एक मन्त्र को उद्धृत करते हुए विधवा के पुनर्विवाह को वेदोक्त दर्शाया है। मन्त्र निम्न प्रकार है—

अपश्य युवति नीयमाना
जीवा मृतेभ्य परिणीयमानाम्।
अन्धेन यत् तमसा प्रावृतासीत्
प्राक्तो अपाचमिनय तदेनाम्॥ अथर्व वेद 18/3/3

मन्त्र का अर्थ करते हुए उन्होने लिखा है कि मैंने विधवा युवती को जीवित मृतो के बीच से अर्थात् श्मशान भूमि से ले जायी जाती हुई तथा पुनर्विवाह की जाती हुई देखा है। क्यो कि यह पति विरह जन्य दु ख रूप और अन्धकार से आवृत थी, इस कारण इसे पूर्व पत्नीत्व से हटाकर दूसरा पत्नीत्व मैंने प्राप्त करा दिया है। इस प्रकार वेद मे विधवाओ के सुखमय तथा सम्मानित जीवन व्यतीत करने के लिए और पुनर्विवाह के लिए अनुमोदन किया गया है। अत सती समर्थक एक भी मन्त्र वेदो मे उपलब्ध नही होता है।

पता—दयानन्द कालेज अजमेर

***

'वैज्ञानिकों की दृष्टि में ईश्वरीय अस्तित्व

— डा. वेदशर्मा वेदालंकार —

मानव जाति का इतिहास मानो सुख-शान्ति एव परमतत्व की प्राप्ति के प्रयासो का इतिहास है। कोई भी मनुष्य अपनी वर्तमान स्थिति से पूर्णतया सन्तुष्ट नही रहता, फलत सच्ची सुख शान्ति को पाने के लिए अनवरत प्रयत्न करता रहता है। यह शान्ति प्राप्ति की भावना ही मनुष्य को व्यक्तिगत इच्छाओ व महत्वकाक्षाओ से ऊपर उठकर कुछ असाधारण कर्म करने को सप्रेरित करती है। इसी सद्प्रयास मे सलग्न मनुष्य अन्ततोगत्वा महान् कर्म पु ज, कर्मस्रोत परमात्म-तत्त्व को प्राप्त कर लेता है। परमात्मा स्वय तो निरन्तर कर्म-रत रहता ही है साथ ही सप्रेरक शक्ति भी है। अतएव महान दार्शनिक अरस्तु ने ईश्वर को 'आद्य-प्रेरक' माना है। प्रभु की इसी प्रेरणा से मनुष्य कभी-कभी मानव जीवन, एव इस दृश्यमान जगत् तथा इसके सघटक तत्त्वो की गवेषणा के लिए व्याकुल हो उठता है।

मानव जीवन एव विश्व की प्रहेलियो को सुलझाने की प्रक्रिया मे हम इसके नियामक प्रभु को विस्मृत कर देते हैं। यह ठीक उसी प्रकार से जैसे कि चैतन्य शक्ति को भुलाते हुए हम माया शरीर का विश्लेषण करें। अत सृष्टि को मानना और परमात्मा को नकारना दुराग्रह मात्र है। आधुनिक युग मे वैज्ञानिको एव दार्शनिको की भी स्पष्ट उद्घोषणा है कि इस समग्रसृष्टि की सोद्देश्य रचना किसी आध्यात्मिक सत्ता के द्वारा की गई है। सकल चराचर मे एक ऐसी अध्यात्मिक शक्ति है जिसकी चेतना का प्रवाह एवं नैरन्तर्य सर्वत्र परिलक्षित हो रहा है। इग्लैण्ड के जेम्सवाडं एव अमेरिका के सी ए स्ट्रोग का कथन है कि परमात्म-तत्त्व ही विश्व की मूलभूतभूमि है। लेकिन इस तथ्य का निरूपण तो सृष्टि के प्रारम्भ मे ही भारतीय मनीषियो ने अपनी तप पूता वाणी से कर दिया था। ईशोपनिषद् के प्रथम मत्र मे आधुनिक वैज्ञानिको की भाति सुस्पष्ट कथन आता है—'ईशावास्यमिद सर्वं यत्किञ्च-जगत्या जगत" अर्थात् इस सकल चराचर जगत् मे वह चैतन्य ब्रह्म तत्त्व समाहित है। समस्त विशेषो मे एक ही सत्ता सामान्य अनुस्यूत है। स्थूल सृष्टि के भीतर एक सूक्ष्म सत्ता व्याप्त है, यह सृष्टि ईश्वर का आवास स्थान है सारा जीवन, सारा जगत् ईश्वरमय है, मगलमय है। छान्दोग्य उपनिषद् मे भी शरीर को ब्रह्मपुर अर्थात् ब्रह्म का घर कहा है।

लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम ऋषियो की ऋतभाषा एव प्रज्ञा प्रसूत वाणी का तब तक सम्मान नही करते जब तक कोई विदेशी उसकी प्रशसा नही कर देता। यह तो सत्य है कि हमे सत्य को ग्रहण करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिये रूढिवादी नही होना चाहिये तथापि पाश्चात्यो की प्रत्येक बात को वैज्ञानिक सत्य मानकर अन्धानुकरण करना मूर्खता है यह एक प्रकार की मानसिक दासता ही है कि हम पाश्चात्यो द्वारा प्रमाणित किये जाने पर अपने गौरव को पहिचानते हैं। जब शापनहावर आदि ने उपनिषदो की अद्भुतता एव अमूल्यता का कथन किया, एमरसन ने गीता की सार्वभौमता का घोष किया—तब हमने भी अनुभव किया हमारे उपनिषद् ग्रन्थ महान ज्ञान राशि है। यह हमारे लिए शोभनीय नही है। अत आज इस बात की आवश्यकता है कि हम अपने सद्ग्रन्थो का अध्ययन करें। तैत्तिरीय उपनिषद् की उद्घोषणा है— 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्त्यभि सविशन्ति तद विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म" अर्थात् ब्रह्म से ही समस्त प्राणी उत्पन्न होते हैं और उसी मे विलीन हो जाते उसी को जानो वही ब्रह्म है। इसी तथ्य को प्रेसीडेन्ट ईलियट इस रूप मे लिखते हैं कि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान शाश्वत शक्ति है जो ज्ञानमय है और समस्त सृष्टि को प्रतिपल सचालित करता है।

अब तो शनै शनै वैज्ञानिक लोग जिन्हे अनीश्वरवादी माना जाता है वे भी ईश्वरीय सत्ता को तर्क की कसौटी मे कसकर स्वीकार करने लगे हैं। उनके मत से परमाणुओ को व्यवस्थित होकर अणु बनने मे और अणुओ से जीवित कोशिकायें उनसे मानव पर्यन्त उच्च उच्चतर उच्चतम जीवित देह बनने तक प्रत्येक स्तर पर एक सृजनात्मक माध्यम के अस्तित्व को स्वीकार करना आवश्यक है। विकास एक सृजनात्मक प्रक्रिया है जिसमें सुव्यवस्थित एव सगठित करने तथा पूर्ण बना देने वाला एक माध्यम अन्तर्निहित है। ऊर्जाओं को दिशा निर्देशन एव पारस्परिक सहयोग पैदाकरने वाली एक मूल शक्ति है। वैज्ञानिक दृष्टि से पदार्थ ऊर्जा के रूप में परिणत हो सकता है ऊर्जा ही क्रियान्वयन का कारण होती है, लेकिन यह ऊर्जा क्या है? इसे दिशा निर्देश कौन करता है? वैज्ञानिक लोग इसे रहस्यमय तथा आध्यात्मय मानते हैं। सारे भौतिक जगत् के मूल मे आध्यात्मिक ऊर्जा विद्यमान है जिसे कोई अद्भुत दैवी तत्त्व दिशा प्रदान करता है। इस भाति वैज्ञानिक, दार्शनिक एव वैदिक ऋषिगण तीनों एक ही निष्कर्ष पर आ जाते हैं कि ईश्वर की सृष्टि सरचना ही मूल शक्ति है और यही इसे सुस्थिर एव सचालित भी करती है।

इस स्थूल जगत् का सचालक, नियामक परमपिता परमात्मा ही है— इस सत्य की अनुभूति के लिए मनुष्य को योग की भाषा मे समाधिस्थ होना पड़ेगा। निर्विकल्पक समाधि या असप्रज्ञात समाधि द्वारा ही अध्यात्मप्रसाद अर्थात् सकल पदार्थों का यथातथ्य ज्ञान उदित होता है। और इस ज्ञान की उपलब्धि ऋतम्भरा प्रज्ञा से होती है। यह आध्यात्मिक तत्त्व या ईश्वर तत्त्व मनुष्य के जीवन की गति का कारण होते हुए भी अपरिमेय है। अन्तर्ज्ञान या अन्तर्दृष्टि तर्क से भिन्न है लेकिन तर्क का विरोधी नही। जहा तक अवरुद्ध हो जाता है वहाँ अन्तदृष्टि सहायक होती है। इसीलिये तो कठो मे कहा है-नैषा तर्केणमतिरापनेया' अर्थात आत्मतत्त्व का ज्ञान तर्क द्वारा सभव नही होता। गीता का यह कथन "इन्द्रियाणि पराण्याहु इन्द्रियेभ्य पर मन। मनसस्तु परा बुद्धि यो बुद्धे परतस्तु स"—यही बताता है कि इन्द्रियों से परे मन, मन से परे बुद्धि और बुद्धि से भी परे आत्म तत्त्व है। केनोपनिषद् के मत मे उस ब्रह्म तत्त्व तक न तो चक्षु, न वाणी और न ही मन पहुच पाता है। कठो मे मत्र। आता है "पराञ्चिखानि व्यतृणत् स्वयम्भूस्तस्मात् पराड पश्यति नान्तरात्मन् कश्चिद्धीर प्रत्यगात्मानमैक्षदा वृत्तचक्षुरमृतत्व मिच्छन्' अर्थात् स्वयम्भू परमात्मा ने इन्द्रियो को बहिर्मुख बनाया है अत मनुष्य बाहर की ओर ही देखता है, अन्दर आत्मा को नही देखपाता। कोई बुद्धिमान् पुरुष अमृतत्व की इच्छा करता हुआ अपनी चक्षुरादि इन्द्रियो पर सयम कर आत्मा को देख पाता है। इस भाति अन्तर्दृष्टि से ही परमतत्त्व साक्षात्कार सभव है।

उपर्युक्त विश्लेषण से यही निष्कर्ष निकलता है सृष्टि के प्रारम्भ मे वेदभगवान् द्वारा उद्घोषित तत्त्व को ही शनै शनै आज का वैज्ञानिक युग स्वीकार कर रहा है कि इस दृश्यमान स्थूल जगत् का एक चैतन्य नियामक तत्त्व है। जिसे ईश्वर के नाम से पुकारा जाता है। वैज्ञानिको, दार्शनिको एव पूर्व ऋषि महर्षियो का समवेत उदघोष है— "ब्रह्मैवेद विश्वमिद वरिष्ठम्"।

"हैडमास्टर की आवश्यकता"

सहायता तथा मान्यता प्राप्त आर्य उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिए एम ए/बी एड तथा हायर सैकण्डरी कक्षाओ के शिक्षण का पाच वर्ष का अनुभव अथवा सैकण्डरी विद्यालयो मे प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य करने के पाच वर्ष के अनुभवी योग्य प्रशासक तथा निष्ठावान आर्य समाजी हैडमास्टर प्रारम्भिक वेतन 1720/- वेतन श्रृंखला 1720-3350 मे आवश्यकता है। विस्तृत आवेदन मत्री, आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर को शीघ्र प्रस्तुत करें।

ऋषि बोधोत्सव मेला

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी 15, 16, 17 फरवरी 1988 को महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे ऋषि मेला मनाया जा रहा है। टकारा जाने वाले ऋषि भक्तो के आवास का तथा भोजन का प्रबन्ध टकारा ट्रस्ट की ओर से नि शुल्क किया जाता है।

—रामनाथ सहगल

सनातन धर्म का स्वरूप

— डॉ (श्रीमति) महाश्वेता चतुर्वेदी,

धम सनातन होता है जिसे धारण किया जाता है धारणाद्धर्ममित्याहु धर्मो धारयते प्रजा (मनुस्मृति) सनातन धम ने सारे मनुष्यो को एक समझा है किसी को पीडा पहुचाना सनातन धम की शिक्षा नही है। इसकी शिक्षा है– सर्वे भवन्तु सुखिना अर्थात सब सुखी रह कोई दुखी न हो।

विचार वैविध्य के कारण मनुष्य जाति मे अनक मत सम्प्रदाय और मजहब बन गये। सनातन धम किसी का अहित नही चाहता। यथा शक्ति अपने अपने मतो के अनुसार लोकहित के कम करते हुए ईश्वर भक्त जन कल्याणोमुख रहते है। सनातन धम ने अय मत सम्प्रदाय व धम वालो पर अत्याचार नही किया। धम पारलौकिक है उसके विषय मे एकात बात नहीं कही जा सकती। सासारिक कम सामाजिक काय और व्यवहार समुचित होने चाहिये—

हि दु हो मुसलमाँ हो
या सिख हो कि ईसाई।
मजहब अलग अलग हो
मगर है सभी भाई।
मजहब अलग अलग हा
मगर चाल एक हा।
स्वदेश तरक्की का
बस नेक ख्याल हो।

प्रत्येक धम को मानन वाला स्वदेश प्रम एव मानव धम स अनुप्राणित होकर ही सबका भला कर सकता है।

एक वस्तु का स्वरूप सब मनुष्यो की आखें एकसा नही देख सकती। अत सब मनुष्यो का धार्मिक विचार समान होना सम्भव नही है। अत ममता तर का द्वष छाड कर सबका हित करना चाहिये। केवल सनातनधर्मी आय ही ऐसा है जिनने न किसी मुल्क को लूटा न किसी की स्त्रिया और धन छाना और ना ही किसी क पूजा स्थानो या कब्रो को भग्न किया।

महमूद के सग आने वाला मुसलमान यात्रा अलबेरुनी सनातन धम से बहुत प्रभावित हुआ था उसके अनुसार क्या हमारा हो तरह हिदुआ म भी अनेक मत है ? व आपस म वाद विवाद करत है किन्तु कोई आपस म लडता नही है। जैन बौद्ध शव शक्त सन्त सम्प्रदाय आयसमाजी और पौराणिक सब अपनी-अपनी बुद्धि क द्वारा काय करत है कोई विरोध नही होता।

वल्कि सनातन धम ससार क सभी धर्मो का स्रोत है। सनातन धम के अनुसार ग्यारह धम तथा ग्यारह अधम है। धम के दस लक्षण है— धति क्षमा दम अस्तय शौच इद्रिय निग्रह धी विद्या सत्य तथा अक्रोध

धति क्षमा दमोऽस्तय शौच मिद्रिय निग्रह ।
धी विद्या सत्यमक्रोधा दशक धम लक्षणम ॥ (मनु स्मृति)

ग्यारहवा धम है अहिसा।

अहिंसा का लक्षण –

अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा। योग दशन 2/30 केवल पशु आदि न मारना हा अहिसा नही है अपितु वर त्याग का नाम अहिसा है सवथा सवदा सवभूतानामनभिद्रोह अहिंसा तया (योग दशन)

- ❋ धति—धय का त्याग कभी न करना चाहिये।
- ❋ क्षमा—सहनशक्ति। किन्तु असामथ्य का नाम क्षमा नही है।
- ❋ दम—मन की वत्तियो का निग्रह करना ही दम है।
- ❋ अस्तेय—का अभिप्राय चोरी याग स है।
- ❋ शौच—दो प्रकार का है शारीरिक और मानसिक।
- ❋ इद्रिय निग्रह—सारी इद्रियो को न्याय पूवकवश मे रखना।
- ❋ धी—बुद्धि बुद्धि बलवती हो ऐस काय करने चाहिय।
- ❋ विद्या—यथाथ दशन ही विद्या है।
- ❋ सत्य—तीन प्रकार का है सत्य भाव सत्य वचन तथा सत्य क्रिया।
  सत्यान्तरम तद व धम तत्र यम
  जो हृदय म हो वही वचनो स प्रकाशित कर वही सत्य है।
- ❋ अक्रोध—क्रोध के आधीन होन से अनेक अनथ हात ह अत उसका त्याग करना चाहिय।

धम के तीन स्कन्ध

त्रयो धम स्कन्धा यज्ञोऽध्ययनदानमिति (छान्दोग्य उप)
अथात धम के तीन स्कन्ध है—यज्ञ अध्ययन दान।

- ❋ यज्ञ—यज्ञ स वायु शुद्धि होनी है जिसस प्रचर अन्नवद्धि होती है—
  यज्ञन यज्ञमयजन्त देवा (ऋग्वेद)
- ❋ अध्ययन—समान रूप स बालक बालिकाओ को पढाना।
- ❋ दान—विद्यावद्धि के लिये द्रव्य व्यय करना कला-कौशल का उन्नति के लिय धन लगाया जाय तथा दीनो की सहायता करना दान है

धम के इन ग्यारह लक्षणो को धारण करन वाला ही धार्मिक है चाह वह किसी देश जाति एव धम का हो पशु पक्षी कीड मकोड स्वभावत ही अपने कत्तव्य का पालन करत हैं। मनुष्य उन्ह प्रशिक्षण देकर प्रत्यक काय करा लेता है। बन्दर स्वय अपन नाटकीय कर्मो को दिखाकर रोटी नहीं कमा सकता। शेर अपन खेल स्वय नहा दिखा सकता मानव अपने बुद्धि कौशल से नाना प्रकार का क्रीडा म कला मक और रचनात्मक काय कर सकता है। वेदो न आदि सृष्टि मे हा कला कौशल का उपदेश दिया है—

अदो यादरु प्रवत्ति सु दोपारे अपूरुषम (वेद)

हे मनुष्य जो यह काठ समुद्र के किनारे तर रहा है उसम यत्र बना अनक कला कौशल और विज्ञान वेद ने हा सिखाय। रथ एव चरख का आविष्कार सव प्रथम भारत मे ह हुआ ज्ञान और विज्ञान क सूत्रा क व्याख्या विवक और ज्ञानी मनुष्य हा कर सकत है। इसी प्रकार शान्ति और सुव्यवस्था का प्रसार भी मानव कर सकता है

व्यापक धम की परिभाषा मे मानव मात्र का काय क्षत्र समाहित है। ससार मे अशान्ति का कारण धम के विपरीत चलन है सनातन धम के स्वरूप को समझना ही पर्याप्त नही अपितु उसे आचरण म ढालना भी आवश्यक है जिससे प्राणी मात्र का हित सम्भव है व हरी शासन व्यवस्था आन्तरिक दुर्भावनाओ को समाप्त नही कर सकती वल्कि सनातन धम क प्रसार से ही मानव का अन्तजगत और वहिजगत शातिमय धार्मिक और कल्याणप्रद हो सकता है

पता प्रोफसस [illegible] श्यामगज [illegible]

पाठको से निवेदन

सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजें

हमारे अनेक सदस्या न अभी तक अपना ग्राहक शुल्क नहीं भेजा है। ऐसे सदस्य महानुभावो से विनम्र निवेदन है कि पत्र का वार्षिक शुल्क मात्र 15/रु धनादेश द्वारा शीघ्र भजा कर कष्ट कर ताकि हम आर्थिक समस्या से मुक्त हो पत्र क नियमित प्रकाशन करने म [illegible] सक।

सहयोग की कामना मे।

— व्यवस्थापक

वेदामृत —

वसुधैव कुटुम्बकम्

अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः सचेतति ।
हिन्वान आप्यं बृहत् ।। 12 ।। (सामवेद, पवमान पर्व)

ऋषि —जमदग्नि = चलती फिरती आग ।

(अयम्) यह (विचर्षणि) दूरदर्शी (बृहत्) महान् (आप्यम्) बन्धुत्व [की लहर] को (हिन्वान) प्रेरित करता हुआ (हित) चाहे ठहरा ही हुआ है। (पवमान) बहुत-सा (सचेतति) प्रतीत होता है।

मनुष्य की बुद्धि सकुचित है। वह आज का हित देखता है, कल का नहीं। निकट की भलाई पर ध्यान देता है, दूर की भलाई पर नहीं। वास्तव मे भलाई का क्षेत्र न समय से सीमित हो सकता है न देश से। हित करना हो तो किसी व्यक्ति-विशेष का, या वश-विशेष अथवा देश-विशेष का, अन्य व्यक्तियो, अन्य वशो, तथा अन्य देशो से अलग हो कर नही किया जा सकता है। मनुष्य जाति एक साथ उठेगी और एक ही साथ बैठेगी। सकुचित दृष्टि के लोग इस महान तत्व को नही पहचानते और इसी से वे दु खी हैं। सच तो यह है कि इस विश्व के सभी प्राणी—मनुष्य, पशु, पक्षी यहाँ तक कि वनस्पति और औषधि आदि भी विस्तृत बन्धुत्व के नाते एक बडे परिवार के सदस्य हैं। जीवन-रस की एक लहर इन सब जीव-बन्धुओ को बिन्दु बना-बना कर मोतियो की एक सुन्दर माला मे पिरोये हुए है। सजीव ससार एक बडा समुद्र है जो निरन्तर ठाठें मार रहा है।

आत्म-दर्शन इसी महान तत्त्व का दर्शन होता है। वही "विचर्षणि"-सर्वद्रष्टा है जिस ने इस [illegible] पहचाना। वही अपना तथा [illegible] हितकारी हो सकता है। [illegible] की लहर पर सवार हुआ [illegible] रता-सा [illegible] वह स्वय पवित्र है और अपने पवित्र विचार से स[illegible] का सचार करता है। उस की गति और स्थिति—दोनो अवस्थाओं में हृदय की आर्द्रता काम करती रहती है। वह परोपकार मे दृढ है, अचल है। उसे उस के कर्त्तव्य के पथ से कौन डिगा सकता है? वह चट्टान की तरह मजबूत है उस का जीवन सञ्जीवन का प्रचार है, सचार है। वह बहती नदी है, खडा हुआ पानी नहीं। "तदेजति तन्नैजति"। "अचल गति वाले" की उपासना करते करते वह स्वय अचल हो गया है, गतिमान् हो गया है।

"अयम्" यह जन अर्थात् मैं। क्या मैं "विचर्षणि" हूँ? "हित" हूँ? "पवमान" हूँ? इस महान् बन्धुत्व की व्यापक लहर का साक्षि मैं हूं। इस लहर को अपनी गति-मति से हिलाता हूँ? प्रेरित करता हूं?

वेद कहता है—हाँ! मेरे हृदय! तू भी तो "हाँ" या "न" कह।
वेद-वाणी! मेरे हृदय की वाणी बन जा।

—प पशुपति (सोम सरोवर से)

तू स्वयं ही शक्ति का आगार!

—लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र'—

यह दुराशा है कि कोई साथ देगा!
पाँव फिसले तो न कोई हाथ देगा!
विश्व-विघ्नो मे चरण आगे बढे तो—
सृष्टि का कण कण भुका निजमाथ देगा।

आज अपनी शक्ति को पहचान साथी,
निज पगो पर कर प्रगति-अभियान साथी
जब चुनौती ले चरण आगे बढेंगे—
साथ तब होगे स्वय तूफान साथी।

तू स्वय ही शक्ति का आगार है रे!
सन्निहित तुझ मे सृजन-सहार है रे!
तू हुआ दिग्भ्रांत है निज ज्योति खोकर-
इसलिए पथ मे घिरा अधियार है रे।

अमरता भयभीत अमरो के लिए है।
आदमी तो काल को कर मे लिए है।
मृत्यु का अस्तित्व ही होता नही—
जिन्दगी ही मौत को जिन्दा किए है।

पता भोजपुरा, मैनपुरी (उ प्र)

दरबारी लाल सम्मानित

नई दिल्ली—12 नवम्बर, भारतीय बाल-शिक्षा परिषद द्वारा राष्ट्रीय बाल-शिक्षा सम्मेलन के अवसर पर डी ए वी कॉलेज प्रबन्धकर्ता समिति के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल का नई दिल्ली के सीरीफोर्ट सभागार मे सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। उप राष्ट्रपति श्री शकर दयाल शर्मा समारोह के मुख्य अतिथि थे। रक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पत ने भी सम्मेलन को सबोधित किया। —जगन्नाथ (विशेष अधिकारी)

यज्ञशाला स्थापित

आर्य समाज उदयपुर के तत्वावधान मे हिरन मगरी सेक्टर 4 उदयपुर मे दिनांक 24-10-87 को एक यज्ञशाला का भव्य उद्घाटन समारोह महात्मा श्री आर्यभिक्षुजी महाराज के नेतृत्व मे सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

पत्र बोलते हैं—

दयानन्द के उत्तराधिकारी उत्तर नहीं देते

लेखको के प्रमाद, प्रेस की असावधानी आदि कारणो से महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो मे अनेकत्र अशुद्धियां रह गई हैं। उन्हे दूर करने का प्रयत्न विद्वान समय समय पर करते रहे हैं। सन् 1986 के सितम्बर मास मे कतिपय अधिक महत्वपूर्ण भूलो का निर्देश करते हुए मैंने परोपकारिणी सभा को एक प्रस्ताव भेजा कि वह इस कार्य के निमित्त 5 विद्वानो का नियुक्त करे। एकएक की बजाय अनेक विद्वानो के एक साथ बैठ कर करने से अच्छी प्रकार यह काम होगा और महर्षि की उत्तराधिकारिणी सभा के तत्त्वावधान मे होने से उसकी प्रामाणिकता भी होगी। नवम्बर मे परोपकारिणी सभा की बैठक हुई। मेरे प्रस्ताव पर क्या निश्चिय हुआ यह जानने के लिए बार बार पत्र लिखने पर फरवरी 1987 मे उत्तर मिला कि भूल से मेरा प्रस्ताव सभा की बैठक मे प्रस्तुत होने से रह गया, अप्रेल में होने वाली बैठक मे अवश्य प्रस्तुत किया जायेगा। 7 अप्रेल '87 की बैठक हुई। तब से अब तक—आठ मास तक—बराबर पत्र लिखते रहने पर भी उत्तर नहीं मिला। मैं केवल इतना ही जानना चाहता हूँ कि मेरा प्रस्ताव सभा मे विचारार्थ प्रस्तुत हुआ या नही। यदि हुआ तो उस पर क्या निश्चय हुआ। और यदि नही हुआ तो क्यो नही। जहाँ पत्र का उत्तर देने की औपचारिकता [illegible] नहीं होता, वहा से और क्या आशा हो सकती है?—सबको [illegible]

—विद्यानन्द सरस्वती
डी—14/16 माडल टाउन, दिल्ली

दूरदर्शन का 'रामायण' धारावाहिक

स्वय को आर्य कहने वाले दयानन्द के भक्तो की दूरदर्शन धारावाहिक 'रामायण' के प्रति अति आस्था देखकर मेरे मन मे आश्चर्य एव विषाद के सम्मिलित भाव उत्पन्न होते हैं

जिस पौराणिक अलौकिक चमत्कारो की रामायण या रामचरित मानस की आलोचना आर्यसमाज के मच से की जाती हैं, उन्ही चमत्कारो से युक्त रामायण को ये लोग अति श्रद्धा भाव से दूरदर्शन पर देखते हैं।

स्मरण रखिए! रामानन्द सागर की रामायण 'वैदिक रामायण' नही है, पौराणिक रामायण है।

ऋषि ने हमे हिन्दू से पुन 'आर्य' बनाया था। पौराणिक गप्पो से भरी रामायण के प्रति हमारी आस्था से लगता है कि शायद हम पुन हिन्दू बन गए हैं।

—नवीन कुमार शर्मा
487/24, सब्जी मडी,
केसरगज, अजमेर।

आर्यसमाज की दिवराला पदयात्रा

महोदय,

समाचार पत्रो मे प्रकाशित समाचारो के अनुसार स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे सती प्रथा के विरोध मे आर्य समाज द्वारा दिल्ली से दिवराला तक पदयात्रा का आयोजन किया जा रहा है।

मेरे निजी विचार मे यह पदयात्रा सस्ती पब्लिसिटी बटोरने का एक साधन मात्र है, 'साप निकल जाने पर लकीर पीटने से क्या लाभ?'

आखिर ये लोग चूदडी समारोह रोकने क्यो गए?

क्या मैं आप (श्री वीरेन्द्र) जैसे तेज-तर्रार सम्पादक से इस सदर्भ मे सम्पादकीय टिप्पणी की आशा रखू?

—मांगे राम शर्मा
देहरादून (उ प्र)

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा आर्य प्रिन्टर्स अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द · 162
सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष : 3 मगलवार, 15 दिसम्बर, 1987
अक 20 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

पौष कृ 9 मवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

मैक्समूलर - विवेकानन्द - दयानन्द

— स्वामी विद्यानन्द सरस्वती —

'आर्य जगत्' के 30 अगस्त 1987 को प्रकाशित सस्कृत विशेषाक के प्रारम्भ मे 'ब्रह्मवादिन्' मे लिखे स्वामी विवेकानन्द के एक लेख का कुछ अश प्रकाशित हुआ है। स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है—

"मैक्समूलर का भारत पर कितना अनुराग है! मेरा अनुराग यदि उसका एक प्रतिशत भी होता तो मैं अपने को धन्य मानता। मैने उनसे कहा— 'आप भारत कब आ रहे हैं? भारतवासियो की चिन्तन-राशि को आप ने लोगो के सामने यथार्थ रूप मे उपस्थित किया है।'' वृद्ध ऋषि का मुख उज्ज्वल हो उठा।

इस लेख से स्पष्ट है कि स्वामी विवेकानन्द के अनुसार मैक्समूलर—

1 ऋषि थे।

2 उमने भारत की चिन्तनराशि को यथार्थ रूप म उपस्थित किया।

3 उनका भारत पर इतना अनुराग था कि उसका एक प्रतिशत पाकर भी विवेकानन्द अपने आपको धन्य मानते।

यह विवेकानन्द का कहना है परन्तु स्वय मैक्समूलर का अपने विषय मे क्या विचार था यह उसके निम्न लेखो से पता चलता है—

मैक्समूलर के शब्दो मे A large number of Vedic hymns are childish in the extreme, dedious, low and common place' (Chips from a German workshop, Ed 1866 p 27) अर्थात वैदिक सूक्तो की बडी सख्या बिल्कुल बचकानी, जटिल निकृष्ट और मामूली है।

जिस उद्देश्य मे मैक्समूलर ने वेदो का अनुवाद किया, उमके विषय मे उसने अपनी पत्नी को लिखा—

This edition of mine and the translation of the Veda will, hereafter, tell to a great extent on the fate of India It is the root of their religion and to show them what the root is, I feel sure is the only way of uprooting all that has sprung from it during the last three thousand years" (Life and Letters of F Maxmuellar, Vol I, chap XV, p 34)

अर्थात मेरा यह सस्करण और वेदो का अनुवाद भारत के भाग्य को दूर तक प्रभावित करेगा। यह उनके धर्म का मूल है और उन्हे (भारतीयो को) यह दिखाना कि यह मूल कैसा है गत तीन हजार वर्षों मे इस से उत्पन्न होने वाली सब बातो को मूलसहित उखाड फेंकने का एकमात्र उपाय है।

भारत सचिव (Secretary of State for India) के नाम 16 दिसम्बर 1868 को लिखे अपने पत्र म मैक्समूलर ने लिखा—

शेष (पृष्ठ 6 पर)

दिवराला पदयात्रियो पर लाठी प्रहार से आर्य जगत मे भारी रोष

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान आचार्य दत्तात्रेयजी आर्य द्वारा विरोध व्यक्त

आर्य समाज के वरिष्ठ नेता तथा हरियाणा के भू पू शिक्षा मन्त्री स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे सती प्रथा तथा नारी उत्पीडन के विरोध मे आयोजित पद यात्रा को अचानक दिवराला से 25 मील दूरी पर ही रोक दिये जाने तथा महिलाओ और बच्चो सहित पद यात्रियो पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज के समाचार से समस्त आर्य जगत मे रोष की लहर सी फैल गई है। स्वामी अग्निवेश द्वारा 144 धारा का उल्लघन कर दिवराला की सीमा मे प्रवेश न करने तथा लगभग 100 आर्य सन्यासियो के नेतृत्व मे आयोजित इस अभियान मे सम्मिलित लोगो द्वारा पूर्ण शान्ति बनाये रखने के आश्वासन के बावजूद सरकार द्वारा उठाया गया यह कदम उसकी निर्बलता और अक्षमता का ज्वलन्त उदाहरण है। एक और सरकार सती जैसे अमानवीय कार्य के विरुद्ध कानून बनाती है और दूसरी ओर इस प्रकार के धार्मिक अध विश्वासो के विरुद्ध जनमत जागृत करने के प्रयत्न को बलपूर्वक रोकती है यह दोनो परस्पर विरोधी नीतिया इस बात का सबूत है कि वास्तव मे अपने राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिये सत्ताधारी दल केवल दिखाने के लिये ही सती आदि कुरीतियो का निराकरण करने का दावा मात्र करती है।

कानून और व्यवस्था बनाये रखने का दायित्व सरकार पर है इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि जो लोग इस प्रकार की पदयात्रा जैसे अपने कानूनी अधिकार का उपयोग करते है उसमे बाधा पहुँचाने वाले तत्वो को रोका जाये और यदि वे हिसा और तनाव उत्पन्न करते हैं तो उनके विरुद्ध कडी कार्यवाही की जाये किन्तु आर्य समाज जैसे धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन द्वारा स्वय सरकार की तथा कथित सती विरोधी नीति के समर्थन मे आयोजित जन जागरण के इस अभियान का कुछ मुट्ठी भर सती समर्थक लोगो द्वारा विरोध किए जाने के कारण शांति और व्यवस्था के नाम पर इस प्रकार का प्रतिबध स्पष्ट रूप से सती प्रथा के समर्थको के लिये खुला प्रोत्साहन है। इसका परिणाम यह होगा कि कुछ असामाजिक तथा विरोधी तत्व हिसा और अशाति का सहारा लेकर किसी भी समाज सुधार के कार्य को रोकने मे समर्थ होगी। इस पद यात्रा मे आर्य समाज अजमेर की ओर से भी 51 व्यक्तियो का एक जत्था सम्मिलित है। पुलिस द्वारा पदयात्रियो पर किये गए लाठियो के प्रहार से अजमेर मे इन यात्रियो के सम्बन्धी ही नही अन्य लोगो मे भी चिन्ता और रोष व्याप्त है। आर्य समाज अजमेर के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अतरग सदस्य आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य ने पदयात्रियो को इस प्रकार रोके जाने और उन पर लाठीचार्ज किये जाने के विरुद्ध एक व्यक्तव्य जारी किया है और राज्य सरकार तथा केन्द्रीय सरकार को तार द्वारा आग्रह किया है कि वे फौरन इन पदयात्रियो पर से प्रतिबध हटाकर उन्हे अपने अधिकार का शातिपूर्ण उपयोग करने दे और कडी सर्दी के इस मौसम मे खुले मैदान मे डेरा डाले महिलाओ और छोटे बच्चो तथा सन्यासियो के समूह की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए कदम उठाये।

मननीय

— महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर —

महिलाओ को सती साध्वी रखने के लिए पुरुषो ने अपनी समस्त स म जिक शक्ति को उसके विरुद्ध खडाकर रखा है। इसी कारण महिलाओ के प्रति पुरुषो की कोई जवाब देही नही है। इसी व्यवहार से पुरुषो की कापुरुषता ही प्रकट होती है।

सम्पादकीय—

एक नवीन सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता

आज सम्पूर्ण समाज मे नैतिक एव मानवीय जीवन मूल्यो का तेजी से ह्रास हो रहा है। सामाजिकता की भावना कमजोर होनी जा रही है। स्वार्थ परायणता विकराल रूप धारण कर समाज के ढाचे को नष्ट करने पर तुली हुई है। धर्म के नाम पर सती प्रथा और नर बलिकाण्ड जैसे घोर नारकीय जघन्य हत्याकाण्ड सुनाई पड रहे है। आये दिन बहन बेटियो को दहेज की बलिवेदी पर जीते जी जल मरने को मजबूर किया जा रहा है अथवा उन्हे अमानवीय यत्रणा और पीडाओ के जाल मे जकड कर उत्पीडित किया जा रहा है। बाल विवाह तथा अनमेल विवाह अब भी धडल्ले से बाजा गाजो के साथ सम्पन्न हो रहे है। कन्या जन्म अभी भी कई परिवारो मे अभिशाप माना जाता है। विधवाए अब भी अपने दारुण दु खमय जीवन पर आठ-आठ आंसू बहा रही हैं। कई मा और बहनो को डायन, चुडैल और पैशाचिनी कहकर पत्थरो से मारा जा रहा है अथवा जिन्दा ही आग का भट्टी मे झोका जा रहा है। पर्दा हट कर भी पुन अपना प्रभाव जमा रहा है। य समस्त सामाजिक कुरीतियां और अधविश्वास हमारे राष्ट्रीय जीवन को खोखला कर उसे जीर्णशीण बना रहे है। हम इक्कीसवी सदी के स्थान पर प्रतिगामिता के शिकार होकर पुन सत्रहवी और अठारवी सदी की बातें करने लगे है।

राजनीतिज्ञ बिना दूरदर्शिता का परिचय दिए हुए हर बात को अच्छा बताते है और केवल सतुष्टीकरण की नीति अपनाते है। वोटो की राजनीति इस सब मृत प्राय रुढियो को जीवन शक्ति प्रदान करने मे लगी हुई है।

इन्हो सामाजिक कुरीतियो और अधविश्वासो के विरुद्ध जनमत जाग्रत करने के लिये इस खतरे से सबको सजग और सावधान करने के लिये नारी उत्पीडन तथा सती प्रथा के खिलाफ आर्य समाज द्वारा जन जागरण का अभियान प्रारम्भ किया गया है। इसके अन्तगत दिनाक 5 दिसम्बर 87 ई से 23 दिसम्बर 87 ई तक आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी एव आर्य नेता स्वामी अग्निवेश तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जयन्ती के नेतृत्व म 101 सन्यासियो एव समाज सेवियो द्वारा भारत की राजधानी दिल्ली से रूपकवर दहन स्थल दिवराला तक पदयात्रा प्रारम्भ हुई है जिसका समाज के अधिकाश वर्गों ने जोर शोर से स्वागत किया है। आर्य समाज अजमेर का भी एक जत्था 51 सदस्सीयजत्था इस पद यात्रा मे सम्मिलित हुआ है।

छूआछूत की प्रबलता शहरो मे तो थोडी कम हुई है। परन्तु गांवो मे अब भी यत्रतत्र छूआछूत की घटनाऐं होती रहती है। बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश तथा यदा-कदा दक्षिण के राज्यो मे भी हरिजनो के मकान जलाने या उनकी हत्याओ के समाचार मिलते रहते हैं। उत्तर भारत मे आज भी कई बडे बडे प्रसिद्ध मन्दिरो म हरिजनो का प्रवेश निषिद्ध है।

शादी विवाहो मे फिजूलखर्ची दिखावा, शानशौकत, भौंड एव अश्लील हरकतो वाले गान, शराब का सेवन आदि बहुत बढ गये है। गांवो म तथा शहरो मे भी तरहवी दसवो प्रथम मृत्यु भोज, मौसर, गगोज आदि की कुप्रथाए अभी भी अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं।

जादूमत्र, टोना छाया तत्र-मत्र टोटका झाडफूक, डोरा, गण्डा ताबीज, कडा आदि का प्रचलन भी तेजी से बढ ही रहा है। बडे बड औषधालय खुल गये। विज्ञान तो तेजी से बढा परन्तु मनुष्यो का वैज्ञानिक एव प्रगतिशील दृष्टिकोण विकसित नही हो पया।

श्राद्ध, तीर्थ, मूर्ति पूजा, गुरुडम, सतोषी पूजा, अवतार वाद, पीर-पैगम्बरी चमत्कारा की पूजा आदि अन्धविश्वासो को शृ खला भी थमने का नाम नही ले रही है।

इन विषम परिस्थितियो मे सामाजिक क्रान्ति तथा एक और पुनर्जागरण का आन्दोलन की परमावश्यकता है। आर्य समाज जैसे सामाजिक सुधारवादी सगठन को फिर पुन दीवानापन और बलिदानी स्वरूप धारण कर इन सामाजिक बुराइयो और अधविश्वासो पर करारी चोट करनी है। शास्त्रार्थों की पुरातन परम्परा को पुन जीवित करे जिससे कि पौराणिक पण्डितगण अथवा तथाकथित धर्माचार्य लगेगा वेदो के नाम पर मनमानी व्यवस्थाए नही दे सकें तथा इन बुराइया के विरुद्ध प्रबल जनमत जाग्रत हो सके।

नरबलिकॉड : हिन्दू धर्म पुनः मानवता की अदालत मे

वैसे तो ससार के अन्य मजहबो मता मे भी अधविश्वास और कुप्रथायें देखने को मिलती हैं। परन्तु तथाकथित मानवतावादी (?) हिन्दू धर्म इन सब म शिरोमणि है? आडम्बरो और कुरीतियो के मामले मे ससार मे इसका कोई सानी नही है।

अभी तक 'सती' नामक कुप्रथा की चर्चा भी समाप्त नही हो पाई है कि 'नर बलि' जैसी कुप्रथा अपना भीवत्स रूप लेकर हमारे सम्मुख उपस्थित हो गई है। आकडे बताते है कि गत पांच वर्षो मे ही भारतवर्ष मे प्रति वर्ष 10 'नरबलि काड' हुए है। इससे हमारे समाज की मानवीयता के प्रति सवदनशीलता का पता चलता है।

महात्मा बुद्ध को यज्ञ जैसे पवित्र कर्म की आलोचना करने का अधिकार मध्यकालीन हिन्दू धर्म के तथाकथित ठकेदारा ने स्वय ही प्रदान किया था। क्योकि इन लोगो ने यज्ञ मे 'नर बलि' जैसे अमानवीय कृत्य को समाविष्ट कर दिया था। मोरध्वज व मकरध्वज का रोचक किस्सा भी आपने पौराणिक कथा वाचको से अवश्य सुना होगा।

गत दिनो मेरठ व राजस्थान के भीलवाडा शहर मे धन के पिपासु दरिदो ने दो मासूम बच्चो की बलि चढा दी। मेरठ के मनीश काड' ने तो ममता को भी लाछित कर दिया। धन प्राप्ति के लिए माता-पिता ने अपने सात वर्षीय पुत्र मनीश की बलि 'काली' को चढा दी।

महर्षि दयानन्द ने धर्म के नाम पर फैले सभी अधविश्वासो और कुरीतियो पर दृढता से प्रहार किया था। हिन्दू धर्म मे अन्य मतो व मजहबो की तुलना मे अधिक कुरीतियां और अधविश्वास पाए जाते हैं। और इसके नाम के शाब्दिक अर्थ से ही नही अपितु मान्यताओ से भी इसका एक घृणास्पद रूप उभरता है। इसलिए ऋषि के समीक्षा या विवेचन का प्रमुख विषय भी हिन्दू धर्म ही रहा।

हिन्दुओ को पुन आर्यत्व की ओर अग्रसर करना ही ऋषिवर का लक्ष्य रहा। उनके पश्चात् आर्यसमाज ने हिन्दुओ को पुन आर्य बनाने का बीडा उठाया, परन्तु परिणाम विशेष उल्लेखनीय नही रहा। और रहे भी तो कैसे? कवि के शब्दो मे—

एक लोटा हो तो छन सकता,
यहाँ तो कुए मे भाग मिलाई।

पूज्यपाद् स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा हमे उपर्युक्त सदर्भ मे दो सूत्र प्राप्त हुए है। सूत्र निम्न हैं

धर्म + मिथ्याचारिता = साम्प्रदायिक धर्म

वैदिक धर्म + अधविश्वास = हिन्दुत्व

परमेश्वर से प्रार्थना है, 'काली' तथा इन जैसे अन्य देवी-देवताओ के अधविश्वास मे फसकर 'नर-बलि' जैसे अमानवीय एव बर्बर कृत्य करने वालो को हिन्दुत्व की भावना से मुक्ति दिलावे और उनमे आर्यत्व के भाव उत्पन्न करें।

—वीरेन्द्र आर्य

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के सामने अपूर्व अवसर

—: प्रो—बाबूलाल गुप्ता :—

पता—भू पू सचालक शिक्षा विभाग मध्य भारत

लगभग साठ वर्ष पूर्व लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने हमारे सामने समग्र क्रांति की गुहार लगाई थी, यद्यपि उन्होने स्पष्टतया यह कभी नहीं बताया कि समग्र क्रांति से उनका तात्पर्य क्या था। ईस्वी सम्वत् की उन्नीसवी शताब्दी मे हमारे देश मे एक महापुरुष ऐसे अवश्य उत्पन्न हुये जो इस शब्द के वास्तविक अर्थ मे समग्र क्रांति के प्रस्तोता माने जा सकते हैं और जिनके उपदेशों के अनुकूल यदि लोगो ने आचरण किया होता तो इस समय न केवल हमारे देशवासी ही अपितु ससार के अन्य देशो के नागरिक भी समग्र क्रांति का उपभोग कर रहे होते। उक्त महापुरुष से लेखक का तात्पर्य आर्य समाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती से है।

महर्षि दयानन्द को अभी तक प्राय लोगो ने केवल एक समाज सुधारक के रूप मे ही पहिचाना है तथापि मानव जीवन का कोई अश ऐसा नही रहा जिस पर उक्त महर्षि ने प्रकाश डाला हो। महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव ऐसे काल मे हुआ जब हमारा देश परतन्त्रता की बेडियो मे जकडा हुआ था। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे स्वाधीनता का गुणगान निम्नलिखित स्वर्ण अक्षरो मे स्पष्ट रूप से किया है यथा 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है"।

स्वतन्त्रता प्राप्ति की प्रबल उत्कण्ठा लोगो के हृदयो मे महर्षि दयानन्द के उपदेशो ने ऐसी अमिट रूप मे उत्पन्न करदी थी कि आर्य समाज के प्रारम्भिक काल मे विदेशी शासक आर्य समाज के सभासदो को राजद्रोही समझने लगे थे। पटियाला नरेश ने तो अपने राज्य मे रहने वाले आर्य समाजियो को राजद्रोही घोषित कर उनको दण्डित भी करना चाहा था। जब राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने सन् 1920 ई मे भारत को स्वतन्त्र कराने निमित्त असहयोग आन्दोलन चलाया था तब उसमें सच्चे मन से सहयोग देने हेतु उत्तर भारत मे जितने आर्य समाजी लोग सम्मिलित होकर जेल गए उतने अन्य किसी समुदाय के नही सम्मिलित हुए। तथापि घोर दुख के साथ के साथ कहना पडता है कि जब अन्ततोगत्वा 15 अगस्त 1947 ई को देश स्वतन्त्र हुआ तो आर्यसमाजी लोग उसका श्रेय पाने से वचित रह गए।

हमारा देश राजकाल की दृष्टि से स्वतत्र तो अवश्य हो गया है तथापि इस स्वतत्रता के युग म जितनी तीव्रगति से हमारे देशवासियो का चारित्रिक ह्रास हुआ है उतना पूर्व मे कभी हुआ हो ऐसा अनुमान भी नही लगाया जा सकता। हमारे इस चारित्रिक अध पतन का जो दुखद परिणाम होगा उसकी कल्पना मात्र से रोगटे खडे हो जाते है। यदाकदा जब किसी क्षेत्र मे अधिक क्षति होती हुई लोगो को दिखाई दे जाती है तब केवल उसी के सुधार हेतु तात्कालिक उपाय सोचे जाने लगते है। जैसे किसी वृक्ष की मूल मे खाद पानी की कमी के कारण उसके पत्तो के सूख जाने पर यदि कोई व्यक्ति पत्तो पर पानी छिडक कर उनको हरा रखना चाहे तो वह अपने उद्देश्य मे कदापि सफल नहीं हो सकता ऐसे ही उक्त उपाय भी अप्रभावी सिद्ध होते है।

हमारे देश मे वर्तमान समय मे जो भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार व्यभिचारादि की महामारियो अबाध गति से फैलती जा रही है उनका मूल कारण है राष्ट्रीय स्तर पर हमारा चारित्रिक ह्रास। चारित्रिक ह्रास को पनपाने के अवसर यो तो अनायास ही उपस्थित हो जाते है परन्तु जिन नासमझ लोगों के हाथों मे देश के शासन की बाग डोर गत चालीस वर्षों से प्राय निरन्तर रही है और कब तक रहेगी इसका अनुमान लगाना भी कठिन है, उन्होंने अपनी नासमझी के कारण अनेक ऐसे साधन जनता को उपलब्ध करा दिये है और कराते चले आ रहे है कि व्यभिचार और भ्रष्टाचार अधिकाधिक बढते ही चले जावेंगे, जब तक उपर्युक्त दूषणो के उत्पन्न होने के मूल कारण को न समझा जावेगा तब तक उनको नष्ट करना असम्भव ही रहेगा। राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रान्तगत (आर्य समाजियो के अतिरिक्त) जितने भी नेता हैं उनको कल्पना मे भी नही आ सकता कि हमारे इस ओर चारित्रिक ह्रास का कारण क्या है।

ऐसी विकट स्थिति मे आर्य समाज के सामने अपूर्व अवसर है कि वह अपने सस्थापक महर्षि दयानन्द को कल्पना के अनुरूप अपना स्वरूप पहिचाने और महर्षि के बताए गए मार्ग का अनुसरण करते हुए न केवल अपना ही उद्धार करें अपितु स्वदेशोद्धार का मार्ग भी प्रशस्त करें। वर्तमान समय मे प्राय एक आर्य समाजी और अन्य धार्मिक विश्वास के अनुयायी के व्यवहारो मे कोई विशेष अन्तर दिखाई नही देता। आर्य समाज के चतुर्थ और पचम नियम प्रत्येक आर्य समाजी से यह अपेक्षा रखते है कि उसका प्रत्येक कार्य सत्य पर आधारित होगा और सप्तम नियम के अनुसार आचरण करते हुए वह पक्षपात एव द्वेषभाव से मुक्त रहते हुए सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करेगा। ऐसे सुनहरे नियम किसी अन्य धार्मिक सस्था अथवा राजनीतिक दल के नही है आर्य समाजियो को यह भ्रम अपने मनो मे से अविलम्ब निकाल देना चाहिये कि वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज के उपर्युक्त नियम अव्यवहार्य अथवा प्राचीन युग की बात हो गए।

आर्य समाजी बन्धुओ को मनुमहाराज का वह शाश्वत उपदेश सदैव अपने हृदय पटल पर अकित रखना आवश्यक है कि "धर्म एव हतोहन्ति, धर्मो रक्षति रक्षित। तस्मात धर्मो न हन्तव्यो, मानो धर्मो हतोवधोत्॥'

इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द के अनुयायियो को यह भी सदैव स्मरण रखना चाहिये कि सृष्टि का सृजनकर्ता, पालनकर्ता और नियन्ता एकमेव सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सवज्ञ न्यायकारी परमात्मा है। जब तक हम धर्म पर आरूढ रहेगे कोई व्यक्ति कितना ही अन्यायी, अत्याचारी और सशक्त क्यो न हो वह हमारा बाल भी बाँका नही कर सकता।

***

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार—१९८८

सघड विद्या ट्रस्ट जयपुर द्वारा निर्धारित 1200/—रु आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार प्रतिवर्ष गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय द्वारा दिया जाता है। गत सात वर्षो मे यह पुरस्कार क्रमश प्रो रामप्रसाद वेदालकार, डा भवानीलाल भारतीय, प विश्वनाथ विद्यालकार, आचार्य सत्यकाम विद्यालकार, प भगवद्दत्त वेदालकार, डा सत्यव्रत सिद्धातालकार, प्रो दत्तात्रेय वाब्ले, ला चेतनदास (मरणोपरान्त) को वेद प्रचार तथा समाजिक सेवाओ के लिए प्रदान किया गया।

आपसे निवेदन है कि यदि आपकी दृष्टि मे (कोई महानुभाव अथवा सस्था आगामी वर्ष के लिए पुरकार के योग्य हो तो उसका पूर्ण विवरण 15 जनवरी 1988 तक भेजने की कृपा करें।

—वीरेन्द्र अरोडा (कुल सचिव)
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

श्री देवीदास आर्य का बड़ौदा मे अभिनन्दन

बडौदा —यहा वारिसा नगर में अखिल भारतीय सिन्धी आर्य सभा के तत्वावधान मे आयोजित एक सभा मे नगर की अनेक सामाजिक व शिक्षण सस्थाओ की ओर से सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्य समाजी नेता श्री देवी दास आर्य (कानपुर) का नागरिक अभिनन्दन किया गया उनकी सामाजिक सेवाओ की भूरि भूरि प्रशसा की गयी। —मत्री

सत्यार्थप्रकाश का महत्व

— स्व. प्रो. रमेशचन्द्र बनर्जी —

संसार मे जितने धर्म ग्रन्थ हैं, उनमे से केवल सत्यार्थ प्रकाश ही ऐसी पुस्तक है, जिसमे सभी धर्म-मतों को निष्पक्ष आलोचना और सच्चे धर्म की मीमांसा है। जो धार्मिक सुधारक सत्य के सच्चे प्रेमी है, जिसमें पक्षपात का लेश भी नही है, वे खुले तौर से तुलनात्मक धर्म विचार करते और सब मतमतान्तरो से सत्य का ही ग्रहण करते हैं। जो अपने मत की ही प्रशंसा करता, और दूसरो की, समीक्षा के बदले मे निन्दा करता है वह निश्चित ही दूरदर्शी नही कहा जा सकता। लोभी दूकानदार, पक्षपात के कारण सामान को ही ग्राहको को दिखलाता, और बाजार मे जो उससे अच्छी चीजे मिलती है, उनका नाम भी नही लेता। दुनिया की सब मजहबी किताबो के सम्बन्ध मे भी यही बात है। परन्तु सत्यार्थप्रकाश ही केवल सत्य और निष्पक्ष पुस्तक है, क्योकि उसमे सच्चा तुलनात्मक धर्म-विचार किया गया है।

ईसाई लोगो की धर्म-पुस्तक, बाइबल को देखिये इसमे यहूदी लोगो के पुरोहित पारसियो को खूब गदी गालियाँ दी गई हैं। परन्तु पारसी लोगो के धर्म और व्यवहार का कुछ प्रमाण नही दिया गया, जिससे पाठको को पता लग जाय कि पारसी लोगो का धर्म और धर्म-पुस्तक अमुक प्रकार का है और उनमे त्रुटि क्या है।

मुसलमानो की मानवीय किताब कुरान को देखिए। "काफिरो" को कितनी गदी से गन्दी गालियाँ दी गई है "काफिरो" को कतल तक कर देने की आज्ञा दी है, परन्तु यह नही बतलाया गया कि—काफिर बेचारे का कसूर क्या है उनके धर्म मे त्रुटियाँ कौनसी है, अथवा उसके धार्मिक सिद्धान्तो की तुलना मे इस लाभ की कितनी श्रेष्ठता है।

भारत के पुराणो मे भी ऐसी ही युक्तिहीन बातें भरी पडी है। परन्तु ऋषि दयानन्द ने अपने सत्यार्थप्रकाश मे क्या किया है, उन्होने एक ओर तो युक्ति-प्रमाणो से वैदिक सिद्धान्त की स्थापना की, दूसरी ओर विविध मतमतान्तरो की न्यायपूर्ण और युक्तियुक्त समीक्षा भी की। तुलनात्मक और निष्पक्ष धार्मिक विचार का आदर्श ही स्वामी दयानन्द थे। सत्यार्थप्रकाश से जो लोग चिढते हैं और इसके लिए आर्यसमाज को कोसते हैं, वे लोग भूल जाते हैं कि यह युग तुलनात्मक विचार का ही है। जो किसी देश का इतिहास लिखने या साहित्य अथवा किसी महापुरुष के जीवन की आलोचना करते हैं, उनको तो तुलनात्मक विचार करना ही पडेगा। वर्तमान युग तुलनात्मक भाषा व्याकरण और विचार का युग है। ऐसी दशा में स्वामीजी ने धार्मिक विषय में तुलनात्मक विचार किया तो क्या अपराध किया। जो मनुष्य सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध मे विचारक (जज) बनकर अपनी व्यवस्था देते हैं, उन्हे इस बात का स्मरण रखना चाहिये—चाहे वह महात्मा हो अथवा कोई और। सत्यार्थप्रकाश ने धार्मिक संसार में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। इस तुलनात्मक युग मे, जब साहित्य, इतिहास, गणित, विज्ञान इत्यादि सभी विषयो मे तुलनात्मक विचार होता रहता है, सत्यार्थप्रकाश धार्मिक विषय में तुलनात्मक विचार का प्रथम मार्ग-प्रवर्तक है। एक दिन सारे संसार को इस मार्ग पर आना पडेगा- ज्ञान और युक्ति से काम लेना होगा। अनजान मनुष्य सत्यार्थप्रकाश की निन्दा किस बुरी तरह से करता है! एक सज्जन ने तो इसको निराशाजनक पुस्तक बतला दिया। कारण इसमे खण्डन-मण्डन दिखाई देता है। परन्तु वह महाशय भूल जाते हैं कि यदि इस दृष्टि से स्वामी शंकराचार्यजी का भी विचार किया जाय तो वह भी निराशाजनक सिद्ध हो जायेंगे। क्या शंकराचार्यजी ने शैव, शाक्त, गाणपत्य, सौर, कापालिक इत्यादि सभी अवैदिक सम्प्रदायों का खण्डन नही किया था।

वस्तुत बात यह है कि जो तुलनात्मक विचार का साहस करेगा उसे खण्डन-मण्डन करना ही पडेगा। जिन महापुरुषो ने सत्य की घोषणा के लिए जन्म धारण किये उन्हे मिथ्यावाद की समीक्षा करनी ही पडी। जो महापुरुष लोगो को ज्ञान का भंडार दिग्दर्शन करावेगा उसे मिथ्या का खण्डन और सत्य का मण्डन करना ही पडेगा। सत्यार्थप्रकाश संसार का दिग्दर्शन यन्त्र है। जो सुधारक दूसरे मतो की तुलना मे अपना मत रखने से हिचकते है, उन्हे केवल स्वमतप्रकाश रूप एक देशदर्शिता दीख पडती है—मुकाबिले से वह डरते हैं परन्तु जिस महापुरुष ने साहस और शक्ति से काम लिया, जो सत्य की मूर्ति है और अप्रिय सत्य से भी नहीं डरते उनका वाक्य संसार को हिला देता और जगत को वश मे कर लेता है। सत्यार्थप्रकाश ऐसी ही पुस्तक है, भीरु इससे डरते हैं, परन्तु संसार धीरे-धीरे इसकी ओर आता है।

***

—प्रस्तुति, प्रा धर्मेन्द्र धींग्रा,
वडोदरा (गुजरात)

हिन्दुओं को किस बात पर संघटित किया जाय ?

— डॉ० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती —

अपने देश मे भी और विदेशों मे भी यह बडा प्रश्न रहा है कि हिन्दुओ को किस बात पर संघटित किया जाय। भारत में जब-जब किसी नय सम्प्रदाय का उदभव हुआ, भारतीय जनता ने उसका विरोध किया। हममे से अधिकांश लोग सम्प्रदायो के इतिहास से परिचित नही हैं, वे बहुधा यह कहते हैं कि हिन्दू सदा से उदार रहा है। इतिहास इसके बिलकुल विपरित है। बौद्धो और जैनो का जब प्रादुर्भाव हुआ तो भारतीयो ने उनका विरोध करने मे कोई करुणा या उदारता प्रदर्शित नही की। कल्कि अवतार जैनियो के उन्मूलन के लिये हुआ। "नैव गच्छेद् जैन मन्दिरम्' का नारा लगा। काशी विश्वनाथ के मन्दिर मे उल्लेख है कि आर्यों के इतर कोई इस मन्दिर मे प्रवेश न करे। यहाँ आर्येतर से अभिप्राय जैनियो और बौद्धो से है। अगर मतवाला हाथी तुम पर आक्रमण कर रहा हो और पास मे जैन मन्दिर मे शरण मिल सकती हो, तब भी जान बचाने के लिये उस मन्दिर मे न जाओ। शंकर स्वामी ने देश मे बौद्धो के प्रति इतना विषाक्त वातावरण तैयार कर दिया था कि न केवल बौद्ध धर्म भारत से विलीन हो गया, दुखी और संकटग्रस्त नीचे तपके के बौद्धों ने कालान्तर मे देश के पूर्वी अंचलों में मुसलमान बन जाने मे ही अपना कल्याण माना। पूर्वी पाकिस्तान बनने का यह मूल कारण बना। पूर्वी भारत मे जिन-जिन प्रदेशो (पूर्वी बंगाल, आसाम आदि-आदि) मे बौद्धो का प्राधान्य था, वे सब मुसलमान बन गये। कहना अनुचित न होगा कि हिन्दुओ ने (भारतीय ब्राह्मणों और क्षत्रियो ने) ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी थी कि निम्न वर्ग के बौद्धों को मुसलमान बन कर ही शान्ति मिली—लगभग वैसे ही जैसे आज दलित वर्ग के लोग सामूहिक ईसाई बन जाने मे अपना कल्याण समझते हैं। हिन्दुओ के प्रति भी यही रही। वैष्णव और शैवो के बीच मे लगभग उतनी ही कटुता रही जैसी कि हिन्दुओं और मुस्लिमो के बीच मे आज है। उन्नीसवीं शती मे जो समाज सुधारक संस्थायें खुलीं, उनके प्रति भी कटुता-प्रदर्शन हुआ। आर्यसमाज के आरम्भिक कई दशक इसके उदाहरण हैं। पर अच्छा यही है कि इस कटुता के प्रसंग को हम भूल जायें।

***

(आर्यसमाज ' संस्कृति और सम्प्रदायों से')

बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे—

युगपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द

— वीरेन्द्र कुमार आर्य —

एक उन्नत काय दर्शनीय मूर्ति (प्रभावपूर्ण सौंदर्य की प्रतीमा) हमसे भेंट करने आती हैं। आधुनिक सम्प्रदाय का कलाकार ईसा मसीह की प्रतिकृति गढने के लिए आदर्श के रूप मे इसका स्वागत करता है और मध्य कालिक रुचि का चित्रकार इसमे संत पीटर का रूप देखता है। इंगलैंड के प्रसिद्ध लेबर लीडर (जो बाद मे चलकर इगलैंड के प्रधानमंत्री भी थे) मि॰ रैम्जे मेकडानल्ड ने स्वामी श्रद्धानद जी के सम्बन्ध मे 1914 मे लिखा था।

महान शिक्षा शास्त्री—

स्वामी श्रद्धानद जी महाराज ने भारत के शैक्षणिक इतिहास मे एक अदभुत और नवीन प्रयोग किया था। वह एक सफल प्रयोग था। वह तत्कालीन प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरुद्ध विद्रोहात्मक पग था—लार्ड मकाले की बनाई हुई शिक्षा योजना का प्रत्युत्तर था। स्वामी जी की शिक्षा योजना को गुरुकुल शिक्षा योजना का नाम दिया जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मे शिक्षा के सम्बन्ध मे जो महत्वपूर्ण विचार प्रकट किए है उनको मूर्तरूप देने के लिए स्वामी श्रद्धानद जी ने 16 मई 1900 ई॰ मे गुरुकुल कागडी की स्थापना की।

गुरुकुल मे स्वामी जी ने लार्ड मकाले द्वारा सपष्ट शिक्षा नीति को एकदम विपरीत शिक्षा नीति को अपनाया था। गुरुकुल कागडा एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय था। सरकार से एक पैसा भी सहायता के रूप मे नही लिया था। जनता को इस बात से बहुत आश्चर्य हो रहा था कि यहा एक भी अध्यापक अग्रेज नही है। सरकारी यूनिवर्सिटियो मे प्रचलित पाठ्य पुस्तक भी यहा प्रयोग मे नही आती थी। अग्रेजी साहित्य और विज्ञान की पुस्तक भी गुरुकुल ने अपने आप तैयार कर ली थी। यहा के विद्यार्थी किसी भी यूनिवर्सिटी की परीक्षा मे सम्मिलित नही होते थे। गुरुकुल ने अपनी डिग्रियो को स्वतन्त्र नाम दे रखे थे और सबसे बढकर जो असम्भव काय समझा जाता था वह था माध्यम का प्रश्न। यहा शिक्षा का माध्यम अग्रेजी नही हिन्दी था। यह देश की सबसे पहली यूनिवर्सिटी थी जहा उच्च शिक्षा का माध्यम एक भारतीय भाषा हिन्दी को बनाया गया था। वस्तुत यह सरकार की खुली अवज्ञा थी एक खुली चुनौती थी—मकाले को स्वामी जी महाराज की।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दी माध्यम से गुरुकुल की पढाई का प्रबन्ध करके राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया

छुआछूत विरोधी—

बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे जब छुआछूत व ऊंच नीच का भाव तीव्र था तब स्वामी जी के गुरुकुल मे गौड ब्राह्मण और अछूत मेघ के पुत्र एक साथ रहते थे एक साथ भोजन करते थे। सबके एक जैसे वस्त्र एक जैसा भोजन और एक-सा रहन-सहन था। सब एक दूसरे को भाई भाई समझते थे।

स्वाधीनता सेनानी व प्रखर राजनेता—

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने राजनीति को धार्मिक काय समझ कर ग्रहण किया। लाखो आर्य समाजियो ने उनका अनुगमन कर कांग्रेस द्वारा प्रवर्तित असहयोग एवं स्वदेशी आन्दोलना मे भाग लिया। हिन्दू महासभा स्वराज सभा और नशनलिस्ट दलो मे आर्य समाज के प्रवेश से बसन्त बहार सी आ गई। खिलाफत आन्दोलन जलियावाला बाग आदि को सवत्र आर्य समाजी भावना एक नवीन चेतना प्रदान करने लगी

यहा नही दिल्ली के घटाघर पर अग्रेजी सगीनो के समक्ष छाती खोल कर उपस्थित होने वाले स्वामी ने जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद के मन्त्रोच्चारपूवक हिन्दू मुस्लिम एकता द्वारा राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्ति का मार्ग बनाया। अमृतसर पहुचकर गुरु का बाग सत्याग्रह मे सम्मिलित होकर सिखो को अपने वहन समाज की सहायता का आश्वासन दिया और जल गये।

साहित्य सेवी और पत्रकार—

अपने जीवन के पूर्वार्द्ध मे स्वामी जी ने कल्याण माग के पथिक जसे हिन्दी के गौरव ग्रन्थ मे आत्मकथा रूप मे शब्द चित्रित किया अपने पतन एव उत्थान को अकित करने का यह महा प्रयास साहित्य जगत मे निरुपम है सुबह उम्मीद (उर्दू) ब्रह्मचय सूक्त की व्याख्या आचार्य रामदेव के सहयोग से आर्य समाज एण्ड टस डिटक्टस (अग्रेजी) स्वामी श्रद्धानन्द जी धर्मोपदेश हिन्दू सगठन मरणोन्मुख जाति का रक्षक (अग्रेजी) आर्य समाज के इतिहास की सामग्री (जिसके आधार पर उनके सुपुत्र इन्द्र विद्या व चम्पति ने आर्य समाज का इतिहास लिखा) तथा सद्धर्म प्रचारक अर्जुन श्रद्धा दा लिबरेटर आदि पत्रो मे प्रकाशित उनके लेख तथा लेख मालाए उनके साहित्यानुराग के प्रमाण है। अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप मे पढा गया अभिभाषण तथा भागलपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के रूप मे पढा गया अभिभाषण तात्कालिक समस्याओ के प्रति उनकी जागरूकता के प्रतिबिम्ब है। वे अग्रेजी हिन्दी और उर्दू के सिद्धहस्त लेखक थे। पजाबी और सस्कृत के वे मधा अध्येता एव प्रयोक्ता थे। कुशल पत्रकार थे। हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार एव उन्हे राष्ट्रभाषा बनाने मे उन्होने रचनात्मक एवं प्रचारात्मक दोनो धरातलो पर बढ चढ कर काम किया।

कट्टर सिद्धातवादी

स्वामी श्रद्धानन्द जी कट्टर सिद्धातवादी व्यक्ति थे कभी भी अपने किसी व्यक्तिगत स्वार्थ हित सिद्धातो की बलि नही देते थे। अपनी इसी सिद्धान्त प्रियता के कारण ही उन्हे महात्मा गाधी एव कांग्रेस दोनो का त्याग करना पडा था।

प्रसिद्ध गोभक्त लाला हरदेवसहाय जी ने एक बार स्वामी जी से कहा नित्य आपको मारने की धमकिया मिलती है। गाधी जी जसे नेता भी आपसे रुष्ट है। इसके उत्तर मे स्वामी जी ने गरज कर कहा—

क्या हुआ जो गाधी जी रुष्ट है? क्या हुआ जो धमकी भरे पत्र आते है? जब परमात्मा मेरे पास है उनका वरदहस्त मेरी पीठ पर है और जब मेरा पक्ष सत्य है तो मुझे किसका भय? मैं देश धम के कल्याण के लिये हर प्रकार के विरोध का सामना करूगा।

स्वामीजी जीवन भर देश धम एव आर्य समाज के लिये तिल तिल जलते रहे एव अत मे एक दिन राष्ट्रहित मे ही अपने प्राणो की आहुति दे दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या का समाचार जब गौहाटी मे हो रहे कांग्रेस सम्मेलन मे पहुचा तो सभी स्तब्ध रह गये। महात्मा गाधी ने शोक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुये कहा था कि भारत माता के एक देशभक्त और वीर सपूत की दुखद मृत्यु से ऐसी क्षति हुई है जिसकी क्षति पूर्ति सम्भव नही है। उनका जीवन और जीवन की विशेषताए अपने देश और धम की सेवा पर अर्पित रही उन्होने निर्भीकता और दृढता के साथ सत्य असहायो पतितो और दीन दुखियो को सहारा दिया।

मानवता के पुजारी स्वतन्त्रता के अग्रनेता क्रान्ति और शान्ति के प्राण महामनीषी शिक्षा क्षेत्र मे हिन्दी के प्रबल समथक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से उनके बलिदान दिवस पर श्रद्धावनत हृदय से कोटिश श्रद्धाजलिया उनकी पावन स्मृति मे अर्पित हैं।

(शेष पृष्ठ 1 का)

मैक्समूलर विवेकानन्द

The ancient religion of India is doomed Now if Christianity does not step in whose fault will it be ? (Ibid Vol I chap XVI p 378

अर्थात भारत का धम नष्टप्राय है। अब यदि ईसाइयत उसका स्थान नही लेती तो यह किसका दोष होगा ?

यह है मैक्समूलर की भारत भक्ति जिससे अभिभूत होकर स्वामी विवेकानन्द ने आक्सफोड मे 28 मई 1896 को दोपहर के भोजन के अवसर पर कहा था—

When are you coming to India ? All men there would welcome one who has done so much to place the thoughts of their ancestors in true light (Vivekanand A bio graphy by Swami Nikhila nand Pub 1953 by Advaita Ashram Calcutta)

आप भारत कब आ रहे हैं ? वहा के लोग एसे व्यक्ति के शुभागमन पर आनन्दित हो उठेंगे जिसने उनके पूवजो द्वारा सचित ज्ञानराशि को सही रूप मे प्रस्तुत करने के लिये इतन परिश्रम किया है।

मैक्समूलर से अभिभूत होकर स्वामी विवेकानन्द किस हद तक अपना सन्तुलन खो बैठे इसका पता उन्ही के आश्रम से प्रकाशित उपयुक्त पस्तक के निम्न उद्धरणो से चलता है।

He wrote to Mr Leggette on July 6 1986— The British Empire with all its evils is the greatest machine that ever existed for dissemination of Knowledge P 207

अर्थात ब्रिटीश राज्य ही बुरा क्यो न हो उसने जितना ज्ञान का प्रसार किया है उतना कभी किसी ने नही किया।

T› the accusation from some orthodox Hindus that the Swami was eating forbidden food at the table of infidels he retorted —

If the people of India want me to keep strictly to my Hindu diet please tell them to send me a cook and money enough to keep him Am I a nation s slave ? I stand at nobody s dictation No country has a special claim on me I belong to the world as much as to India ' P 129

अर्थात जब कुछ कट्टरपथी हिन्दुओ ने उनके म्लेच्छो (अधर्मियो) के साथ बठकर गोमास खाने पर आपत्ति की तो स्वामी विवेकानन्द ने उत्तर दिया— उन से कह दो कि यदि वे यह चाहते है कि मैं विशुद्ध हिन्दू भोजन करू तो वे एक रसोइये को भेज दें और उसके वेतन का भी प्रबन्ध कर दें। क्या मैं किसी जाति का गुलाम हू ? मैं किसी का आदेश नही मानता। किसी देश का मेरे ऊपर विशेष अधिकार नही है। मैं जितना भारत का हू उतना ही दुनिया का हू।

On June 10 1898 he wrote to a Muslim gentle man at Nainital— Without the help of Islam the theories of Vedantism however wonderful and fine they may be are ent rely valveless For our own motherland a junct on of the two great relig ons of the world— Hinduism and Islam—Vedantic brain and Islamic body— is the only hope We want to lead mankind to the place where there is neither the Vedas nor the Bible nor the Koran P 255

अर्थात् वेदान्त का सिद्धान्त चाहे कितना ही अच्छा और अद्भुत क्यों न हो इस्लाम की सहायता के बिना बेकार है। हमारी मातृभूमि का हित इसी म है कि वह ससार के दो बड धर्मों—हिन्दू और इस्लाम—को समान रूप से अपनाय। उसका शरीर इस्लाम का हो और मस्तिष्क हिन्दू धम का हो। हम मानवता को वहा ले जाना चाहते है जहा न वेद रहे न बाइबल और न कुरान।

वही स्वामी विवेकानन्द अन्यत्र लिखत हैं— किसी भी धम पन्थ ने इतना अधिक रक्तपात नही किया तथा दूसरो के प्रति इतनी क्रूरता नही बरती जितनी अरब के पगम्बर द्वारा सस्थापित पथ इस्लाम न। कुरान मे यह सिद्धान्त है कि जो इसकी शिक्षाओ को नही मानता उसे मार डालना चाहिए। से कत्ल कर देना ही उस पर रहम करना है तथा बहिश्त (स्वग) जहा हूर (अप्सराए) तथा सभी प्रकार के भोगविलास मिलते हैं उसे प्राप्त करन का पक्का रास्ता है काफिरो को कत्ल करना। मनुष्य जितना अधिक स्वार्थी होता है उतना ही अधिक अनैतिक बन जाता है। यही बात इस जाति के विषय म भी सच है।

—स्वामी विवेकानन्द ग्रन्थावली भाग 2 पृ 352-53

स्वामी विवेकानन्द क्या कहना चाहते हैं इस का निणय पाठक स्वय करें।

मैक्समूलर-भक्ति का रहस्य—

मैक्समूलर ने A Real Mahatma of Shri Ramakrishna Paramhansa Dev नामक छोटी सी पुस्तक लिखी जिसमे स्वामी दयानन्द और श्री रामकृष्ण पर हस की तुलना की गई थी। स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध मे मैक्समूलर ने लिखा—

Dayananda Saraswati tried to introduce some reforms among the Brahmanas He was a scholar in a certain sense He published a commentary in sanskrit on Rigvada But in all his writings there is nothing tŏ be quoted as original beyond his somewhat strange intepretations of words and whole passages of the Veda

The late Ramkrishna Paramhansa was a far better specimen of a Sanyasies He seems to have been not only a high-souled man a real Mahatman but a man of original thought Page 7 8

दयानन्द सरस्वती ने ब्राह्मणो मे कुछ सुधार करने का प्रयास किया। वह किन्ही अर्थों मे विद्वान था। उसने ऋग्वेद का भाष्य किया। परन्तु उसके ग्रन्थो में ऐसा कुछ नही है जिसे मौलिक कहा जा सके सिवा इसके कि उसने वेद के कुछ शब्दों या मन्त्रो के विचित्र अर्थ किए।

रामकृष्ण परमहस सन्यासियो के रूप मे कहीं अधिक ऊंचा था। वह केवल उच्चात्मा असली महात्मा ही नहीं था बल्कि उसके चिन्तन मे मौलिकता भी थी।

स्वामी विवेकानन्द के लिए रामकृष्ण परमहम एक महापरुष न होकर स्वय ईश्वर थे —Ramakrishna was the greatest of all prophets form in this world Bhagwan Shri Ramakrishna incaruated himself in India (Biography [93-94])

रामकृष्ण के प्रति मैक्समूलर की प्रशस्ति ने विवेकानन्द को उसे ऋषि पदवी देने को विवश कर दिया

—डी 14/16 माडल टाऊन दिल्ली

आय प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का निर्वाचन

प्रधान—श्री कृष्णलाल आय
महामन्त्री—श्री भगवानदेव चतन्य
कोषाध्यक्ष—श्री अजनस सूद

कहने को वैज्ञानिक युग यह

कहने को वैज्ञानिक युग यह
पर बढता पाखण्ड अपार।
दुर्गा काली की पावन भू
नारी करती हाहाकार।
महिषासुर हैं बढते जाते
रहे निरकुश जो दिन रात।
प्रबल रूपकुवरो को पाकर
[illegible] होकर करते घात।
[illegible] मृगा क चढ शेर सुसज्जित,
[illegible] कुक्कुरो ने सहार।
मानव ही हैं लज्जित होन
पशुता क्या जाने सदभाव।
क्या उपकार करेगा दानव
जो प्रतिपल करता है घाव।
गृहलक्ष्मी होन पर भी
अकुठित क्यो उसका ससार ?
त्याग समर्पण की जो प्रतिम
उससे धन वैभव की चाह।
आलोकित घर करने वाली
उसका ही चलता क्यो दाह ?
कब तक हत्यायें। उतपीडन
जीवन होगा जिसका भार ?
पशुपुरुषो ने मातृशक्ति का
सीखा है करना अपमान।
दुर्भावों से किन्तु कभी क्या
मिल पाया ऊचा स्थान ?
पति को देव समझती आई
मिला उसे दुख पारावार।
किसी कुकवि ने इस महिमा की
निन्दा के गायें हो गान।
इसी शक्ति से वे भी पोषित
भले न हो उनको पहचान।
वह अग उपवन की हरीतिमा,
चाहे पाजाये पतझार।

डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी
प्रोफसर कालोनी श्यामगंज बरेली उ प्र)

श्रीरतनलाल गग द्वारा आय प्रिन्टस अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिह ने आयसमाज भवन केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द · 162
सृष्टि सम्वत् : 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 3 बुधवार, 30 दिसम्बर, 1987
अंक : 21 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न' सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

पौष शु 11 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

अग्निवेश की पदयात्रा : एक निष्पक्ष विहंगावलोकन

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

4 सितम्बर को रूपकवर के सती के नाम पर अपने मृत पति के साथ जिन्दा जला दिए जाने के फलस्वरूप देश मे नारी अधिकारो व नारी स्वातंत्र्य को लेकर जो चर्चा प्रारम्भ हुई, उससे स्वामी अग्निवेश की पद यात्रा की उत्पत्ति हुई।

सन 1977 मे सार्वदेशिक सभा से निष्कासन के बावजूद अग्निवेश का पदयात्रा को आर्यसमाज के बैनर तले आयोजित करना कई प्रश्नो को पैदा करता है। और सैकडो साधारण आर्यजनों की पद यात्रा मे उपस्थिति के अतिरिक्त स्वामी आनन्द बोध की उपस्थिति उन सभी प्रश्नो का समाधान करते हुए स्वामी अग्निवेश के आर्य व्यक्तित्व को स्वीकार करते हुए उनके निष्कासन को एक भारी भूल प्रमाणित करती है। यह भी आर्यसमाज के लिए एक उपलब्धि ही है कि उसने पदयात्रा के बहाने ही सही अपने एक क्रांतिकारी नेता को पुन प्राप्त कर लिया।

पद यात्रा ने नारी अधिकारो के विषय मे चली बहस को जहा एक सार्थक दिशा दी, वही इसने आर्यसमाज के सुधारवादी स्वरूप को जन साधारण मे व्यापक प्रचार दिया। भगवे वस्त्रो मे आर्य सन्यासियो के नेतृत्व में पदयात्रा उन सुदूर ग्रामीण अचलो मे आर्यसमाज का नाद गु जाते निकली जहाँ अपने स्थापना काल से आज तक आर्यसमाज का कोई प्रचारक नही पहुच पाया था। पदयात्रा ने इन क्षेत्रों के लोगो मे ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा उत्पन्न की। पूरे देश के समाचार पत्रो ने आर्यसमाज के नाम को देश के आम आदमी तक एक सुधारवादी आन्दोलन के रूप मे पहुचा दिया। इण्डियन एक्सप्रेस ने और नवभारत टाइम्स ने तो इस विषय मे अग्रलेख भी लिखे। यह व्यापक प्रचार क्या आर्यसमाज के लिए कम उपलब्धि की बात है?

राजनैतिक दलो से अपने निहित स्वार्थों के लिए सक्रिय रूप से जुड जाना व्यक्ति कि किसी सामाजिक सस्था के प्रति निष्ठा को सदिग्ध बना देता है। इसके प्रमाण हमारे पास हैं। चरणसिह जैसा कट्टर आर्यसमाजी भी इसका अपवाद नही बन सका था। अग्निवेश भी नही बन सके थे। अब उनकी यह घोषणा कि 'जनता पार्टी मे जाना मेरी सबसे बडी भूल थी। भविष्य मे मैं न तो किसी राजनैतिक पार्टी मे सम्मिलित होऊगा और न ही कोई चुनाव लडू गा। आर्य समाज के भविष्य मे प्रचार-प्रसार के लिए एक शुभ सकेत है।

सुश्री मणिमाला ने 28 दिसम्बर के नवभारत टाइम्स मे पदयात्रा विषयक कुछ सवाल उठाये हैं। आपके मत मे हवन-यज्ञादि आदि कर्मकाड मे पदयात्रा का भाषणादि से अधिक समय व्यय किया गया। जो अनुचित था। मणिमाला जी से इस विषय मे सहमत होते हुए भी हम कहना चाहेगे कि यज्ञादि की भी अपनी विशेषताए और गुण हैं। परन्तु स्वामी अग्निवेश के शब्दो मे 'आर्यसमाज' को 'हवन-सध्या प्राइवेट लिमिटेड' भी नही बन जाना चाहिए।' रचनात्मक कार्यों मे भाग न लेकर मात्र कर्मकाडी बने रहना आर्यसमाज के लिए महाघातक सिद्ध होगा।

सुश्री मणिमाला जी ने दूसरा प्रश्न सत्यव्रत सामवेदी के काग्रेसी चरित्र का उठाया है। मैं ऊपर कह

शेष पृष्ठ 6 पर

पाखण्ड बसा है उनकी रग–रग में

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

दिल्ली से प्राप्त समाचारो के अनुसार 25 दिसम्बर की सुबह 11 पंडितो (?) मे यमुना नदी को शुद्ध करने के नाम पर 2040 किलोग्राम (51 मन) शुद्ध दूध यमुना मे प्रवाहित कर दिया।

जिस देश के असख्य लोग दूध के दर्शन मात्र से भी अपनी गरीबी के कारण वचित हैं, उसी देश मे इस प्रकार दूध की बर्बादी करना अपराध नहीं कहा जायेगा तो और क्या कहा जायेगा?

कुछ दिवालिया दिमाग इस पाखड को 'यज्ञ' के वैज्ञानिक कार्य से भी जोडने का दुस्साहस कर रहे हैं। लेकिन प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति 'यज्ञ' के महत्व को समझता है। 'यज्ञ' से दूध के इस अपव्यय-पाखड की समानता करना मूर्खता है।

योग के नाम पर भारत मे ही नही अपितु विश्व भर मे तथाकथित योगाचार्यों ने बडा पाखड फैला रखा है। योग के नाम पर कोई भी पाखड जन साधारण में प्रचारित कर दो, आपको भारत मे कोई रोकने वाला नही है। महेश योगी व बाल्टी बाबा के उदाहरण आपके समक्ष हैं। दूध का यह अपव्यय भी एक स्वयभू योगपीठेश्वर भास्करानन्द परमहस के मस्तिष्क की उपज है। विडम्बना तो यह है कि भारी प्रचार और समारोह पूर्वक किए जाने वाले इस अपव्ययो को रोकने के लिए सरकार कोई भी कदम नही उठाती। क्या ही अच्छा होता कि यदि प्रशासन यमुना मे दूध प्रवाहित करने से पूर्व घटना स्थल पर पहुच कर उक्त दूध को अपने कब्जे मे लेकर इस अपव्यय से बचा लेता। ●

शंकराचार्य को शास्त्रार्थ की चुनौती

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान डा ज्वलन्तकुमार शास्त्री ने पुरी के शकराचार्य स्वामी निरजनदेव को शास्त्रार्थ करने की व्यक्तिगत रूप से चुनौती दी है।

अपनी हाल ही मे प्रकाशित पुस्तिका 'सती प्रथा वेद विरुद्ध' मे श्री शास्त्री ने शकराचार्य को 'सतीदाह वेद विरुद्ध है' इस विषय पर देश की किसी भी जगह शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी है। आपकी शास्त्रार्थ सम्बन्धी केवल एक शर्त है कि शास्त्रार्थ की प्रबन्ध व्यवस्था पुलिस के अधीन रहे और स्थल सार्वजनिक हो, जिससे अराजक तत्वों द्वारा गुण्डागर्दी और मारपीट न की जा सके।

उल्लेखनीय है कि श्री शास्त्री ने 'ऋग्वेद' मे शोध उपाधि (Ph D) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की है।

निदेशक : [illegible] शर्मा   प्रधान संपादक : रासासिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   फोन कार्या : 21010

दो मुक्तक

— साधन सिंह भदौरिया सौमित्र —

(1)

किसलिए आना हुआ यह लक्ष्य पहचाना नहीं,
पा गये ऐसा भला क्या और कुछ पाना नही ?
यात्रा में है कहाँ ठहराव राही तू बता—
इस तरह ठहरा यहाँ मानो कभी जाना नही।

(2)

साधना जितनी कि उतना फल मिलेगा।
आज मिल पाया नही तो कल मिलेगा।
व्यर्थ ही चिन्तित, अटल विश्वास रख तू—
साधना से साध्य का सम्बल मिलेगा।

सम्पादकीय—

तुम्हारी दास्तां भी न होगी दास्तानों में

भारतीय सांस्कृतिक चेतना के आत्मसम्मान तथा राष्ट्रीयता के प्रथम उन्नायक आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द ने अपनी क्रान्तिकारी विचारधारा के प्रचार प्रसार के लिए 1875 ई में बम्बई नगरी मे आयसमाज की स्थापना की थी। आयसमाज कभी एक धधकती हुई आग थी जिससे समस्त सामाजिक बुराई पाखण्ड, अन्धविश्वास, झूठ फरेब और मक्कारियां भस्मीभूत हो जाने का भय खाती थी। आयसमाज एक आन्दोलन था। आर्यसमाज एक सच्चाई थी। आयसमाज एक प्रामाणिकता थी। आयसमाज का प्रत्येक आय सभासद एक चलती फिरती जीवित जाग्रत संस्था होता था। घोर अंधकार मे भी वह एक आशा का दीपक होता था।

परन्तु दुर्भाग्य से आजादी के बाद इस महान संगठन की अग्नि धूमाच्छित होकर धीरे-धीरे राख से ढकने लग गई। आयसमाज खुले मैदान से हट कर संस्था और भवनो की चहारदीवारी मे बन्द हो गया। संस्थाओं मे गैर आय समाजियो का बाहुल्य हो गया। संस्थाओं के संचालन के लिये उसे राज्याश्रय लेना पड़ा और फिर धीरे-धीरे सामान्यतया पाई जाने वाली सभी बुराइयां इनमें भी आने लग गईं। कुछ ही संस्थाएं इसका अपवाद रहीं। अन्यथा प्रजातन्त्र व्यवस्था वरदान के स्थान पर आयसमाज के लिये अभिशाप बन गई। कोरी सकारात्मक सदस्यता सिद्धान्त विहीनता निष्क्रियता अकमण्यता गुटबन्दी, पार्टीबाजी धर्मविहीनता, धन मत्ता तथा अनैतिकता आयसमाजो मे प्रवेश कर गई और आजादी के चालीस वर्षों बाद आयसमाज की वह अग्नि बुझ सी गई थी। आयसमाजरूपी तलवार की धार कुन्द हो गई थी। हम दूसरो के पिछलग्गू या स्वर मे स्वर मिलाने वाले और आयसमाज के नाम पर अपना घर भरने अपना धन्धा चमकाने अपनी रोटियां सेंकने अपनी राजनैतिक आकांक्षाओ की पूर्ति करने वाले बन गये। आयसमाज को रोजी-रोटी का साधन बना लिया। सार्वदेशिक स्तर पर अकमण्य एव यथास्थितिवादी नेतृत्व होने के कारण हमारा यह प्रबल सबल संगठन यथास्थितिवादी हो गया। इसकी आवाज की महत्ता खत्म हो गई। स्वामी श्रद्धानन्द प लेखराम जी महात्मा हंसराज स्वामी दर्शनानन्द स्वामी स्वतन्त्रतानन्द स्वामी अभेदानन्द स्वामी ध्रुवानन्द जी घनश्यामसिंह जी गुप्त वाले नेताओं का सानिध्य प्राप्त करने वाला तथा रामप्रसाद बिस्मिल और भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारियो को जन्म देने वाला, निजाम हैदराबाद को झुका देने वाला आर्यसमाज कहा चला गया।

इस घोर अंधकार की वेला मे आशा का एक दीप बन कर आर्य जगत के युवा सन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने 101 सन्यासियो के साथ नारी उत्पीडन एवं सती प्रथा तथा सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध दिल्ली से दिवराला तक की जनजागरण की पदयात्रा का क्रान्तिकारी सकल्प लेकर तथा उसे क्रियात्मक स्वरूप प्रदान कर इस आर्यसमाजरूपी बुझी हुई अग्नि को पुन प्रज्वलित करने का शंखनाद फूंका है और देश के तमाम पत्रपत्रिकाओ, बुद्धिजीवियो चिन्तकों समाज सुधारको तथा देश की खोई हुई चेतना को सत्य का पक्षधर और असत्य का विरोधी बनने का दिशा निर्देश किया है, आयसमाज को जड़ता से जगाया है उसे अपनी शक्ति और तेजस्विता का किंचित् आभास दिया है इसके लिये वे बहुत बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं। आयसमाज के चोटी के नेता अन्तिम समय पर बहती हुई गंगा मे हाथ धोने के लिये उपस्थित तो हो गये और अपनी उपस्थिति जतला दी पर अभी यथास्थितिवादी आयसमाज का संगठन सक्रिय नही हुआ है। काश ! अन्तिम घड़ियो मे हजारों की संख्या मे आयसमाजो की ओर से आय नर-नारी और नेतागण पहुचते और इस आन्दोलन की सार्थकता को पर जोर समर्थन देते। पर ऐसा नही हुआ। लोग सवाल पूछते थे कि संख्या इतनी कम क्यो ? सरकारी अधिकारी व्यंग्य भरे स्वरो मे कहते कि कुछ बात है धड़बन्दी है इतने कम क्यो ? उत्तर देने वाले देते पर मन मे वे भी जानते थे कि माजरा क्या है।

ईश्वर और वेद के नाम पर चलने वाले इस महान संगठन से क्रांतिकारी विचारधारा वाले अग्निवेश तुल्य अग्नि पुत्र गले लगे, तभी हमारा गौरव पुन प्रतिष्ठित हो सकेगा। याद रखो—

वतन की फिक्र करो ए नादानो मुसीबत सिर पर आई है,
तुम्हारी बर्बादियो की चर्चाएं हैं आसमानो में।
ऐ आर्यो-तुम अब भी न सम्भले तो,
याद रखो तुम्हारी दास्ता भी न होगी दास्तानो मे।"

—रामसिंह

विदेशों में नारी की स्थिति

नारी अधिकारो के तथाकथित प्रवक्ताओ द्वारा बार बार यह कहे जाने व लिखे जाने के कारण भारतीय जनसाधारण के मन म यह धारणा दृढ हो गई है कि भारतीय नारी की अपेक्षा विदेशी नारी अधिक स्वतन्त्र और सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करती है। मैंने अनेक महिला संगठनो से जुड़ी प्रबुद्ध महिलाओ को यह दावा करते देखा है कि भारतीय नारी की तरह विदेशो मे परम समाज नारी को प्रताडित नही कर सकता। जबकि स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है।

अमेरिका की विश्वविख्यात समाचार पत्रिका 'टाइम' मे प्रकाशित एक रिपोट क अनुसार विदेशो मे नारी की स्थिति भारतीय नारी से बेहतर नही है। रिपोट क अनुसार विश्व मे सबसे सभ्य देश समझ जाने वाले अमेरिका म प्रतिवर्ष 2 मिलियन से 4 मिलियन तक औरतें अपने पति या दोस्तो से पिटती हैं और इतनी ही आटामोबाइल्स दुघटनाओ व इतनी ही बलात्कार आदि की शिकार होती हैं। एफ बी आई के कथनानुसार प्रति चार दिन एक औरत उसके परिचित द्वारा मौत के घाट उतार दी जाती है। और इस सदभ मे विशेष उल्लेखनीय यह है कि ऐसी नारी उत्पीडन की घटनायें कम पढे लिखे लोगों में ही नहीं, वरन उच्च शिक्षा प्राप्त और उच्चवर्गीय लोगो मे भी होती हैं।

रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका मे नारी उत्पीडन मे 'मानसिक यातना देने घूमने की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध पैसा नहो देना और यहा तक हत्या कर डालना भी शामिल है।

पत्रिका का कहना है कि यहां का समाज ज्यों-ज्यों अपने व्यवसाय मे उन्नति के शिखर पर चढता जाता है, त्यों-त्यों ही उसकी अपनी पत्नी-प्रेमिका पर वर्चस्व रखने की भावना बलवती होती जाती है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

हिन्दी, हिन्दू धर्म व हिन्दू : कतिपय भ्रांतियां एवं विसंगतियां

— प्रो बुद्धिप्रकाश आर्य —

"प्रकर" के सम्पादक श्री विद्यासागर विद्यालंकार ने हिन्दू धर्म, हिन्दू व हिन्दी विषयक कतिपय विचार बिन्दुओ को उठाकर उनका तलस्पर्शी विश्लेषण किया है जो हिन्दुओ (बौद्ध, सिख, जैन, आर्यसमाज एवं हिन्दू राष्ट्रीयता के चिन्तको) के लिये दिशा बोधक है। जहां तक हिन्दी भाषा का प्रश्न है वह आज सत्ता के व्यामोह तथा तुष्टिकरण की नीतियो एव तथाकथित धर्मनिरपेक्षता के जाल मे उलझ कर निर्धारित सम्मानपूर्ण स्थान ग्रहण नही कर पा रही है इसकी व्यापकता और राष्ट्र को एक सूत्रता में बांध सकने की क्षमता को, प्रादेशिक व उर्दू आदि भाषाओ को, लडने के रूप मे सामने लाकर कु ठित कर दिया जाता है। दूसरा बाधक कारण यह भी है कि हिन्दी भाषा को हिन्दू धारा के साथ जोडकर इसकी व्यापकता पर सीमितता का आवरण चढा दिया गया है। प्रान्तीय भाषायें भी इसका अपवाद नहीं रह सकी हैं। यही कारण है कि ये भाषायें धर्म विशेष व प्रान्तवादी सकीर्ण धाराओ के साथ जुड जाने से राष्ट्रीय अखण्डता मे सहयोग देने के स्थान पर पृथकतावादी प्रवृत्तियो तथा साम्प्रदायिक तनावो को उत्प्रेरित करने लगी है। आज हिन्दी भाषा हिन्दू के साथ जुड जाने से सकीर्णता के दायरे म देखी जाने लगी है यही कारण है कि देश के राजनेता भी इस आरोपित सकीर्णता को अपने सही चश्मे से न देखकर आरोप लगाने वालो का चश्मा चढाकर इस भाषा को प्रभावी राष्ट्र भाषा बनाने मे भय का अनुभव करने लगे हैं। हिन्दू के साथ हिन्दी जोडने की दुर्भाग्यपूर्ण भ्रान्ति ने जन्म उसी समय से ले लिया है जब से हिन्दू विचारधारा को धर्म के आवरण से आवेष्ठित कर दिया गया है। सत्य तो यह है कि हिन्दू धर्म की आज तक कोई सर्वसम्मत व्याख्या नही हो सकी है, क्योकि आधार सुस्पष्ट नही हैं।

हिन्दुत्व क्या है ?

स्थूल एव प्रतीक पूजा, बहुदेववाद, भाग्यवाद, पुनर्जन्म, टोटमवाद, अनेको धर्म ग्रन्थ (पुराण, गीता, भागवतादि) आदि की विभिन्नताओ ने हिन्दू की परिभाषा करने मे बडी जटिलतायें उपस्थित कर दी हैं। इनमे त्याग प्रतिमान नाम की कोई भी चीज नहीं हैं। विविधता ही हिन्दुओ के बिखराव का कारण रही है। इसी से इस पर आक्रमण हुए और अपनी बिश्रृखल शक्ति के कारण सदैव पराजय का मुह देखना पडा। इसी विश्रृखल और विविधता युक्त पौराणिक धारा को ' हिन्दुत्व" की सज्ञा उन लोगो ने प्रदान की जो आक्रान्ता थे। कुल मिलाकर वैदिक, शैव वैष्णव, शाक्त एव भारतीय सस्कारगत मान्यताओ का मिला जुला रूप हिन्दू है। यद्यपि मुसलमानो ने आक्रमण करने के उपरान्त हिन्दुओ पर हिन्दुत्व का आरोपण भौगोलिक कारणो से किया था। जैसे सिन्धु नदी के पार रहने वालो को हिन्दू कह कर पुकारा गया। उपासना पद्धति की विपरीततावश मुसलमानो की दृष्टि मे हिन्दुओ की प्रति सदा हीन दृष्टि रही। इस दृष्टि का एक कारण यह भी था कि कही अतीत की परपरानुसार वे भी हिन्दुओ की धारा मे विलीन न हो जायें जैसे कि यहा शक, हूण आदि आय और हिन्दुओ मे विलीन हो गये। शायद लाला लाजपत राय ने इसी कारण हिन्दुओ को नमक की खान की सज्ञा दी है। अस्तु। आज स्थिति यह है कि चीन तथा योरोप मे लोग "हिन्दू' को धर्म नहो मानते केवल हिन्दोस्तान की एक सास्कृतिक धारा का समर्थक एव भारत देश की भूमि म निष्ठा रखने वाला स्वीकार करते हैं"। कहा जाता है कि अरब देशो मे आज भी भारत से जाने वालों को हिन्दू कहा जाता है जबकि भारत मे स्थिति इसके विपरीत है। सिख बौद्ध, जैन व आर्यसमाजी अपने को हिन्दू स्वीकार करने से कतराने हैं यहां तक कि जनगणना मे भी इनमे से कुछ वर्ग अपने को अहिन्दू लिखाने लगे हैं किन्तु किन्ही वैदिक मान्यताओ सस्कारो तथा परम्परागत आनुवशिकता के अटूट बन्धनो वश आर्यसमाजी हिन्दुओ से पृथक होने की स्थिति म नहीं आ पाया है। उल्लेखनीय है कि हिन्दुओ की पराजय की लम्बी श्रृखला वश तथा बिश्रृखल मान्यताओ के कारण मध्यवर्ती काल म ही ' न मैं हिन्दू न मैं मुस्लिम" की पलायनवादी धारा का जन्म सन्त कवियो ने इस कारण दिया कि कही हिन्दू व मुस्लिम होने का अभिशाप उन्हे न भोगना पडे। यही स्थिति आज भी बनी हुई है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है हिन्दू को साम्प्रदायिक सकीर्णता से जकडने का सुनियोजित षडयन्त्र अल्पसख्यको तथा उनके वोटो के लोलुप राजनेताओ द्वारा चलाया जा रहा है अतः आज भी हम हिन्दू होने का गौरव अपने दुर्बल एव डावाडोल मानस मे नही सजो पा रहे हैं। आज हम गर्व से नहीं कह पा रहे कि हम हिन्दू है। यह मनोवैज्ञानिक दुर्बलता जहा सुनियोजित षडयन्त्र की देन है वहा हिन्दू को "धर्म' मान लेना किन्तु आधार निश्चित न कर पाना भी है। आधारहीन हिन्दू सस्कृति धर्म क्यों नही है ? कारण स्पष्ट है कि इसका प्रवर्तक, धर्म ग्रन्थ तथा उपासना पद्धति एकत्व विहीन है हम केवल "अनेकता मे एकता तथा एकता मे अनेकता" का आकर्षक नारा बुलन्द कर अपनी दुर्बलता को तुष्ट कर लिया करते हैं। यह दुर्बलता न इस्लाम मे है न ईसाइयत मे, आर्यसमाज का वैदिक धर्म इस दृष्टि से अद्भुत और सर्वोत्कृष्ट है जहा एकत्व का सार्वकालिक एव शाश्वत सिद्धान्त विद्यमान है। खेद तो इस बात का है कि आज का हिन्दू (पौराणिक) वेद पर आस्था उसी प्रकार की रखता है जैसी अन्य निरर्थक मान्यताओ पर। यही कारण है कि बिखराव का यह अभिशाप आज उसे सर्वनाश के कगार पर घसीट लाया है।

एक विचित्र स्थिति और है जिसकी ओर श्री विद्यासागर जी ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है वह है धर्म परिवर्तन की।

यह सत्य है कि पहले समय में हिन्दुओ मे से कोई भी बौद्ध, सिख, जैन व आर्यसमाजी बनकर भी हिन्दू ही बना रहता था, उसी देश व भौगोलिक स्थिति से जुडा रहता था किन्तु मुसलमानो ने हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन कर उन्हे देश तथा भौगोलिक स्थिति से पृथक करने में अद्भुत सफलता पा ली। धीरे-धीरे यह रोग आपस में फैलने लगा जो आज देश की अखण्डता बनाये रखने की दिशा मे दुर्निवार्य समस्या बन चुका है। सिख, बौद्ध, जैन बन कर भी हम हिन्दू धारा से जुडे रहना नहीं चाहते। इस पृथकतावादी धारा का कारण धर्मपरिवर्तन की वही सघातक श्रृखला है जिसकी मुसलमानो ने शुरूआत की थी। एक विचित्र स्थिति यह भी देखी गई है कि यदि हिन्दू इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेता है तो उर्दू भाषा की वकालत करने लगता है और हिन्दी के प्रति उसके मानस मे द्वेष पनपने लगता है जबकि मुसलमानो और ईसाइयो द्वारा हिन्दू बन जाने पर भी हिन्दी के प्रति इतनी उत्सुकता और प्रेम नही देखा जाता है। कारण स्पष्ट है कि हीन भावना ग्रस्त तथा षडयन्त्रो से प्रताडित हिन्दू हर दृष्टि से सकीर्णता के दायरे मे सिकुड कर रह गया है "दैवो दुर्बल घातक' के सिद्धान्तानुसार अब हिन्दू स्वकेन्द्रित तथा सस्कृतिकरण के आवरण से विमुक्त नही रह पाया है। सकरता ने उसका ठोसपन समाप्त कर दिया हैं। धर्मपरिवर्तन की विभीषिका का सामना आर्यसमाज ने इन्ही दुष्परिणामो को दृष्टिगत रखते हुए शुद्धिकरण के आन्दोलन द्वारा किया था।

साराश रूप म यह कहा जा सकता है कि आज हिन्दू धारा की धार्मिकता तथा उसके सास्कृतिक एव राष्ट्रवादी स्वरूप को अनिरजना की आत्म श्लाघी प्रवचना से बचाकर ठोस आधार देने की बडी आवश्यकता है एक धर्म, एक प्रवर्तक, एक ईश्वर व एक धर्म ग्रन्थ बिना स्वीकार हिन्दुत्व का न आत्मसबल मिल सकता है और न ही गौरवपूर्ण एकत्व की अपराजेय शक्ति। यह भी आवश्यक है कि हम मौलिक अधिकारो मे समानता लाने का स्वर बुलन्द करें और अल्पसख्यक, सवर्ण, असवर्ण तथा सुरक्षित सीटो की विघटनकारी राजनीतिक नीतियो को बलपूर्वक मोड दें जिससे धर्म परिवर्तन, प्रान्तवाद, भाषावाद तथा क्षेत्रवाद के अभिशाप से देश मुक्त हो सके और अखण्डता के आधारो को बल प्राप्त हो सके।

**

पता — दयानन्द कालेज, अजमेर

भारत की फूट का कारण : 'आर्य' और 'द्रविड़' शब्द

— स्वामी समर्पण

भारत मे फूट के लिये सबसे अधिक उत्तरदाता विदेशी शासन था, यद्यपि यह भी एक गोरखधन्धा है कि एकता के लिये भी सबसे अधिक उत्तरदाता विदेशी शासन था।

हमारी फूट के कारण विदेशी शासन हम पर आ धमका। देश के आवश्यक नेताओ की बुद्धिमत्ता से एकता की आग प्रज्वलित हुई। विदेशी शासक भाव मे ईंधन और विदेशी अत्याचार घी का काम देते रहे।

अन्त मे विदेशी शासको को भस्म होने से पूर्व ही भागना पड़ा।

परन्तु अब विदेशी फूट डालने वालो का स्थान स्वदेशी स्वार्थियो ने ले लिया।

हिन्दी के परम समर्थक तथा कम्यूनिस्टो के परम शत्रु राजगोपालाचारी, अग्रेजी के गिरते हुए दासतामय भवन के सबसे बडे स्तम्भ बन गये।

जो प्रोफेसर अग्रेजी इतिहासकारो के आसनों पर आसीन हुए वही 'आर्य' तथा 'द्रविड' शब्दो के अनर्गल अर्थों मे प्रयोग को भारत की छोटी से छोटी पाठशाला तक पहुचाने मे सबसे बड सहायक बन गये।

मैं दोनो भुजा उठाकर इस अनर्थ के विरुद्ध शखनाद करना चाहता हूँ। मेरा कहना है कि सारे सस्कृत साहित्य मे एक पक्ति भी ऐसी नही जिससे आर्य नाम की नस्ल (Race) का अर्थ निकलता हो। इस शब्द का सम्बन्ध (1) या तो चरित्र से है (2) या तो भाषा से (3) या उस भाषा को बोलने वाले लोगो से (4) या उस देश से जहा इस प्रकार के चरित्र और भाषा वाले मनुष्य बसते हैं परन्तु किसी गोरे रग वाली अथवा लम्बी नाक वाली जाति से इस शब्द का कोई दूर का भी सम्बन्ध नही।

इसी प्रकार द्रविड शब्द ब्राह्मणो के दस कुलो मे से 5 कुलो मे होता है जिनमे शकराचार्य जैसे ब्राह्मण पैदा हुये।

अथवा मनुस्मृति के उपलभ्यमान सस्करण के अनुसार द्रविड उन क्षत्रिय जातियो मे से एक है जो 'आचारस्य वर्जनात् अथवा ब्राह्मणनामदर्शनात् वृषलत्वम् मता।" क्षत्रियोचित आचार छोड देने तथा ब्राह्मणो के साथ सम्पर्क नष्ट हो जाने के कारण शूद्र कहलाये। किन्तु काले रग तथा चिपटी नाक का द्रविड शब्द से कोई दूर का भी सम्बन्ध नही।

आर्य और द्रविड़ शब्द

मैकडानल की वैदिक रीडर म जा कि आज भारत के सब ही विश्वविद्यालयो तथा महाविद्यालयो म पढाई जाती है लिखा है —

'The historical data of the hymns show that the Indo-Aryans were still engaged in war with the aborigines, many victories over these foes being mentioned That they were still moving forward as conquerers is indicated by references to rivers as obstacles to advances'

"They were concious of religious and racial unity, contrasting the aborigines-with themselves by calling them non-sacreficers, and unbelievers as well as 'black skin's and the 'Dasa-colour as opposed to the Aryan colour'

'ऋग्वेद की ऋचाओ मे प्राप्य ऐतिहासिक सामग्री यह दिखाती है कि, इण्डो-आर्यन लोग सिन्धु पार करके फिर भी भारत के आदिवासियो के साथ युद्ध म लगे हुये थ। इन शत्रुओ पर उनकी कई विजयो का ऋग्वेद मे वर्णन है, अभी भी विजेता क रूप गाने जा रहे थ। यह इस बात से सूचित होता है कि वे कई स्थानो पर नदियो का अपने अभि-प्रयाण के मार्ग मे बाधा के रूप मे वर्णन करते हैं।"

"उन्हें यह अनुभव था कि उनमें जातिगत तथा धार्मिक एकता है। वे आदिवासियो को अपनी तुलना मे यज्ञ हीन, विश्वास हीन" काली चमडी वाले, दास रग वाले तथा अपने आप को आर्य रग वाले कहते हैं।

यह सारा का सारा ही आद्योपान्त अनर्गल प्रलाप है। सारे ऋग्वेद मे कोई मनुष्य एक शब्द भी ऐसा दिखा सकता है क्या जिससे यह सिद्ध होता हो कि काली चमडी वाले आदिवासी थे और आर्य रङ्ग वाले किसी और देश के निवासी थे।

प्रथम तो वेद मे काली चमडी वाले (कृष्णत्वच) यह शब्द ही कहीं उपलब्ध नही और ना ही कहो गौरत्वच ऐसा शब्द है।

हाँ, 'दास वर्णम्' 'आर्यम् वर्ण' यह दो शब्द हैं जिनकी दुर्गति करके काले-गोरे दो दल कल्पना किये गये हैं। हाँलाकि चारो वेदो मे विशेष कर ऋग्वेद मे कोई एक पक्ति भी ऐसी नहीं है जिससे यह सिद्ध होता हो कि 'आर्यम् वर्णम्' इस देश मे बाहिर से आये, और 'दास वर्णम्' यहाँ के मूल निवासी (Aborigines) थे।

यदि इनके युद्ध का वर्णन है, तो वह युद्ध क्या एक ही देश के रहने वाले दो दलो मे नहीं हो सकता, इन दोनो मे से एक दल बाहिर से आया था और दूसरा आदिवासी दल था इस कल्पना का एक ही और केवल मात्र एक उद्देश्य था, भारत मे पग-पग पर फूट फैलाने वाले तथा भारत के एकता के परम शत्रु अग्रेजी शासको की तथा वैदिक धर्म द्रोही पादरियो की दुष्टता। अब अग्रेज शासक चले गये।

क्या अब भी हमारे देशवासियों की आखें खुलेंगी ?

अब जरा

आर्यवर्ण तथा दासवर्ण

इन शब्दो की परीक्षा करलें

वर्ण शब्द का अर्थ इस प्रसग मे Colour है ही नही।

धातु-पाठ मे रग-वाची वर्ण शब्द के लिये वर्ण धातु पृथक ही दी गई है परन्तु निरुक्तकार ने इस वर्ण शब्द की व्युत्पत्ति वृधातु मे बताई है। वर्णो वृणोते (निरुक्त)।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, यह तीन आर्य वर्ण हैं, क्योकि सत्व द्वारा असत्य नाश, बल द्वारा अन्याय का नाश, धन द्वारा दारिद्रय का नाश यह तीन व्रत हैं।

इनमे से जो एक व्रत का वरण अर्थात् चुनाव कर लेता है उसके वणिक का जीवन अपने वर्ण की मर्यादानुसार अत्यन्त कठोर नाप-तोल मे बध जाता है इसलिये वह व्रत आर्य-वर्ण कहलाता है।

जो अपने आपको सब प्रकार की शक्तियो से क्षीण पाता है परन्तु स्वेच्छा पूर्वक ईर्ष्यारहित होकर लोक कल्याणार्थ किसी व्रत वाले की सेवा का व्रत ले लेता है वह दास वर्ण कहलाता है इसलिये शूद्रो के दासान्त नाम कहे हैं। जो व्रत हीन हैं वह दास नही, दस्यु हैं।

उन्हे अव्रता कह कर व्रत वाले उनसे युद्ध करें यह बिलकुल उचित ही है। यह व्रतधारियो का व्रत हीनो से हराम खोरो का श्रम-जीवो से सग्राम सदा से चला आया है और सदा रहेगा। यह दोनो ही सदा से धरती पर रहे है इसलिये दोनो ही धरता के आदिवासी, मध्यवासी, तथा अन्तवासी हैं।

अस्तु Aborigines की यह कल्पना बिलकुल निराधार है। इसका वैदिक वाङमय तो क्या सारे सस्कृत साहित्य मे वर्णन नही।

अब देखना है कि आर्य शब्द यदि जाति विशेष का वाचक नही तो यह किसका वाचक है।

इसके लिये इसकी व्युत्पत्ति को देखना चाहिये।

यह शब्द 'ऋ गतौ' (Ri to move) इस धातु से बना है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

विदेशी विद्वानों ने हमारी राष्ट्रीय अखडता को खडित करने के उद्देश्य से ऐसे साहित्य की रचना की जिससे हम भ्रम मे पडकर एक-दूसरे को अपना दुश्मन समझ कर लडने लगें।

प्रस्तुत लेख मे विद्वान लेखक ने इन विदेशी विद्वानों द्वारा राष्ट्र की अस्मिता को खण्डित करने वाले षडयन्त्र का सप्रमाण और विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है।

—सम्पादक

(शेष पृष्ठ 4 का)

परन्तु ऋ धातु का अर्थ गति है इतना तो व्याकरण से ज्ञात हो गया।

अब निरुक्त प्रक्रिया से देखना चाहिये कि ऋ धातु अर्थ किस प्रकार की गति है।

इसके लिये दो शब्दों को ले लीजिये। एक ऋतु, दूसरा ऋतु,

ऋतु का अर्थ है परिमित समय।

ग्रीष्म ऋतु = गरमी के लिये नियत, नपा हुआ समय,

वर्षा ऋतु = जिसमे वर्षा होती है वह नपा हुआ समय,

शरद् ऋतु = जिसमे सरदी पड़े वह नपा हुआ समय,

बसन्त ऋतु = जिसमे सरदी से धुन्ध कोहरा आदि आकाश के आच्छादक गुणों का अन्त हो और समशीतोष्ण अवस्था हो वह नपा हुआ समय,

इस प्रकार 'ऋ गतौ' का अर्थ हुआ ऋ = मितगतो अर्थात् नाप के साथ चलना।

इसलिये जो पदार्थ जैसा है उसके सम्बन्ध मे अन्यूननातिरिक्त, ठीक नपा तुला ज्ञान कहलाता है = ऋत इसके विपरीत अन् + ऋत

अ इसका बिलकुल सन्देह नाशक प्रमाण लीजिये

अर्वन्तोमित इव (यजु–9)

वे घोडे जो इतने सधे हो कि दौडते समय भी उनके पग नाप तोल के साथ उठें, परिमित हो, ठीक नपे तुले हो वे अर्हन्त कहलाते हैं।

इसी ऋधातु से आर्य शब्द बना है।

इस शब्द के सम्बन्ध मे पाणिनी का सूत्र है "अर्य स्वामि वैश्यो" आर्य शब्द के दो अर्थ हैं एक स्वामी दूसरा वैश्य।

इस पर योरोपियन विद्वानो की बाल-लीला देखिये।

उनका कहना है यह शब्द ऋधातु से बना है जिसका अर्थ है खेती करना।

यह 'ऋ कृषौ'

धातु उन्होंने कहां से ढूं ढ निकाली, यह अकाण्ड ताण्डव भी देखिये।

आर्य का अर्थ है स्वामी अथवा वैश्य

वैश्य के तीन कर्म हैं—

(1) कृषि (2) गोपालन (3) वाणिज्य।

सो क्योकि आर्य का अर्थ है वैश्य और वैश्य का कर्म है कृषि इसलिये ऋधातु का अर्थ है खेती करना।

बलिहारी है इस सीनाजोरी की,

क्यो जी, वैश्य के तीन कर्मों में से व्यापार और गोपालन को छोडकर आपने खेती को ही क्यो चुना ?

इसका कारण उनसे ही सुनियें।

अग्रेजी भाषा मे एक शब्द है Arrable Land अर्थात कृषि–योग्य भूमि। यह शब्द जिस भाषा से आया है उसका अर्थ खेती करना है इसलिये सस्कृत की ऋधातु का अर्थ खेती करना सिद्ध हुआ, क्योंकि हिन्दी मे लुकना शब्द छिप जाना है इसलिये Look at this room का अर्थ, इस घर मे छिप जाओ, क्योकि हिन्दी भाषा मे धी का अर्थ बेटी है इसलिये वेद मे भी धी का अर्थ बेटी हुआ।

सुनिए लाल बुझक्कड जी।

वह अर्थ जो

(1) स्वामी (2) कृषि (3) गोपालन (4) व्यापार।

इन चारो मे समान है, वह है नाप तोल के साथ व्यवहार, स्वामी से भृत्य जो वेतन पाता है वह नाप तोल के बल पर पाता है।

'खेती के योग्य भूमि को नापना पडता है क्योकि उस पर लगान लगता है, इसीलिए अग्रेजी में भी कृषि योग्य भूमि Arrable Land कहलाती है

गोपालन करने वाला दूध नापता है क्योकि उस पर उसकी आजीविका निर्भर है।

व्यापारी के नाप तोल का तो प्रश्न ही नही उठता वहां तो सारा काम ही नाप-तोल का है। वैश्य हलवाई से कहिए लाला जी लड्डू खाने हैं तुरन्त आपका स्वागत करके आपको आसन पर बैठाएगा और अति मधुरता पूर्वक पूछेगा कितने तौलू यह 'कितने' वैश्य कर्म का आधार है, इसलिए स्वामी और वैश्य दोनो आर्य कहलाते हैं।

स्वामियो का स्वामी परमेश्वर है,

आर्य का अर्थ है ईश्वर कापुत्र अर्थात् स्वामी का पुत्र अर्थात् परमेश्वर का पुत्र।

परमेश्वर का गुण है न्यायपूर्वक नियमानुसार नाप-तोल कर कर्मों का फल देना।

जो मनुष्य इसी प्रकार सबके साथ प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करता है वही भगवान के गुणो को धारण करने के कारण उसका सच्चा सपूत है। परमात्मा का एकलौता बेटा कोई नही। सृष्टि के आदि से आज तक जिन्होंने नाप तोल युक्त व्यवहार किया वे आर्य कहलाये और जो करेंगे वे कहलाएगें चाहे किसी देश जाति अथवा सम्प्रदाय मे उत्पन्न हुए हैं। यह है आर्य शब्द का अर्थ। जिनका जीवन सत्य रक्षा, न्यायरक्षा अथवा धन हीन-रक्षा के व्रतो से नपा-तुला हो वे आर्य वर्ण के लोग कहलाएगे और उनका चुनाव किया हुआ व्रत आर्य वर्ण कहलाएगा।

अब बताइए, कि इसमे गोरा रग लम्बी नाक अथवा भारत के बाहर के किसी देश से आना किस प्रकार आघुसा, जिन धूर्त्त शिरोमणि लोगो ने इस राष्ट्र की एकता के विध्वस के लिये इन पवित्र शब्द की यह दुर्दशा की है उनसे पग-पग पर प्रतिक्षण लडना और तब तक, दम न लेना जब तक यह अविद्यान्धकार धरती से विदा न हो हर सत्य-प्रेमी का परम कर्त्तव्य है और राष्ट्रहितैषियो के लिए तो यह जीवन मरण का प्रश्न है। क्योकि इसी पर राष्ट्र की एकता निर्भर है।

—प्रस्तुति नवीन कुमार शर्मा

***

आदर्श अन्तर्जातीय विवाह

शनिवार दिनाक 12 दिसम्बर 87 ई को स्थानीय आर्य समाज भवन, केसरगज, मे भीलवाडा मे सेवारत उदयपुर निवासी प्रसिद्ध साहित्यकार एव लेखक श्री नन्द चतुर्वेदी के सुपुत्र श्री आदर्श चतुर्वेदी का आदर्श अन्तर्जातीय विवाह महाराष्ट्र वासी श्री प्रभाकर सदाशिव करकरे की सुपुत्री तृप्ति करकरे (हाल उदयपुर वासी) के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। विवाह सस्कार आचार्य गोविन्द सिंह शास्त्री ने सम्पन्न कराया। सामाजिक कुरीतियो, दहेज प्रथा आदि रूढियो को त्याग कर किये गय इस आदर्श अन्तर्जातीय विवाह के लिए समाज के पदाधिकारियो ने नवदम्पत्ति को आशीर्वाद एव शुभकानाए दी।

मुस्लिम युवक की शुद्धि

33 वर्षीय अजमेर निवासी रफी अन्जुम का स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन का प्रार्थना पत्र देने पर स्थानीय आर्य समाज भवन केसरगज मे आचार्य गोविन्द सिंह के पौरोहित्य मे शुद्धि सस्कार सम्पन्न हुआ और उसका नाम राहुल आर्य रखा गया।

बाद मे पारस्परिक सहमति के आधार पर एक सादगीपूर्ण समारोह म कोटा निवासिनी कविता व्यास के साथ वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर समाज की ओर से श्री राहुल आर्य को वैदिक साहित्य भी भेंट किया गया।

संस्कृत–संभाषण–शिविर

वेद सस्थान, अजमेर द्वारा 22 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 1987 तक 'सस्कृत सभाषण शिविर' का आयोजन किया गया है। —अध्यक्ष

गुरुकुल बसंत पचमी मेला

गुरुकुल महाविद्यालय, कण्वाश्रम (पौढी गढवाल) द्वारा 'बसत पचमी मेला' 22, 23, 24 और 25 जनवरी, 1988 को मनाया जा रहा है।

— विश्वपाल जयत

आचार्य दत्तात्रेय आर्य पदयात्रियो को सम्बोधित करते हुए।

नारी उत्पीडन के विरोध मे, अजमेर के पदयात्रियो का श्री रामसिंह के नेतृत्व मे जुलूस

पदयात्रा में अजमेर का जत्था

स्वामी अग्निवेश की 'नारी उत्पीडन' के विरुद्ध जन-जागरण के लिए की गई 'दिल्ली से दिवराला' तक की पदयात्रा मे आर्यसमाज, अजमेर के 56 सदस्यो और पदाधिकारियो ने समाज के मन्त्री श्री रासासिंह के नेतृत्व मे जयपुर से भाग लिया।

18 दिसम्बर की सुबह पदयात्रियो ने समाज-भवन मे एकत्रित हो सामूहिक यज्ञ किया। तत्पश्चात् समाज के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य की अध्यक्षता मे पदयात्रियो के स्वागतार्थ एक सादे समारोह का आयोजन किया गया। अन्त में आचार्य जी ने पदयात्रियों को आशीर्वचन देकर समाज-भवन से पदयात्रा में सम्मिलित होने के लिये विदा किया।

'समाज-भवन' से पदयात्री श्री रासासिंह के नेतृत्व में एक जुलूस के रूप मे 'नारी उत्पीडन' के विरुद्ध जयघोष करते अजमेर के बस-स्टैंड पहुंचे और वहा से 'दयानन्द बाल निकेतन' की बस द्वारा जयपुर पहुंच कर स्वामी अग्निवेश जी के जत्थे में सम्मिलित हो गये।

शेष पृष्ठ 1 का

चुका हूं कि किसी पार्टी विशेष से अपनी निष्ठा जोड देने से व्यक्ति अपने सामाजिक या धार्मिक सगठन के प्रति पूर्ण निष्ठावान नही रह जाता। सामवेदी भले लाख सफाई दें परन्तु उनका 23 दिसम्बर की सभा मे कम्युनिष्ट पार्टी के सतीराम यादव की समालोचना (?) कर राजस्थान के मुख्य मत्री जोशी की वकालत करना साधारण आय जन के मन मे उनकी एक ऐसी तस्वीर का निर्माण करता है, जो एक आर्य की नही कांग्रेसी की है। यह कहकर हम सामवेदी की नेक नीयती पर किसी प्रकार का शक नही कर रहे हैं लेकिन हमारे मत मे श्री सामवेदी को ऐसे वक्तव्य या आचरण से स्वय को अलग रखना चाहिए था, जो कि उन्हे एक 'आर्य' के स्थान पर एक 'कांग्रेसी' के रूप मे प्रतिष्ठापित कर दे।

बहरहाल स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे आर्यसमाज ने जो एक बार पुन अपने क्रान्तिकारी और रचनात्मक सुधारवादी अभियान की शुरुआत पदयात्रा द्वारा आरम्भ की है, उसे लगातार जारी रखना चाहिए। आशा की जानी चाहिए कि स्वामी अग्निवेश, आर्य जगत् ने जो अपेक्षाए उनसे लगाई हैं उन्हे पूर्ण करेंगे। ●

पं. वीरसेन वेदश्रमी नहीं रहे

वेदो के सुप्रसिद्ध विद्वान प. वीरसेन वेद श्रमी का गत 22 दिसम्बर को इन्दौर मे अकस्मात् देहावसान हो गया। पंडित जी वैदिक यज्ञ कर्मकाण्ड के विश्वविख्यात विद्वान थे। इस क्षेत्र में वे सर्वोच्च स्थान रखते थे। उनके निधन से हुए रिक्त स्थान की पूर्ति असम्भव है।

वेदश्रमी जी को आर्य पुनर्गठन' परिवार अपनी विनम्र श्रद्धाजली अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की चिरशांति के लिये प्रभु से प्रार्थना करता है।

पं. उदयवीर शास्त्री को पत्नी शोक

आर्य समाज के दर्शनो के सुप्रसिद्ध विद्वान प. उदयवीर शास्त्री की पत्नी श्रीमती विद्यावती का 30 दिसम्बर को देहावसान हो गया। वह पिछले कई वर्षों से पक्षाघात मे पीडित थी।

'आर्य पुनर्गठन परिवार की विनम्र श्रद्धाजली मृतका को सादर समर्पित है।

(शेष पृष्ठ 2 का)

अमेरिका की मध्यमवर्गीय औरतें अपनी दबी हालत और पति के प्रति निष्ठा भावना के कारण अधिक [illegible] का शिकार होती हैं। वहां का पुरुष भी उनको हीन दृष्टि से देखता है। वहा की औरतें प्रतिष्ठा पर आंच न आने देने के लिये अपने दुःखी जीवन के विषय मे किसी को नही बताती हैं और घुट-घट कर जीती रहती हैं।

पत्रिका का कहना है कि अमेरिका के कुछ नये कानून औरतो को उनकी कार्यशालाओ अथवा नौकरी के स्थानो पर प्रताडना मिलने पर तो कार्रवाई कर सकते हैं और पुलिस दोषी व्यक्तियो को पकड सकती है, लेकिन नारी को जो घर की चार दीवारी मे प्रताडना मिलती है, उसके विरुद्ध कोई भी कार्रवाई करने मे पुलिस और न्यायपालिका सक्षम नही है।

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि आज के तथाकथित सभ्य विश्व मे नारी की कितनी दयनीय दशा है। विश्व के आदि गुरु मनु महाराज का कहना है—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ॥ मनु 3/54 ॥

जिस घर मे नारी को उचित सम्मान मिलता है, वहां देवताओं का निवास होता है।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ॥ मनु. 3/57 ॥

और जिस घर में नारी जाति शोकातुर रहती है, वह कुल जल्दी ही नष्ट हो जाता है।

क्या आज का पुरुष मनु के कथन से कोई प्रेरणा ले सकेगा ?

—वीरेन्द्र आर्य

पाठको से निवेदन

सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजें

हमारे अनेक सदस्यो ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है। ऐसे सदस्य महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि पत्र का वार्षिक शुल्क मात्र 15/- रु धनादेश द्वारा शीघ्र भेजने का कष्ट करें। ताकि हम आर्थिक समस्या से मुक्त हो, पत्र का नियमित प्रकाशन करते रह सकें।

सहयोग की कामना में

—[illegible]